Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एसिड सलफ्यूरिक (Acid Sulphuric)।

दूसरा नाम।—एसिड-सल्फ्युरिकम, गन्धकका तेजाब।

परिचय और प्रस्तुत-प्रणाली।—महात्मा हानिमैनने कहा है, सलफर या गन्धक जलाकर उसकी भाप ग्लीसरिटर्टरके सहारे सावधानीसे तैयार की जाती है।

रोगमें प्रयोग।—अम्लरोग; शराब पीनेका खराब परिणाम, मुंहमें जखम; कैन्सर; मुंहमें सड़नेवाला जखम; वयःसन्धिके समयकी बीमारी; कब्जियत; बहुमूत्र; अतिसार; झिल्लीक-प्रदाह या डिप्थीरिया; ध्वजभंग; सविराम ज्वर; यकृतकी बीमारी; सीसाके ज़हरकी वजहसे पक्षाघात; क्षय-कास; न्यूमोनिया; गर्भिणीकी खट्टी कै; प्लीहाकी बीमारी, बन्ध्यत्व; जरायुकी बीमारी; योनि-भ्रंश (योनिका अपने स्थानसे हटना); मसे।

प्रकृतिगत विशेष लक्षण।—थोड़े केशवाले, वृद्ध और वृद्धाओंके लिये यह ज्यादा लाभदायक है। वयःसन्धिके समयकी बीमारी; रह-रहकर गरमीकी झलक मालूम होना; भुथरे शस्त्रसे चोट खानेवाली जगहपर रह-रहकर दर्द और सड़ने जैसा मालूम होना; शरीरसे काले रंगका खून निकलना; पाकाशयमें एक तरहका दर्द मालूम होना, इस वजहसे शराब पीनेकी इच्छा या बहुत जबर्दस्त पीनेकी इच्छा। शराब पीनेकी वजहसे क[illegible] यमें अम्ल और अम्लसे पैदा हुआ शू[illegible] प और सुस्ती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—सवालका जवाब देनेकी इच्छा न होना, उत्तेजित; हमेशा जल्दी बोलनेवाला, अनमना, स्थूल-बुद्धि और दुःखित।

मस्तक।—दाहिनी ओरका शिरःशूल। ऐसा मालूम होना मानो सामनेका माथा शिथिल और अलग होकर इधर उधर हिलता डोलता है। मस्तिष्कका संघात (concussion); सर घूमना, खुली हवामें आराम।

आंखें।—चोटकी वजहसे खून जमकर (सफेद स्थान-कोयेके आवरणके भीतर) आंखें लाल होना।

मुंहके भीतर।—मुंहमें जखम, मुंहमें बदबू, मसूड़े से पीब, खून बहना।

पाकस्थली।—अम्लत्व, खट्टा वमन, **खट्टे दांत** होना; खट्टी डकार। हिचकी, शराब पीनेकी आकांक्षा। उदरमें बाईं ओर ऐसा मालूम होना मानो आँत उतर आयी है (hernia)।

तलपेट आदि।—बवासीरसे खून और रस बहना; मलद्वारमें मानो एक काठी (plug) अटकी है। पीला मल; कभी पानी जैसा या लसदार और फेन मिला मल, भेड़के मल जैसा मल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बूढ़ी औरतोंके जरायु-ग्रीवामें सहजमें ही रक्त बहनेवाला जखम। त्वचाको क्षय करनेवाला और जलन पैदा करनेवाला श्वेत-प्रदर। बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी रजःस्राव ; बहुत ज्यादा संगमेच्छा, योनिभ्रंश।

श्वास-यन्त्रादि ।—बच्चोंका श्वास-नाली-प्रदाह, लगातार खुसखुसी खांसी; हमेशा दो बार खांसी (तीन बार—स्टैनम), खुली हवामें घूमनेपर और ठण्डा पानी पीनेपर खांसीकी वृद्धि।

अंग-प्रत्यंग ।—बांहमें अकड़न जैसा दर्द ; अंगुलीमें लिखनेके समय फड़कन।

त्वचा ।—अच्छी तरह धोनेपर भी बच्चेके शरीरकी खट्टी गन्ध नहीं जाती। विषैला फोड़ा ; सड़नेवाला जखम ; फोड़ा अच्छा होनेपर फिर वहाँ दर्द और खून बहना।

ह्रास और वृद्धि ।—बहुत सर्दी या गर्मीसे वृद्धि। गर्म प्रयोग और बीमारीवाली करवट सोनेसे घटना।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक पल्स। सदृश—आर्निका, लेडम, सिपिया, रियूम, कैल्केरिया, सिम्फाईट। कोमल अंशमें चोट लगनेपर कलेण्डुलाके [illegible] कार्बो-वेजि ; अम्लरोगमें रोबिना ; [illegible] में क्रोटेलस।

शक्ति ।—२० [illegible]

सलफ्यूरिक एसिड, [illegible] अराबक साथ मिलाकर,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी दस-पन्द्रह बूंद, कुछ दिनोंतक रोज तीन बार सेवन करनेसे शराब पीनेकी इच्छा बन्द हो जाती है।

विशेष द्रष्टव्य —

नीचे लिखे कुछ रोगोंमें यह हमेशा व्यवहार की जाती है :—बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे बीमारी ; रोगी ऐसा समझता हो, कि उसका सारा शरीर कांप रहा है। चेहरे-की रंगत कुछ-कुछ कालापन लिये। जो खाता है, तुरन्त कै हो जाता है, कै-में खट्टी गन्ध। डिफ्थीरिया, मुंह और गलेमें घाव। उदरामय, अजीर्ण, रक्तस्राव, बवासीर और चोटकी वजहसे दर्द इत्यादि।

एसिड सलफ्युरोसम।

(Acidum Sulphurosum)।

दूसरा नाम।—सल्फयुरोसम एसिड। [सल-फ्यूरिक एसिड नहीं]।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सलफ्यूरिक ऐसिडस पानीमें मिलाकर उसका मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—तालुमूल ग्रन्थिका प्रदाह (tonsilitis) चेहरेका वयोव्रण, मुंहका सड़ा घाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वाङ्गिक लक्षण। (रोगिक)।

मन और मस्तक।—झगड़ालू, उत्कण्ठित, तेज़ तथा क्रोधी। कै होनेपर सर-दर्द कम हो जाता है।

कान।—कानमें घण्टेकी आवाज़ जैसी आवाज़। मुंहमें जखम मिला प्रदाह। जीभ लाल अथवा नीली आभा लिये, लेपचढ़ी।

पाकस्थली।—भूख न लगना; गहरी कब्जियत।

श्वास-यंत्र।—लगातार दम अटकानेवाली खांसी, इसके साथ ही बहुत ज्यादा कफ निकलना। स्वर-भंग, छाती-में संकोचन मालूम होना; श्वासमें कष्ट।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—श्वेत-प्रदर, सुस्ती।

मात्रा या शक्ति।—तालु-मूल ग्रन्थिके प्रदाहमें इसका सौल्यूशन बीमारीवाली जगहपर किसी यंत्रके सहारे लगाने या छिड़क देनेसे लाभ होता है।

[डा० रिंगर कहते हैं—भोजनके दस मिनिट पहले, १०।१५ बूंद सेवन करनेपर मुंहमें पानी भर आनेका रोग (Pyrosis), पेट फूलना और आँतोंमें भाप न जमना, मुंह-का जखम वगैरह बीमारी अच्छी हो जाती है।]

शक्ति।—६ और ३०।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकोनाइट नेपेलस् ।
(Aconite Napellus)

दूसरा नाम ।—काठविष, अमृत, मीठा बिष, उल्फस वेन, माङ्कस हुड (monks hood) ।

परिचय !—ऐकोन कितनी ही तरहके हैं। जैसे, कैमेरन, लिकाक्टस् और फेरोक्स—अन्तिम बहुत ही तेज़ विषैला है। हमेशा नेपेलस ही व्यवहारमें आता है। इसकी जड़से तैयार अरिष्टको "ऐकोनाइट रैडिक्स" कहते हैं।

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल निकलनेके समय जड़ छोड़कर, सब वृक्षकी छालसे निकाले हुए रसके साथ सम-भाग ऐलकोहल मिलाकर वह तैयार होता है। (अमेरिकन फार्म्माकोपियाके मतसे) ।

रोगमें प्रयोग ।—(डा० क्लार्क) अन्धापन या कम दिखाई देना। संन्यास; दमा; श्वास-नली; फेफड़े आदिके प्रदाहकी पहली अवस्था; अकड़न; खासकर दांत निकलनेके समय बच्चोंकी अकड़न; बच्चा अपनी मुट्ठी अपने हाथसे काटता हो; मूत्रशलाकाके अपव्यवहारकी वजहसे बोखार; छोटी माता, चेचक आदिकी पहली अवस्था; हैजा; क्षयकासके बीचकी सूखी खांसी; अकड़न (ठण्डककी वजहसे); खींचन; घुंड़ी खांसी; मूत्राधार और मूत्रग्रन्थि-प्रदाह; अतिसार; दांत निकलनेके समयका बोखार; रक्तामाशय (खूनी आंव) की पहली अवस्था; आंतोंका चक्कर और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृत्पिण्डके आवरण और फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; भ्रमसे पैदा हुआ कुफल ; जीभमें प्रदाह ; प्रमेह ; बवासीर ; सरका दर्द ; बङ्क्षण-सन्धिकी बीमारी ; कानकी जड़की बीमारी ; सर्दी ; खूनकी कै ; कमरका दर्द ; मस्तिष्क और उसके आवरणके प्रदाहकी पहली अवस्था ; गर्भस्राव ; पेशियोंका शूल ; पक्षाघातकी सम्भावना; ठनका ज्वर ; गर्दनकी अकड़न ; अण्डकोषका प्रदाह ; धनुष्टंकार और हनुष्टङ्कार ; गलेका जखम ; दांतका दर्द ; मुंहका स्नायुशूल ; मूत्रनली और मूत्रद्वारका रुकना (stricture) ; मूत्रस्तम्भ ; जरायुका प्रदाह ; डिम्बाधारका प्रदाह ; हूप खांसीके पहले ; बहुत जँभाई आना ; पेशाब कम होनेके कारण विषैलापन ; ताण्डव रोग (chorea) ; हैजाकी हिमाङ्गावस्था ; पेटमें दर्द ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—आगे जिन रोगोंमें खून निकालनेकी जरूरत पड़ती थी, हानिमैन उन सब बीमारियोंमें ऐकोनाइट व्यवहार करते थे ।

ऐशियाटिक हैजा ; नया प्रदाह और प्रदाहसे पैदा हुआ बोखार वगैरह रोगमें इसका बहुत ही अचरज भरा फल दिखाई देता है । एकाएक आंखोंसे दिखाई न देने लगना और कुछ पुरानी बीमारियोंमें जब गांठें बढ़ जाती हैं, तब इसकी क्रिया अधिक होती है । शारीरिक और मानसिक क्लेशको न सह सकनेका भाव और मृत्यु ; रोगीको बहुत अधिक बेचैनी और उत्कण्ठा । प्रदाहकी वजहसे रक्तकी ज्यादती ; नाड़ी कड़ी और तेज ; दृष्टि-हीनता पैदा करती है, गर्म पानीके सिवा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सब तीता मालूम हो । शीत, सुन्न मालूम होना, झुनझुनी, राह पार करनेमें भय । संगीत असह्य, शीत और भयसे पैदा हुई बीमारियां ।

ह्रास ।—खुली हवाके सेवनसे । **वृद्धि**—शामको और रातके समय : गर्म घरमें ; ठण्डी और खुली हवामें ; बीमारी वाली करवट सोनेपर, गाना सुननेपर, तम्बाकूके धुएं से ।

सदृश दवाएं ।—पल्स, लाइको, सिकेलि, कैम्फर (खुले शरीरसे आराम) हिपर, काफिया (असह्य दर्द) ; चायना (सफेद मल) ; जेल्स (भय, क्रोध, या बुरी खबरकी वजहसे बीमारी) ; ब्रायो (सूखी ठण्डी हवासे पैदा हुआ रोग) ।

विषघ्न ।---सुरासार, सिर्का (विनिगर), सब तरहकी खटाई, खट्टे फल ।

जिन बीमारियोंकी नयी अवस्थामें ऐकोन दिया गया हो, उन सब बीमारियोंकी पुरानी अवस्थामें "सलफर" देना चाहिये । ऐकोनाइटका अपव्यवहार होनेपर भी सलफर देना चाहिये ।

मैलेरिया बोखारमें "ऐकोनाइट" के व्यवहारका फल अच्छा नहीं होता ।

शक्ति ।—नये बोखार और हैजामें १x, ३; जरूरत पड़नेपर ऊंची शक्ति भी देनी पड़ती है । ऐकोनाइटकी क्रिया थोड़े समयतक रहनेवाली है । इसलिये बार बार दवा देन चाहिये ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—बहुत ज्यादा भय और उत्कण्ठा ; मृत्यु-भय, रोगी समझता है, कि उसके निश्चित किये हुए दिन उसकी मृत्यु होगी। गाना बजाना सहन नहीं होता ; क्रोध आना।

मस्तक।—टपकका दर्द, सुई बेधने जैसा सरका दर्द ; सर घूमना : खड़े होनेपर ज्यादा, सरमें भार और गर्मी मालूम होना।

चक्षु—प्रदाह, गर्मी, सूखापन मालम होना ; आँखोंसे पानी गिरना। बर्फके कण या राख गिरनेपर आँखोंका प्रदाह।

नाक, कान।—नाककी जड़में दर्द, सर्दी, छींक, नाक बन्द। आवाज़ सहन न हो। कानमें दर्द।

चेहरा।—कैमोमिलाकी तरह एक गाल लाल और दूसरा पीले रंगका ; खड़े होनेपर चेहरा उतर जाना और सरमें चक्कर ; सुन्न मालूम होना।

मुंहके भीतर।—सुन्न और झुनझुनी जैसा भाव ; जीभ सूखी और उसपर सफेद लेप ; जीभकी नोकमें सुरसुरी मालूम होना। निचला जबड़ा हिलना, मसूढ़े फूलना, कानमें दर्द।

पाकस्थली।—कै, पसीना और पेशाब ज़ोरकी, प्यास, खूनकी कै, पाकाशयमें जलन। पानीके सिवा सब चीज़ें तीती मालूम होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलपेट ।—पेट फूलना ; छुआ न जाये ; गर्म शोर्वा या काढ़ा पीनेपर आराम मालूम होना ।

मलनाली ।—रातमें गुह्यद्वारमें खुजली और सुई बेधने जैसी तकलीफ, सागके छिलके जैसा मल । हिमांगावस्थामें फेनकी तरह मलके साथ साधारण जैसा मल, खूनी बवासीरके साथ बेचैनी और नींद न आना ।

पेशाब ।—थोड़ा लाल, दर्द भरा, पेशाब रुकना ; जलन; खूनका पेशाब, बहुत ज्यादा पेशाब और पसीना ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषमें चोट लगने जैसा दर्द, अण्डकोष कड़ा और फूला, बारबार लिङ्गमें कड़ापन और स्वप्नदोष ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—अपत्य-पथ सूखा और गर्म तथा दर्दभरा । बहुत ज्यादा ऋतुस्रावके साथ नाकसे खून जाना । जरायु और डिम्बाधारमें दर्द ।

श्वास-क्रिया ।—थोड़ा हिलने डोलनेसे ही सांस फूलना । सूखी कुड़ा खांसी जैसी श्वास-क्रिया, खांसी, फेफड़ेमें गर्मी, खांसनेसे खून आना ।

हृत्पिण्ड ।—हृदयका कांपना, मूर्च्छाभाव, दुश्चिन्ता, नाड़ी भरी और तेज ।

अंग-प्रत्यंग ।—सुन्न होना, झुनझुनी, हाथ-पैर ठण्डे और सुन्न ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींद।—रातमें नींद न आना, डरसे दम रुकना, बुड्ढे आदमियोंको नींद न आना।

त्वचा।—छोटी माता जैसी खुजली, सुन्न होना, कीड़ा रेंगने जैसा मालूम होना।

ज्वर।—जाड़ा या कपकपी, गर्मी, नींद न आना, प्यास, पसीना, नाड़ी भारी, तेज़ और उछलती हुई।

ऐक्टिया रेसिमोसा (Actea Racemosa)

दूसरा नाम।—सिमिसिफिउगा ; ब्लैक् स्नेक रूट।

दवा तैयार करनेकी प्रक्रिया।—ताज़ी जड़से मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—गर्भस्राव हो जानेका लक्षण या गर्भस्रावका भय ; छातीका स्नायुशूल ; स्तनमें विकार ; पीठमें दर्द, स्तनकी बीमारी। मस्तिष्क और मेरुमज्जाका आवरण-प्रदाह, छातीमें दर्द, वयःसन्धिके समयकी बीमारी ; ताण्डव ; मदात्यय रोग, बच्चोदरमध्यस्थपेशीका वात, अजीर्ण रोग, मृगी, मूर्च्छा, सरमें दर्द, बीमारीकी शंका, हृत्पिण्डकी बीमारी ; पेशियोंका शूल, स्नायुशूल, डिम्बाधारकी बीमारी पार्श्वशूल, फुसफुस आवरणका स्नायुशूल, सूतिकोन्माद, छोटी सन्धियोंका वात रोग, गृध्रसी रोग, नींद न आना, गर्दन अकड़ना, कपकपी, कर्ण-पटहका प्रदाह, जरायुकी बीमारी, गर्भावस्थामें कै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिगत लक्षण।—मस्तिष्क, मेरुमज्जा; पेशी-मण्डल और डिम्बकोषके ऊपर इसकी ज्यादा क्रिया होती है। बार बार वात होना, स्नायु-प्रधान औरतोंका जरायु-प्रदाह; मूर्च्छा वायु और व्याधि-शंकाकी बीमारीकी वजहसे रोगिनीको चारों ओर अन्धकार दिखाई देता है, मृत्यु-भय बहुत कुछ ऐकोनाइटकी तरह; लगातार बातें करना, इसके द्वारा बहुत बार मृगीकी बीमारी आराम हुई है, वात मिली बाधक वेदना। डा० कैरण्टने ठीक ही कहा है—रोगिनी जाड़ेसे कातर रहती है, प्रसवके बादका उन्माद, रोगिनी हमेशा समझती है, कि वह पागल हो जायगी। भ्रम देखना।

जरायु या डिम्बाधारकी बीमारीकी वजहसे हृत्पिण्डकी बहुत तरहकी बीमारियां। ऋतुके समय मानसिक गड़बड़ीकी अधिकता; बाएँ स्तनके नीचे तेज़ दर्द; नकली प्रसव वेदना, हर बार तीसरे महीने गर्भ-स्राव; जरायु-मुखका कड़ापन; बहुत दिनोंतक रहनेवाला प्रसवका दर्द, खूनका स्राव होनेके बाद प्रसवका दर्द रुक जाता है, प्रसवके अन्तका दर्द। प्रसवके एक महीना पहले, सप्ताहमें दो दिन सेवन करनेपर, आरामसे प्रसव होता है। श्वेत-प्रदर; जिन्हें मरी सन्तान पैदा हो, उनके लिये महौषध है।

ह्रास और वृद्धि।—शरीर हिलाने, छूने और सवेरे ठण्डी हवामें और ज्यादा रजःस्राव होनेपर बढ़ना, विश्राम और बाहरी हवामें घूमनेपर तथा भोजन और गर्मीसे आराम मालूम होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—यह बहुत कुछ ऐक्टियास्पाइकेटासे समान है। इससे पैदा हुई अनिद्रा **ऐकोनाइटसे** दूर होती है। इस दवासे पैदा हुआ सरका दर्द और मिचली बैप्टीशियासे जाती है। ब्रायो और पल्स वातमें, कलोफाइलम जरायुकी बीमारीमें; लाइकोपोडियमका दर्द एक बार यहाँ एक बार वहाँ घूमा करता है। आर्सेनिक (एकान्तमें डर)। कैल्की—**छोटे बड़े चूहोंका झूठा भय या भ्रम देखना।**

इसका **सारांश रेक्टीन** (Resinoid)।

—विचूर्ण रूपमें कटिवेदनामें ज्यादा काम करता है।

शक्ति।—३, ६, ३० कभी कभी २००।

ऐक्टिया-स्पाइकेटा (Actea Spicata)

दूसरा नाम।—बेन-बेरी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अरिष्ट तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—पाकस्थलीका कैन्सर, डर जानेका बुरा नतीजा, यकृतका प्रदाह, फेफड़ेके आवरणका प्रदाह, आमवात, दांतोंका शूल, छोटी सन्धियोंका दर्द इत्यादि।

प्रकृतिगत लक्षण।—मणिबन्ध अर्थात् कलाईका वात, सारे शरीरमें खासकर यकृत और मूत्रग्रन्थिकी जगहपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाड़ियोंका स्पन्दन मालूम होना ; दाहिनी बांह और दाहिने हाथकी कलाईपर इसका ज्यादा आक्रमण होता है। कसरत करनेके बाद सन्धियोंमें दर्द मालूम होना। खींचने या छेदने जैसा दर्द ही इसका अनुभव या प्रकृति है। पुरुषोंके लिये यह और औरतोंके लिये रेसिमोसा ज्यादा फायदेमन्द है।

सम्बन्ध।—इसके बाद नक्स-वोमिका खूब काम करता है। आर्निका, ब्रायो, कलोफाइलम, लाइकोपोडि, रास्टक्स, सैलिसि-एसिड, स्टिक्टा वगैरह समगुणवाली दवाएँ हैं।

शक्ति।—हमेशा ३री शक्ति व्यवहृत होती है। ६ और ३०; कभी-कभी २००।

एडोनिस वार्नालिस (Adonis Vernalis)।

दूसरा नाम।—फेजेण्टस आइ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे वृक्षका अर्क प्रस्तुत होता है। इसका सार भाग विचूर्ण (एडोनिडिन) है।

रोगमें प्रयोग।—अण्डलाल मिला पेशाब या पेशाब-में अण्डलाल ; हृत्पिण्डकी कितनी ही बीमारियाँ ; हृत्पिण्डकी गड़बड़ीसे पैदा हुआ दमाका रोग।

प्रकृतिगत लक्षण।—रूसमें सभी इसे हार्ट रेमिडी या हृत्पिण्डकी दवा कहकर व्यवहार करते हैं। स्वस्थ शरीरमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा न होनेपर भी व्यवहार-विधिके अनुसार इसके नीचे लिखे गुण मालूम हुए हैं। हृत्पिण्डकी तेज़ क्रिया, शोथ, पेशाबमें अण्डलाल, हृत्कपाटमें गड़बड़ीकी वजहसे दमा। डा० कैश (Cash) ने आधा ग्रेन, आध घण्टेके अन्तरसे एक मनुष्यको खिलाकर बहुत लाभ देखा है। आर्सेनिक, डिजिटेलिस वगैरह दवाएँ व्यर्थ होनेपर इसके द्वारा परीक्षा करनी चाहिये। इसके प्रयोगसे पेशाबकी मात्रा बढ़ी थी। श्वास-कष्ट दूर होकर नींद आयी थी। हृत्पिण्डके बाहरी आवरणमें जल-संचय रोगमें इससे लाभ दिखाई देता है।

संक्षिप्त लक्षण।

सरमें चक्कर, हृद्कोषको ढकनेवाला और हृदयकी धमनीके खूनका पीछे जाना या पुनरुद्गीरण (regurgitation); हृदावरक झिल्लीका प्रदाह, हृद्कम्प, श्वास-क्लेश और दमा।

सम्बन्ध।—ऐडानाइडिन इसका उपचार है।

समगुण दवा।—डिजि, स्ट्रोपेन्थस, कनवैल; कैक्टस, स्पाइजि, जिङ्कम इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्क; सार भाग १x विचूर्णका आधा ग्रेन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एड्रिनेलिन (Adrenalin) ।

दूसरा नाम ।—एपिनेफ्रिन (Epenephrin) ।

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अर्क और विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—खूनका पेशाब ; खूनकी ज्यादती ; कलेजेकी धड़कन ; दम अटकना ; श्वास-कष्ट ; दमा ; दुबलापन ; एडिशन डिजोज़ इत्यादि जहाँ धमनीका प्रसारण होता है ।

इसका प्रधान गुण है, सहानुभूतिक स्नायु-प्रान्तमें उत्तेजना करना । इसकी क्रिया बहुत तेज़ है और तुरन्त फल दिखाई देता है। बार बार प्रयोगसे या लगातार प्रयोगसे नुकसान होता है । जहाँ blood pressure या खूनका दौरान बढ़ा देनेकी जरूरत है, वहां इसके द्वारा लाभ पाया जाता है । इससे नाड़ीमें धीरता पैदा होती है, वेग घट जाता है ; पेशाबमें चीनी वगैरह पैदा होती है । डा० बोरिकने लिखा है—फेफड़ेके प्रदाहमें ; दमामें ; हृत्शूलमें ; शीत-पित्तमें और धमनी-प्रदाह ; मिचली ; कै ; कमजोर करनेवाले किसी कारणसे हृत्पिण्डकी क्रियाके रुकनेकी आशंकामें लाभ करता है ।

शक्ति ।—२x से ६x तक व्यवहारमें लायी जाती है ।

इस्क्यूलस ग्लेब्रा ।

(Aesculus Glabra).

दूसरा नाम । – फिरिड या ओहियो काफी ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उत्तरी अमेरिकामें उत्पन्न एक तरहके पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—कब्जियत; खांसी; अर्श; मस्तिष्कावरणका प्रदाह; पक्षाघात; बातोंमें जड़ता या अस्पष्टता; सरमें चक्कर; गर्दन या गर्दनके पीछे दर्द।

प्रकृतिगत लक्षण।—इस्क्यूलस हिप या हार्स-चेस्टनटकी भांति इसकी भी क्रिया मलद्वारपर बहुत अधिक होती है। इससे मलद्वारमें प्रदाह पैदा होकर, मल कड़ा, गांठ गांठ और मलद्वारमें दर्द होता है। "मलद्वारमें धुएंके रंगके अर्शकी बलीके साथ मलमें कड़ापन और सरमें चक्कर; निम्नाङ्ग, और पीठमें कमजोरी"—(डा० हेल) माथा भारी, दृष्टि अस्पष्ट, टकटकी लगाकर देखते रहना (निरर्थक टकटकी लगाकर देखना), गलेमें पर डालनेसे जिस तरह सुरसुरी भरी खांसी होती है, उसी तरहकी खांसीमें रक्तमिला कफ़ निकलता है। अकड़न या अकड़नके बादवाले पक्षाघातमें यह लाभदायक है। आलसी और शराबी मनुष्योंकी बीमारीमें यह फायदेमन्द है।

सम्बन्ध और सदृश।—इस्क्युलस हिए, ऐलो, कालिन्सो, इग्नेशि, नक्सवोमिका, सलफर।

शक्ति।—१x, ३री और ६ठीं शक्ति दशमिक (६x)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्कूलस हिपोकैस्टेनम्

(Aesculus Hippocastanum)

दूसरा नाम ।—हार्सचेस्टनट ; कटूस इत्यादि ।

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मध्य एशियाके एक खास तरहके वृक्षके फलके गूदेके रससे मूल अर्क तैयार किया जाता है ।

रोगमें प्रयोग ।—गुदा, मलद्वार और पीठकी कितनी ही बीमारियां ; कब्जियत ; बवासीर ; सरमें दर्द ; आंत उतरना ; सविराम ज्वर ; कँवल ; यकृतकी अनेक बीमारियां ; कमरमें दर्द ; मूत्राधार-मुखशायी ग्रन्थि (प्रोस्टेट ग्लैण्ड) की कई बीमारियाँ ; कमरके पिछले भागमें नीचेकी ओर दर्द ; स्वाद बिगड़ा हुआ ; जीभ और गलेके कई रोग ; जरायु-का अपनी जगहसे हटना ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—यह बवासीर रोगकी एक महौषधि है । किसी किसी स्थानके मनुष्य इसका फल जेबमें लिये घूमते हैं, उससे बवासीरको रोकनेका काम होता है । इसमें यकृतकी गड़बड़ीको बतानेवाले लक्षण अकसर मौजूद रहते हैं । सारे शरीरमें गड़बड़ी मालूम होना, मस्तक और मनकी जड़ता, स्वरनाली और गलेकी नालीका प्रदाह, यकृतमें अकड़न ; कँवल, बिना पित्तका सफेद मल, तलपेटमें टपक ; तलपेट और गुदा-स्थानमें इसकी क्रिया अधिक होती है ; खूनी या बादी बवासीर ; गुदामें-स्थानमें सूखापन ; ऐसा मालूम होना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो कितनी ही शलाकाएँ श्लैष्मिक झिल्लीके भीतर छिपी हुई हैं ; कब्जियत, गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना, कानमें दर्द, दर्द जिससे रोगी आरामसे चल न सके। प्रदर और उसके साथ दर्दको वजहसे रोगिनी बिलकुल ही चल नहीं सकती।

इस दवाके एक प्रकारके फलसे एक बालक विषाक्त हो गया था। जैसे—कलीनिकाका फैल जाना, चेहरा लाल, नाड़ी भरी, औंघाई, भयानक सपने देखना, डर उठना इत्यादि। इसमें उत्तेजना और हताशका लक्षण मौजूद रहता है। **जाड़ेके दिनोंमें**, घूमनेके समय, स्नान करनेपर रोग बढ़ना और गर्मीके दिनोंमें अच्छे रहना इसका प्रधान निर्देशक लक्षण है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।——मनमें सुस्ती और हताश भाव, क्रोध, असन्तोष। मस्तिष्कको जड़ता, आँसू बहना ; नयी सर्दी, यकृत प्रदेशमें दर्द, गुदा-स्थान सूखा और गर्म, मानो सूखी शलाकासे भरा है। बादी या खूनी बवासोर, बैंगनी रंगको और जलन भरी बवासीर। पाखाना फिरते समय मूत्राधारको मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव।

गुह्यद्वारसे लेकर जननेन्द्रियके बीचके प्रदेशमें टपक जैसा दर्द। जरायुका अपने स्थानसे हटना, पीले रंगका क्षय करनेवाला प्रदर-स्राव, पिछली कमर और त्रिकको हड्डीके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग-स्थानपर सुन्न हो जाना । गर्भावस्थामें, जरायु हटनेकी अवस्थामें और प्रदर रोगमें चलनेके समय रोगिनी बैठ जाती है ।

सम्बन्ध ।—इस्कूलस ग्लैब्रा ; ऐलोज़, कालिन्सो मार्क्यु, नक्स-वमिका, पोडो, सल्फ ।

दोषघ्न ।—नक्स-वमिका दोषघ्न भावसे अर्शमें काम करता है ।

तुलनीय ।—कैलिबाई (गलेमें), फाइटोलका (गलकोषमें) ।

वृद्धि ।—शरीर हिलानेमें, चलनेमें और सर झुकानेपर पीठमें दर्द होता है ।

ह्रास ।—स्थिर रहने और खुली हवामें रोगी अच्छा रहता है ।

शक्ति ।—मूल अर्क, ३, ६, या ३० शक्तिसे अच्छा लाभ पाया जाता है ।

इथियप्स ऐण्टिमोनैलिस ।

(Aethiops Antimonalis)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—आँखोंमें प्रदाह; कानका स्राव, गण्डमाला दोष, चर्म्म-रोग, गौण उपदंश । आँखोंकी कनीनिकामें जखम, ग्रन्थिका बढ़ना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिगत लक्षण।—यद्यपि स्वस्थ शरीरपर इसकी परीक्षा नहीं हुई है तथापि इसका फायदा देखकर भेषज-तत्वमें इसे स्थान दिया गया है। गण्डमाला दोष, दादकी तरह उद्भेद, चकत्तेकी तरह लाल रंगका चर्म्म-रोग, कानसे पीव जाना आदि रोग, चेहरेपर खोलभरे दाने और उद्भेद, वंशगत उपदंशका विकार, सोरा और अनेक दूसरे चर्म्म-रोगोंपर इसकी बहुत अधिक लाभदायक क्रिया होती है।

सम्बन्ध।—कैल्के, साइलि, सोराइनम् सदृश दवाएँ।

शक्ति।—निम्न शक्तिका विचूर्ण।

इथूजा सिनेपियम्।

(Aethusa Cynapium),

दूसरा नाम।—गार्डेन हेमलक, फूल्स पार्स्ल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूले हुए समस्त पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—मस्तिष्कमें थकान, बच्चोंका हैजा, अकड़न या तड़का; खांसी; प्रलाप; अतिसार; अजीर्ण; कानसे स्राव; नाकसे खून बहना; फटना या पानी लगना; आँखोंकी बहुतसी बीमारियाँ; सरका दर्द; हिचकी; जड़-बुद्धि; बचपनमें पक्षाघात; मानसिक दुर्बलता; नींद न आना; पाकाशयमें गड़बड़ी; दाँती लगना; कै और दूधकी कै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकृतिगत लक्षण ।—तेज़ कै, तेज़ अकड़न, तेज़ दर्द, तेज़ प्रलाप वगैरह सभी लक्षणोंमें तेज़ी ही इसकी विशेषता है। दूसरी ओर बहुत सुस्ती और नींद या औंघाई भी दिखाई देती है। शारीरिक विशेषकर मानसिक दुर्बलता, मन लगानेमें असमर्थ। एक युवा इसी कारणसे पढ़ लिख न सकता था, पढ़ना छोड़ दिया था, पर इस दवाके सेवनसे पढ़नेमें उसका मन लगा था और परीक्षामें वह सफल हुआ था। मानसिक और स्नायविक दुर्बलताके साथ अजीर्ण, दूध न पचना, भ्रम देखना, प्रलाप अवस्थामें कुत्ते-बिल्ली देखना, शय्यासे उछल पड़ना इत्यादि इसके विशेष लक्षण हैं। रोग बढ़नेके साथ ही रोना भी बढ़ जाया करता है। बच्चा दूध पीने बाद सुस्त हो पड़ता है। **कै करने बाद ही नींद आती है,** सोकर उठने बाद ज्योंही दूध पीता है, त्योंही कै करता है।

पेटके भीतर तकलीफ, मानो पेट उलट-पलट हो गया है। ओठोंपर सफेद दाग इत्यादि।

वृद्धि ।—रातमें ३।४ बजनेके समय, शामको और गर्मीसे। बाहरी हवामें घूमने और बात-चीतसे आराम। बच्चे और बुड्ढोंकी बीमारीमें अधिक व्यवहार होता है।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—बच्चेकी जड़-बुद्धि, मन लगानेकी शक्तिका न रहना। **माथेमें तेज दर्द,** मानो चिमटेसे जकड़ा है; रोशनीसे डर; आंखोंका प्रदाह।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान।—कानमें आवाज़, सुई बेधने जैसा दर्द और सांय सांय शब्द। छींक और नाकसे गाढ़ा सर्दीका स्राव नाकके आगे दाद जैसे दाने।

पाकाशय।—प्यास न लगना, दाँत निकलनेके समय बच्चेका दूध कै करना। **दूध पीते ही दही की तरह कै हो जाती है।** खानेकी चीज़ देखनेके साथ ही मिचली होना। पेटमें वायु, भुटभाट शब्द।

मल।—बहुत कूथनेके साथ पीली आभा लिये पतला अजीर्ण मल। पाखाना फिर लेनेपर सुस्ती और औंघाई, बच्चेका हैजा। स्त्री-जननेन्द्रियमें खुजली, ज्यादा आर्त्तवका स्राव, श्वास-कष्ट।

प्रत्यंग।—रोगी खड़ा नहीं हो सकता, काला दाग, शोथ।

ज्वर।—ताप बहुत ज्यादा, प्यास बिल्कुल नहीं।

सम्बन्ध।—दूधकी कैमें ऐण्टिम-क्रड, कैल्के। अकड़नमें साइक्यूटा, कूप्रम। औंघाईमें ओपियम। प्रतिपूरक कैल्केरिया।

दोषघ्न।—उद्भिजकी खटाई। सलफर इसका समगुण है।

शक्ति।—३री, ३०वीं और २००।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐगरिकस मस्केरियस।

(Agaricus Muscarius)

दूसरा नाम।—हिन्दीमें इसे काठ-छत्ता (Fungi) कहते हैं। (एमेनिटा मस्केरियस)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सारा छत्ता धोकर एलकोहलमें मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—मुँहासे पलक फड़कना, मस्तिष्कका कोमल मालूम होना, बाघी, ताण्डव, खांसी, अकड़न, मदात्यय-रोग ; बाधक, सान्निपातिक ज्वर, मृगी, सड़नेवाला जखम, पक्षाघात, बहुत सन्ताप, खुजली, कमला या पाण्डु रोग। आँखका नासूर, चेचककी तरहके दाने, कमरमें दर्द, कमरके पिछले भागमें दर्द, अर्बुद (मेदभरा), ज्यादा बदचलनीका दुष्परिणाम ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; पासकी चीज दिखाई न देना ; सुन्न हो जाना, यक्ष्मा, आमवात, प्लीहाकी बीमारी, बगलमें सुई वेधने जैसा दर्द, अकड़न, दाँतका दर्द, कम्पन, सान्निपातिक ज्वर और ज्वरातिसार।

प्रकृतिगत लक्षण।—रोगीके प्रलापमें कविता और भविष्यवाणी मिली रहती है। उन्मादके जैसा भाव, असम्बद्ध बातें, अपने साथियोंको चुम्बन करना चाहता है। सरमें चक्कर (पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम) ध्वजभंगपर इन्द्रिय-तृप्तिकी प्रबल वासना ; सारे शरीरमें कपकपीके साथ पेशियोंका सिकुड़ना फैलना ; इसके बाद सुस्ती। बोखारमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर हिलाना, नाकसे खून गिरना, ताण्डव रोग, आँखोंकी पलक फड़कना, पाखानेमें बदबू, पेशाब कम होनेके कारण मूत्र-विकारमें (हैजाके बाद) डा० सालजरने इसके प्रयोगसे विशेष फायदा बताया है। इस देशमें पैरमें पानी लगना, बरसात और पानीमें काम करनेपर रोग बढ़ना; यक्ष्माकी आरम्भिक अवस्था। ओंठ पर राई जैसे दाने; मृगी रोगमें मुँहसे फेन निकलना।

डा० बोरिकने लिखा है।—यक्ष्माकी पहली अवस्थामें इससे बहुत लाभ होता है। ऐसा मालूम होता है मानो सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा है और सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है। नीचेकी ओर बढ़नेवाला दर्द, मानो कोई चीज़ ऊपरकी ओरसे ठेल रही है; दाहिनी बांहसे बाएँ पैरतक कोना-कोनी भावसे सब लक्षण प्रकट होते हैं।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—मानसिक सुस्ती, उन्मत्त जैसा प्रलाप। गाना गाता है, चिल्लाता है, खूब बोलता है, **पर बातोंका जवाब देना नहीं चाहता**। काम करनेसे अनिच्छा, उदासीनता भाव, निर्भय। लिखने-पढ़नेमें भूल, पद्य लिखना।

मस्तक।—सरमें दर्द, शराब आदि पीनेका दुष्परिणाम। धूपमें घूमनेसे सरमें चक्कर आना। ठण्डी-सुई बेधने जैसा मालूम होना (गर्म सुई बेधने जैसा मालूम होनेपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्सेनिक) टेढ़ा मेढ़ा जखम, कई तरहकी खुजली खसड़ाकी बीमारी ।

आँखें ।—पलक फड़कना; चीजें दो दिखाई देना, कम दिखाई देना। छोटी चीज़ बड़ी दिखायी देना; आँखोंके सामने कुहासा, मेघ या मकड़ेका जाल रहने जैसा मालूम होना ।

कान ।—कर्णपटहमें प्रदाह । चेहरेका स्नायुशूल । जड़-बुद्धि जैसा भाव ।

कण्ठनाली ।—श्लेष्मा भरी कड़ी गांठें कफके रूपमें निकलना । पुराना जखम ।

पाकस्थली ।—बहुत भूख-प्यास । अधोमार्गसे वायु निकलना ; हिचकी ।

आंतें आदि ।—प्लीहा यकृत और आंतोंमें कांटा गड़ने जैसी तकलीफ । गर्म-वायु निकलना ; बदबूदार मल ; पेशाबका बहुत वेग ; बूंद बूंद पेशाब होना ; पेशाब रुकना, पेशाबपर तेलकी तरह पदार्थ तैरते रहना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मासिक स्राव ज्यादा और निर्दिष्ट समयके पहले प्रकट हो ; बाधक (अकड़नवाला) मानो जरायु बाहर निकला आ रहा है। स्तन-वृन्तपर खुजली ; जखम करनेवाला प्रदर ।

श्वास-यन्त्र ।—अकड़नवाली खांसी, खांसनेके समय छींक, हृत्पिण्डका कांपना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग-प्रत्यंग।—(त्वचा आदि)—मेरुदण्डमें दर्द। कशेरुकामें स्पर्श सहन न हो। कमरमें कमजोरी; सन्धिवात। निचले अंगका पक्षाघात।

त्वचा।—ठण्डा फोड़ा, असह्य खुजली; जलन। खुजलानेवाली घमौरी या फुन्सी; **रुके या अड़े हुए चर्म्मरोगकी वजहसे मृगी,** रोगवाली जगह लाल, फूली या गर्म हो उठती है। चींटी रेंगने जैसा मालूम होना।

निद्रा।—नींद अस्थिर। सच्ची घटनाकी तरह स्वप्न।

ज्वर।—शामको जाड़ा लगकर बोखार, इसके बाद उत्ताप, तेज़ पसीना।

वृद्धि।—भोजन, रमण, ठण्डी हवाका सेवन और मानसिक परिश्रम तथा अंधड़ पानीके पहले रोग बढ़ना, धीरे-धीरे घूमनेसे आराम मालूम होना।

सम्बन्ध।— ऐगरिकस ऐमेटिकस (Agaricus Emeticus)—पाकाशयका प्रदाह और सरमें चक्कर, पेटमें जलन।

तुलनीय।—बोविष्टा, स्टिक्टा, कैनाबिस, ओपि, स्ट्रैमो (मदात्यय) साइक्यूटा (आंखोंमें अकड़न), टैरेण्ट, विरेट्रम (माथेमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना); आर्सेनिक (बहुत अधिक गर्मी); स्ट्रैमो और लैकेसिस मध्यवर्त्ती दवाएँ हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न।—कोलो, काफ़ी, शराब। कैम्फ़र, कैल्क, पल्स, रस्टाक्स, साइलि, टैरेण्टु।

शक्ति।—३री, ३०, २०० शक्ति।

क्रियाकी स्थिति।—४० दिनोंतक।

ऐगेव-अमेरिकाना।

(Agave Americana)

दूसरा नाम।—अमरिकन ऐलो; सेण्टुरी प्लैण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—प्रमेह, लिङ्गमें दर्द-भरा कड़ापन; **जलातंक रोग**। शीताद; मुंहमें जखम। कब्जियत; पेटमें दर्द इत्यादि।

प्रकृतिगत लक्षण।—स्वस्थ शरीरपर इसकी परीक्षा नहीं की गयी है, पर जलातंक रोगमें इसका व्यवहार होता था। एक लड़केको कुत्ता काटनेके चार महीने बाद जलातंकका लक्षण दिखाई दिया। वहांसे चिकित्सकने ऐगेवकी व्यवस्था दी। बालक उसके पत्ते आग्रहसे खाने लगा। शामके बाद ही स्नायविक लक्षण कम पड़ने लगे। धीरे-धीरे उन्नति होने लगी। चार दिन बाद वह कुछ खा सका और उसका रस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया। पांचवें दिन उसे जब ज्ञान हुआ तब उसने फिर यही दवा मांगी। ८ वें दिन फिर न मांगी, कड़वी लगी और मुंहमें जलन होने लगी। इसके बाद रोगका लक्षण न दिखाई दिया।

सम्बन्ध।—तुलनीय—लाइसिन, लैकेसि, ऐलोज़ इत्यादि।

ऐग्नस कैसटस (Agnus Castus)

दूसरा नाम।—चेस्ट ट्री (Chaste tree).

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके फलके मण्डके साथ ऐलकोहल मिलानेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—स्तनका छोटा होना, गुह्यद्वारका फटना; उदरी; हड्डी खिसकना; प्रमेह (गौण लक्षणमें); छोटी सन्धियोंका वात; मसूढ़ेमें जखम; **ध्वजभंग**; जांघमें ठण्डापन; श्वेत प्रदर; मुंहमें जखम; आमवात; वात; प्लीहाका फूलना और कड़ापन; मोच खा जाना; बांझपन; अण्डकोषका फूलना और कड़ापन; दांतोंमें दर्द।

प्रकृतिगत लक्षण।—जननेन्द्रियकी कमजोरी या जीवनी-शक्तिका अवसाद इसका विशेष लक्षण है। विषादके साथ मृत्यु-विषयकी चिन्ता या धारणा; रोगी मनमें समझता है, कि जब मृत्यु ही स्थिर है, तब फिर गृहस्थीसे क्या मतलब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है (ऐकोनकी तरह मृत्यु-चिन्ता नहीं) यदि सौरी घरमें प्रसूताके मनका भाव ऐसा हो जाय और उसके साथ ही स्तन छोटे हों तो यह ज्यादा फायदा करता है। श्लेष्मा-प्रधान धातु, असमयमें ही बुढ़ापा आ जाना, अनियमित मैथुनसे पैदा हुई आत्मग्लानि ; अविवाहित युवकोंमें स्नायविक दुर्बलता ; प्रमेह आदि दोषकी वजहसे पुराने पापियोंमें ध्वजभंग। प्लीहाका फूलना और कड़ापन। पाखानेके समय जोर देनेपर प्रोस्टेट रस या मूत्राधार-मुखशायी ग्रन्थिसे सफेद पदार्थका स्राव ; पीले रंगका प्रदर ; सन्धि-स्थलपर वातकी गांठें।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—स्मरण-शक्तिकी कमी ; अनमनापन ; अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे असमयमें ही बुढ़ापा ; मृत्यु-चिन्ता या भय।

पाकस्थली।—सविराम ज्वरमें प्लीहा और यकृतमें दर्द और सूजन।

पुं०-जननेन्द्रिय।—ध्वजभंग ; लालामेह ; स्नायविक दुर्बलता, लिङ्ग शिथिल और छोटा ; अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन। पाखाना फिरते समय जोर लगानेसे मूत्राधारकी मुखशायी ग्रन्थिसे रस बहना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवके बाद स्तनमें दूधका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव, इसके साथ ही मानसिक अवसाद और मृत्यु निश्चित समझकर सब कामोंमें उदासीनता ; वन्ध्यत्व।

अंग-प्रत्यंग।—एड़ोकी सन्धिमें मोच खाने जैसा दर्द। सारे शरीरमें चिबाने जैसा दर्द। खुजली—विशेषकर आंखोंमें।

सम्बन्ध।—सदृश दवा—सेलिनि, एसिड-फास, कैम्फर ; लाइको पोडि ; क्रियोजोट। इसके बाद—आर्स, लाइको, पल्स, सेलिनि या केलेडियम बहुत काम करता है।

दोषघ्न।—नेट्रम—कैम्फर।

शक्ति।—३०, २००।

एइलैन्थस ग्लैण्डिउलोसा।

(Ailanthus glandulosa).

दूसरा नाम।—चाइनीज़ सुमाक।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्ते, पल्लव, कली और नर्म छालके काढ़ेके साथ ऐलकोहल मिलाकर मूल अरिष्ट तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—मुंहासे, हलके ढंगका मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह। उपदंश रोग, बहुव्यापक सर्दी ; डिप्थीरिया ; सरमें दर्द ; कर्ण-मूलकी बीमारी ; सूतिका ज्वर। आमवातका बोखार ; सान्निपातिक ज्वर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिगत लक्षण।—त्वचापर खून बिगड़ना बतानेवाले काले दाग पड़नेका भाव या बैंगनी रंग दिखाई देता है। सुस्ती, पित्त और स्नायु-प्रधान धातुमें उपयोगी। हल्का बोखार, उद्भेदसे पैदा हुआ बोखार, डिप्थीरिया वगैरहमें फायदेमन्द मालूम होती है। पतले दस्त आना, अतिसार, बीच-बीचमें सर भारी, गलेमें सूजनका भाव, सूखी खांसी। सूखी खांसीके साथ खूनी आँव या अतिसार; श्लैष्मिक झिल्लियोंसे रक्तस्राव होना और उसके साथ ही सुस्ती और तन्द्रा भावका मौजूद रहना।

दाहिनी ओर सोनेसे आराम, उठ बैठनेपर कै। चलनेमें पैर डगमगाता है। चलनेसे दाँतका दर्द अच्छा रहता है। स्नायविक स्थूलकाय और पित्त-प्रधान धातुके लिये उपयोगी है।

सम्बन्ध।—यह टिलिया और जैन्थक्साइलम श्रेणी-की है।

दोषघ्न।—रस्टाक्स, नक्स-वमिका और सुरा।

शक्ति।—३, ६, ३०।

सदृश दवाएं।—आर्निका, ऐलोज, बैप्टि; ब्रायो; जेल्स; हायोसा; लैकेसि; नक्स-व; रस्टाक्स; स्ट्रैमो, इग्ने-सिया इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण।

मन और मस्तक।—तन्द्राके साथ लम्बी सांस। मानसिक जड़ता और सुस्ती, सर घूमना।

चक्षु।—रोशनी सहन न होना। नाकसे पीव-खूनके साथ सर्दीका स्राव। गलेमें सूजन और खांसी। दाँतमें चीनी, घूँट लेनेके समय कानमें दर्द; श्वास-क्रिया तेज; नींद सपने-भरी; त्वचापर कितनी ही तरहके लक्षणवाले उद्भेद।

एलिट्रिस फेरिनोसा।

(Aletris Farinosa).

दूसरा नाम—ष्टारग्रास; कालिक रूट इत्यादि। अमेरिकामें पैदा हुआ पौधा।

दवा तैयार करनेकी प्रक्रिया।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—गर्भ-स्राव, रक्ताल्पता; शूल; कब्जियत; ज्वर; अकड़न; सुस्ती; बाधक; पेशाबकी तकलीफ, जरायुमें गड़बड़ी; बवासीर; मूर्च्छा; वायुसे उत्पन्न शूल; अजीर्ण; श्वेतप्रदर; ज्यादा रज निकलना; पेशियोंका शूल; गर्भिणीका वमन; बन्ध्यत्व; जरायुका हटना।

प्रकृतिगत लक्षण।—शारीरिक और मानसिक अवसाद; जरायुकी बीमारीके साथ क्षुधा-हीनता; थोड़े भोजन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही पेट फूलने लगता है। दुबलापन ; गर्भावस्थामें वमन ; जरायुकी कमजोरीकी वजहसे ऋतु बन्द या बहुत ज्यादा रजस्राव होनेका लक्षण ; गर्भ-स्राव होनेका लक्षण ; बांझपन ; बहुत दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहसे दुबलापन और सुस्ती।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—उद्यम और शक्तिहीनता ; मानसिक शक्तिकी जड़ता, मन स्थिर न कर सकना। सरमें चक्करके साथ मूर्च्छा-भाव ; मुँहसे फेनभरी लार बहना। भूखमें गड़बड़ी ; थोड़ा ही खानेसे पेट फूलने लगना ; आध्मान शूल।

मलद्वारमें मलभरा, चेष्टा या वेग न रहना, मानो पक्षाघात हुआ है। मल बड़ा, सूखा और दर्द-भरा।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें बहुत मासिक स्रावके साथ प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होना। जरायु भारी और जरायुका टलना। श्वेत-प्रदर, गर्भस्राव होनेका लक्षण।

सम्बन्ध।—सदृश—हेलोनियस। वाइवर्नम (गर्भ-स्राव) चायना, सैबाइना, पल्स, कालोफाइलम, फेरम, कास्टिक (खाँसनेपर पेशाब टपकना), ऐल्यूमिनियम (कब्जियत)।

शक्ति।- मूल अर्क ३री, ३० वीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐल्फाल्फा। (Alfalfa).

दूसरा नाम।—मेडिकेगो सैटाइवा।

रोगमें प्रयोग और प्रकृतिगत लक्षण।—परिपोषणमें सहायता और भूखको बढ़ाकर शरीरकी ताकत बढ़ाता है। इस वजहसे शारीरिक और मानसिक तेजकी वृद्धि होती है। इसके साथ ही शरीरका वजन बढ़ता है। बहुमूत्र और फास्फेट-मिला पेशाब और प्रोस्टेट ग्रन्थिके कड़ेपनकी वजहसे पेशाब करनेमें उत्तेजना पैदा करता है। वात होनेवाली धातुवाले मनुष्य यदि इसे सेवन करें तो रोगसे इतनी तकलीफ नहीं पाते हैं।

सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—किसी समय खूब फुर्ती, कभी मानसिक जड़ता और औंघाई। संध्याके समय दुःखित भाव बढ़ जाता है।

मस्तक।—मस्तकका पिछला भाग तथा आँखके बीच और ऊपरी भागमें भार मालूम होना; बाईं ओर और संध्याके समय सरका तेज़ दर्द; कानकी नलीमें रातके समय रुकनेका भाव।

पाकस्थली।—प्यासका बढ़ना, भूख न लगना; बार बार खाता है; दो पहरके पहले ही भूख; मीठा खानेकी इच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलपेट ।—आध्मान वायुसे भरा। आहारके कई घण्टे बाद आँतोंकी तरह आध्मान वायुकी हलचल मालूम हो।

बार बार पीले रंगका पतला मल ; पेटमें दर्द ।

कुछ दिनोंका या पुराने प्रकारका उपाङ्ग प्रदाह (chronic appendicitis).

पेशाब ।—मूत्रपिण्ड या मूत्र-ग्रन्थि निष्क्रिय बार बार पेशाबका वेग। बहुत ज्यादा और बार बार पेशाब। पेशाबके साथ युरिया इण्डिकान फास्फेट वगैरह यथेष्ट परिमाणमें निकलता है।

निद्रा ।—इसके सेवनसे शान्तिदायिनी सुनिद्रा होती है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐवेना-सैट, जेल्स, कैलि-फास। एसिड-फास, ज़िङ्कम।

मात्रा ।—मूल अर्क ५ बूंद।

ऐलियम सेपा (Allium Cepa)।

दूसरा नाम ।—सेपा।

औषध तैयार करनेकी प्रक्रिया ।—डा० हेरिङ्गने इसकी परीक्षा की थी, पियाज छीलकर मांड जैसा बनाकर ऐलकोहलके सहारे अर्क तैयार होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—मलद्वारका फटना; उदरी; बहुव्यापक सर्दी; सर्दी; नाकसे पानी गिरना; खाँसी; उदरामय; मुँहकी पेशियोंमें पक्षाघात। पैरमें सहजमें दर्द; पैरमें पानी लगना; आंत उतरना; स्वरनलीका प्रदाह; अंगुलहाड़ा; न्यूमोनिया; चोट लगनेकी वजहसे बीमारी; क्रूप (कुकुट) खांसी।

प्रकृतिगत लक्षण।—इस देशमें अकसर कच्चे पियाजका छिलका छुड़ाने या पीसनेके समय, छींक, सर्दी, नाकसे पानी गिरना वगैरह हुआ करता है। इसलिये बहुव्यापक सर्दी रोगमें इसके प्रयोग और उपकारके विषयमें प्राय: सभी जानते हैं। सर्दी, खाँसी, सरमें दर्द **जब गर्म घरमें बढ़े और खुली हवामें आराम मालूम हो**—यह लक्षण मौजूद रहे तो इस दवासे बहुत लाभ होता है। पलक, नाक, मुँह, मूत्राधारकी त्वचा आदिमें जलन, संध्यामें बढ़ना। नाकसे जख्म पैदा करनेवाला सर्दीका स्राव, आँखोंसे पानी गिरना, ठण्डी तर हवा लग जानेके कारण बीमारी और श्लेष्मा-प्रधान धातु—इस दवाका निर्देशक लक्षण है। नश्तर लगवाने बाद स्नायुओंमें प्रदाह; चोटकी वजहसे दर्द नहीं जाता। चलते समय पैरसे पैर लड़ जाता है, **बांई ओरकी** बीमारीमें ज्यादा लाभ-दायक है। सोनेके पहले कच्चा पियाज खानेपर नींद खूब आती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध ।—तुलनीय—एलियम-सैटा, ऐलो, लिलियम, जेल्स, आयोड ।

दोषघ्न ।—आर्निका (दाँतोंके दर्दमें), कैमो (पेटके दर्दमें), नक्स-व, (सर्दीमें), विरेट्रम (शूल), थूजा (सांस लेनेमें बदबू) ।

अनुपूरक ।—कास, पल्स, सार्सा, थूजा ।

शक्ति ।—३री, ६ठी और ३०वीं ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—विषन्न भाव; बुद्धिकी जड़ता । सर्दीकी वजहसे माथेमें दर्द, आँखोंमें जलन, और आँखोंसे पानी गिरना । कानका शूल । नाकसे जखम पैदा करनेवाला पानीकी तरह सर्दीका स्राव, कण्ठनालीमें दर्द । पेटमें दर्द । स्वरभंग, सांस लेनेमें तकलीफ होना । शिराका प्रदाह ।

ज्वर ।—सर्दी ज्वर । नाड़ी भारी और तेज़ ।

एलियम सैटाइव्हा । (Allium Sativa)

दूसरा नाम ।—गार्लिक, लहसुन ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़े लहसुनसे मूल अर्क तैयार होता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है:—केश झड़ना या टाक पड़ जाना; दमा; श्वासनालीका प्रदाह; सर्दी; शूलका दर्द; कब्जियत; खांसी; कमरका दर्द; माथेमें पपड़ी जमनेवाला जखम; बहुमूत्र; अतिसार; अजीर्ण; ज्वर; सरका दर्द; पुट्ठेमें दर्द; वातवेदना; स्वरभंग; रक्तस्राव; आंखोंका प्रदाह (आँखें उठना); लार बहना; चर्म्म-रोग; मोच खाना; अंगुलहाड़ा, खांसी; कृमि।

प्रकृतिगत लक्षण।—डा० टेस्टीने इसे ब्रायोनियाकी श्रेणीमें रखा है। मांस खानेवाले, दृढ़, स्थूल और काले मनुष्य, जो बहुत ज्यादा भोजन करनेवाले हैं, जो ज्यादा उत्कण्ठित रहते हैं, उनकी बीमारियोंमें यह बहुत उपयोगी है। रोगीको आशंका रहती है, कि वह अच्छा न होगा; फेफड़ेमें क्षयरोग पैदा होनेकी शंका रहनेपर इस दवाके प्रयोगसे खांसी और कफ घट जाता है। यह बैसिलिनम्की तरह लाभ दिखाता है। ताप घट जाता है और रोगीका शरीर पुष्ट होने लगता है।

रक्त-पित्त रोग या फेफड़ेसे रक्त-स्रावके साथ श्लेष्मा निकलना और पुरानी खांसी; ठण्ड सहन हो और त्वचापर विसर्प होनेवाले धातुके मनुष्योंको खूब फायदा करता है। ऐलियम सिपाके सदृश होनेपर भी विसदृशकी तरह काम करता है। बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएँज़ा); **जीभपर मानो**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लेश अटका है—ऐसा मालूम होना लक्षण इसका विशेष निर्देशक है। खांसीके साथ बदबूदार निश्वास।

मुँहमें मोठी लार, धूम्रपानके समय खांसी। लेटनेपर रोगका बढ़ना। संध्याके समय रात्रिमें और सवेरे ठण्डे समयमें वृद्धि। झुककर बैठनेसे आराम मिलना।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ब्रायो, कैम्फि (बदबूदार श्वासके साथ खांसी), कलोसिन्थ (शूल), इग्ने; कैलिबाई (सूतकी तरह कफ निकलना, जीभपर क्लेश अनुभव), रस-टक्स, हायोसा (विष प्रयोगका भय) लाइको, नक्स-व, सिनेगा।

प्रतिपूरक।—आर्सेनिक; **दोषघ्न**—लाइकोपोडि।

शक्ति।—३री, ६ठी, ३० और २००।

ऐल्नस रूब्रा। (Alnus Rubra).

दूसरा नाम।—रेड् अल्डार! ऐलनस् सेरुलेटा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये पत्ते और जड़से मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है (डा० क्लार्क):—ऋतु रोध; ग्रन्थियोंका बढ़ना; प्रमेह; रक्तस्राव; दादके जैसा उद्भेद; श्वेत-प्रदर; कितने ही तरहके चर्मरोग; सोरा-विषसे दूषित मनुष्यका वात; सन्धिवात; गण्डमाला; उपदंश इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिगत लक्षण।—इसकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा नहीं हुई; व्यवहार करनेवालोंका दल (eclectis) इसको एक परिवर्त्तन करनेवाली (alterative) दवा समझकर व्यवहार करते हैं। गण्डमाला दोष, पथरी रोग, उपदंश, सर्दी, वात, प्रमेह और बहुतसे रोगमें इससे लाभ होना प्रसिद्ध हो रहा है। पाकाशयिक ज्वरमें, और पेटमें वायु एकत्र होनेके कारण जो अजीर्ण रोग होता है, उसमें तथा स्त्री-जननेन्द्रियके रोगमें यह लाभदायक है।

संक्षिप्त सार्वाङ्गिक लक्षण।

प्रदाह तथा प्रदर रोगमें अपत्य-पथ (सन्तान होनेवाली राह) में जखम; जरायु-ग्रीवाकी झिल्लियोंके क्षयकी वजहसे सहजमें ही रक्त-स्राव; रजका रुकना; पीठसे लेकर विटपकी हड्डीके संयोगकी जगह (pubic) तक जलन मालूम होना। पाखाना होनेके बाद जलन; बहुत दिनोंतक रहनेवाला खसड़ा और दर्द, कितनी ही तरहकी खुजली पैदा करनेवाली फुन्सियाँ; ऐसी खुजली मानो चूंटी रेंग रही है।

सम्बन्ध।—हैमामेलिस, स्टिलिञ्जिया, फाइटो, लि-आयोड, मार्क्यू, नक्स-व, बैप्टि।

शक्ति।—निम्न-शक्तिका ही व्यवहार होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐलो-सोकोट्रिना। (Aloe Socotrina).

दूसरा नाम।—घी-कुवारका सार, मुसब्बर इत्यादि।

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस पौधेके रस या सतसे दवा तैयार होती है।

रोगमें प्रयोग।—निचले उदरमें प्लेथोरा या थुल-थुलापन; मलनाली या गुदा स्थानमें दर्द; श्वासनलीका प्रदाह; पेटमें दर्द; कब्जियत; खांसी; अतिसार; आमाशय; प्रमेह (नया या पुराना); अर्श; मूर्च्छावायु; कमरका दर्द; नकली मैथुनका दुष्परिणाम; यक्ष्मा-कास; गुदा-स्थानमें प्रदाह; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना; कमरके पिछले भागके नीचे दर्द; वेग या काँखने जैसा दर्द।

प्रकृतिगत लक्षण।—यह एक पुरानी और मशहूर दवा है। ऐलोपैथ लोग मल साफ करनेके लिये, रेचक रूपमें सबके पहले इसका व्यवहार करते हैं, सलफर इसका दोष दूर करनेके रूपमें काम करता है। पुरानी बीमारियोंमें जहां बहुत सी दस्तावर दवाएँ काममें लायी जा चुकी हैं, वहां सलफरका प्रयोग कर इलाज आरम्भ करना उचित है।

कभी कभी ऐलो, सलफरकी तरह काम करता है।

यह बहुत कुछ ऐलियम-सिपाके समान है। पुरानी बीमारियोंके इलाजमें देखा जाता है, कि जिसके शरीरमें ताप कम है, जो कभी प्रसन्न और कभी दुःखी रहते हैं—जिनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीरपर एक तरहका उद्भेद पैदा होता है, उनकी बीमारीमें यह अधिक लाभ करता है।

डा० कैरल डनहमने एक बूढ़े आदमीके सर दर्दको ऐलो देकर आराम किया था। यह सर-दर्द पर्यायक्रमसे जाड़ेके दिनोंमें बढ़ता था और गर्मीके दिनोंमें पतले दस्त होनेपर बन्द होता था।

इसकी क्रिया तलपेट और वस्ति-स्थानके यंत्रोंपर अधिक दिखाई देती है। छूनेसे दर्द; भोजनके बाद ही पाखाना लग आना, पेट फूलना, अकड़न इत्यादि। कभी कभी गुदा-स्थानसे अनजानमें आपही आप मल बाहर निकल पड़ता है। एक बच्चेको किसी तरह पाखाना होता ही न था। कभी कभी शय्यापर अनजानमें ढेला ढेला मल निकल पड़ता था। यह देखकर डा० नैशने ऐलो २०० शक्ति देकर उस बच्चेको आरोग्य किया। हजामत बनवानेके समय अनजानमें पतला पाखाना हो जाना। ठीक सलफरके लक्षण जैसा अतिसार। अर्शकी बाहरी बलि ठीक अंगूरके गुच्छेकी तरह।

वृद्धि।—सवेरे, गरमीके दिनोंमें, गर्म प्रयोगसे; खाने-पीनेके बाद; खड़े होनेपर; आलसीकी तरह बैठे बैठे दिन काटनेपर।

ह्रास।—ठण्डे प्रयोगसे, बाहरी हवामें रोगी अच्छा रहता है। पाखाना हो जाने बाद अच्छा रहता है।

सम्बन्ध।—सदृश—सलफ—आँतोंमें खूनकी अधिकता; ऐमोन म्यूर; नक्स; पोडो; लाइको।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न ।—सल्फ, कैम्फर ।

शक्ति ।—६, ३०, २०० ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिन ।

सार्वाङ्गिक लक्षण ।

मन ।—मानसिक परिश्रमसे थकावट और कातरता ; चिड़चिड़ा स्वभाव ; अवसाद वायु ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; सीढ़ी चढ़नेके समय, ललाट भरमें सर दर्द । सरमें दर्द और गृध्रसी (साइटिका) एकके बाद एकका होना ।

आँखें ।—कांपती हुई दृष्टि, सब चीजें लाल दिखाई देती हैं । ऐसा मालूम हो मानो एक पीला गोला आँखके सामने उड़ रहा है । दोनों जबड़ोंको चलानेके समय कानमें काँच टूटनेकी तरह कड़कड़ाहटकी आवाज़ हो उठती है ।

नाक ।—जागनेपर नाकसे खून गिरता है ।

पाकाशय ।—मुँहमें तीता स्वाद, माँससे अरुचि, भोजनके बाद आध्मान वायु एकत्र रहनेकी वजहसे शूलका दर्द ।

उदरामय ।—**भोजनके बाद ही दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है** (क्रोटन) । मलद्वारको ढकनेवाली पेशियोंकी कमजोरी, मल और माड़की तरह ढेलाढेला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँव अनजानमें बाहर निकल पड़ती है। मल त्यागनेके पहले आँतोंमें आवाज़ ; मसे नीले। अंगूरके गुच्छेकी तरह।

मलद्वार।—खुजली और जलन।

श्वास-यंत्र।—यकृतवाले स्थानसे छातीतक सुई बेधने जैसा दर्द और इसके साथ ही श्वास-कष्ट।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें भार, पिछली कमर और नितम्बमें प्रसवकी दर्दकी तरह दर्द, रक्तस्राव, असमयमें ऋतु होना और थोड़ा रक्त तथा श्लेष्मा मिला प्रदर।

पीठ।—कटिवात और सरमें दर्द एकके बाद एक होना। या अर्शके साथ पर्यायक्रमसे प्रकट होना, अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुन्नकी तरह मालूम होना।

त्वचा।—हर बार जाड़ेके दिनोंमें खुजली प्रकट होती है।

ऐलष्टोनिया कानस्ट्रिक्टा और स्कोलरिस।

(Alstonia Constricta and Scholaris).

ऐलोस्टोनिया स्कोलरिसको।—सप्त-पर्णी या छातिम कहते हैं। यह भारतवर्ष और मालावारमें पैदा होता है।

एलोष्टोनिया कानस्ट्रिक्टा।—न्यूसाउथवेल्स क्विन्सलैण्डमें पैदा होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी छाल और रेक्टिफायड स्पिरिटमें मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—सुस्ती, अतिसार, आमाशय, मलेरिया ज्वर, बहुत ज्यादा स्तन-पिलानेका दुष्परिणाम, श्वेत-प्रदर, हृद्‌कम्पन (कलेजा काँपना), खूनकी कमी, गर्भावस्थामें कै, जरायुकी कमजोरी।

प्रकृतिगत लक्षण।—फैरिङ्गटनने कहा है—मैलेरियासे पैदा हुए उदरामयमें उपकार हुआ है। डा० डीट्‌ज (Ditz) ने इसकी परीक्षा की थी। पचानेकी शक्तिकी कमीकी वजहसे कमजोरीमें लाभदायक है। खाते-खाते पाखाना लग आता है, मलमें खाये हुए पदार्थके कण दिखाई देते हैं। क्विनाइनके अपव्यवहार या लोहा सेवन करनेकी वजहसे अतिसारमें जब पल्स, सलफर, और नेट्रमसे लाभ नहीं होता; उस समय इसको १x शक्तिसे लाभ होता है। श्वेत-प्रदर, नींद खुलने बाद ही कलेजा कांपना।

सम्बन्ध।—वृद्धि।—उद्यम करनेपर।

आराम।—सोनेपर।

सदृश दवाएँ।—लिलियम, हेलोनि, चायना, फेरम इत्यादि।

शक्ति।—६x, ३० और २००।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐल्युमेन (Alumen)

दूसरा नाम।—फिटकिरी, पोटास-ऐलेम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—६x पर्यन्त विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—शराब पीनेका कुफल, गुह्यद्वार या मलनालीकी बीमारी, श्वासनलीका प्रदाह, शूल-वेदना, कर्कटीय जखम, कब्जियत, बहुमूत्र, अतिसार, रक्तामाशय, खुजली, प्रमेह, स्वरभंग, रक्तस्राव, अधकपारी, श्वेत-प्रदर, पक्षाघात, अन्ननलीका संकोचन, बहुपाद (Polypus, शीताद, कितने ही स्थानोंमें खुजली, टेढ़ी दृष्टि, दाँतमें नश्तर गलक्षत, रक्त-स्राव आदि तथा अलिजिह्वाकी शिथिलता या उसका झूल पड़ना, योनिमें अकड़न।

प्रकृतिगत लक्षण।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें सूखापन और संकोचन इसका प्रधान गुण है। कब्जियतमें जहाँ आँतोंकी निष्क्रियता, और सूखेपनकी वजहसे वेग नहीं होता वहां इससे लाभ होता है।

कब्जियत।—जरायु और मलद्वारमें कर्कटीय ज़खम। सान्निपातिक ज्वरमें निद्रितावस्थामें चिल्ला उठना, रोगका आक्रमण, कलेजा धड़कना, श्वासनाली प्रदाहमें पीले रंगका कफ़ निकलना, आँखोंके सफेद अंशका साफ न रहना। सर्दी सहन नहीं होती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—बुरा समाचार सुननेसे ही कलेजा धड़कने लगता है ।

मस्तक ।—माथेमें जलन, सरमें चक्कर, टेढ़ी दृष्टि ।

मुखमण्डल ।—दांत उखड़वानेकी वजहसे यदि रक्तस्राव हो तो इसके प्रयोगसे बन्द होता है । (रक्त-स्रावी धातु हो तो फास्फोरस, प्लीहासे पैदा हुए रक्तस्रावमें क्रोटेलस ।)

मलद्वार ।—मलद्वारका फटना, नीचे जानेवाली बड़ी आंतमें दो टेढ़ी भांज, कर्कटका अर्बुद ; पतला पाखाना भी ज़ोर लगाये बिना नहीं होता । आन्त्रिक ज्वर (टाइफायड) में जमा हुआ रक्तस्राव ।

मूत्रयंत्र ।—बहुमूत्र, स्वप्नदोष, धातु जाना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—डिम्बाधारमें शूल (बाईं ओर अधिक) और जरायु तथा स्तनोंकी गांठोंमें कड़ापन ।

त्वचा ।—कठिन त्वचामें जखम, पतली भीतरी त्वचामें कर्कटका जखम, शिराओंका फैलना या चौड़ा पड़ना ।

ज्वर ।—हलके बोखारमें नाड़ीका वेग धीमा और मृदु, सान्निपातिक ज्वरमें रक्त-स्राव और प्रलाप ।

सम्बन्ध ।—सदृश गुण—ऐल्युमिना, ऐलोज, मार्कुरियस-व, पल्स, सलफ, जिङ्कम ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न ।—कैमो (पिटमें दर्द), नक्स-व (दर्द)।

शक्ति ।—३० और २०० या और भी ऊंची शक्ति।

एल्युमिना।

(Alumina)

दूसरा नाम ।—आक्साइड आव ऐल्युमिनियम्।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—६x तक विचूर्ण, इसके बाद अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग ।—गुदा-स्थानको कितनी ही बीमारियां ; फोड़े ; बाघी ; सर्दी ; खांसी ; निराशासे पैदा हुए रोग, रक्तामाशय ; अजीर्ण ; खुजली-खसड़ा ; आंखको कितनी ही बीमारियां ; फटना ; नासूर ; नखकी बीमारियां ; कानसे पीव गिरना ; नाकमें पुराना जख़्म ; पक्षाघात ; गर्भावस्थाकी कब्जियत ; सरका दर्द ; आंत उतरना (हार्निया) ; श्वेत-प्रदर ; निचले अंगका पक्षाघात ; **कब्जियत,** दांतमें दर्द ; प्रोस्टेट ग्रन्थि या मूत्राधारको मुखशायी ग्रन्थिसे रसकी तरह पदार्थ बहना ; गण्डमाला ; डेरा देखना ; स्वाद बिगड़ना ; खुजलानेवाले रसभरे उद्भेद ; चमड़ेकी बीमारियां ; गलेका जख़्म ; जबड़ा अटकना ; मस्तिष्कविकार या सन्निपात।

प्रकृतिगत लक्षण ।—यह एल्युमेनकी तरह श्लैष्मिक झिल्लियोंमें उत्तेजनाके साथ सूखापन पैदा करता है। गुदास्थानकी अनैच्छिक पेशियोंका पक्षाघात और अम्ल या सीसाके दोषको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नाश करनेके रूपमें काम करता है। पतला मल भी काँखे बिना बाहर नहीं निकलता। बच्चे और गर्भिणीमें इसी तरहकी पाखानेकी तकलीफ दिखाई देती है, पाखाना फिरनेके समय वेग देनेकी तरह वेग देनेपर कहीं पेशाब होता है। डा० **टैस्टी** (Dr. Tasti) इसको सिपिया और कोपेवाका समपर्याय-वाला समझते हैं। **साइलिसिया जिस तरह पल्सका, उसी तरह एल्यमिना सिपियाका** बचा हुआ काम पूरा करता है। कुछ कम दिखाई देनेवाले, सिकुड़े त्वचावाले और सूखी देहवाले वृद्ध मनुष्योंके लिये, तथा मृत्पाण्डु या हरित रोगवाली अवस्था प्राप्त बालिकाओंके लिये और नकली दूधसे जो बच्चे पाले जाते हैं, उनके लिये और श्लेष्मा-प्रधान धातु-वाले बच्चोंके लिये उपयोगी है।

डा० क्लार्कने कहा है—आलसी मनुष्योंके रोगमें; सोरा-विषवाले मनुष्योंकी बीमारीमें, और जिनके शरीर-में ताप कम है, उनकी बीमारियोंमें यह लाभदायक है। चर्म्म-रोग या किसी तरहका उद्भेद बैठ जानेपर इसके सेवनसे लाभ होता है।

डा० गैरेन्सीका मत।—चेहरेपर मानो मकड़ेका जाल अटका है। रोग दुबारा आक्रमणके समय ज्यादा वेगसे आक्रमण करता है।

वृद्धि।—अमावस्या और पूर्णिमाको; संगम-क्रियाके बाद; सवेरे और रातमें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रास।—स्नानके बाद, गर्म खाने-पीनेके बाद।

सम्बन्ध।—ऐल्यूमिनियम धातुकी परीक्षा करनेपर इसी तरहके बहुतसे लक्षण उत्पन्न हुए हैं। इस धातुके बने वर्त्तन व्यवहार करनेपर, ज्यादा खट्टा या क्षार द्रव्यके उसमें मिलनेसे बुरे लक्षण पैदा होते हैं, और अस्वाभाविक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। हम लोगोंको खासकर कलकत्तावासियोंको कब्जियत इसका विशेष परिचायक है।

यह सीसाका दोष नाश करनेवाला है। ब्रायो, कैमो, और इपिकाकसे यह प्रतिषेधित होता है। ब्रायोनियाका इसका अनुपूरक है।

तुलनीय।—ऐल्यूमिन, लाइकोपोडी, आर्जेण्ट-नाइट्र (गलेका जखम और पक्षाघात), बैराइटा (विषादके कारण उन्माद रोग), कोनायम (वृद्ध-व्यक्ति), ग्रैफाइ, फेरम (मृत्या-ण्ड-रोग), फेरमआयोड (बहुत ज्यादा साफ़ पानीकी तरह प्रदर), लैकेसिस (वयःसन्धिके समयकी बीमारी), पिकरिक एसिड, प्लम्बम (कब्जियत और शूल), एन्सटिला (रोनेवाली प्रकृति), रूटा (आंखोंकी भीतरी रंकाई पेशीकी शक्तिका गायब हो जाना)।

शक्ति।—६ठी, ३० या २००। इससे भी ऊँचा क्रम।

क्रियाकी स्थिति।—एक महीनेसे दो महीनेतक।

द्रष्टव्य।—ऐल्युमिनाका कार्य धीरे धीरे प्रकट होता है। इसे जल्दी ही बदल देना उचित नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—**आत्महत्याकी इच्छा,** पर मृत्युभयसे आत्महत्या कर नहीं सकता। आराम होनेके विषयमें निराशा, मानो ऐसा मालूम होता है, कि पागल हो जायगा।

माथा।—सरमें चक्कर ; सरमें दर्द ; आंखोंका प्रदाह ; सब चीजें पीली दिखाई देती हैं।

कान।—कानमें आवाज़—कर्णनाद।

नाक।—नाकमें सर्दी, बार-बार छींक आना ; नाकके जखमसे सूखी पपड़ीके साथ पीले रंगकी गाढ़ी सर्दी ; सूंघनेकी शक्तिका घट जाना। चेहरेपर मकड़ीका जाला जैसा लगा मालूम होना। मुँहमें बदबू, दांत कड़कड़ाना। गलेके भीतर ऐसा मालूम होना मानो कांटा अटका है ; गलेकी नली सिकुड़ी मालूम होना।

पाकाशय।—खड़िया, कोयला और सूखे द्रव्य खानेकी प्रबल इच्छा। मांससे अनिच्छा, छातीमें जलन, मुँहमें जखम, मसूढ़ेमें दर्द, आलू खानेपर बीमारीका बढ़ना।

उदर।—पेट फूला ; मल कड़ा न होनेपर भी सहजमें बाहर नहीं निकलता। नर्म मल भी जोर लगाकर बाहर निकालना पड़ता है।

पुं०-जननेन्द्रिय।—प्रबल-रमणीच्छा, मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिसे पाखानाके समय जोर लगानेपर रसकी तरह पदार्थ बह पड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ही साफ़ पानीकी तरह बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव, स्राव इतना ज्यादा कि पैरतक टपक पड़ता है।

श्वास-यन्त्र।—सूखी खांसी, सवेरे सांस लेनेमें कष्ट, स्वरभंग, सवेरे और संध्याके समय बढ़ना। बोलने, गाने या चटनी खानेसे खांसी बढ़ती है।

हृत्पिण्ड।—कलेजा कांपना, सवेरे उठनेपर यह तकलीफ ज्यादा होती है। अनियमित स्पन्दन।

पीठ।—बैठने या आराम करनेके समय कमरमें दर्द। मेरुदण्डकी हड्डीमें दर्द। चिबानेकी तरह दर्द, मानो गर्म लोहेसे दग्ध किया जाता है। पीठ और कमरमें चोटसे पैदा हुए दर्दकी तरह दर्द।

अंग-प्रत्यंग।—हाथ लटका रखनेपर बहुत ज्यादा दर्द होता है। निचले अंगका सुन्न पड़ जाना; अंगूठेमें जलन, जखम, नख टूट टूट जाना। पैरपर; पैर रखकर बैठ जानेसे पैर सुन्न हो जाते हैं।

त्वचा।—छोटी माता जैसे दाने। थोड़ी ही चोटमें दर्द और जखम। सूखी दादकी तरह फटे फटे उद्भेद, नख सहजमें ही टूट जाता है।

नींद।—आधी रातके पहले नींद नहीं आती है। बेचैन नींद; चोर, डाकू, जन्तु-जानवर, लड़ाई-झगड़ा, कलह, मृत्यु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभृतिके सपने दिखाई देते हैं। स्वप्नमें हँसता, रोता और बातें करता है। सपनेमें घूमना, सपनेमें गोंगिया उठना।

ज्वर।—नाड़ी पूर्ण और तेज़; कपकपीके साथ बोखार। संध्याके समय जाड़ा लगकर बोखार। रात बीतनेके समय पसीना। पसीना अधिकतर मुँहपर ही होता है या शरीरमें एक बगल पसीना होता है।

एल्युमिना सिलिकेटा।

(Alumina Silicata)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—६x तक विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—मस्तिष्क, मेरुदण्ड और स्नायुकी पुरानी बीमारीमें इसकी गहरी क्रिया होती है। इसका साधारण लक्षण है, शरीरके समस्त द्वारोंका संकोचन। शिराओंका फैलना या बढ़ना। मेरुदण्डमें दाह और ऐंठन,सारा शरीर सुन्न जैसा, दर्द और कीड़े रेंगनेकी तरह मालूम होना। मृगीकी तरह अकड़न आदिमें उपयोगी है। मस्तिष्कमें रक्त-संचय, मस्तक और आंखोंके आगे चिनगारियाँ उड़ने जैसा मालूम होना। नाकमें जखम।

संक्षिप्त लक्षण।

छातीमें सुई बेधने जैसा दर्द, छातीमें खाली खालीका भाव मालम होना; अकड़नवाली खांसीमें पीवकी तरह लसदार कफ़ निकलना। शरीरमें भार, सुन्न, ऐंठन और स्नायुमें कीड़े

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेंगने जैसा मालूम होना। शिराओंका फलना या शिथिलता-का भाव। त्वचामें अकड़न।

वृद्धि।—ठण्डी हवामें, भोजनके बाद और खड़े होने-पर।

उपशम।—गरममें, उपवासमें और सोनेपर।

शक्ति।—हमेशा ऊंची शक्ति काममें लायी जाती है।

ऐम्ब्रा ग्रीसिया।

(Ambra Grisea).

दूसरा नाम।—एम्ब्रा-बिरा, एम्ब्रा मेरिटिमा।

औषध-परिचय।—तिमि मछलीकी आँतके बीचसे या यकृतको तृप्त करनेवाले गन्ध-मिले स्रावसे यह दवा तैयार की जाती है।

रोगमें प्रयोग।—गुदा-स्थानका प्रदाह; दमा; मुँह-चोर (लजालु) मस्तिष्कका कोमल मालूम होना; हृत्पिण्डमें गड़बड़ी; श्वास-रोग; अकड़न; खांसी; बहरापन; दुबलापन; नाकसे खून गिरना; मुंहमें दाने; मूर्च्छावायु; अनियमित ऋतु; गाना-बजाना अच्छा नहीं लगता; स्नायविक दुर्बलता; कँवल रोग; कामोन्माद; योनिद्वारमें खुजली; सूतिकाक्षेप; जीभके निचले स्थानपर दाने; प्रतिक्रिया आरम्भ होनेपर भी नहीं होता; प्लीहामें दर्द; पेट फूलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता।—आदमियोंको भीड़में जानेसे संकोच, जानेपर अच्छा न मालूम होना; भीड़में जानेपर खांसी बढ़ जाती है। वैषयिक विभ्राट या व्यवसायमें हानिको वजहसे नींद न आना। जीभके नोचे अर्बुदको वजहसे मुंहमें बदबू; तलपेटमें ठण्ड मालूम होना। दो ऋतुओंके बीचके समयमें ज्यादा परिश्रम करनेको वजहसे अथवा पाखानेमें जोर लगाने पर रक्तस्राव। प्रदर—केवल **रातके समय** स्राव। अकड़न-भरी हूप खांसी, इसके बाद डकार आना।

शरीरके एक ओर बीमारी, सुन्न होना; बहरापन; दुबले और बुड्ढे मनुष्योंको बीमारी। स्नायविक और पैत्तिक धातु। रोगी थककर सोने जाता है पर तकियेपर माथा रखते ही नींद खुल जाती है। गन्दा, नीला, सफेद, स्लेष्मा-भरा, प्रदर। रातमें खांसी। आक्षेपिक हूप-खांसीमें स्वरभंग। स्नायुप्रधान मनुष्योंके लिये उपयोगी है।

वृद्धि।—गर्म पीना, गर्म मकान, संगीत सुनने, ऊँचे स्वरसे बोलने या पढ़नेसे अथवा अधिक मनुष्योंके बीचमें रोग बढ़ना।

ह्रास।—भोजनके बाद, ठण्डी हवामें, ठण्डा खाने-पीनेपर और खाटसे सोकर उठनेपर घटना।

सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—मोटी-बुद्धि, पागलपन हो जानेको आशंका; गाना सुननेपर रुलाई आ जाती हो, (ऐकोन, नेट्रम, क्रियोज)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार या धन सम्बन्धी असफलताके कारण नींद न आना। लज्जालु : जीवनसे उदासीन, विषाद, एकान्तमें रहना अच्छा मालूम हो ; मानो स्वप्न देख रहा है ; भूल जानेकी आदत।

मस्तक।—सरमें चक्कर, ललाटमें छेदने जैसा दर्द। माथेकी ओर दर्द ; केश झड़ जाना। आंखोंपर भार मालूम होना ; पलकोंमें खुजली, आंखोंके सामने कुहासेकी तरह दिखाई देना, अच्छी तरह दिखाई न देना, टेढ़ी दृष्टि।

कान।—सुननेकी शक्तिकी कमी, कानोंमें कुटकुटी। संगीतकी आवाज़से खांसी बढ़ जाती है।

मुंह।—नाकसे रक्त बहना ; जीभके नीचेका अर्बुद, मुँहमें बदबू। दाँतोंमें दर्द, खासकर क्षय हुए दांतोंमें, दांतोंकी जड़ फूली ; मानो गलेमें कुछ अटका हुआ है। वे-स्वाद ; गर्म दूध पीनेसे रोगका बढ़ जाना।

पाकस्थली।—आधी डकार ; मुंहमें पानी भर आना, दूध पीनेपर छातीमें जलन होना।

तलपेट।—यकृतमें दर्द, आध्मान वायु (पेट फूलना), रातमें आध्मान वायुकी वजहसे पेटमें शूलका दर्द।

मल और मलद्वार।—कब्जियत, निष्फल बेग। ववासीरके-साथ-ही साथ गुदा-स्थानमें मांसका बढ़ना, वहां खुजली और जलन।

मूत्रयंत्र।—सवेरे उठते ही पेशाबका वेग नहीं सम्हाला जाता, पेशाब गाढ़ा और मटमैला, नीचे कोई चीज़ जमती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । खूनमिला पेशाब, पेशाबमें अम्ल, यह अम्लका स्राव रात-में अधिक होना ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गके स्थानपर आराम देनेवाली खुजली । (खासकर सुपारीमें) ; सवेरे लिङ्गमें उत्तेजना, पर संगमका इच्छा नहीं रहती ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—समयके पहले ही बहुत ज्यादा ऋतुस्राव ; दो ऋतुओंके बीचके समयमें ही स्राव होने लगना । प्रदरका रंग नीला, सफेद-श्लेष्मा-मिला । स्राव रातके समय ही अधिक हो ।

श्वास-यंत्रादि ।—स्वरभंग । गाढ़ा और कड़ा कफ मिली खांसी, खांसते खांसते मानो सर फटने लगता है । अपरिमनुष्योंसे मिलने और गाना सुननेके समय खांसीका बढ़ना । क्रुप खांसी ।

हृत्पिण्ड ।—जोर जोरसे कलेजा कांपना ; ऐसा मालूम हो मानो छातीमें एक ढेला अड़ा हुआ है ।

अंग-प्रत्यंग ।—आराम करनेके समय और रातके समय सुन्न भाव, झुनझुनी होना । जांघ और जांघके स्थानकी पेशियोंमें अकड़न, हाथ पैरोंमें अकड़न और ऐंठन ।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचा सूखी, जलन पैदा करनेवाली खुजली । सूखे दाने ।

नींद ।—दिनमें नींद आती है ; पर रातमें धन-सम्बन्धी चिन्ता और व्यवसायमें हानिकी वजहसे नींद नहीं आती ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर।—दो पहरके पहले कम्प होकर बोखार। कमजोरी और औंघाई; नाड़ी तेज। थोड़ी-सी गर्मीकी झलक मालूम होना या आवेश, पन्द्रह पन्द्रह मिनटके बाद होना। थोड़ा परिश्रम करनेसे ही पसीना हो जाना, रातमें पसीना (night sweat)।

सम्बन्ध।— तुलनीय; मस्कस (मूर्च्छाभाव; मूर्च्छा-वायुसे पैदा हुआ दमा)—ऐसाफिटिडा, सोरि (प्रतिक्रिया पूरी न होना)। कोका (लजालु भाव); कैलिब्रोम, नक्स-वमिका (प्रतिच्छिप्त क्रियाकी वृद्धि)। नेट्रम कार्ब्ब (तलपेटमें ठण्डक मालूम होना); सिमिसिफिउगा (रातमें खांसी)। नक्स-व (दुबला और स्नायविक धातु), आर्स (दमा), फास्फो (दमा, स्नायविक उत्तेजना, दुबलापन), सिपि (भारी चीजें उठानेसे बढ़ना) यह नक्स और स्टैफिसेग्रियाका दोष दूर करनेवाला है।

शक्ति।—२ विचूर्ण; ३० और उससे ऊँची शक्ति।

एम्ब्रोसिया (Ambrosia.)

दूसरा नाम।—वार्म उड।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—सर्दी और दमाकी बीमारीमें फायदा हुआ है। हूप खांसीमें लाभदायक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिगत लक्षण ।—दमा; **आंखसे पानी गिरना; पलकोंमें** असह्य **खुजली** । ऐसा मालूम होना, मानो समूची श्वास-नाली रुक गयी है । **कितनी ही तरह का अतिसार**, खासकर गर्मीके दिनोंकी खूनी आंवकी बीमारी।

नाक ।—नाकसे पानीकी तरह सर्दीका स्राव, छींक, रक्तस्राव, नाक बन्द रहना । कण्ठनाली और श्वासनालीमें उत्ते-जनाके साथ दमा । आवाजके साथ खांसी, क्रुप खांसी खास कर रातमें ८ बजेसे लेकर १२ बजेतक बढ़ना ।

आंखें ।—आँखोंमें जलन और कुटकुटी । आंसुओंका स्राव (डा० हलमैन) ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—सैबाडिला, बाइथिया, आर्स; आयोड, ऐरण्डो (arundo).

मात्रा ।—३ और ६ शक्ति । नाकसे शोणित-स्रावमें ४।५ बूंद मूल अरिष्ट पानीके साथ सेवन करना चाहिये । दमामें ऊंची शक्ति सेवन करना चाहिये ।

एमोनियेकम (Ammoniacum).

दूसरा नाम ।—गाम् ऐमोनियेकम् ।

औषध प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके गोंद या लसदार पदार्थसे विचूर्ण तैयार होता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—उपाङ्ग-प्रदाह (Appendicitis). बहुत कमजोरी ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; आँखकी बहुत-सी बीमारियां ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; एकशिरा ; अंगुलहाड़ा।

प्रकृतिगत लक्षण।—इस दवाका एक खास लक्षण है—चिड़चिड़ापन ; यह पहले श्लैष्मिक झिल्लीमें सूखापन पैदा करती है, इसके बाद बहुत ज्यादा श्लेष्मा पैदा हो जाता है। इस तरहके पर्य्यायशील लक्षण कितनी ही दवाओंमें दिखाई देते हैं। आंखोंकी दृष्टिमें गड़बड़ी, आंखोंके सामने तारे, चिनगारियां, धुआँ आदि दिखाई देना। सरमें चोट लगनेकी वजहसे धुंधली दृष्टि। सूखी त्वचामें पानी एकत्र होता है ; बाईं ओर सोनेपर हृत्पिण्डमें तेज़ धड़कन ; सुई वेधने जैसी तकलीफ, अन्ध आँत या सिकम स्थानमें (ceacum) पर्यायक्रमसे, कितनी ही, जगहोंपर सुई वेधने जैसा दर्द। अंग-प्रत्यंग और कमरमें दर्द। जाड़ेके दिनोंमें सब लक्षणोंका बढ़ना। जाड़ेके दिनोंमें बूढ़े आदमियोंको जो खांसी हो जाती है, उसमें लाभ करता है। रोगी समझता है, कि उसको जाँघ फूल गयी है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—आर्निका, ब्रायोनिया। तुलनीय।—ऐसाफि, कोनायम, साइक्यु ; एम्‌ब्रा, अरम, आर्निका (आघात प्रासिका) ; पल्स ; ऐण्टिमटार्ट, (वृद्ध मनुष्योंकी खांसी)।

शक्ति।—२ दशमिक विचूर्ण ; ३० शक्ति हमेशा व्यवहारमें आती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमोनियेकम् बेनजायिकम् ।

(Ammoniacum Benzoicum)

दूसरा नाम ।—बेनजोयेट आफ अमोनिया ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है । विचूर्ण भी तैयार कर व्यवहारमें लाया जाता है ।

रोगमें प्रयोग ।—अण्डलाल मिला पेशाब ; सूजन ; छोटी सन्धियोंका वात ; अजीर्ण ; जीभकी जड़में या नीचे अर्बुद , सन्धिवात या वात वगैरह ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—सन्धिवातवाले मनुष्योंमें अण्ड लाल मिला पेशाब ; सरमें भार ; बुढ़ापेमें पेशाबका वेग न रोका जा सकना ; जड़ता ; पेशाबमें कमी ; सन्धिवात ।

संक्षिप्त लक्षण ।

माथेमें जड़ता और भार मालूम होना । मुंह और पलकें फूली, जीभके नीचे अर्बुद । पेशाब गाढ़ा और अण्डलाल मिला । श्वासनलीमें सर्दी । पीठकी त्रिकास्थिके स्थानपर (sacrum) दर्द । मसानोंमें दर्द ।

सम्बन्ध ।—नैफालियम ; कास्टिकम ; टेरिबिन्थ वगैरह सदृश दवाएँ हैं ।

शक्ति ।—२x से ६x विचूर्ण ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमोनियम ब्रोमेटम ।

(Ammonium Bromatum).

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइट आफ ऐमोनियम ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले पानीमें गलाया जाता है । इसके बाद ऊँची शक्ति सुरासारसे तैयार होती है ।

रोगमें प्रयोग ।—आँखोंकी पेशीका और स्नायुका शूल, मेदका बढ़ना, मोटाई, सर्दी-खांसी, स्वरनालीकी बीमारी, मृगी, मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी, नखकी बीमारी, गण्डमाला, दोष- मिला आंखोंका प्रदाह, डिम्बाधारकी बीमारी, मलनालीका प्रदाह, मसे, क्रूप-खांसी, आंखोंमें मांस-वृद्धि ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—आंखें या डिम्बाधारमें दर्द ; सवेरे आंखें लाल और दर्द-भरी ; पलक फूली और कोनेमें कोचड़ इकट्ठा होता है । **बाईं आंखमें ज्यादा ।** बायें डिम्बाधारमें दर्द और सूजन ; व्याख्यान देनेवालोंका स्वरनाली प्रदाह । सवेरे शय्यासे उठते ही खांसी आरम्भ हो जाना ; खांसते खांसते छातीमें दर्द होना—**रात तीन बजेके समय बढ़ना ।** कफ डोरीकी तरह या सूतकी तरह । सरमें दर्द और मेद बढ़ना ; मस्तक और छाती वगैरह स्थानोंमें दृढ़ बद्ध भाव (कैक्टसकी तरह) । मृगी ; ऐसा मालूम होता है, मानो पेटके ऊपरी भाग- से कुछ सुरसुराकर ऊपर उठता है ; गर्मी या गर्म पानी या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतले पदार्थ पीनेसे रोगी कुछ अच्छा रहता है। ठण्डी या बाहरी हवामें वृद्धि ; दम रुक जानेके डरसे रोगी टहलने लगता है। नखोंका दर्द,कटवानेसे आराम ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—डरा हुआ ; निरुत्साह ; दाहिनी कनपटीमें दर्द, मानो सुई गड़ा रहा है। मुँहमें जलन और कण्ठनालीमें खुजली ; अकड़नवाली और सूखी खांसी ; तकलीफ देनेवाली और अकड़नवाली खांसीमें सारा शरीर हिल उठता है। कभी कभी रह-रहकर खांसी आती है ; खांसी बहुत तकलीफ देनेवाली ; स्वरभंग ; श्वासकृच्छ्रता ; कफ नहीं निकलता ; एकाएक खांसी शुरू होना ; ऐसा मालूम हो मानो श्वास रुक जायगा। एकाएक पाखाना लग आना ; क्रुप खांसी ।

सम्बन्ध ।—सदृश—हायोसा ; कोनायम ; आर्जेण्ट नाई ; केलिबाई ।

मात्रा या शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

ऐमोनियम कार्बोनिकम ।

दूसरा नाम ।—कार्बोनेट आव ऐमोनिया ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें गलाकर ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग ।— दमा ; श्वासनाली-प्रदाह ; खांसी; हड्डीका अपने स्थानसे हट जाना और इस वजहसे दर्द ; शय्या-पर अनजानमें पेशाब हो जाना ; विसर्प ; कमरमें दर्द ; अर्श ; मूर्च्छावायु, फेफड़ेमें सूजन या शोथ ; छोटी माता ; नाकमें किलने ही रोग ; कानकी जड़का प्रदाह ; हाड़ टेढ़ा पड़ जाना ; हड्डीका प्रदाह ; शरीरमें चोटकी वजहसे मोच खाने जैसा दर्द ; वक्षोस्थि (sternum) के स्थानमें दर्द ; दाँतोंका दर्द ; मूत्रक्षारके कारण पैदा हुए विकार ; अँगुल-हाड़ा ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—जिस रोगीको बहुत सर्दी लग जाती हो और जिसे रक्तस्राव अधिक होता हो, उसके लिये उपयोगी है। जाड़ेके दिनोंमें सहजमें ही सर्दी लग जाना। दाहिनी ओर और शिराओंपर ज्यादा काम करता है। लाल-कणिकाका बहुत पैदा होना ; रक्त पतला पड़ जाना, और जैसे-तैसे घाओंका सड़ने लगना-इसमें लाभदायक है। मासिक धर्म होनेसे पहले हैजाकी तरह दस्त आने लगें ; ऋतु आगे बढ़ता जाये और बहुत ज्यादा खून जाना। ऋतुके समय मलद्वारसे भी रक्त जाना ; बवासीर ; मुँह धोनेके समय नाकसे खून गिरे।

मूत्रक्षारकी वजहसे विकार (uraemia); दाँतोंका दर्द ; खाँसते-खाँसते रक्तस्राव ; रात दो बजेसे ५ बजेतक बढ़ना ; चोटकी वजहसे हड्डी खिसक जाना, इस वजहसे दर्द। हाथ या बांहका सुन्न हो जाना ; रोगी ऐसा समझे कि मस्तिष्कमें शिथि-लता आ गयी है। क्योंकि करवट बदलनेके समय वह समझता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, कि माथा उसी ओर झूल पड़ा है। पासकी चीजें साफ़ न दिखाई दें। जाली पड़ना, दृष्टिमें कमजोरी (बहुत दिनोंतक आँखोंके काम करनेकी वजहसे आंखोंमें कमजोरी); सूखी सर्दी; नाक रुकना। मुंहमें पानी भर आना, पेट फूलना; अबाध्य; हताश; डरपोक।

जो अपना शरीर साफ़ नहीं रखते, जिन्हें अमोनिया (smelling salt) सूंघनेका बुरा अभ्यास पड़ गया है, उनकी बीमारीमें "ऐमोन-कार्ब" ज़ियादा फायदा करता है।

ह्रास।—चित होकर सोनेपर (एसिड नाइट्रिक); दाहिनी ओर सोनेपर, दर्दवाली जगहको दबानेपर। ऊँचे मकानमें।

वृद्धि।—झुकनेपर, ठण्डी हवामें, गीला लेप लगानेपर; ऋतुके समय सब उपसर्गोंका बढ़ना।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—आंधी-पानीके दिन दुःखित; भूल जानेवाला और क्रोधी; गन्दा; रोना।

मस्तक।—टपक जैसा दर्द; गर्म घरमें रहने और किसीके दबा देनेपर आराम मालूम होना।

आंखें।—दृष्टि-क्षीणता; रोशनी अच्छी न लगना, बहरापन; दांतपर दांत रखकर दबानेसे आंख, कान और नाकमें एक तरहकी तकलीफ मालूम होना। नाकसे पतली सर्दी निकलते निकलते एकाएक बन्द हो जाती है। नाक बन्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाती हो । नाकसे खून बहना ; बहुत छींक आना । मुंहपर छोटे-छोटे फोड़े, (ऋतुके समय) मुंहमें जखम ; चिबानेके समय जबड़ेमें कड़कड़ाहट जैसी आवाज़ हो ; गलेकी गांठोंमें प्रदाह ; कानसे स्राव ; आध्मान वायु रोगके साथ बदहजमी ।

पाकस्थली ।—पेटमें दर्द, पेट फूलना, मुंहमें पानी भर आना ।

तलपेट ।—पेटमें आवाज़ होना, गड़ागड़ाहट । आंतोंका अपने स्थानसे हटना, पेट फूलनेके साथवाला शूल रोग ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—सुपारी, रेतकी नस और शुक्र-वाही नलीमें खुजली और दर्द । रति करनेकी इच्छा ज्यादा पर लिङ्गमें कड़ापन न हो या संगमके समय खूब कड़ापन न आये । रेतस्खलन (रातके समय) ; प्रास्टेट-ग्रन्थिसे रसकी तरह एक पदार्थका बहना । पाखाना फिरते समय कांखनेसे शुक्रकी तरह पदार्थका स्राव (शुक्र नहीं) ।

मूत्र-यंत्र ।—बार बार अनजानमें पेशाब निकलना ; पेशाब रुक जानेकी वजहसे क्षार विषाक्तता (uraemia) ; बहुत ज्यादा क्षार मिला पेशाब ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—श्वेत-प्रदर, भगमें खुजली और सूजन ; खूनी बवासीर—(ऋतुकालमें) ; सङ्गमकी इच्छा नहीं रहती । बार बार बहुत आर्त्तव बहना ।

श्वास-यंत्र ।—स्वर-भंग, दम अटकना ; फेफड़ेकी सूजन, कलेजा कांपना, कमजोर रोगीकी दुर्बलताकी वजहसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेफड़ेका प्रदाह। नाड़ी कमजोर और जागनेपर श्वास-कष्ट।

अंग-प्रत्यंग।—सन्धियोंमें दर्द। हाथ-पैरमें अकड़न; टेढ़ा-मेढ़ा टूटना, अंगुलहाड़ा। सारे शरीरमें खुजली। पामा (eczema)। बूढ़े मनुष्योंका विसर्प रोग; कीड़ोंका डंक मारना (लिडम), जीवनी-शक्तिकी कमजोरीकी वजहसे उद्भेद अच्छी तरह नहीं निकलते। हड्डीका टेढ़ापन और प्रदाह।

नींद।—दिनमें नींद आना, नींदवाली अवस्थामें एका-एक सांस रुकना, नींदमें बोबियाना (Night-mare),

ज्वर।—नाड़ी पूर्ण, कठिन, तेज, तार जैसी, शामके वक्त जाड़ा लगकर बोखार आना। माथा गर्म, पैर ठण्डे। रातमें और उषाकालके समय पसीना।

सम्बन्ध।—लैकेसिसके साथ सदृश गुण रखती है, पर साथ साथ या एकके बाद दूसरीका व्यवहार नहीं होता, ये दोनों आपसमें शत्रु भावापन्न (inimical) हैं।

दोषघ्न।—यह रास्टक्सको विष-क्रिया, कीड़े काटनेका विष और लकड़ीके कोयलेसे पैदा हुए धुएंकी वजहसे बीमारी-को नाश करती है। आर्निका, कैम्फर, हिपर द्वारा प्रतिषेधित (antidoted by) होती है।

तुलनीय।—एण्टिम टार्ट, आर्स, अरम, फास्फोरस, सलफर। अरम (वक्षोस्थिमें दबाव जैसा दर्द)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा या शक्ति।—६ठी और ३० वीं। निचली शक्ति ज्यादा दिनोंतक रहनेपर खराब हो जाती है।

क्रियाका स्थायित्व।—प्रायः ३०।४० दिन।

ऐमोनियम काष्टिकम्।

(Ammonium Causticum).

दूसरा नाम।—हाइड्रेट आव ऐमोनिया, ऐमोनिया वाटर। ऐमोनियाका एक प्रकारका तेज़ द्रव।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—स्वरलोप या स्वरभंग, मूत्रपिण्ड-का प्रदाह; अन्ननलीका प्रदाह; आमवात और सन्धिवात; सड़ना; प्यास; जखम; डरा हुआ भाव; कै।

प्रकृतिगत लक्षण।—कार्बोनेट आव ऐमोनियाके समतुल्य दवा है (क्लार्क)। कास्टिककी प्रकृतिवाली दवाएँ गलेमें, अन्ननलीमें और मलद्वारमें जलन पैदा करती हैं। तेज प्यास, वमन, स्वरभंग या दम अटकना, गलेकी श्लैष्मिक झिल्लियोंमें सूजन, जोरसे सांस, थूक खून मिला वगैरह इसके बतानेवाले और परीक्षित लक्षण हैं।

हृत्पिण्डकी उत्तेजना देनेवाली यह एक प्रधान दवा है। एकाएक हृत्पिण्डकी सुस्तीकी वजहसे बेहोशी, शिराओंमें रक्त एकत्र होना, मूर्च्छा, सांप काटनेकी वजहसे बेहोशीके लक्षण,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिराओंका रुकना, रक्तस्राव (नौ द्वारसे) इत्यादि भयंकर लक्षणोंमें यह बहुत ही फायदा करती है। इसमें खाने-पीनेके बाद रोग बढ़ते हैं।

सार्वाङ्गिक लक्षण।

मन।—डरना। माथा मानो बीचसे धक्का देकर ऊपर चढ़ता है। नाक बन्द, सर्दीके बोखारकी तरह, नाकके ऊपर लाल भाव। चेहरेसे ही तकलीफका भाव मालूम हो। खून मिली बहुत लार बहना; ओंठ; मसूढ़े और जीभका फूलना; अन्ननलीमें जलन; निगलनेमें तकलीफ; कै, नाक मुँहसे खायी हुई, सब चीजें निकल जाती हैं, पेट फूलना और गड़-गड़ाना, बहुत ज्यादा खून मिला मल, पेशाबमें अण्डलाल (albumen) और वर्णात्मक पदार्थ (hayline) हायलीन कैस्ट्स रहता है। पेशाब चार मिला और लाल, हर पन्द्रहवें दिन मासिक धर्म हो जाय, बहुत ज्यादा रक्त जाये, श्वासनली-के प्रदाहके साथ कफ निकलना, श्वास-क्लेश। दाहिनी बांहका अकड़नकी तरह हिलाना, कन्धेकी पेशियोंका वात-रोग।

सार्वाङ्गिक लक्षण।—सभी द्वार (Orifies) से खून जाना; त्वचा गर्म और सूखी।

सम्बन्ध।—ऐमोन कार्ब वगैरह इसकी समान गुण-वाली दवाएँ हैं। विनिगर, ऐसेटिक ऐसिड, उद्भिदोंकी खटाई इसके प्रतिषेधक या दोषनाशक हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति।—१ली और ३री। मूल अर्क ५ से १० बूंद, थोड़े पानीमें मिलाकर सेवन करानेसे बहुत बार बहुत फायदा होता है।

ऐमोनियम म्यूरियेटिकम।

(Ammonium Muriaticum).

दूसरा नाम।—ऐमोन क्लोराइड, सैल ऐमोनियक प्रभृति।

प्रस्तुत-प्रणाली।—पहले १x से ६x विचूर्ण, इसके बाद टिंचर तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें इसने लाभ किया है—नींद न आना, श्वासनलीका प्रदाह, कब्जियत, सर्दी, खांसी, उदरामय, आंखोंका दर्द (प्रदाह आदि), पैरमें दर्द, आँतोंका बढ़ना ; अर्श ; यकृतकी बहुतसी बीमारियाँ ; विषाद ; ऋतुके समयके उपसर्ग ; न्यूमोनिया ; गृध्रसी या पैरकी झुनझुनाहटवाला वात ; विषादोन्माद ; शीताद ; मुंह और मसूढ़ेका फूलना और वहाँसे खून बहना ; प्लीहामें दर्द ; चोट या मोच खा जानेकी वजहसे दर्द ; नश्तर लगवाने बाद, जखम आराम हो जानेपर भी वहां स्नायविक दर्द ; तालुमूलकी गांठोंका फूलना ; जखम वगैरहमें भी लाभदायक है।

प्रकृतिगत लक्षण।—सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंसे बहुत ज्यादा स्राव (secretions) की वृद्धि होती है और वह रुका रहता है। डा० बोरिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाहिनी ओर यह दवा ऐमोन कार्बसे भी ज्यादा फायदा करती है—डा० क्लार्क।

जो मनुष्य मोटे-ताजे तो हैं, पर आलसी हैं और जिनके हाथ-पैर दुबले पतले हैं, उनके लिये यह दवा लाभदायक है।

नाकको सर्दी जमना (aeril), रुखड़ी और कर्कश आवाज, सूखी और कलेजेमें दर्द पैदा करनेवाली खांसी, तीसरे पहर कफ ढीला रहता है, पीठकी रीढ़के दोनों ओर बरफ छुलानेकी तरह ठण्डा मालूम होता है। यकृतमें खून इकट्ठा होना, मल कड़ा, मल टुकड़े-टुकड़े होकर बाहर निकलता है, मलमें श्लेष्माकी तरह पदार्थ मिला रहता है, ऋतुके समय पतले दस्त आना। अण्डलालकी तरह प्रदरका स्राव, ऋतुका स्राव भरपूर न होना—कभी थक्का-थक्का, कभी काला, गृध्रसी वात या पैरोंमें झुनझुनी।

डा० बोरिक।—शरीरके ऊपरी, बिचले और निचले भागकी बीमारीका घटना बढ़ना, दिनके प्रथम, मध्यम और अन्तिम भागके अनुसार बटा रहता है। जैसे माथा और छाती-की बीमारी सवेरे, पाकाशय और आंतोंकी बीमारी तीसरे पहर, और अंग-प्रत्यंग और त्वचाकी बीमारी शामके वक्त बढ़ती है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—उत्कण्ठा; दुःखित भाव; रोनेकी इच्छा; क्रोध आना। किसी खास मनुष्यसे चिढ़ा; शोकसे भरा पर रो न सकता हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक ।—केश झड़ जाना और रूसी । सरमें चक्कर, सरमें भार, खुली हवामें आराम ।

आंखें ।---आंखोंके सामने मानो कुहरा छाया हो ; रातमें आंखोंमें जलन और पानी निकलना ।

मुंह ।—मुंहका प्रदाह भरा स्नायुशूल ; मुंहके भीतर और ओंठोंमें जखम, गलेमें जिह्वामूलकी गांठोंका बढ़ना और टपक । गलेका जखम, अन्ननालीका सिकुड़ना । शरबत पीनेकी इच्छा, मुंहमें तीता पानी भर आना । मिचली, खाई हुई चीज-की कै, पेटमें दर्द, पाकस्थलीमें कैन्सर या कर्कटका जखम ।

तलपेट ।—सवेरे प्लीहामें दर्द, उसके साथ ही श्वासमें तकलीफ । गर्भावस्थामें यकृतमें खून जमना, वायु ज्यादा निक-लता है ।

मलनाली ।—बवासीर, पाखाना हो जानेके बाद खुजली, प्रदरका स्राव रुक कर जलन होना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतुका रक्त परिमाणमें ज्यादा, काला रंग ; जमा हुआ ; **रातके समय अधिक** ।

स्वरभंग ।—सूखी खांसी; पीठमें बरफ की तरह ठण्डक मालूम होना ।

श्वासयंत्र ।—स्वरनालीमें जलन, स्वरभंग, संध्याके समय बार बार कफ निकालनेकी चेष्टा ; थोड़ा थोड़ा कफ नि-कलना ; अलिजिह्वाके पिछली ओर जखम जैसा मालूम होना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठ ।—दोनों कन्धोंके बीचवाले स्थानमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना, गर्म कपड़ेसे ढकनेपर भी यह ठण्डक नहीं जाती, बैठनेपर गुदास्थि (coccyx) में चोट लगने जैसा दर्द।

अंग-प्रत्यंग ।—अंगुलीके अगले भागमें जखम होने-पर जैसा दर्द होता उसी तरहका दर्द। मांस-पेशी, जंघा, शिरा:वगैरहमें सिकुड़न। कटिवात, बैठे रहनेपर बढ़ना। सोने-से अच्छा रहना, पैरोंके तलवेमें बदबूदार पसीना।

त्वचा ।—साधारणत: संध्याके समय खुजली, कितने ही स्थानोंमें छाले उठना। बहुत जलन, ठण्डे पानीसे आराम मिलना या घटना।

ज्वर ।—**संध्याके समय सोनेके बाद**, और जिस समय नींद खुलती है, उसी समय जाड़ा लगना, प्यास न होना, हाथ-पैरका तलवा गर्म। अस्वास्थ्यकर हवा-पानीकी वजहसे धीमा-बोखार। इन लक्षणोंमें निम्न क्रम ज्यादा फ़ायद करता है।

ह्रास-वृद्धि ।—खुली हवामें घटना। मस्तक और छा-तीके लक्षण **सवेरे** और पेटके लक्षण **तीसरे पहर बढ़ते हैं**।

सम्बन्ध ।--**दोषघ्न**—नक्स-व, काफिया, कास्टिकम सदृश दवाएँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति ।—३ री, ६ ठी और ३० ।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ३० दिन ।

ऐमोनियम फास्फोरिकम ।

(Ammonium Phosphoricum).

दूसरा नाम ।—फास्फेट आव ऐमोनिया ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें घुलनेवाला है; इसका विचूर्ण भी तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—मुँहका पक्षाघात ; छोटी सन्धियोंका वात ; अस्थि-गुल्म ।

उपयोगिता ।—जिनमें मूत्राम्ल (uric acid) पैदा होता है ऐसे धातुवाले मनुष्योंका पुराना सन्धिवात ; अँगुली, सन्धि और हाथकी पीठमें अस्थि-गुल्म या छोटी छोटी कड़ी गोटियां वगैरहमें लाभदायक है । कन्धेकी सन्धिमें दर्द ; छातीमें खींचन जैसा मालूम होना । सारा शरीर भारी और ढलमल ; पैर टगते हैं । हवा लगनेसे जाड़ा मालूम होना । नाड़ी कठिन, क्षुद्र और तेज । माथा भारी, पेशाबमें लाल तली जमना । सवेरे छींक और नाक मुंहसे बहुत पानी गिरना । तेज़ खांसी, हरी आभा लिये कफ । मुँहका पक्षाघात ।

प्रयोग ।—निम्न-शक्ति ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमोनियम पाइक्रेटम् ।

(Ammonium Picratum).

दूसरा नाम ।—पाइक्रेट आव ऐमोनिया । ऐमोनियम पिक्रिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।-सरमें दर्द, स्नायुशूल और हूप खांसी ।

उपयोगिता ।—माथेके पीछे दाहिनी ओर **शिर:शूल;** तकलीफ़ कान, आँखके गड़हे और हनुवटीके स्थानपर मालूम होती है। सरमें चक्कर आना, खासकर जिन्हें ऋतु ठीक समयपर नहीं होता है और तीसरे पहर पित्तकी कै होती है। मस्तक और मेरुमज्जामें रक्त ज्यादा हो जानेपर इसका व्यवहार होता है। सैंगुनेरियाकी तरह बंधे समयपर होनेवाला सर दर्द, मलेरिया बोखार और हूप खांसीमें भी उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—कैल्के-पि, फेरम्-पिक, पिकरिक ऐसिड । सैङ्गुनेरिया ।

शक्ति ।—३री और ३०वीं शक्ति लाभ करती है ।

ऐम्पेलोप्सिस । (Ampelopsis)

दूसरा नाम ।—ऐम्पेलोप्सिस क्विनक्विफोलिया ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषध-प्रस्तुत-प्रणाली।—पेड़से मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—हैज़ा जैसे लक्षण; पेशाबकी बीमारीकी वजहसे शोथ; स्वरभंग, और अण्डकोषमें पानी इकट्ठा होना; आखोंकी पुतली फैली हुई; पेट गड़गड़ाना।

वृद्धि।—संध्याके समय।

प्रयोग।—निम्न-शक्ति।

ऐम्फिसबिना (Amphisbaena).

औषध-प्रस्तुत-प्रणाली।—सांपकी तरहके ही एक कीड़ेके विषसे यह विचूर्ण तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—कब्जियत, अकड़न, सरमें भार, आंत उतरना और दाँतका दर्द। इस औषधकी क्रिया दाहिनी ओर अधिक होती है। जबड़े फूलना और दर्द, हवामें और तरीमें इस दर्दका बढ़ना; इसके रोगीके सभी रोग-लक्षण हिलने-डोलनेसे बढ़ते हैं।

ऐमिगडेला ऐमेरा।

(Amygdala amarae)

दूसरा नाम।—बिटर ऐमण्ड; तीता बादाम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इससे विचूर्ण और अरिष्ट तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग ।—दमा, खांसी, श्वास, घोर अचैतन्य ; डिप्थीरिया ; मृगी ; सर-दर्द ; मूर्च्छा, तड़का, धनुष्टंकार, आम-वात ।

उपयोगिता ।—तालुमूल-प्रदाह, डिप्थीरिया, मस्तककी बाईं ओर दर्द । आँखें खूब चमकीली दिखाई देती हैं, परन्तु बुद्धिमें तेजी नहीं मालूम होती । स्वर-नली और गल-नालीमें जलन । तालुमूल या जिह्वामूलमें सुई बेधने जैसा दर्द, (फैरिङ्गटन)। पित्त और अजीर्ण, खाई हुई चीज़की कै ; निगलनेमें तकलीफ ; श्वास रुक जानेकी आशंका, ठहर ठहर कर बातें करना पड़ता है । खांसनेमें गलेमें दर्द ; धनुष्टंकार, पीछेकी ओर झुक पड़ना । नाकमें आवाज़के साथ चेहरेपर ठण्डा पसीना । चेहरा नीली आभा लिये ; आमवात ।

सम्बन्ध-सदृश ।—लरोसि, ऐसिड-हाइड्रो, ओपि, स्ट्रैमो, टैबे, ऐण्टिम-टा, लैकेसिस, नैजा, कोब्रा, हृत्पिण्डकी क्रिया ।

दोषघ्न ।—ओपियम (अकड़नके समय देना चाहिये ।) सरपर ठंडा पानी होना चाहिये ।

मात्रा ।—३री, ६ठी या ३० शक्ति ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमिग्डेला पर्सिका ।

(Amigdalus Persica)

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पीछकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—कितने ही तरहके वमन-रोग, गर्भवती स्त्रीका सवेरेके वक्तका वमन, खूनका पेशाब, मूत्र-कृच्छ्रता, मूत्रस्थलीसे रक्तस्राव । बच्चा किसी तरहका भोजन सहन नहीं कर सकता । स्वाद और गन्ध लोप, मिचली और कै । जीभ मानो लम्बी हो गयी है ।

सम्बन्ध ।—ऐमिग्डेला ऐमेरा ।

शक्ति ।—१ली, ३री या ६ठी शक्ति ।

ऐमिल नाइट्रोसम ।

(Amyl Nitrosum)

दूसरा नाम ।—ऐमिल नाइट्रेट ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—हृत्शूल ; छातीका स्नायुशूल ; लज्जाके कारण चेहरा लाल, गाल लाल, ताण्डव या अंग-प्रत्यंग-का कांपना, मृगी, माथेमें रक्त चढ़ना ; सरमें दर्द, मूर्च्छा, सर्द-गर्मी, लू लगना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता ।—स्नायु-प्रधान, थुल-थुल, रक्त-प्रधान धातु-वाली औरतोंके वयःसन्धिके समयकी बीमारियोंमें यह फायदेमन्द है। एकाएक श्वास-रोध जैसा मालूम होना ; **खुली हवाके लिये रोगी छटपटाया करता है** । शरीरके वस्त्र उतार फेंकता है ; जाड़ेके दिनोंमें भी खिड़की खोल देता है। हृत्पिण्डका स्पन्दन, **हिचकी, जम्हाई लेना** ; अकड़न, मृगीका आक्रमण, और कितने ही दुरारोग्य रोगोंमें यह कुछ देरके लिये लाभ पहुंचाता है। श्वास रुककर मृत्यु होनेकी आशंकामें इसकी गन्ध लेनेपर बहुत बार फायदा हो जाता है। नाव, जहाज, पालकी, वगैरहपर चढ़नेके कारण जो कै होती है, उसमें यह लाभ पहुंचाता है।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—ऐसी उत्कण्ठा मानो कोई दुर्घटना घटेगी, इसी वजहसे खुली हवामें घूमना चाहता है। अधकपारीका दर्द।

मस्तकादि ।—दिमागमें खून चढ़ जाना, इसी वजहसे चेहरा लाल हो उठना। लाल गाल, कानमें खून ज्यादा होना ; टपक ; चेहरेपर पसीना।

गलेमें ।—सिकुड़न, जेवर बहुत कसा मालूम होता है, उतार देनेपर आराम मिलता है। छातीमें—श्वास-कष्ट, दमा जैसा भाव, अकड़नकी खांसी और हृद्शूल ; वक्षमें धड़-धड़ हृत्पिण्डकी आवाज मालूम होती है। हृत्पिण्डके चारों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दर्द ; थोड़े परिश्रमसे और मानसिक उत्तेजनासे, कलेजा जोरसे धड़कने लगना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवान्तिक वेदना (after pains); वयःसन्धिके समयके उपसर्ग ; सन्तान हो जाने बाद, प्रसवके बादकी अकड़न।

प्रत्यंग।—बार बार काँखना, अँगुलीके अगले भागमें तेज़ टपकका दर्द।

ज्वर।—चेहरा बहुत लाल हो जाना, इसके बाद बहुत ज्यादा पसीना, सारे शरीरमें टपक। इन्फ्लुएँजा अथवा बहु-व्यापक सर्दीके बाद, बहुत ज्यादा पसीना।

वृद्धि।—मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे और गर्म घरमें रहनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**—लैकेसिस, बेलेडोना, कैक्टस, फेरम।

दोषघ्न।—कैक्टस, आर्गट ; स्ट्रिकनिन (strych)।

शक्ति।—निम्न-शक्ति। सूंघनेसे तुरन्त लाभ मालूम होता है।

जब बेहोश कर देनेवाली दवासे बेहोशी या सुस्ती पैदा होती है, उस समय इसको सूंघनेसे ताकत और पुनर्जीवन प्राप्त होता है। मूल अरिष्टका बार बार प्रयोग करना चाहिये।

सुँघानेके लिये मूल अरिष्ट दोसे पाँच बूंद रूमालमें व्यवहार किया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐनाकार्डियम ओरियेण्टलि।

(Anacardium Orientale).

दूसरा नाम।—मार्किङ्ग-नट ; भेलावा। धोबी इससे कपड़ेपर निशान लगाया करते हैं। इनमें आक्सिडेण्टलि ज्यादा काममें नहीं लाया जाता।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—शराब पीनेका दुष्परिणाम ; संन्यास रोग ; मस्तिष्कको थकावट ; कब्जियत ; खांसी ; कमजोरी ; कै ; अजीर्ण ; खुजली ; खसड़ा ; बवासीर ; सरका दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; व्याधि-शङ्का ; मूर्च्छावायु ; उन्माद-रोग ; स्मृति-शक्तिका घट जाना ; मानसिक दुर्बलता ; पक्षाघात ; सन्धिवात (आमवात) ; अस्वाभाविक मैथुनकी वजहसे बीमारियां ; मेरुमज्जाकी बीमारी ; गर्भावस्थामें वमन ; खांसी ; मसे ; लिखकर जीविका उपार्जन करनेवालोंका हाथ काँपना वगैरह रोगोंमें फायदा करता है।

उपयोगिता।—चमड़ा, पेशियाँ और सन्धियाँ--इनपर इसकी क्रिया बहुत कुछ रस्टाक्सके सदृश है। परन्तु इसमें अपनी विशेषता कुछ अधिक है।

स्नायविक गड़बड़ीकी वजहसे अजीर्ण रोग ; याद करना, देखना, सुनना और **सुननेकी शक्तिमें गड़बड़ी,** दुःखित भाव, आत्मविश्वासमें कमी, कसम खाने और लोगोंकी गालियाँ देनेकी बराबर इच्छा बनी रहना ; सर मानो एक **बन्धनसे**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधा हुआ है, पाकाशयका खाली मालूम होना, सुन्न होना, पक्षाघात—ये सब इसके विशेष लक्षण हैं। किसीका भी रोगी विश्वास नहीं करता, अपनी जिम्मेवरीका ज्ञान नहीं रहता, सरमें दर्द। शरीरमें कितनी ही तरहकी गड़बड़ी, पेटमें दर्द वगैरह भोजन करते ही कम हो जाता है, पर फिर बढ़ जाता है; बहुत जल्दबाज़ीमें खाता पीता है। मल कड़ा; रोगी ऐसा समझता है, मानो शरीरमें जगह-जगह कोई काँटी ठोंक रहा है। कान और बवासीरकी बीमारीमें यह भाव ज़्यादा रहता है। घुटनेमें मानो पक्षाघात हुआ है। बहुत ज़्यादा अध्ययन और इन्द्रिय-दोषकी वजहसे दिमागमें थकान; और परीक्षाके समय आशंकामें इस औषधसे बहुत काम होता है (नीची शक्तिमें प्रयोग करना चाहिये) रह रह कर रोग होना इसका एक विशेष लक्षण है। अनिद्रा रोगमें रोगिनीको कुछ दिनोंतक तो मजेमें नींद आती है, फिर नींद आना बन्द हो जाता है। ऐसे लक्षणोंमें डाक्टर कास्टिसनने इसकी २०० शक्तिसे एक गर्भवतीका अनिद्रा रोग दूर किया था।

अजीर्ण आदि रोगमें नक्स-वमिकासे तुलना करना चाहिये (फेरम); कुछ खानेसे तकलीफ घटना; नहीं खानेसे बढ़ना।

ह्रास-वृद्धि।—विश्रामसे वृद्धि, हिलने डोलनेसे घटना, मानो रस्टाक्स, पर कितने ही लक्षण संचालनसे बढ़ जाते हैं; जैसे (गर्दनकी अकड़न) सरका दर्द, सोने या आराम करनेसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घट जाना, सर्दी लगनेसे बढ़ना । इसको खांसी भोजन कर लेने-पर घट जाती है । दो घण्टे बाद बढ़ जाती है ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—श्रवण-शक्तिका भ्रम, ऐसा मालूम होता है, मानो दूर-देशमें रहनेवाले पिता, माता, भ्राता वगैरह या मृत मनुष्यका कण्ठस्वर सुन पड़ रहा है । मनमें आता है—दो मति (wills) है—एक प्रवृत्ति, दूसरी निवृत्तिकी ओर आकर्षित करती है । घूमनेके समय मालूम होता है, मानो कोई उसका पीछा कर रहा है । अद्भुत प्रकृति--हँसनेवाली बातमें गम्भीर हो जाता है परन्तु गुरुतर व्यापारमें दिल्लगी करता है । सन्तान पालन करनेकी दुर्निवार अभिलाषा । इन्द्रियोंकी दुर्बलता । ऐसा मालूम होता है, कि देहका कोई अंश विशेष एक बन्धनसे बँधा हुआ है, और शरीरके सब दरवाजे काँटोंसे बन्द हो रहे हैं । अनहोनी चीजें देखना, नैतिक व्यवहारमें हानि, व्याधिकी आशंका, आत्म-विश्वासका गायब हो जाना, हमेशा मनमें सन्देह इत्यादि ।

मस्तिष्क ।—थकावट, स्मृति-शक्तिका गायब हो जाना, विस्मृति, सहजमें ही चिढ़ उठना, बुढ़ापेकी वजहसे बुद्धि-हीनता ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, कनपटी और सरके पिछले भागमें, ब्रह्माण्डपर मानो दबाव जैसा दर्द मालूम होता हो, उद्यमसे बढ़ना, **भोजनके समय अच्छा रहना,** मस्तक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की त्वचापर खुजली भरी छोटी छोटी फुन्सियां ; पाकाशय और स्नायुकी गड़बड़ीकी वजहसे सरमें दर्द ।

आंखें ।—धुँधली दृष्टि, सब चीजोंका बहुत दूर दिखाई देना, भौंके आगे मानो कोई भोथरे शस्त्रसे मार रहा है ।

कान ।—कानके छेदमें, किसी भोथरे यंत्रद्वारा दबाव-के जैसा दर्द, कानसे पीव बहना ; बहरापन ।

नाक ।—बार बार छींक, सूंघनेकी शक्तिकी कमी ; नाकसे खून जाना, पानीकी तरह सर्दीका स्राव (वृद्ध मनुष्योंको)।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—आंखोंके चारों ओर कालापन, चेहरा मलीन और रक्तहीन, बालकों जैसा भाव; आंखोंकी पुतलीपर दबाव पड़ना, चेहरेपर खुजली या खुजलाने-वाले उद्भेद या दाने । मुँहमें बदबू ; मुँहमें लारके साथ बातोंमें जड़ता ; दांतोंमें छिन्न करने जैसा दर्द ; खासकर गर्म चीजें खानेकी वजहसे मसूढ़े फूलना ; रक्तस्राव ; स्वाद न मिलना ; जीभ फूली ; बड़ी ; जल्दबाजीसे खाता-पीता है (हिप, प्लाटिना, बेलाडो) । खाई हुई चीज़का स्वाद नहीं मिलता। मुंहका तीता स्वाद, प्रबल प्यास ; परिश्रम न करनेकी इच्छा; सुस्ती; औंघाई । **भोजनके बाद रोगी अच्छा रहता है।**

पाकस्थली ।—पेट फूलना और भरा हुआ मालूम होना ; पाकाशय खाली मालूम होना ; डकार ; मिचली ; कै ; भोजनके बाद आराम हो जाना ; दो तीन घण्टे बाद फिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगना ; खाने-पीनेके समय दम रुकने जैसा भाव ; पाचन-शक्तिकी कमजोरी ।

आंतें और तलपेट ।—पाखानेका वेग नहीं होता, बार बार वृथा ही पाखाना जानेकी इच्छा ; मालूम हो, मानो कांटो ठोको हुई है ; पेट गड़गड़ाना, मानो पेट मरोड़ रहा है, कोमल पाखाना भी वेग दिये बिना नहीं निकलता ; मलनाली या गुह्यद्वारका संकोचन, मलद्वारमें खुजली, मलद्वार नर्म, दर्द-भरी बवासीर, पाखानेके समय खून जाना, गुह्यद्वारका फटना ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—उत्तेजनाके कारणके बिना ही लिङ्ग-उद्रेक होना ; नींदमें बिना स्वप्नके ही शुक्रपात ; गमके समय सुखका अनुभव नहीं होता ; पाखानेके समय शुक्र अथवा प्रोस्टेटका रस-स्राव ; अण्डकोषमें खुजली ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—खुजलाने और जखम करने-वाला श्वेत-प्रदर ; थोड़ा ऋतु ।

मूत्र-यंत्र ।—गदला पेशाब, कभी-कभी पानी जैसा पेशाब वगैरह लक्षण मौजूद रहते हैं ।

श्वासयंत्र ।—स्वर-भंग, गलेमें मानो जल गया है, या फट गया है। छातीमें दबाव पड़ना, बाईं करवट सोनेसे छातीमें घड़घड़की आवाज़ होती है। दमा जैसा दम रुकनेका भाव ; बात करनेसे ही खांसी ।

हृत्पिण्ड ।—कलेजेमें तेज अस्त्रसे चोट पहुंचानेकी तरह दर्द ; हृद्कम्पके साथ स्मरण-शक्तिकी कमी (वृद्ध मनुष्यों-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सर्दीका स्राव), हृद्-प्रदाहके साथ सुई बेधने जैसी तकलीफ।

पीठ।—दोनों कन्धोंमें दबाव पड़ना, मानो कोई भारी चीज है। गलेका कड़ापन।

अंग-प्रत्यंग।—जानु-देशमें पक्षाघात जैसा मालूम होना, अंगूठेमें स्नायुशूल, पैरकी पोटलीमें अकड़न, तलहत्थीमें मसे, पक्षाघातके बादकी दुर्बलता।

निद्रा।—स्वप्नभरी। कई रातसे नींद न आनेका भाव बना रहता है।

त्वचा।—त्वचामें बहुत ही खुजलानेवाले खसड़ा रोगके साथ मानसिक उत्तेजना; फुन्सियाँ फूलीं और आम-वात, सामने बांहमें जखम जैसी अवस्था; हाथमें मसे। छाले पीले और गला हुआ रस हवामें सूख जाता है। दादकी तरह मसे।

ज्वर।—नाड़ी तेज़; शीत और कम्प; भीतरी उत्ताप, रातमें पसीना।

ह्रास-वृद्धि।—गर्म पानीके प्रयोगसे वृद्धि; **भोजनके बाद, करवट सोने और घसनेसे आराम।**

सम्बन्ध।—दोषघ्न—ग्रिण्डेलिया, जुगलैन्स, काफिया रस्टाक्स, युकेलिप्टस।

तुलनीय।—ऐनाकार्डि आक्सिड॰; रस्टाक्स, केलिडो, जिरोफि, कामक्लेडि, एपिस, फेरम्‌आयोड, नक्स-व, फास्फोरस, ऐलोज़, आर्टिका, जेल्स, नेट्रम, यजा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइको, प्लाटिना, पल्सके बाद यह खूब काम करता है। इसके अलावा ऐनाकार्डियमके बाद भी ये तीनों दवाएं खूब लाभ करती हैं।

शक्ति ।—६ठी से २०० तक या हज़ार।

ऐनाकार्डियम आक्सिडेंटल।

(Anacard-Occidentale).

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके भीतरी और बाहरी आवरणसे जो काला रस निकलता है, उसीसे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग ।—पैरके गट्ठे, विसर्प; शारीरिक और मानसिक दुर्बलता; खुजली, पक्षाघात, रस्टाक्सके अपव्यवहार-के कारण विषैलापन; दाद; चेचक, मसे।

उपयोगिता ।—विषाक्त लक्षण देखकर ही इसका विशेष लक्षण जाना गया है, त्वचापर विसर्प या अकौतकी तरह-की फुन्सियाँ पैदा करता है, किसी स्थानपर चकत्ते या छाले, किसी किसी जगह सूजन दिखाई देती है। इसके पहले इसका रस गट्ठे, दाद और जल्द आराम न होनेवाला जखम वगैरह पर लगाया जाता था। स्मृति-शक्ति और मनकी दुर्बलता, पक्षा-घात जैसी अवस्था, जीभ दर्द भरी और फूली, मुंहपर मुँहासे वगैरह रोगोंमें पहले इसके व्यवहारसे फायदा होता था। असह्य खुजली, एक प्रकारका उद्भेद जो देखनेमें ठीक चेचक जैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम होता है, बीचमें कुछ चिपटा हो जाता है। विसर्प दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैलता है (रस्टाक्स बायींसे दाहिनी ओर फैलता है)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐनाकार्ड, रस्टाक्स, कैन्थ, मेजि, क्रोटन।

दोषघ्न ।—रस्टाक्स, स्थानिक-भावसे आयोडिन।

शक्ति ।—हमेशा निम्न-शक्ति व्यवहृत होती है।

ऐनागेलिस आर्वेन्सिस ।

(Anagallis Arvensis).

दवा तैयार करनेकी प्रणाली ।—समूचे पौधेसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग ।— कम दिखाई देना, जाली, कब्जियत; शोथ; मृगी ; नाकसे खून जाना ; प्रमेह ; सन्धिवात; बवासीर ; सरका दर्द ; मूर्च्छावायु ; अवसाद वायु ; उन्माद ; स्नायुशूल ; दादकी तरह त्वचाकी बीमारी ; उपदंश ; जखम वगैरह रोगोंमें फायदेमन्द है ।

उपयोगिता ।—त्वचापर ही इसकी विशेष क्रिया है—सारे शरीरमें खुजली और सुरसुरी, सूखी गोलाकार छिलके जैसी या भौंरिकी तरह चकत्ते चकत्ते भरी त्वचाकी छाल। सन्धियोंके स्थानपर सूजन या जखम। इसके सेवनसे सादलो-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सियाकी तरह), किसी किसी स्थानपर कन्धे या कण्ठमें, शलाका आदि बिधा रहनेपर, निकल जाता है। यह पहले सर्पाघात, जलातंक और शोथ वगैरह रोगोंमें व्यवहार किया जाता था। मनकी तेजीपर भी इसके द्वारा क्रिया प्रकट होती है; बाएँ कानमें खुजली। मूत्रनालीमें खुजली या सुड़सुड़ीयुक्त दर्द; शुक्र-रज्जु में-कतरने जैसा दर्द। छातीपर भी इसी-तरह खुजलाने वाले उद्भेद।

ह्रास-वृद्धि।—छूने और भोजनके बाद वृद्धि।

सम्बन्ध।—तुलनीय—साइक्लेमेन, काफिया (आनन्द), लिथिया-कार्ब्ब, (रूखी त्वचा, दाद) सिपिया, टेलूरियम (दाद), पल्स (शीत-कातर, सर्दी), रस्टाक्स।

शक्ति।—१ली से लेकर ६x शक्तितक हमेशा व्यवहारमें आती है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन और मस्तक।—बहुत स्फूर्त्ति; भवोंके ऊपर सर-दर्द, इसके साथ ही आँतोंमें गड़गड़ शब्द और डकार, जी मिचलानेके साथ सरमें चक्कर आना। मुखमण्डलकी पेशियोंमें दर्द।

मूत्रनलीमें कामोद्दीपक खुजली। पेशाब करनेके समय जलन। कितने ही भावोंमें विभक्त होकर पेशाब होना; वेग दिये बिना पेशाब नहीं होता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यङ्गादि।—आमवात और सन्धिवातसे पैदा हुआ दर्द, कन्धे और बाईं बाँहमें दर्द। **अंगूठेके माँस-भरे स्थानमें और अँगुलीमें** अकड़न।

त्वचा।—खुजली, सूखे धानके छिलके आदिके जैसा उद्भेद, हाथमें खुजली, उसी तरहकी फुन्सियाँ, सन्धि-स्थानोंपर जखम और सूजन।

सम्बन्ध।—साइक्लें सदृश औषध। **तुलनीय।**—साइक्लें, लिरिक-एसिड। पल्स. रस्ट, टेल्यूरियम (दद्रु)।

शक्ति।—१ली, ३री या निम्न-शक्ति व्यवहारमें आती है।

ऐनाथिरम म्यूरिकैटम।

(Anantherum Muricatum).

दूसरा नाम।—खस (एक प्रकारका घास या तृण)।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—फोड़ा ; स्वरलोप ; व्रण ; कर्कटीया क्षत (कैन्सर) ; विसर्प ; ग्रन्थि फूली ; प्रमेह दोष ; जलातङ्क ; उपदंश ; नाना प्रकारकी अकड़न ; अर्बुद ; जखम ; चेहरेका स्नायुशूल।

उपयोगिता।—त्वचापर इसकी असामान्य क्रिया है, जहांतहां दर्द-भरी सूजन पैदा हो जाती है और उसमें पीव पैदा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनेका लक्षण दिखाई देता है। माथेमें दर्द, मानो मस्तिष्कमें तेज़ सुई चुभोई जा रही है, शामको बढ़ जाता है। माथेका दाद, जखम, अर्बुद और भवोंमें मसे। नाककी जड़में फोड़ा। जीभ फटना, मानो किनारा कटकर बहुत लार बहती है। पेशाबकी इच्छा, पेशाब गदला, अनजानमें पेशाब हो जाना, मूत्रकी थैलीमें एक बूंद पेशाब भी इकट्ठा नहीं होता। नाखून खराब, पैरोंमें पसीना, विसर्प, फोड़े, जखम, दादकी तरह उद्भेद, खुजलानेवाला जखम।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—सन्देहशील, झूठ ही अपनेको बीमार समझना। अहंकार (मैं सबसे बड़ा हूँ), परन्तु भीड़-भाड़में या जहाँ मनुष्य ज़ियादे हों, वहाँ जानेकी इच्छा न होना। एकान्तमें रहनेकी इच्छा।

प्रत्यङ्गादि।—सरमें दर्द, बगलकी ग्रन्थिका प्रदाह, पेशाब बार बार हुआ करता है। बहुत दिनोंकी कब्जियत। मलद्वारमें बहुत ज्यादा खुजली।

सम्बन्ध।—स्टैफि, मार्क-सोल। प्लैटि, स्टैनम। थूजा।

शक्ति।—३री या ६x। कभी कभी ३० वीं भी दी जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एनिमोप्सिस कैलिफोर्निका।

(Anemopsis Californica).

दूसरा नाम।—ऐव्वा मानसा। हाउसहोल्ड हार्ब।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—श्लैष्मिक झिल्लीमें उत्तम कार्यकर पुरानी सर्दी, स्वरनाली और आँतोंकी सर्दी, अतिसार, मूत्रनली-का प्रदाह रोगमें लाभ करता है। हृत्पिण्डका रोग, आध्मान, अजीर्णतामें भी लाभदायक है।

सदृश।—पिपरमिंथ।

शक्ति।—मूल अर्क, भीतरी और बाहरी प्रयोग होता है।

ऐङ्गास्टुरा विरा।

(Anghstura Vera)

दूसरा नाम।—कैस पेरिया त्वक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस पौधेकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—हड्डीमें दर्द; हड्डीमें जखम और क्षय रोग (caries); अतिसार; चोट आदिकी वजहसे अभि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घात ; पक्षाघात, सविराम ज्वर ; क्षीण दृष्टि ; धनुष्टंकार ; दांतोंका दर्द ; क्रूप खांसी ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—डा० क्लार्कने कहा है, —यह **मार्क-सोल, नक्स-वमिका** और रूटाकी तरह काम करती है। बहुत उद्यमशीलता ; सामान्य कारणसे ही क्रोध पैदा हो जाता है (नक्स-व), हीनचेता डरपोक स्वभाव (रूटा)। सन्धियों तथा पेशियोंमें खींचन और अकड़न, निकट दृष्टि, पाराके अपव्यवहारकी वजहसे रोग, जबड़े अटकना (हनु-स्तम्भ), धनुष्टंकार, बवासीर, हड्डियोंका क्षय ; और अस्थि-वेष्टप्रदाह ; कलेजा कांपना, झुककर बैठनेसे बढ़ना, उठ बैठने-पर आराम, हड्डीपर इसकी रूटाकी तरह क्रिया होती है। यह पाराका दोष नाश करता है।

सम्बन्ध ।—बेलेडोना सहजमें ही चौंक उठता है (३ बजे बढ़ना), काफ़िया (दांतका दर्द), नक्सवमिका (धनुष्टं-कार), साइलि (नीचे हनुकी हड्डी क्षय होनेका रोग), ऐलोज़ (अर्श और पीठमें दर्द), सिपिया (उद्वेद), हाइप (सुई गड़नेका नतीजा), रैननकुलस (छातीकी पेशियोंमें दर्द) ।

दोषघ्न ।—काफिया इससे प्रतिषेधित होता है, ब्रायो, चेलिडो इत्यादि ।

शक्ति ।—३री, ६ठी और २०० ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मनकी नीचता और आत्म-निर्भर न रह सकना । अनमना पन, जरासी बातमें उत्तेजना । क्रोध आ जाना, थोड़ेमें ही डर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना, सरमें दर्दके साथ मूर्च्छाभाव, तिमिर-दृष्टि, चेहरा नीली आभा लिये ; श्वासनलीमें लसदार कफ । हृद्‌पिण्डमें संकोचन भाव, मृत्यु-भय । लिंग-मुण्डमें बार बार काम-उत्तेजक खुजली; मालूम होता है, मानो मल बाहर निकल जायगा । संध्याके समय तंद्रा या निद्रालुता, ज्वरका समय—तीसरे पहर तीन बजे । रोगीके शरीरका कांपना । सहजमें ही अभिभूत हो जाना । बहुत ज्यादा स्पर्श कातरता ।

ऐनहैलोनियम ल्यू इनाई ।

(Anhalonium Lewinii).

दूसरा नाम ।—मेस्काल बटन ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्म पानीसे इसका मूल अर्क तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—मस्तिष्ककी थकावट, प्रलाप ; सर-दर्द ; भ्रमपूर्ण चीजें देखना और चित्त विभ्रम, अधकपारीका दर्द ; स्नायविक उत्तेजना ; पक्षाघात (निचले अंगका), दृष्टि-का दोष ; इन्द्रियोंकी विकलता (क्लार्क) ।

उपयोगिता ।—**डा० क्लार्कने** लिखा है, कि डा० मिचेलने स्वस्थ शरीरमें इसकी परीक्षा की थी और **डा० हेल** ने उसे लिखा था । कितने ही रंगोंकी रंगीन तेजोमयी मूर्त्तियां कितने ही हाव-भावसे सामने आती हैं । ये मूर्तियाँ गाने-बजा-नेके तालपर नाचा करती हैं । समयकी धारणा नहीं रहती ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथेके पीछे दर्द और थकावट, मिचली, पेशियोंमें कम्पन, जाघोंका जोरसे हिलाना ; पेशियोंकी क्रियामें गड़बड़ी इसके विशिष्ट लक्षण हैं ।

ह्रास-वृद्धि ।—आंखें बन्द करते ही प्रधान लक्षणोंका बढ़ना। संचालनसे मिचली या कै, सोनेपर आराम मालूम होना ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—जागनेवाली अवस्थामें स्वप्न जैसा मालूम होना या स्वप्न देखना । समय बहुत लम्बा मालूम होता है । सबको सन्देह करता है । आत्म-भरिता या आत्म-महत्वका ज्ञान । (प्लैटिनम्) ।

मस्तकादि ।—ललाटकी बाईं ओर दर्द, उसके साथ ही दृष्टि-शक्तिका बिगड़ना, मानो लाल रंगकी मूर्त्तियां ताल स्वरमें नाच रही हैं ।

आंखें ।—लाल रंगकी तेजोमयी मूर्त्तियां या दृश्य हंसानेवाले हाव-भावसे नाचती-फिरती हैं ।

सम्बन्ध ।—सदृश-कैनाबि-इन (समय ठीक नहीं रख सकता) । जेलस (अंग-प्रत्यंग इच्छानुसार कार्यमें नहीं लगा सकता) । प्लैटिनम चीजें छोटी देखता है ।)

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

—— – ——

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐनिलिनम् । (Anilinum).

दूसरा नाम ।—फेनिलैमिन ; कायानल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अलकतरेसे निकले हुए एक विशेष पदार्थसे इसका मूल अर्क तैयार किया जाता है ।

रोगमें प्रयोग ।—खूनकी कमी । कैन्सरका घाव ; हैजा ; लाल रंगका उकौत (Eczema Rubrum) ।

प्रकृतिगत लक्षण ।—जिन्हें इस पदार्थके धुएँका विष लग जाता है, उनके शरीरमें आर्सेनिककी तरह लक्षण पैदा हो जाते हैं । दस्त-कै, सरमें दर्द, मृगीकी तरह अकड़न, त्वचाका फूलना और उत्तेजना बहुत तेज़ीसे दिखाई देती है । शरीरका नीलापन इसका एक प्रधान लक्षण है । ऐलोपैथ डाक्टर कैन्सरके बढ़नेपर (cancerous growth) इसका व्यवहार करते थे ।

सम्बन्ध ।—सदृश—ऐण्टिपाइरिन, ऐण्टिफेब्रिनम्, फेनासिटिनम् ; ग्लोनोयन और आर्सेनिक ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—जड़-बुद्धि ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, ऐसा दर्द मानो माथा फट जायगा ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखें।—उत्तेजित आँखें, लाल और भीतर धसी आंखें; निचली पलक फूली।

मुँह।—तीता स्वाद।

पाकस्थली।—पाकस्थलीमें बहुत ज्यादा जलन, माथेमें जलन; दस्त-कै; अंग-प्रत्यंग मानो बरफकी तरह ठण्डे; पेटमें तेज़ दर्द और कड़ापन मालूम होना। हाथसे दबानेसे ही उसका मालूम होना।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पुरुषाङ्ग और अण्डकोषमें दर्द; इसके बाद सूजन, फिर ध्वजभंग या इन्द्रिय-शक्तिकी दुर्बलता आ जाना।

सार्वाङ्गिक आक्षेप।—जगह जगह सूजन; उत्तेजना; मृगी या अपस्मार रोग जैसी अवस्था, धनुष्टंकारकी तरह अकड़न।

त्वचा।—हाथकी कलाईके पास लाल दाग या रस-भरा फोड़ा-फुन्सी; उकौत जैसी फुन्सियाँ, दोनों घुटनोंमें अधिक सूजन, लाली, बहुत ज्यादा खुजली; लाल रंगका उकौत (Eczema Rubrum)।

निद्रा।—बहुत औंघाई आना।

शक्ति।—निम्न शक्ति ही ज्यादा व्यवहारमें आती है।

डा० बोरिकने लिखा है—मुँहका बैंगनी रंग; मूत्र-नालीमें अर्बुद पैदा हो जाना, शरीरमें बहुत अधिक खूनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमी होनेके कारण दोनों ओंठ नीले। भूख न लगना; बहुत दिनोंतक पेटकी गड़बड़ी लगी रहती है।

ऐनिसम स्टेलेटम।

(Anisum Stellatum).

दूसरा नाम।—इलिसियम, ऐनिसेटम।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—सर्दी, खाँसी, रक्त-मिली खाँसी; फेफड़ेके तन्तुओंकी बीमारी, पाकस्थलीकी सर्दी, पाकाशयकी बीमारी, सर्दीसे पैदा हुआ वात, जाँघोंमें दर्द, पंजरेकी तीसरी हड्डीके पास दर्द—इसको बतानेवाला एक लक्षण है। पतले दस्त आना और समय बाँधकर शूल या दर्द, पुराना श्वास रोग, पुराने शराबियोंके अतिसार रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

संक्षिप्त लक्षण।

मुंह।—ऊपरके ओंठोंमें शूल वेधने जैसा दर्द। जीभमें जखम। नाकमें सर्दी, छींक।

पाकस्थली।—पेट फूलना, अम्ल-रोग, प्लीहाका दर्द।

श्वास-प्रश्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट, क्षयकास और खून मिली खांसी, छातीमें दर्द और पीव भरा कफ, खाँसीमें खूनके छींटे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध ।—सदृश—सल्फ, थिरिडियन, कैलि-कार्ब्ब ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ऐंथिमिस नोबिलिस ।

(Anthemis Nobilis).

दूसरा नाम ।—रोमन कैमोमिल ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—सूत जैसी क्रिमि, शूलका दर्द, अजीर्ण, सरमें दर्द ; यकृतकी बीमारी ।

उपयोगिता ।—डा० बार्नेट और वेयेज कहते हैं, कि पाकाशयके अजीर्णमें और सर्दी खाँसीमें, गलेके भीतर खुजली इत्यादिमें इससे लाभ होता है ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—विषाद-भरा, ऐसा मालूम हो, मानो विपत्ति आयगी ; शामके समय घर त्याग कर बाहर जानेपर सशंकित भाव, गाड़ीसे दब जानेका बहुत भय या आशंका ।

आंखें ।—बिछावनसे उठनेसे आँखोंसे पानी गिरना और नाकसे निर्मल पानीकी तरह पदार्थका स्राव होता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतें।—यकृत प्रदेशमें दर्द; आंतोंमें ऐंठन जैसा दर्द; मलद्वारमें खुजली।

मूत्राशय।—मूत्राधारमें सूजन; रेतोरज्जुमें दर्द और मोटापन मालूम होना; बार बार पेशाब करनेकी इच्छा और पेशाब करना।

त्वचा।—पैरके तलवेमें खुजली; मानो पैरमें बवाई फटी हो।

सम्बन्ध।—सिना, चायना (कैमोमिलाके अप-व्यवहारसे जरायुसे खून जाना) तुलनीय।

तुलनीय।—ऐलियम सिपा, यूफ्रे इत्यादि।

शक्ति।—३री और ३० वीं।

ऐन्थ्रासिनम। (Anthracinum)

दूसरा नाम।—ऐन्थ्राक्स प्वायजन (nosode)।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—भेड़की प्लीहाके ऊपरवाले विषफोड़ाके पीवसे यह दवा तैयार की जाती है।

रोगमें प्रयोग।—डा० क्लार्कने निम्न-लिखित रोगोंमें इसका प्रयोग कर लाभ देखा है:—मुँहपर मुँहासे; फोड़े, विषैले फोड़े, बड़ा सड़नेवाला फोड़ा; विसर्प; गलेमें डिप्थीरिया जैसी बीमारी; सड़नेवाला जखम; कानकी जड़में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जखम ; श्लेष्मा और प्रदाह-मिला जखम ; चेचक ; प्लीहा ज्वर ; अंगुलहाड़ा। कितने ही तरहके दाने और जखम।

उपयोगिता।—विषव्रण, विषैला फोड़ा, विसर्प ; मुँहासे ; सड़नेवाला जखम वगैरहमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। ये सभी फोड़े विषैले होते हैं ; **असह्य जलन और बदबूदार स्राव**—इसको बतानेवाला लक्षण है। पीव सड़नेपर बोखार वगैरह, बदबू या किसी तरहकी भाफ सूँघनेक वजहसे बीमारी ; कर्णमूल, अंगुलहाड़ा, सूतिका रोग वगैरहमें खासा लाभ करता है। एकके बाद एक फोड़ा निकला करता है, क्षतकी जगहपर एक पर्दा-सा आ जाता है, और रस-रक्त आदि स्राव पतले होते हैं—इन लक्षणोंमें यह फायदा करता है।

सम्बन्ध तुलनीय या समतुल्य दवाएँ।—ऐन्थ्रासिनम्, केडिनम, लैकेसिस, टैरेण्टुला, आर्स, कार्बोवेज, आर्स (जलन और जखम) ; और फास-एसिड (इसमें लाभ करता है) इसके बाद—अरम—साइलि।

दोषघ्न। आर्सेनिक, रास्टक्स और लैकेसिस, कार्बोवेज, पल्स, क्रियोजोट, कार्बोलिक एसिड, एपिस।

शक्ति।—३० या २००।

संक्षिप्त लक्षण।

सर-दर्दके साथ शीत ; सर फूला। सड़नेवाला कर्णमूल। गले और तालुकी ग्रन्थिमें पत्थरकी तरह कड़ापन। प्लीहामें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकार ; ज्वरातिसार (ज्वर और पतले दस्त आना) या हैजा-की तरह हिमाङ्गावस्था (शीत आ जाना)। कै और बिना दर्दका मल। हृत्पिण्डका तेज़ीसे धड़कना। नाड़ी क्षीण और तेज, नीलापन, रक्तका जमने लगना, रह रहकर और लगातार अकड़न। बगलकी गाँठोंका फूलना। सड़ना।

ऐन्थ्राकोकेलि। (Anthrakokali).

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कास्टिक पोटास। इस द्रवीभूत एक प्रकारके पत्थरके कोयलेसे मिलनेवाला एक तरह-का विशेष पदार्थ जिससे यह चूर्ण तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—हड्डियोंका क्षय रोग, फटना ; बहु मूत्र ; पेशाब अधिक होना, उकौत, माथेका पपड़ी जमा घाव और दाद ; पुराना वात ; आमवात ; चेचककी तरह खुजली ; नाकके गह्वरमें जखम, तेज़ प्यास। पित्तकी अधिकता और पित्तकी कै। गण्डमाला दोष ; प्रमेह दोष।

उपयोगिता।—इसकी अच्छी तरह चंगे शरीरपर परीक्षा नहीं हुई। बहुतसे चर्म्मरोगोंमें यह विशेषकर काममें लायी जाती है ; इसके उद्भेद पूर्णिमा और इसके पहले ८ठ जाते हैं। तेज़ प्यासवाले और बहुत ज्यादा पेशाबवाले—बहु-मूत्र रोगमें भी इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—ऐण्टिमनी, रस्टक्स, डाल्कमारा, फेरम आयोड, (मस्तकमें दादकी बीमारी)।

शक्ति।—निम्न क्रम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

नाकमें पुराना जख्म और फटना ; मुँहमें शोथ और गलेमें सूखापन ; निगलनेमें थोड़ा कष्ट मालम होना ।

पाकस्थली ।—भूखका अभाव ; बहुत ज्यादा खानेको वजहसे पेट फूलना या गड़गड़ाना, मुँह बे-स्वाद, पित्तकी कै, पेटमें ऐंठन, अतिसार ; तेज़ प्यास ; पेटमें गर्मीका अभाव ।

पेशाब ।—बहुत पेशाब निकलना ; मालूम हुए बिना ही पेशाब हो जाना । पेशाब करते समय पेशाबकी नलीमें जलन और खुजली । पेशाब रुकना ।

जननेन्द्रिय ।—बार बार लिङ्गमें कड़ापन ; असमयमें ही ऋतु होना ।

त्वचा ।—आमवात ; पुराने ढंगका विसर्प ; रातमें बढ़ना ; दिनमें कम रहना ; शोथ ।

नींद ।—नींद न आना, चंचलता, नाड़ी-तेज़ ।

ज्वर ।—एक बार शीत या कम्प और एक बार ताप पर्य्यायक्रमसे हुआ करता है । इसके बाद पसीना ।

एण्टिफेब्रिन । (Antifebrin)

दूसरा नाम ।—ऐसिटेनिलिडम ।

प्रस्तुत-प्रणाली ।—विचर्ण ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—दमा, नीलपाण्डु, मूर्च्छा, कलेजा धड़कना।

प्रकृतिगत लक्षण।—रोगी समझता है, कि सर बड़ा हो गया। बेहोशी, श्वासकष्ट, हृत्पिण्ड या रक्तवहा शिरा-ओंमें रक्त जमना, इसी वजहसे तन्तुमय अर्बुद ; आंखें मलिन, आँखोंकी पुतलीका फैलना ; हृत्पिण्ड दुर्बल और उसका स्पन्दन अनियमित ; लाल पेशाब, पैरमें शोथ या पैर फूलना वगैरहमें इसका व्यवहार हुआ करता है। **इसके व्यवहारसे शरीर-का ताप कम होता है।**

समगुण।—ऐण्टि-पाइरिन।

प्रयोग।—निम्न-शक्ति।

ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकम्।

(Antimonium Arsenicum).

दूसरा नाम।—आर्सेनियेट आव ऐण्टिमोनी।

प्रस्तुत-प्रणाली।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—सर्दीसे पैदा हुआ फेफड़ेका प्रदाह ; फेफड़ेकी सूजन ; आँखोंका प्रदाह ; हृदवेष्टका प्रदाह ; यक्ष्मा ; गृध्रसी (पैरमें झुनझुना पैदा करनेवाला वात।)

उपयोगिता।—बाईं ओरके फेफड़ेके ऊपरी भागमें रोग, खासकर प्रदाह। फेफड़ेमें वायु भरनेके साथ सांसमें तकलीफ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और खाँसी, बच्चोंके फेफड़ेके प्रदाहमें यह विशेष काम करता है। फेफड़ेके वेस्टका प्रदाह (प्लुरिसी), रोगके आरम्भमें और हृदवेष्ट-प्रदाहमें जब रसका स्राव होता है, तब इसके प्रयोगसे लाभ होता है। इसकी खाँसी भोजनके बाद और सोनेपर बढ़ती है। पैरके झुनझुनोवाले वातमें, आँखोंके उठनेमें और चेहरेके शोथमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध ।—अरम, लैकेसिस, पल्स, आर्स, स्नार्क और सलफर।

शक्ति ।—३ री या ६ ठी दशमिक शक्ति।

ऐण्टिमोनियम क्रूडम ।

(Antimonium Crudum).

दूसरा नाम ।—ऐण्टिमोनियम सल्फाइड। ब्लेक सलफाइड आफ ऐण्टिमोनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग ।—गुह्यद्वार या मलनालीका प्रदाह या उत्तेजना ; सर्दी ; ताण्डव ; कब्जियत ; गट्ठा ; अतिसार ; अजीर्ण ; उकौत ; पैरमें जखम और नखोंका बिगड़ना ; ज्वर ; दांत निकलनेके समय कोदवा माताकी तरह उद्भेद ; आमवात या शीत पित्त (जुलपित्ती) : अर्श ; कांच निकलना ; सर्दी-गर्मी ; स्वल्प-विराम ज्वर स्वरभङ्ग ; मसे ; हूप-खांसी।

प्रकृतिगत लक्षण ।—ऐण्टिम क्रूड देनेके समय रोगोंके मानसिक और शारीरिक लक्षणोंपर विशेष ध्यान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना चाहिये। इन लक्षणोंपर ही ऐण्टिम क्रूडका चुनाव खासकर निर्भर करता है। क्रोधी स्वभाव ; चिड़चिड़ा मिजाज, जीभ सफ़ेद लेप चढ़ी इसको बतानेवाले लक्षण है ; गर्मी लगने या ठण्डे पानीसे नहाने या पानीमें गोता मारकर नहानेसे सब लक्षण बढ़ जाते हैं। रोगीको धूप सहन नहीं होती। बच्चोंको दूध या स्तनका दूध सहन नहीं होता ; अतिसार य कब्जियत ; अतिसारके साथ गांठ गांठ मल ; नख फटा हुआ। पैरमें मसे ; पैरके तलवेमें गट्ठे इसका एक खास लक्षण है। ज्यादा भोजन, धूप लगना, अप्रतिदत्त प्रेम, रुके हुए उद्भेदसे पैदा हुए रोगोंमें यह ज्यादा लाभदायक है।

वृद्धि।—चन्द्रमाकी चाँदनीमें मानसिक लक्षण तथा शामको उत्तापसे ; खट्टी चीज़ें खानेपर, शराब और पानी पीनेपर रोग-लक्षणोंका बढ़ना। बाहरी हवा, विश्राम, सोने और गर्म पानीसे नहानेपर घटना।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—सिना। **दोषघ्न।**—कैल्क, हिपर, मार्कु, साइलोसिया (नखका बढ़ना रुकनेपर)। ग्रैफाइटीज (नख मोटा) ; थूजाका नख टूटनेवाला होता है। पसीना निकलनेके कारण पैरके तलवेमें जखम "बैराइटा" ; घुटनेके ऊपर हाथ रखे बिना चल नहीं सकता "मैडोरिनम्" ; चलनेके समय एंड़ी और पैरकी अंगुलियोंमें तकलीफ "लिडम", स्नानसे अरुचि "सलफर"।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति ।—६, १२, ३० या २०० ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—उदासी ; जीवनसे विराग ; निराशा ; पद्यमें बातें बोलनेकी इच्छा ; प्रेमका बदला न पानेकी वजहसे मानसिक कष्ट या रोग ।

मस्तक ।—शराब पीने और खट्टी चीजें, चर्बी या फल खानेकी वजहसे सरमें दर्द ; पाचनमें गड़बड़ीकी वजहसे सरमें दर्द ; ठण्डे पानीसे नहानेकी वजहसे सरमें दर्द ; सीढ़ी चढ़नेके समय माथेके ऊपरी स्थानमें बहुत दर्द मालूम होना । सरमें चक्कर आनेके साथ ही नाकसे खून जाना ।

आंखें ।—आंखके बाहरी कोनेमें दर्द ; सर्दीकी वजहसे पलकें सट जाती हैं ।

कान ।—कानमें शब्द ; बहरापन ; कानके पीछे दर्द ।

नाक ।—नाक फटी और दाग-भरी ; नाकसे खून गिरना । खांसनेपर नाकके पिछले भागसे (Posterior Nares) श्लेष्मा-स्राव ।

मुखमण्डल ।—दोनों ओठोंके जुड़नेकी जगहपर फटा फटा और दर्द-भरा ; चेहरेपर रस-भरे और दाने दाने फोड़े ।

मुख-गह्वर ।—नमकीन लार, जीभपर सफेद रङ्गका (दूधकी तरह) लेप (आर्निका ; आर्स, नक्सवमिका, मिलि) ; दाँतोंसे मसूड़े हटे हुए । दाँतोंका दर्द (कीड़े खाये हुए दाँतों-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का चय, कार्ब्बो, कैमो, स्टैफिके साथ तुलनीय); ठण्डकके स्पर्शसे ऐसा मालूम होता है, मानो एक शिरा कट गयी है, मुँहका सड़नेवाला जखम

पाकस्थली ।—पाचनमें विकार, रोटी, मिठाई, खट्टी, चटनी आदि भोजनकी वजहसे। छातीमें जलन, क़ै, मिचली, दूधकी क़ै, खानेका दूध क़ै (इथूजा, मैग-कार्ब्ब)। मीठी लार बहना; पेट फूलना।

आंतें, तलपेट, मल ।—पर्यायक्रमसे पतले दस्त और कब्जियत; मलद्वारसे खून या पतला रस बहना, आँव मिला मल।

पेशाब ।—गाढ़ा-गदला पेशाब; बार बार बदबूदार पेशाब, पेशाब पीला।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—रति-इच्छाका बढ़ना; रातमें शुक्र-निकलना; ध्वजभंग; लिङ्ग और अण्डकोष छोटे।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कामोत्तेजना; असमयमें पूरी तरह ऋतुस्राव न होना, प्रदरका स्राव, जखम करनेवाला; ठण्डे पानीसे नहानेकी वजहसे ऋतु-रोध (ऋतुका स्राव रुक जाना); डिम्बाधार प्रदेशमें दर्द।

श्वास-यन्त्र ।—हूप खाँसी, उसका स्नान और घरके भीतर बढ़ना; छातीमें जलन।

प्रत्यङ्ग ।—पैरके तलवेमें बड़ा और कड़ा गट्ठा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा ।—धूप बिलकुल सहन नहीं होती, धूपकी गर्मीमें लक्षणोंका बढ़ना ; मसे ; शय्यापर सोनेसे बच्चा चिल्ला उठता है ; ठण्डे पानीसे नहलानेसे बच्चा रोता है ।

निद्रा ।—दिनमें औंघाई ।

ज्वर ।—दोपहरमें प्यासके साथ कपकपी लगकर बोखार आना । चार बजनेके समय ज्वर । बोखार घटनेपर गाढ़ी नींद । सविराम ज्वरकी वजहसे रोगी बहुत ही चिड़चिड़ा और बहुत ही दुःख-कातर होता है ;—नैश्र ।

ज्वरमें पाकाशयका और चित्तका विकार । अनियमित नाड़ी (कभी तेज़ और कभी धीमी) ।

ऐण्टिमोनियम सल्फयूरेटम आरियम ।

(Antimonium Sulphuratum Aureum).

अन्य नाम ।—गोल्डेन सल्फयूरेट आव ऐण्टिमोनी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—मुँहासे, कमजोर दृष्टि ; सर्दी ; कब्जियत ; आँखोंके सफेद कोयेमें दाग ; आँखोंकी पुतलीका अपने स्थानसे हटना ; खुजली ; नाकसे खून गिरना ; फेफड़ेमें खूनकी अधिकता ; अजीर्ण और उदरामय ।

उपयोगिता ।—भलेचंगे शरीरपर इसकी परीक्षा करनेसे जाना गया है, कि आंखें और वक्षपर इसकी विशेष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया होती है। माथेमें जलन ; नाकके छेद और गलेमें श्लेष्मा जमा होना ; फोड़े ; सूखी खाँसी। हाथ-पैरमें खुजली।

सम्बन्ध ।—सदृश—अरम, आर्स; फेरम, मार्क-सोल।

शक्ति ।—६x विचूर्ण।

ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम।
(Antimonium Tartaricum).

दूसरा नाम ।—टार्टर ऐमेटिक, टार्टरेट आव ऐण्टिमोनी।

रोगमें प्रयोग ।—शराब पीनेकी वजहसे बीमारियां ; मुँहमें जखम; नये पैदा हुए बच्चोंको आंव जाना ; दमा ; श्वास-नालीका प्रदाह ; सर्दी ; जल-वसन्त ; विसूचिका ; खांसी ; कुकुर-खांसी ; चीजें दो देखना, अजीर्ण ; सविराम ज्वर ; कमरका दर्द ; फेफड़ेका प्रदाह ; कपकपीके साथ पक्षाघात (लकवा) ; चेचक ; चर्म्मरोग ; आमवात ; दाद ; कृमि ; गर्दन अकड़ना ; मेहदुष्ट रोग और कपकपी होना।

उपयोगिता ।—ऐण्टिमटार्ट एक वमन करानेवाली दवा है। एलोपैथ डाक्टर इसे वमन करानेके लिये व्यवहार करते हैं। इसलिये, जहां के और मिचलीकी प्रवलता दिखाई दे, वहां "ऐण्टिमटार्ट" और "इपिकाक"की याद आती है। "ऐण्टिम-टार्टकी" मिचलीमें एक विशेषता है। इपिकाककी के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेकी इच्छा बराबर बनी ही रहती है । कै होनेपर भी मिचली बन्द नहीं होती, परन्तु ऐण्टिमटार्टको मिचली कै हो जानेपर कुछ देरके लिये रुक जाती है। हैजामें जहां यह लक्षण स्पष्ट हो, वहां ऐण्टिमटार्ट मंत्रकी तरह काम करता है।

श्वासयंत्रकी बीमारीपर इसकी क्रिया अधिक है। श्लेष्मा घड़घड़ाया करता है, परन्तु खांसनेसे भी नहीं निकलता। खांसते खांसते रोगी हांफने लगता है। क्रोध करनेसे ही खांसी; सवेरेके वक्त खांसी। छोटी माता और चेचककी पहली अवस्थामें इसके व्यवहारसे अच्छा फल होता है। खासकर जब गोटियाँ पुष्ट होकर बाहर न निकलें।

कमजोरी और बहुत ज्यादा लसदार पसीना इसका निर्णायक लक्षण है। शराब पीनेवाले और वातग्रस्त मनुष्यकी पाकाशयकी बीमारियोंमें यह ज्यादा लाभदायक है।। बच्चा चिड़चिड़ा, कोई शरीरपर हाथ रखता है, तो चिढ़ उठता है, अकेला नहीं रहना चाहता। हमेशा गोदमें चढ़ा रहना चाहता है।

ह्रास-वृद्धि ।—कमरेकी गरमीसे; गर्म चीजें पीनेसे; खाटपर सोनेपर; तरीसे बसन्त ऋतुमें बढ़ना। नहाने, सीधे बैठने, डकार आने, दाहिनी करवट सोने, कफ निकलनेपर घटना।

सम्बन्ध ।—सदृश—ऐकोन (घुंडी), इपिकाक और इथूजा (मिचली), ब्रायो (न्यूमोनिया), लाइको (नासापुटका पंखेकी तरह हिलना) (Lapping); विरेट्रम (मूर्च्छा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ठण्डा पसीना), ओपियम (खांसी और तन्द्रालुता) ; (न्यूमोनियाके साथ मुंहका लाल काला भाव) ; थूजा (टीका देनेका बुरा परिणाम) ; साइलि (स्वरनालीमें कुछ अटकना)। बच्चोंकी खांसीमें ऐण्टिम-टार्टसे लाभ न होनेपर "हिपर" देना चाहिये।

दोषघ्न।—ऐसाफि, चायना, कोनायम, इपिकाक, पल्स, ओपियम, सिपिया। यह स्वयं ब्रायो, कैप्सिकम (अजीर्ण) "पल्स" का दोषघ्न है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—दिनके समय प्रफुल्ल रहना ; संध्याके समय उत्कण्ठा और भय ; इसी वजहसे कलेजेमें धड़कन। अप्रसन्न भाव, खूब चिड़चिड़ा, बच्चा हमेशा गोदमें ही रहना चाहता है। किसीके छूनेसे ही रोने लगता है। निरुत्साह, हताश और सुस्त। आत्महत्यापर झुकाव। अकेला रहना चाहता है।

मस्तक।—जड़ता, **औंघाई,** सरमें चक्कर, सरमें दर्द, इसके साथ ही कलेजा धड़कना। कुछ बड़बड़ाना, बकना और प्रलाप।

आंखें।—दृष्टिकी क्षीणता ; उठनेके साथ ही आंखोंके आगे आगकी चिनगारियां जैसी मालूम हों। वात या प्रमेहकी वजहसे आंखें उठना।

मुखमण्डल।—मुँहमें बहुत लार इकट्ठी होना ; जीभ तर, साफ अथवा बीचोबीचमें लाल ; सूखी, लाल लकीर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ी, मोटी और सफेद लेप चढ़ी चीज ; किसी चीज़-का स्वाद नहीं मिलता। चेहरा फूला ; चेहरा ठण्डे पसीनेसे भरा हुआ ; निचला जबड़ा हमेशा कांपा करता है, ओंठ फटे और उसकी छाल उधड़ना। नाकसे सर्दीका स्राव ; अकसर छींक आना ; नाकका पंखेकी तरह हिलना, सूंघनेकी शक्ति और स्वादका गायब हो जाना। कानमें गुन-गुन शब्द।

पाकस्थली।—पतले पदार्थ निगलनेमें तकलीफ ; भोजनके बाद मिचली और कै। दाहिनी करवट सोनेसे आराम मिलना। **बार बार थोड़ा थोड़ा ठण्डा पानी पीना ; खट्टी चीजें और फल खानेकी इच्छा।**

तलपेट।—पेटमें दर्द, बहुत अधिक आध्मान वायु (पेट फूलना), पेटमें गड़गड़ शब्द, पानीकी तरह मल, पाखाना गर्म मालूम होना। लसदार या माड़की तरह मल।

पुं०-जननेन्द्रिय।—प्रमेह रुक जानेके कारण अण्डकोषमें दर्द। उपदंश, लिङ्गकी सुपारीमें मसे।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—पानीकी तरह रक्त-मिला आर्त्तव। ऐसा मालूम होना मानो योनिकी राहसे कुछ बाहर निकल आयगा। इसके साथ ही दर्द मालूम होना।

श्वास-यंत्र आदि।—स्वरभंग, गलेके भीतर उत्ते-जना और खांसी, सर्दीको वजहसे घड़घड़ाहटकी आवाज़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखी खांसी, श्वास-कष्ट, क्रूप खांसी, फेफड़ेके पक्षाघातकी आशंका ।

वक्षःस्थल ।—फेफड़ा और श्वासनाली नया प्रदाह । नये पैदा हुए बच्चेका श्वास रुकना । श्लेष्माकी वजहसे बच्चेका गला घड़घड़ाना, काँवल रोगके साथ न्यूमोनिया । स्वरभंग ; खांसते खांसते जम्हाई आ जाना ; छातीमें. फेफड़ेके प्रदाहकी वजहसे, वक्ष-परीक्षा यन्त्रमें केश घसने जैसी आवाज़ आना, (Crepitation) ; जल्दी जल्दी सांस लेना और छोड़ना ।

हृत्पिण्ड ।—कलेजा धड़कना, नाड़ी कठिन, तेज़, क्षीण और कांपनेवाली । नाड़ी इतनी क्षीण कि मिलती ही नहीं ।

प्रत्यंगादि ।—पेशियोंका स्पन्दन । शराबियोंकी कपकपी ।

त्वचा ।—शरीरमें चेचककी तरह खुजलीके दाने । चेचक, पनसाहा माता । चेचक स्पष्ट रूपसे दिखाई देनेपर ।

ज्वरादि ।—कपकपी और शीत-प्रधान ज्वर । बहुत ही तेज़ उत्ताप । भरपूर पसीना न होना, औंघाई, बोखारकी वजहसे रोगी आंखें बन्द किये पड़ा नहीं रह सकता है । सर्दीकी वजहसे बोखार ।

शक्ति ।—३ री या ६ x विचूर्ण, ३० या २०० शक्ति हमेशा व्यवहारमें आती है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐण्टिपाइरिन। (Antipyrine).

दूसरा नाम।—फेनोजोन।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अलकतरासे पैदा हुए एक विशेष पदार्थका चूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—बाधक, पेशाब सम्हाल न सकना; और बिछावनपर पेशाब कर देना। मृगी, छोटी माता, सरमें दर्द, गलेका जखम, दांतका दर्द, आमवात, प्रसवका नकली दर्द, शीत आ जाना, श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह (डिप्थीरिया); मस्तिष्क विकृति, हृत्पिण्डका पक्षाघात, लाल रंगके उद्भेद, नाकसे रक्त-स्राव।

उपयोगिता।—जहां बोखारमें बहुत ज्यादा पसीना हो, हाथ पैर ठण्डे, जाड़ा न रहनेपर भी कपकपी, और शारीरिक तापके घटने बढ़नेके साथ ही साथ नाड़ीकी गति भी घटती बढ़ती हो, वहां ऐण्टिपाइरिन उपयोगी है। नील-पाण्डु, हिमांगावस्था, ऐसा मालूम होता है मानो शरीरके भीतर बरफ भरा है। हृत्पिण्डका अवसन्न भाव वगैरहमें यह व्यवहारमें आता है।

मन।—बेहोशी; ऐसा मालूम हो मानो पागल हो जायंगे, उत्तेजित भाव, जो चीजें नहीं हैं, उन्हें देखना और सुनना, उत्कण्ठा।

सर।—माथेमें दर्दके साथ ही साथ कान और दांतोंमें दर्द; मानो सब कसकर जकड़ गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखें।—पलकें फूलना, कोया लाल होना, आंखोंसे पानी गिरना।

कान।—कानोंमें दर्द और शब्द होना।

चेहरा।—चेहरा भर्राया हुआ और लाल, ओंठ और जीभ फूली ; मुँहके भीतर और मसूढ़ेमें सूजन ; ओंठ और जीभपर जखम ; खून मिली लार बहना ; निगलनेमें गलेमें दर्द होना ; बदबूदार पीब थूकके साथ बाहर निकलना ; फोड़ा ; गलेकी ग्रन्थियां फूलीं, गलेके भीतर जलन और सूखापन ; स्वर-भंग।

पाकस्थली।—मिचली और कै, पेटमें जलन, पेटके ऊपरी भागमें दर्द, दर्दसे रोगी दोहरा-सा होकर आगे झुक जाता है।

जननेन्द्रिय।—अनजानमें पेशाब हो जाना, थोड़ा पेशाब, योनिमें खुजली और जलन ; ऋतुरोध ; पानीकी तरह प्रदरका स्राव।

श्वास-यंत्र।—सर्दी—पानीकी तरह स्राव, नासा रंध्र-के बीचकी श्लैष्मिक झिल्ली फूली, सांस लेनेमें तकलीफ, श्वास-प्रश्वास, एक बार घटता दूसरी बार बढ़ता है।

हृत्पिण्ड।—मूर्च्छाका भाव, ऐसा मालूम हो मानो हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जायगी। नाड़ी कमज़ोर, तेज़ और अनियमित। सारे शरीरमें सुस्ती। मृगीका भाव। सारे शरीरमें स्पन्दन, संकोचन और आक्षेप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा ।—**लाल फुन्सियां,** खुजली, खसड़ा, असह्य **खुजली, आमवात (जुल-पित्ती) ।**

उपशम ।—गर्म पतली चीज़ें पीनेपर ।

शक्ति ।—२x, ३ और ऊँची शक्तियां ।

ऐण्टिर्हिनम लिनैरियम ।

(Antirrhinum Linarium)

दूसरा नाम ।—लिनारिया वलगेरिस । (Vulgaris Linaria) इत्यादि । कामन टोड् फ्लैक्स ।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताज़े पौधेके रससे मूल अर्क या मदर टिंचर तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—डा० **क्लार्क**—नीचे लिखे रोगोंमें इसने फायदा दिखाया है ।—अतिसार ; अनजानमें पेशाब हो जाना (बिछावनपर अनजानमें पेशाब कर देना) ; मूर्च्छा ; बवासीर ; आंखें उठना ; जीभमें कड़ापन ; जीभमें कांटे गड़ने जैसा दर्द मालूम होना ।

उपयोगिता ।—हृद्‌पिण्डकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ अवसाद (डा० **फेरिङ्गटन**) । अज्ञानमें पेशाब हो जाना ; गलेमें सिकुड़न ; मस्तिष्ककी जड़ता या हतबुद्धि भाव ; न रुकनेवाली नींद या औंघाई । घरके बाहर घूमनेके समय सब लक्षणोंका बढ़ जाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—दूध, चाय पीना। डिजिटे (मूर्च्छा भाव), कास्टिकम, इक्विसेटम (पेशाब करना), प्रभृति।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न-शक्ति।

एपिस मेलिफिका। (Apis Melifica).

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह मधुमक्खीसे तैयार होती है। मधुमक्खीका डंक काट और पीसकर, मदर टिंचर तैयार होता है।

रोगमें प्रयोग।—बड़ा फोड़ा या पीव पैदा हो जाना, संन्यास, दमा, अण्डलाल मिला पेशाब, मूत्राधारकी बीमारियां, उपदंशका जखम, कब्जियत, अतिसार, डिप्थोरिया, मुर्दा वगैरह चीरनेके समय अंगूठा आदि कटकर विषैला फोड़ा हो जाना, शोथ, कान या कानके पीछे विसर्प-जैसी अवस्था, लाल फुन्सियां। आंखोंकी बीमारी, देखनेवाले स्नायुका प्रदाह, सड़नेवाला जखम, छोटा सन्धिवात, हृद्‌शोथ, हृद्-रोग, अमौरी, जांघकी सन्धियोंमें प्रदाह, मधुमेह, योनिके बाहरी भागमें सूजन, डिम्बाधारका प्रदाह ; डिम्बाधारमें सूजन, डिम्बाधारमें अर्बुद, डिम्बाधारका स्नायुशूल, अंगुलहाड़ा, अंत्रावरण प्रदाह, यक्ष्मा, पलकोंका जुड़ जाना, चेचकका टीका लेनेका कुफल, चेचक जैसी खुजली वगैरह रोग।

उपयोगिता।—शोथ रोगमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है, आँखोंकी निचली पलकका फूलना और फूले हुए अंशका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थैलीकी तरह हो जाना, हाथ-पैरका फूलना, उदरी वगैरह रोगोंमें सबसे पहले यही दवा याद पड़ती है। शोथ, उसके साथ ही **प्यास न लगना पर पेशाबकी कमी**—इसकी पहचानका लक्षण है।

गण्डमाला:धातु, ग्रन्थियोंका बढ़ना और कड़ा हो जाना, जखम-भरा कर्कट (Cancer) इसके प्रयोगसे आराम होता है। छोटी माता, चेचक, आमवात वगैरहका अच्छी तरह न निकलना या बैठ जाना, वगैरह रोगोंमें यह बहुत फायदा करता है। आमवातकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। ईर्षा, द्वेष, क्रोध, भय, दुःसंवाद वगैरहसे पैदा हुए रोग इससे आराम होते हैं। जो जरा भी बातमें ही उत्तेजित या विचलित हो जाते हैं, या जो सहजमें ही सन्तुष्ट नहीं होते, थोड़ेमें ही रो देते हैं, जो दूसरोंका छूना बिल्कुल ही सहन नहीं कर सकते, जो भग्न-उद्यम या हताशसे हो रहे हों, उनपर इसकी क्रिया बहुत उत्तम होती है। बहुत सावधान मनुष्य भी कामके समय असावधान हो जाता है, हाथसे चीज गिर पड़ती है। इधर उधर हटनेवाला दर्द (पल्स), **डंक मारने जैसा और जलन पैदा करनेवाला दर्द** ।

बच्चा एकाएक बहुत जोरसे चिल्ला उठता है ; मस्तिष्कावरक झिल्ली-प्रदाहमें ऐसा चिल्लाना "एपिस"का प्रयोग बतलाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशाब रोकनेमें असमर्थ, कब्जियत या पतले दस्त आनेपर भी यह फायदा करता है। जाड़ा या कपकपी और **प्यासके साथ सविराम ज्वर** ; ज्वर तीसरे पहर ३ **बजेके समय आता है** ! डिम्बाधारका और अण्डकोषका प्रदाह और शोथ वगैरहमें यह सफलतापूर्वक व्यवहार किया जा सकता है।

शरीरके **दाहिनी ओर ही** इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है।

इसकी क्रिया धीरे-धीरे प्रकट होती है, जल्दी बदलना नहीं चाहिये।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—चीज़ हाथसे सहजमें ही गिर पड़ती है। उदासी, अनमनापन, हताश और अवसाद भाव ; चिड़चिड़ापन, ईर्षा और जल्दी ही क्रोध आ जाना, डरपोकपन, चंचलता, सहजमें सन्तुष्ट न होना। मस्तिष्कावरण प्रदाह (गुटिकादोष-युक्त), बीच बीचमें **जोरसे चिल्ला उठना** । किसी काममें चित्त न लगना। रोगी ऐसा समझता हो मानो उसकी आयु समाप्त हो गयी है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना। सोने या आँखें बन्द करनेपर बढ़ना ; एकाएक छुरी भोंक देने जैसा दर्द । सरके पीछे भार मालूम होना। नयी मस्तिष्कोदककी बीमारी, सभी उद्भेद रुके हुए रहते हैं और अच्छी तरह गोटियाँ बाहर नहीं निकलतीं, प्रलाप, बीच बीचमें जोरसे चिल्ला उठना, दांत कड़कड़ाना,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकियेमें सर गड़ा रखता है (हेलिबोरस), सरमें पसीना, पेशाबमें कमी।

चक्षु।—शोथकी तरह सूजन, **आंखोंके नीचे थैली की तरह झूल पड़ता है**; पलकें फूलीं, बाहर निकलीं या उलटी हुईं। आंखें उठनेमें डंक मारने जैसा दर्द। गर्म आंसू बहना। रोशनीसे भय मालूम होना; आंखकी स्नायुओंका प्रदाह।

कान।—दोनों कानोंमें सूजन और लाली, विसर्प, चेचक, छोटी माता आदिके बाद कानोंका प्रदाह। बहरापन।

नाक।—सूजन और लाल भाव, सर्दी निकलना, नाकमें बहुपाद (Polypus) या मांस जैसे पदार्थका बढ़ना।

मुखमण्डल।—सूजन और लाली; इतनी सूजन कि चेहरा देखकर रोगी पहचाना नहीं जाता; चेहरेकी भाव-भंगी भयपूर्ण या उदासीन; चेहरेका विसर्प रोग; चेहरेके दाहिनी ओरसे बाईं ओर रोग हट जाये (बाईं ओरसे दाहिने—रस्टाक्स)। जबड़े अटक जाना, इसी वजहसे जीभ हिलाकर स्पष्ट बातें नहीं कर सकना। दोनों ओंठ फूले, ऊपरका होंठ ही अधिक।

मुंहके भीतर।—ऐसा मालूम होना मानो जीभ जल गयी है। जीभका अगला भाग लाल और सूखा। पिछला भाग धुमैली रेखासे भरा। दांत निकलनेके समय मसूढ़े फूल उठना, मुँहमें बदबू, जीभ भारी मालूम होना, बातें अस्पष्ट, गलेमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदाह। मुँहसे जीभ बाहर निकल पड़ती है। मानो जीभमें जखम हुआ है।

गलेमें।—गलेमें सिकुड़न मालूम होना; निगलनेके समय डंक मारने जैसा दर्द। अलिजिह्वा फूली; तालुमूलके अगल-बगलकी ग्रन्थियाँ फूलीं और चमकदार लाल। गलेके भीतर और बाहर फूला; गलेमें जखम; ऐसा मालूम हो मानो गलेमें कांटा गड़ गया है।

पाकाशय।—ज़ब शोथ और उदरी रोगमें प्यास नहीं रहती, तब यह दवा ज्यादा उपयोगी होती है। खाई हुई चीज़ कै हो जाती है; झिल्लीक-प्रदाह (डिप्थीरिया) में तेज़ प्यास, इसलिये, बच्चे दूध पीनेका बहुत आग्रह करते हैं, पेटमें जलन मालूम होना।

आंत या तलपेट।—आमाशयमें पेटमें दर्द मालूम होना; छूना सहन नहीं होता अथवा छूनेके साथ ही बहुत दर्द। अंत्रावरणका प्रदाह, इसके साथ ही रस निकलना। कभी कभी जरायुके प्रदाहके साथ ही पेशाबका परिमाण घट जाता है। अन्धान्त्र (सिकम— Caecum) के साथ छोटी आंतोंके संयोग-स्थानपर बहुत दर्द मालूम होना।

मल।—सरलान्त्रका बाहर निकलना (कांच निकलना --prolapsus rectum)। गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटनेके साथ ही साथ खून जाना, शराबियोंका उदरामय; हर बार पेशाब करनेके समय मल निकल जाना; दस्त पानीकी तरह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पीले रंगका। कभी कभी श्लेष्मा-मिला; सवेरेके वक्त बढ़ना। लसदार मल।

मूत्रयंत्र।—पेशाबमें तकलीफ; पेशाबका वेग अधिक; गुर्दे या मसानेमें दर्द; बार बार पेशाब करनेकी इच्छा पर हर बार दो चार बूँद कर पेशाब निकलना। मूत्रद्वारमें खुजली; पेशाबमें खून; थोड़ा पेशाब; पेशाबमें छेछड़ा (Epithelium) निकलता है। पेशाब रोकनेमें असमर्थ।

पुं०-जननेन्द्रिय।—दाहिने अण्डकोषका फूलना और दर्द; कोरण्ड रोग; उपदंशके साथ डंक मारनेकी तरह तकलीफ और सूजन। एक ओरकी कौड़ी फूलना। दाहिने अण्डकोषका फूलना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—भगोष्ठकी सूजन (Labia); डिम्बाधारका प्रदाह; दाहिनी ओर अधिक। ऋतु बन्द, बाधक-का दर्द; रजसाधिक्य अथवा जरायुसे बहुत ज्यादा रक्त बहना। मूर्च्छा भाव; डिम्बाधारमें अर्बुदके साथ जरायुप्रदाह; ऐसा मालूम हो, मानो ऋतुका रक्त बाहर निकला चला आता है। दूसरे या तीसरे महीनेमें गर्भ-स्राव होना। गर्भावस्थामें दोनों स्तनोंका विसर्प; श्वेत-प्रदरका हरे रंगका स्राव।

श्वास-प्रश्वास-यंत्र।—स्वरभंग; श्वास-क्लेश, तेज श्वास-प्रश्वास; सूखी खांसी; वक्षोदक रोग।

हृत्पिण्ड।—नाड़ीकी गति तेज़, पूर्ण या क्षुद्र, क्षीण और वेग-भरी। हृद्पिण्डका प्रदाह और शोथ; एकाएक किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्रको चोटको तरह, तीर वेधनेको तरह, या डंक मारनेको भांति दर्द। रोगी ऐसा समझता है, मानो उसका दम अटक जायगा। हृद्‌पिण्डके फैलनेके समय सों सों शब्द सुन पड़ता है।

प्रत्यङ्ग।—शोथ-भरा। अस्थिके बीचके आवरणका प्रदाह (synovites) अंगुल-हाड़ाके पहले ; जानु-सन्धियोंका फूलना ; पीठ और अंग-प्रत्यंगमें वातका दर्द ; शोथ-मिलो सूजन ; अंगुलीका अगला भाग एकदम सुन्न ; खुजलाहट।

त्वचा।—सूजन ; डंक मारनेकी तरह दर्द ; दुष्ट-व्रण (कार्बङ्कल) ; सारा शरीर फूल उठना ; विसर्प।

निद्रा।—बहुत तन्द्रा या औंघाई ; सपने-भरी नींद ; नींदके समय एकाएक चिल्ला उठना।

ज्वरादि।—ज्वर तीसरे पहर तीनसे ४ बजेतक ; (थूजामें रातमें ३ बजे और दिनमें ६ बजे) ; ज्वरके समय छातीमें दम अटकनेकाभाव, पसीनेके समय तन्द्रा ; ज्वरके बाद नींद ; पसीनेके बाद जुलपित्ती निकल आना। "रोगीकी त्वचा पर्यायक्रमसे—एक बार पसीनेसे तर और एक बार सूखी रहने-पर एपिससे लाभ होता है।" **जाड़ेके समय प्यास, पसीने-की अवस्थामें प्यासका न होना,** उत्तापकी अवस्थामें अकसर प्यास नहीं रहती।

ह्रास-वृद्धि।—नींदके बाद ; छूने और पानीमें भींजने पर बढ़ना।—निर्मल हवाके सेवनसे ; ठण्डे पानीमें भींजने या स्नानसे उपशम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—अनुपूरक—नेट्रम, बैराइटा कार्ब, रस्टाक्स के साथ प्रतिकूल सम्बन्ध (उद्भेदको बीमारीमें)।

इसका प्रतिषेधक।—(Its antedotes) कैन्थ; आयोड, चायना, डिजि।

इसका दोषघ्न।—नेट्रम, इपिकाक, लैकेसि, लिडम।

तुलनीय।—ऐसिटिक ऐसिड (शोथ), ऐनाकार्ड (पित्ती निकलना), ऐपोसाई (शोथ), आर्निका (अकड़न), आर्स (सन्निपात), बेलाडो (मस्तिष्क प्रदाह), रियुमैक्स (अतिसार), नेट्रम (कम्प-ज्वर)।

शक्ति।—शोथ रोगमें निम्न ६ ठी शक्ति तक। अतिसार और आँखोंकी बीमारीमें ३०। विषम ज्वरमें २००।

ऐपियम विरस।

(Apium Virus).

औषध-प्रस्तुत-प्रणाली।—मधुमक्खियोंको रंज कर देनेपर, उनके डंकसे जो विष निकलता है, उससे यह दवा तैयार होती है। एपिसके बदले यही काममें लायी जाती थी, क्योंकि इससे एपिसका लक्षण मिलता-जुलता है। इसकी विशेष क्रिया यही है, कि रोगीके शरीरमें उसीके जखम आदिका पीव सोख जानेकी वजहसे जो उपसर्ग पैदा होते हैं, वे सभी इसके द्वारा अच्छे होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐपियम ग्रैवियोलेन्स।

(Apium Graveolens).

दूसरा नाम।—इसे साधारणतः "कामन सिलरी" (Celery) कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे टिंचर या मूल अरिष्ट तैयार होता है।

क्रिया।—ज्यादा मात्रामें सेवनसे नींद आती है।

रोगमें प्रयोग।—इससे नीचे लिखे रोग आराम हुए हैं-टपक जैसा सरका दर्द ; बेचैनी ; छातीमें जलन ; कानसे पीब बहना ; दाँतोंका शूल ; पेशाब रुकना ; पित्ती निकलना। ऋतु-स्रावके समय कष्ट इत्यादि।

उपयोगिता।—पेटमें गड़बड़ी मालूम होना, उसके साथ ही बदबूदार डकार ; खाई हुई चीज़का कै होना। पेटमें खाली मालूम होना, कुछ खानेपर आराम मालूम होना। पेशाब रुकी, चंचलता, शरीर और मनकी चंचलता ; बिना सोचे या इधर उधर टहले रह नहीं सकता। ऐसा मालूम होना मानो आँखें गड़हेमें धँसी हों। खुजलानेवाली सूखी खांसी। डा०-हेरिङ्गने इसके द्वारा नाभीके पासका एक फोड़ा अच्छा किया है। खुजलानेके बाद दूसरी जगह खुजली आरम्भ हो जाती है। सरमें दर्द-खानेसे घटना, अच्छी तरह नींद रातमें नहीं आती॥

शक्ति।—१ ली से ६ठी दशमिक तक॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐपोसाइनम् एण्ड्रोसिमिफोलियम् ।

(Apocynum Androsaemifolium).

दूसरा नाम ।—डाग वेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस गाछकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

रोगमें प्रयोग ।—अतिसार, शोथ, मिचली ; मुँह-में स्नायुशूल ; वमन ; इधर उधर रहनेवाला आमवात ; क्रिमि रोग, पथरी वगैरह रोगमें इसका व्यवहार होता है ।

उपयोगिता ।—ज्यादा मात्रामें सेवनसे नीचे लिखे लक्षण पैदा हुए हैं । सारे शरीरमें कम्पन ; सुस्ती ; हाथपैरका फूलना, इधर-उधर घूमनेवाला दर्द, आमवात, कड़ापन इसकी विशेष प्रकृति है । दर्दकी गति ऊपरसे नीचेकी ओर, और बाईं ओर यह गति घूम जानेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है । डा० हेलने इसके प्रयोगसे एक वातग्रस्त रोगीका अतिसार (क्रिमि-लक्षण-युक्त), अकड़न, और दाँतोंका दर्द आराम किया है । पथरीमें भी यह खास लाभ करती है । सर और गर्दनकी अकड़न । दस्त, कै या कब्जियत ; ऋतुस्राव बहुत ज्यादा, साथ ही साथ दर्द, वात रोग, बदलनेवाला दर्द, पसीना और खुजली ।

सम्बन्ध ।—सदृश लक्षण-मिली दवाएँ—कोलचिकम, ऐपोसाइनम् ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति व्यवहारमें आती है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐपोसाइनम् कैनाबिनम

(Apocynum Cannabinum)

दूसरा नाम।—इण्डियन हेम्प। एक तरहकी अमेरिकन भांग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे पौधे या जड़से मूल अरिष्ट तैयार किया जाता है।

रोगमें प्रयोग।—उदरी, सर्दी, बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा), बहुमूत्र, अतिसार, अजीर्ण, अनजानमें पेशाब हो जाना, हृद्‌रोग, मस्तिष्कोदक (माथेमें पानी पैदा होना); ऋतुके समय अधिक खून जाना, जरायुसे खून जाना, मिचली स्नायुशूल, सर्दीसे नाक बन्द हो जाना, तम्बाकू सेवनके दुष्परिणामके कारण हृदरोग, मूत्रक्लेश, कै आदि।

उपयोगिता।—डा० क्लार्कने इसके साथ "**स्ट्रैपोन्थस**" की तुलना की है। दोनों ही दवाएँ ज्यादा मात्रामें सेवन करनेपर पाकाशयकी गड़बड़ी पैदाकर हृद्‌पिण्डकी क्रिया सुस्त कर देती है। इससे शोथ घटता है और पेशाब निकलनेकी क्रियामें वृद्धि होती है। यकृतकी वजहसे उदरी रोगमें यह बहुत उपयोगी है।

डा० बोरिक कहते हैं :—नयी मस्तिष्कोदक बीमारीमें इसके प्रयोगसे पहले नाड़ीकी तेज़ी घटती है। **उदरी,** शोथ, वक्षोदक रोग और मूत्रयंत्रकी गड़बड़ीकी बीमारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इसका प्रयोग होता है। पेशाबकी कमी, पेशाबमें तक-लीफ, पेशाब रुकना वगैरह लक्षण ही प्रबल रहते हैं। कलेजे-की धड़कन वगैरह गड़बड़ीमें बढ़िया काम करता है। ऐसा मालूम हो, कि अब श्वास रुका। शराब पीनेका बुरा नतीजा, और अनजानमें पाखाना होनेपर इससे आराम होता है। शोथ-के साथ ही साथ कभी कभी यकृतका दोष पैदा हो जाता है और प्यासकी तेज़ी और दस्त के वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

संक्षिप्त लक्षणावली।

मस्तक।—सरमें चक्कर एकाएक पैदा हो जाता है, एकाएक अच्छा हो जाता है। सर मानो ढुलका पड़ता है, दाहिनी कनपटीमें बेधने जैसा दर्द। मस्तकमें पानी एकत्र होना। एक आंखसे दिखाई न देना, दूसरी आँखमें भी अकसर वैसा ही होता है। आँखोंका प्रदाह, ऐसा मालूम हो, मानो आँखोंमें बालू पड़ी है।

मन।—हताश हो पड़ना, स्नायविक निस्तेजता, दिमागकी बीमारी, एक हाथ और एक पैर हमेशा हिलाया करता है।

नाक।—लगातार बहुत देरतक छींक आते रहना, बच्चोंका नाक बन्द।

पाकस्थली।—पानी पीनेके बाद अच्छा न लगना, धीमे सर-दर्दके साथ मिचली। औंघाई आते रहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलपेट।—आन्त्रिक ज्वर, यकृतका मोटापन या कड़ापन। पेट फूलना, भोजनके बाद बढ़ना।

मल-मूत्र।—सवेरे मूत्राधारका फैलना और भोजनके बाद पतले दस्त आना ; पानीकी तरह मल। बवासीरके साथ उदरामय। आँव मिला मल ; मूत्रकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब होना।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पुरुषेन्द्रिय और अण्डकोषका फूलना या शोथ।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुस्राव न होना ; कभी-कभी जरायुसे रक्तस्राव ; तलपेट और दोनों पैरोंका फूलना।

श्वास-यंत्र।—श्वास-कष्ट, वक्षोदककी बीमारी, हृद्पिण्डका धड़कना, नाड़ी तेज़, कमजोर, रुक रुक कर, असमान और कोमल।

अंग-प्रत्यंग।—आमवातका दर्द, सन्धि-स्थानोंका झुक न सकना। पैरकी एँड़ी और सन्धियोंमें दर्द।

नींद।—तीसरे पहर औंघाई ; बेचैन नींद।

ज्वर।—सारे शरीरमें पसीनेकी बड़ी बड़ी बूंदें पैदा होना। पारा और क्विनाइनके अपव्यवहारके कारण बोखार।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐसेटिक एसिड, एपिस (प्यास-हीन शोथ), आर्स, चायना बेलाडो, कोलचि, ब्रायो, डिजि, (शोथ), हेलिबो (मस्तिष्कोदक, उदरी), गैम्बोज,टम्बि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अतिसार), कैलिकार्ब्ब, मार्कु, नक्स-व, स्पाइजि, स्क्विला, सल्फ, वेरेट्रम, लाइको ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति, मूल अर्क या काढ़ा ।

विशेष द्रष्टव्य ।—निम्न शक्तिका मूल अर्क बड़ी सावधानीसे देना चाहिये। ज्यादा पड़ जानेसे किसी किसी रोगीको दस्त, कै और जीवनी शक्तिकी सुस्ती पैदा हो जाती है ।

ऐपोमार्फाइनम् (ऐपोमार्फिया) ।

(Apomorphynum).

दूसरा नाम ।—ऐपोमार्फिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह अफीमके उपचारसे तैयार होता है । पहले विचूर्ण, इसके बाद अरिष्टके रूपमें तैयार किया जाकर व्यवहारमें आता है ।

रोगमें प्रयोग ।—बहुत ज्यादा शराब पीनेकी वजहसे रोग, अफीम सेवन करनेका अभ्यास, गर्भिणीकी कै; सवारीपर चढ़नेसे ही कै। मस्तिष्कमें विकारकी वजहसे कै, न्यूमोनियाके साथ कै ।

उपयोगिता ।—औंघाई, मूर्च्छाभाव, एकाएक कै होने लगना। बिना तकलीफकी कै (मिचली नहीं होती या रहती नहीं है) । मस्तिष्कमें अर्बुद पैदा हो जानेपर उससे पैदा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई प्रतिक्षिप्त क्रियाको वजहसे कै होने लगती है, शराब पीना या अफीम खाना, इन दोनोंका संयुक्त या सम्मिलित कुफल। कब्जियत ; नींद न आना ; सरका दर्द ; प्रलाप ; दुबलापन और बेहोशी।

लक्षणावली।

मस्तक और पाकाशय।—सरमें चक्कर, मिचली और कै ; सारे शरीरमें गर्मी मालूम होना। छातीमें जलन, दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द। प्रतिक्षिप्त क्रियासे पैदा हुआ वमन। (गर्भवतीका वमन) ; समुद्र यात्राके समय वमन।

शक्ति।—३री और छठी शक्ति।

ऐक्वा मेरिना। (Aqua Marina).

रोगमें प्रयोग।—(Clinical use)—**क्लार्क**—बहुत ज्यादा पैत्तिक लक्षण ; कब्जियत ; सरमें दर्द ; सामुद्रिक वमनेच्छा (sea-sickness--गाड़ी, पाल्की, नाव, जहाजपर सवार होकर कुछ आगे बढ़नेसे ही कै और मिचली होती है, इसे sea-sickness कहते हैं)। नदीके किनारे या समुद्रके किनारे रहनेका कुफल इत्यादि।

उपयोगिता।—**क्लार्क**—जो समुद्र-तटपर रहते हैं, उनका पैत्तिक लक्षण, कब्जियत, सरमें चक्कर वगैरहमें इसकी ऊँची शक्ति व्यवहार करनेपर लाभ हुआ है। डा० वेसेल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरण्टकी परीक्षामें नीचे लिखे लक्षण पैदा हुए थे—दाहिनी कनपटी और कपालमें स्नायुशूल, चेहरेके बाईं ओरका स्नायुशूल ; ठण्डा पानी सहन नहीं होता ; ऐसा मालूम हो मानो गलेमें मछलीका कांटा या केश अटका है। गलेके भीतर गुड़गुड़ करता है और निगलनेका वेग आया करता है, इससे खांसी पैदा होती है (खांसनेपर भी गलेके लक्षण दिखाई नहीं देते)। निगलनेपर दर्द कान और कनपटीतक फैल जाता है। पाकाशय और आंतोंमें या ऊपरी पेटमें और तलपेटमें मिचलीका पैदा होना, हमेशा खक खक कर खांसना और रूईकी तरह सफेद कफ़ निकाला करना। समुद्रके किनारे बीमारीका बढ़ना ही इसकी पहचानका लक्षण है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—नेट्रम-म्यूर, क्लोरम, सिलिका-मेरिना

शक्ति।—चूंकि नदीके पानीमें सब तरहका Inorganic substance रहता है, इसीलिये, उच्चतम शक्ति व्यवहारमें लानी चाहिये।

ऐपियोल (Apiol)

दूसरा नाम।—ऐसेन्शियल आयल (essential oil) जो कामन पर्स्लसे उत्पन्न होता है।

परिचय।—पिट्रोसेलियम सैटाइवम, तेल जैसे पदार्थसे यह दवा तैयार होती है। १x रेक्टिफायड स्पिरिट साल्यूशन ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद (नाना मुनि नाना मत); इसकी ऊँची शक्ति रेक्टिफायट स्पिरिटमें तैयार होती है।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्पिरिट या अलकोहलमें शक्तिकृत होता है।

रोगमें प्रयोग —मस्तक—सरमें चक्कर आना; पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिनी ओरके छपे हुए अक्षर बाईं ओर छपे हुए अक्षरपर जा पड़े हैं। सर बड़ा मालूम होना।

पेशाब।—पेशाबका रंग कुसुमके फूलकी तरह, पांच पांच मिनिटपर पेशाब लगना; थोड़ा पेशाब होना; बार बार पेशाब मालूम होना। (Urging frequent)।

नींद।—बेचैन। रातके दो-तीन बजनेके पहले नींद नहीं आती। हाथ पैर हिलाये बिना नींद नहीं आती। रोगी हाथ पैर हिलाया करता है।

शक्ति।—१x से ३० शक्ति।

ऐरेलिया रेसिमोसा।

(Aralia Racemosa).

दूसरा नाम।—अमेरिकन स्पाइकनार्ड, जंगली गाछ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग ।—दमा ; खांसी ; अतिसार ; बवासीर ; श्वेतप्रदर ; गुह्य-द्वारका अपने स्थानसे हटना या कांच निकलना रोगमें इसका प्रयोग होता है।

उपयोगिता ।—यह यक्ष्मा और खांसी रोगमें व्यवहार किया जाता है ; श्वेतप्रदरको एक बढ़िया दवा है। **दमा रोगमें भी** यह ज्यादा लाभ करता है (दाहिने फेफड़ेपर यदि बीमारीका हमला अधिक हो)—दमाके बाद सफेद, नमकीन और गर्म कफ़ निकलता है, सोनेसे ही दमा बढ़ जाता है, उठ बैठना पड़ता है।

डा० बार्नेट—शामको या एक नींदके बाद ही खांसीका बढ़ना, बहुत कफ और ज्यादा पसीना। जोन्सके मतसे—मलद्वारका निकलना, और अतिसार मौजूद रहता है। प्रसवके बादका स्राव (Lochia), पेट फलना।

सम्बन्ध ।—जिन्सेङ्ग, कैल्के, रिउमिक्स, क्लोरम इत्यादि।

शक्ति ।—मूल अर्क ३री, ६ठी या १२वीं और ३०वीं।

ऐरेनिया डायेडिमा।

(Aranea Diadema).

दूसरा नाम ।—गार्डेन या पेपल-क्रास-स्पाइडर। एक तरहका मकड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है।—हड्डियोंकी बहुतसी बीमारियाँ; निस्पन्द वायु; कम्प या शीत; बाधक; अजीर्ण; खूनका स्राव; रक्तस्रावी धातु; सरका दर्द; रसवात धातु (Hydrogenoid constitution) मलेरिया या पालाज्वर; ऋतुके स्रावमें गड़बड़ी; स्नायुशूल; नश्तरका जखम; शीताद; मसूढ़े फूलना और वहांसे खून बहना और दांतोंका दर्द; प्लीहाकी बीमारी आदि।

उपयोगिता।—रसवात धातु, जो तरी और शीतमें और नदीके किनारे रहते हैं अथवा जिन्हें नहाना बिल्कुल ही बरदाश्त नहीं होता। **बोरिकने** लिखा है—बँधे हुए वक्तपर रोगका बढ़ना, (सामयिकता—periodicity) और शीत ही इसका प्रधान निर्देशक है। जो रोगी इस तरह ठंड अनुभव करता है, कि उसके हाथके भीतर बरफ है और कनकनी होती है। जखमसे या शरीरके अन्यान्य स्थानोंसे रक्तस्राव। बिजलीकी लहरकी तरह दर्द उठता है। दांतोंमें दर्द, ठण्ड है, पर गर्म प्रयोगसे आराम नहीं होता। बोखारमें पसीना बिल्कुल ही नहीं होता।

सम्बन्ध।—थेरिडियम, टैरेण्टू, इपिकाक, नक्स-व, आर्स, (सविराम ज्वरमें), सिड्रन, (सविराम ज्वर, ग्रीष्म-प्रधान देश)। इसके दोषको दूर करनेवाला तम्बाकूका धुआं है। यह चायना, क्विनाइन और मर्क्यूरियसके दोषको दूर करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—मस्तक और चेहरेके दाहिनी ओरका स्नायु-शूल तम्बाकूका धूआं सेवन करनेसे घट जाता है। रातमें एकाएक दांतोंमें दर्द पैदा हो जाता है। बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव ; पेट फूलना ; कमरमें कनकनी ; छातीकी स्नायुओंमें दर्द ; फेफड़ेसे बहुत लाल रक्त बहना।

पेट ।—प्लीहाका बढ़ना ; अतिसार ; हाथ पैर पत्थर जैसे भारी मालूम होना।

बोखार ।—कम्पके साथ हड्डीमें दर्द ; रात दिन जाड़ा या कपकपी अनुभव करना। बरसातमें बढ़ना।

ह्रास-वृद्धि ।—ठण्डी तर हवामें, तीसरे पहर और बिचली रातमें सब उपसर्ग बढ़ जाते हैं। धूम्रपानसे घटना।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति और ३० शक्ति हमेशा व्यवहारमें आती है।

आर्कटियम लैप्पा। (Arctium Lappa).

दूसरा नाम ।—लैप्पा मेजर ; कामन बार्डक ; लैप्पा आफिसिनेलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभ-दायक है। मुंहासे; गांठोंका फूलना; खसड़ा रोग; गरलकी तरहकी कितने ही प्रकारकी खुजलियाँ; प्रमेह; छोटी सन्धियोंका वात; ध्वजभंग; इन्द्रिय-शिथिलता; प्रदर; पेशाबमें फास्फेट जमना; आमवात; दादकी तरह चर्म्म-रोग; गण्डमाला दोष; बांझपन; कितने ही तरहके जखम; जरायुका अपने स्थानसे हटना।

उपयोगिता।—पहलेके समयमें जरायुका हटना; बांझपन और दूधकी तरह पेशाबके रोगमें इसका व्यवहार होता था। अब भी यह इन रोगोंमें फायदा दिखाता है। त्वचा और बहुत तरहकी बीमारियोंमें इसके व्यवहारसे बहुत लाभ होता है। **बगलका बदबूदार पसीना** लक्षणमें इससे बहुत लाभ पहुँचा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्निका; ब्रायो (वात रोगमें); कैल्क-फास (पेशाबमें फास्फेट या दूधकी तरह पेशाब), कैलेण्ड्, सिना। लिलियम और सिपिया (जरायु टलना), विङ्कामाइन, वायोला-ट्राइकलर (चर्म्मरोगमें)।

शक्ति।—मूल अर्क, ६ठी और ३० वीं शक्ति हमेशा व्यवहारमें आया करती है।

संक्षिप्त लक्षण।

मस्तक।—माथे और गर्दनमें रसभरी फुन्सियाँ, व्रण और दूधिया पपड़ी जमना; खसड़ा, कच्छु-विषकी तरह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुजली वगैरह । पलकोंपर गुहौरी और जखम । बच्चोंके माथेपर फोड़ा और दुधिया पपड़ी जमना ।

पाकाशय ।—पेट फूलनेके साथ अजीर्ण; इसके साथ ही डकार । उदरामयके साथ वातकी पर्यायशीलता ।

पेशाब ।— दूधकी तरह पेशाब ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—इन्द्रिय-वासनाकी कमी या एकदम गायब हो जाना ; पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें जलन ; उरु और अण्डकोषमें दादकी तरह उद्भेद ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुके हटनेके साथ ही साथ नीचेकी ओर खींचनेवाला दर्द (मानो कुछ बाहर निकलता है), इसे जरायुका मैग्नेट (Uterine Magnet) कहते हैं । श्वेत-प्रदर ।

श्वास-यंत्र ।—गलेमें सुरसुरी भरी खांसी, हृत्पिण्डमें एक तरहका दर्द, जो बताया न जा सके ; नाड़ी तेज़ ।

अंग-प्रत्यंगादि ।—अंग-प्रत्यंगमें वातका दर्द ; सन्धियोंमें दर्द ; बगलकी गांठ फूली और उसमें पीव होना ।

त्वचा ।—फोड़ा, रस-भरा, धुमैला, पपड़ी जमा उद्भेद, सन्धिस्थलका जखम ।

हृद्पिण्ड ।—बैठने या सोनेके समय अथवा रातमें एकाएक कलेजा धड़कना । मानो रोगिनी डर गयी हो, इसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद लम्बी सांस छोड़ना अथवा ऐसा मालूम होना कि कलेजेकी धड़कन बन्द हो गयी है। इसके बाद गर्मी मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अपत्य-पथसे पतला श्लेष्माकी तरह पदार्थ बहना। यह उत्ताप लगनेपर कठिन हो जाता है।

आर्जेण्टम मेटालिकम।

(Argentum Metallicum).

दूसरा नाम।—आर्जेण्टम फोलियेटम, सिलवर लीफ (रुपहला तबक)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।— वचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—पलकोंका प्रदाह; बिछावनमें पेशाब करना; मूत्पाण्डु; हड्डीका क्षय; मस्तिष्कमें थकन; मृगी; बहुमूत्र; खांसी; हड्डी बढ़ना; हृत्पिण्डकी कितनी ही बीमारियां; पुट्ठेकी बीमारी; सन्धियोंमें छालेकी तरह सूजन; स्वरनाली-प्रदाह; डिम्बाधारका प्रदाह; यक्ष्मा-कास; स्वप्न-दोष; आमवात; जरायुमें कर्कट; जरायुका हटना इत्यादि रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता।—लम्बा चौड़ा शरीरवाला दुबला-पतला और क्रोधी प्रकृतिवालेके लिये ज्यादा उपयोगी है। **पारेके अपव्यवहारका बुरा परिणाम** उपस्थि या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धनी वगैरहकी बीमारी ; **हृदयकी अत्यन्त कमजोरी खासकर बाईं ओरकी ;** सन्धि-समूहोंमें छेदने जैसा या चोट लगने जैसा दर्द ; वायुनलीभुज प्रदाह । **बाईं ओर बीमारी अधिक होना ; गवैये और वक्ताओंका स्वरभंग और गलेके भीतर दर्द वगैरह** इससे आराम होता है। बिना सूजनवाला सन्धि-प्रदाह ; अकड़न ; हृत्पिण्ड-में दर्द और रातके समय स्पन्दन । मूर्च्छा-वायुका आक्रमण ; गर्भावस्थामें अपस्मार ; अण्डकोषमें पीसने जैसा दर्द ; **स्वप्नदोष ; प्रायः प्रत्येक रात्रिमें स्वप्नदोष होना ; लिङ्ग उद्रेक हुए बिना ही धातु निकल जाना, हस्तमैथुनसे पैदा हुआ कुफल ; लिङ्गका टेढ़ापन ;** बार बार छींक ; नाकसे लसदार श्लेष्मा निकलना और वयःसन्धिके समय जरायु और अण्डाधारकी **खासकर बाईं ओरकी** कितनी ही बीमारियोंमें यह लाभदायक है ।

वृद्धि ।—छूनेसे, मध्याह्नमें, गाड़ीपर चढ़नेमें, बोलने और हँसनेमें बीमारी बढ़ जाती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ज़िङ्कम (पेशी-मण्डल), पैलेडि (दाहिना अण्डकोष); स्टैनम (खांसी आना) ।

दोषघ्न ।— मार्क्यूरियस, पल्स ।

शक्ति ।—६ठी ; ३०वीं, २०० इत्यादि ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—सर्दी-गर्मीकी आशंका और उसके साथ ही कलेजा धड़कना; चंचलता, विषण्णता, क्रोधसे पागल जैसा, समय बहुत अधिक मालूम होता है।

मस्तक।—रोज बाईं कनपटीमें स्नायुशूलकी तरह दर्द धीरे धीरे बढ़कर एकाएक बन्द हो जाता है। सरमें चक्कर आना, सरमें खालीपन मालूम होना।

आंखें।—खुजली, पलकका किनारा फूला और लाल।

कान।—टनक जैसा दर्द, कान बन्द-सा मालूम होना।

नाक।—नाकसे खून गिरना, नाक बन्द, छींक।

गलेमें।—गवैये और वक्ताओंका स्वरभंग; हँसने वगैरहसे खांसी आना; सवेरे आप ही आप बहुत ज्यादा कफ़ निकलना।

पाकस्थली और आंतें।—पेट और छातीकी ओर जलन मालूम होना, रोगीको झुककर चलना पड़ता है, बहुत मिचली। भोजनके बाद पेट, मणिपुर या विटपी प्रदेशमें दर्द और दबाव मालूम होना; बार बार मलत्याग-की इच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशाब ।—भरपूर पेशाब न होना, बहुमूत्र, पेशाब गाढ़ा और मीठी गन्ध लिये ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—वीर्य-स्खलन ; विशेषकर अमिताचार--ज्यादतियोंकी वजहसे, लिङ्गका पतलापन ; लिङ्गमें कड़ापन हुए बिना ही धातु निकल जाना ; अकसर प्रति रात्रिमें स्वप्नदोष ; अण्डकोषमें पीसनेकी तरह दर्द (बोडो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुका अपने स्थानसे हटना ; डिम्बाधारकी बीमारी ; विशेषकर बाईं ओरकी ; चमड़ेको क्षय करनेवाला बदबूदार प्रदर ; जरायुका अर्बुद और रक्तस्राव ; वयःसन्धिके समय जरायुका स्राव ।

श्वासयंत्र आदि ।—फेफड़ेकी कमजोरी ; वायु-नली-भुज-प्रदाह ; खांसनेके साथ सहजमें ही श्लेष्मा निकल पड़ता है ।

प्रत्यंग आदि ।—सन्धि-समूहोंका वात ; खासकर केहुनी और घुटनेका वात ; पैरोंमें कमजोरी और कांपनेका भाव, खासकर नीचेकी ओर सीढ़ी उतरनेपर । लिखनेवालोंका हाथ कांपना या अकड़ना ; मृगी ; पैरकी एँड़ीका फूलना ।

ज्वर ।—क्षय या विलेपी ज्वर—१२ या १ बजे ज्वर आता है या पैरका तलवा ठण्डा मालूम होना इत्यादि ।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्जेण्टम-नाइट्रिकम ।

(Argentum Nitricum).

दूसरा नाम ।—नाइट्रेट आव सिल्वर, लूनर-कास्टिकम, आर्जेण्टम नाइट्रस इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—अम्लरोग, अजीर्ण, डकार, पेट फूलना, छातीमें जलन, खूनकी कमी, मृगी, विसर्प, पाकाशय-का जखम, प्रमेह, सरमें दर्द ; हाथ-पैरका फूलना, निचले अंग-का पक्षाघात, मुखशायी ग्रन्थिका फूलना, स्नायुशूल, नये पैदा हुए बच्चेका प्रदाह, पक्षाघात, चेचक, गलेके भीतर और जीभमें जखम और मसे इत्यादि ।

उपयोगिता ।—बहुत दुबला, सूखी देह, क्षय हुआ मांस, बुड्ढा दिखाई देना, दबे हुए गाल, इस ढंगके चेहरेका रोगी देखते ही इसे याद करना चाहिये । नयी या पुरानी बीमारी जो बहुत ज्यादा या बहुत दिनोंके पुराने मानसिक परिश्रमके कारण पैदा हुई है । शरीरका बहुत ज्यादा दुबलापन, वह दुबला-पन प्रति वर्ष अधिकाधिक बढ़ता ही जाता है, **खासकर निचले अंगका । इसमें बहुतसी मानसिक गड़-**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ियाँ दिखाई देती हैं। समय बहुत धीरे धीरे बीतता है, यह रोगीको घबड़ा देता है। सब काम बहुत जल्दी कर डालना चाहता है। बहुत तेजीसे चलना चाहता है, हमेशा तेज़ चलनेका भाव; इसके साथ ही जल्दबाज़ी, उत्तेजना और स्नायविकता। **अत्यन्त मानसिक भय,** राहमें चल नहीं सकता, ऐसा मालूम होता है, मानो अगल-बगलके मकान रोगीके मस्तकपर आ गिरेंगे या धक्का दे रहे हैं। रोगी समझता है, कि उसके हाथ पैर नाक आदि बड़े हो गये हैं। छत, खिड़की, या पुलके ऊपरसे कूद पड़ना चाहता है, यहांतक कि सचमुच ही कूद पड़ता है। भीड़में जैसे गिर्जा, नाटकघरमें जा नहीं सकता या वक्तृता नहीं दे सकता—पतले दस्त आने लगते हैं। **कम्पन** इसका एक और भी विशेष लक्षण है। मस्तिष्क और मेरुमज्जाकी बीमारीकी वजहसे स्नायुमें विकार, पेशियोंकी समता-रक्षाका अभाव। शारीरिक और मानसिक शक्तिमें सामंजस्य न रहना। बीमारीवाली जगहमें सुई आदि बेधनेकी तरह मालूम होना; तुरन्तके पैदा हुए बच्चेकी आँखें उठना; बहुत ज्यादा मात्रामें पीबकी तरह स्राव; जखम; पलकोंका जखम, मोटा हो जाना; सूजन; सवेरे पलकोंका सट जाना और बहुत सटना। **नया दानादार आंखोंका प्रदाह,** आँखें घोर लाल,—मानो लाल जवाफूलकी तरह। ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा और पीबका बहना। सुईका काम करनेकी वजहसे आंखोंकी बहुत सी बीमारियां, गर्म कमरेमें बढ़ना, और खुली हवामें घटना। पाकाशयके शूलका दर्द, पेट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलना, हरेक बार खानेके बाद डकार, खाली डकार, डकार नहीं आता, अन्तमें जोरकी आवाजके साथ वायु निकलता है। ऐसा मालूम होना मानो वायु भर जानेके कारण पेट फट जायगा। **चीनी और मिसरी खानेकी बहुत इच्छा, खासकर बालक-बालिकाओंको वह सहन नहीं होती, पतले दस्त आने लगते हैं।** अतिसार, उदरामय, सागके रंगका हरा मल। **खाने पीने बाद तुरन्त ही पतले दस्त आने लगना, दिनरात अनजानमें पेशाब होता रहता है। निचले अंगके बहुत कांपनेके साथ कमजोरी।** आँखें बन्द कर चल नहीं सकता। **खुली हवा सेवनकी बहुत इच्छा। पुरुष या स्त्री दोनोंको ही रतिक्रियामें तकलीफ—दर्द मालूम होता है।** और योनिसे खून जाने लगता है। **खड़े होने और चलनेके समय ढुलक पड़ती है। खुले रहने पर बहुत जाड़ा मालूम होना, पर ढंक लेनेपर दम अटक जानेका भाव।** गवैयों और वक्ताओंका पुराना स्वरनाली प्रदाह। **जोरसे चिल्लानेसे** खांसी आने लगना। गलेमें कांटा या मछलीका कांटा रहनेकी तरह तकलीफ, खासकर निगलनेके समय; **चलनेके समय जरायुमें या बाहरी ओर ऐसा ही मालूम होना।** अर्द्धाङ्ग पक्षाघात (लकवा), मेरुमज्जाका प्रदाह—ऐसा मालूम हो मानो एकाएक किसीने चमड़ेमें च्यूंटी काट ली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि ।—गर्मीसे, रातमें, ठण्डा भोजन करनेपर, मोठी चीज खानेके बाद और मासिक रजःस्रावके समय।

ह्रास ।—डकार आनेपर, बाहरी हवामें, ठण्डेमें और दबावसे।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—नेट्रम-म्यूर (यह जलानेके कुफलमें), आर्सेनिक, पलसेटिला, कैल्केरिया, सिपिया इत्यादि। इसके बाद ब्रायोनिया, स्पाइजीलिया, कास्टिकम, स्पञ्जिया, विरेट्रम अच्छा काम करता है। लाइकोपोडियमके बाद इसकी क्रिया बहुत ही उत्तम होती है।

समगुण औषध ।—आर्जेण्टम-मेट, अरम, कैलिबाई, लैकेसिस, मर्क्यू, नेट्रम, एसिड-नाइट्रिक, थूजा।

संक्षिप्त लक्षण।

मन ।—रोगी ऐसा समझता है, कि अपनी बुद्धिसे काम करनेपर अवश्य ही विफल होना पड़ेगा। स्नायविक भय, बुद्धि-लोप हो जानेकी धारणा, खिड़कीसे उछल पड़नेकी इच्छा, या चेष्टा करना, दुःखित, जल्दबाज।

मस्तक ।—सरमें दर्दके साथ कपकपी और जाड़ा मालूम होना। माथेमें खूनकी अधिकता, भरापन और भार मालूम होना। ऐसा मालूम हो मानो सर फैला जाता है। साहित्य-सेवा और नृत्यकी वजहसे सर घूमना, पित्त वमन होने बाद यह दर्द घटता है। मस्तिष्कमें थकन, सरमें चक्कर, अधकपारीका दर्द, सरकी हड्डीमें खुजली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखें ।—रोशनीसे भय लगना, पीब बहनेवाला आंखों-का प्रदाह, बहुत पीब जाना, पलकोंका जखम, सूखी बतौड़ी और सूखा दानेदार पदार्थ होना, आँखोंके सफेद कोयेमें जखम और आंखोंमें धुंध पड़ना।

नाक और मुंह ।—सूंघनेकी ताकतका गायब हो जाना ; खुजली, स्राव, सरमें दर्द, मसूढ़ेसे सहजमें ही खून बहने लगना ; मुंहके दोनों किनारोंपर जखम ; मुंहमें कर्कट या सड़नेवाला घाव, गलेमें कुछ अटका-सा मालूम होना, और ऐसी तकलीफ, दर्द मानो कांटा या सलाई गलेमें अड़ी हुई है।

पाकस्थली और तलपेट ।—दस्त-कै; मिचलीके साथ डकार, पेट फूलना, ऐसा मालूम होना मानो पेटमें जखम हुआ है। शराबियोंका पेटका जखम, आध्मान शूल, ज्यादा मीठा खानेका दुष्परिणाम।

पेशाब ।— बहुमूत्र, दिनरात अनजानमें पेशाब होते रहना ; पतली धार या दो धारमें पेशाब होना।

जननेन्द्रिय ।—ध्वजभंग, संगमके समय लिङ्गका कड़ापन दूर हो जाता है। शिथिल हो पड़ता है। दर्द-भरा संगम, लिङ्गका पतलापन, रजःस्रावके समय पाकाशयका शूल, बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव, जरायुसे रक्तस्राव।

श्वास-यंत्र ।—ज्यादा चिल्लानेपर खांसी आने लगना, स्वर-भंग। श्वास-कृच्छ्रता, कलेजा काँपना,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाहिनो करवट सोनेसे बढ़ना, इसके दूसरे दिन रातमें सब लक्षण बढ़ना, कलेजेमें दर्द, छातीमें दर्द, पासमें जयादा आदमी रहनेसे दम अटक जाने जैसा मालूम होना।

पीठ और अंग-प्रत्यङ्ग ।—निचले अंगका पक्षाघात। डिप्थीरिया या झिल्लीक रोगके बादका पक्षाघात, बाहुमें सुन्न होने जैसा भाव, एंड़ीमें सूजन।

नींद ।—नींद न आना, तन्द्रामें पड़े रहना, सपनेमें सांप देखना।

ज्वर ।—कपकपीके समय मिचली, औंघाई। खुले रहनेपर कपकपी, पर ढक लेनेपर दम अटक जानेका भाव।

आर्मोरेसिया काक्लियारिया।

(Armoracia Cochlearia).

दूसरा नाम ।—हार्स रेडिस, आर्मोरेसिया सैटाइवा इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग ।—पेशाबमें अण्डलाल; स्वरभंग, दमा, जाला, दर्द, आँखके सफेद कोयेमें दाग, कितने हो तरहके उद्भेद और खुजली, प्रमेह, पथरी, सरमें दर्द, श्वेत प्रदर, फेफड़ेकी बीमारी; पक्षाघात, पेशाबमें तकलीफ, दाँतका दर्द, बहुत तरहके जखम इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता।—मूत्र-यंत्रकी बीमारी, प्रमेहसे पैदा हुई बीमारी ; मसूड़ोंमें सूजन और दाँतसे सहजमें ही रक्तस्राव, मन्दाग्नि रोग, प्रदर, दमा ; आँतोंके शूलके साथ कमरमें दर्द, सर्दी-प्रधान यक्ष्मा-रोग और घूमनेवाले वात-रोगमें यह ज्यादा फायदेमन्द है। वात-रोगमें छूने या दबावसे रोग बढ़ना और सामनेकी ओर झुकनेसे उपशम इसका विशेष लक्षण है।

संक्षिप्त लक्षण।

कैकी इच्छाके साथ सरमें दर्द, हूप-खांसीमें नाकसे खून गिरना, पीठ और तलपेटमें संचरणशील दर्दके साथ पाकाशय और आमाशयकी बीमारी। मुँहमें पित्तभरे पदार्थका पैदा होना। पेशाबमें तकलीफ और बार बार पेशाब, अण्डलाल-मिला पेशाब, दससे पन्द्रह दिनके अन्तरसे रजः-स्राव। मलद्वारसे अनजानमें श्लेष्माका बहना।

सम्बन्ध।—सदृश—कैमो, कैनाबिस, कैन्थराइडिस।

शक्ति।—१म, ६ठी, और ३० वीं।

आर्निका माण्टेना। (Arnica Montana).

दूसरा नाम।—ल्यू-पार्डस-बेन।

प्रस्तुत-प्रणाली।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—फोड़ा; संन्यास; पीठमें दर्द; शय्याका जखम; चोटकी वजहसे आंखका दर्द; मस्तिष्ककी बीमारी; श्वासनालीका प्रदाह; गिरने या चोटकी वजहसे बहुत-सी बीमारियां; काला दाग पड़ना; जहरीला जखम; छातीकी बहुत-सी बीमारियां; बदबूदार श्वास; ताण्डव रोग; गट्ठे; अकड़न; बहुमूत्र रोग; अतिसार; खूनी आंव; पीठके फोड़ेकी वजहसे जखम आदि; कट जाना; अवसाद; खून मिली खांसी; खूनकी कै; खूनमिला पेशाब; सरमें दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; ध्वजभंग; प्रसवका दर्द; कमरमें दर्द; पक्षाघात; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; गर्भ-स्राव; स्तनकी घुंडीका जखम; नाकका जखम; वस्तिगह्वर और अण्डकोषमें रक्तसंचय; खून विषैला होना; पार्श्वशूल; आमवात; सन्धि-वात; प्लीहामें शूल; कांटा गड़ना; चोटकी वजहसे बोखार; तेज़ प्यास; स्वाद बिगड़ जाना; चोटसे पैदा हुआ ज्वर; अर्बुद; स्वरका बिगड़ना; क्रुप-खांसी; नश्तर वगैरहकी चोटकी वज़हसे जखम; इत्यादि रोगमें यह लाभदायक है।

उपयोगिता।—स्नायवीय स्त्रियोंको और रसरक्त प्रधान, मनुष्योंको जिनका चेहरा बहुत लाल और जो प्रफुल्लचित्त रहते हैं, उनके लिये यह उपयोगी है। **चोट या गिरनेकी वजहसे किसी प्रकारका भी उपसर्ग और बीमारी यदि बहुत दिन पहले भी हुई हो तो उसमें भी यह फायदा करता है।** चोटकी वजहसे बहुतसी नयी और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी बीमारियां ; चोटकी वजहसे अर्बुद ; आधिभौतिक या किसी यंत्र आदिमें चोटकी वजहसे बीमारी और बदहवासी, उसके साथ ही अनजानमें पाखाना पेशाब हो जाना। किसी भीतरी यंत्रकी चोटका कुफल, चोट लगना और दबना प्रभृति। चोटवाली जगहपर जखमका न होना या कुचल जाना। चोटवाली जगहमें पीव और शरीरका खून दूषित होना बन्द कर सूखनेकी क्रियामें सहायता पहुंचाता है। समूची हड्डीके टूट जानेमें और उससे बहुत ज्यादा पीव उत्पन्न होनेपर इसको व्यवहारमें लाना चाहिये। साधारण चोट अथवा यांत्रिक आघातकी वजहसे, गिरनेके कारण या मस्तक कुचल जानेके कारण मस्तिष्क-प्रदाह; विशेषकर जब इसी वजहसे मस्तिष्कमें खून बहना आरम्भ हुआ है, उस समय सोखनेकी क्रियाके लिये इसका प्रयोग होता है। सारे शरीरमें जखम, चोट या कुचलनेकी तरह बहुत ज्यादा तकलीफ और दर्द : मानो कोई लाठी या इसी तरहके यंत्र द्वारा जोरसे चोट पहुंचा रहा है। बिछावन बहुत कड़ा मालूम होना : जिस किसी पदार्थपर इसका रोगी सोता है, वही बहुत कड़ा मालूम होता है, रोगी ऐसा ही कहता है और इसी वजहसे हमेशा नर्म स्थान पानेके लिये घबड़ाता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हमेशा सोनेकी जगह बदला करता है। स्नायवीय दर्द एकदम सहन नहीं कर सकता। सारे शरीरमें बहुत ज्यादा स्पर्श मालूम होना। **शरीरके ऊपरी अंशका उत्ताप** अथवा केवल मुँह या मस्तक और मुँहका गर्म रहना तथा अन्य अंगोंका ठण्डा रहना। **बेहोशी, पुकारनेपर स्पष्ट उत्तर देता है; परन्तु तुरन्त बेहोशी और विकारका भाव पैदा हो जाता है। रोगी पूछने-पर कहता है, कि उसे कोई कष्ट नहीं है—इस दवाकी यही विशेषता है।** इन्फ्लुएंजा, समुद्र-भ्रमण या सवारीपर घूमनेका कुफल; चोटकी वजहसे बहुतसे यंत्रोंसे रक्त-स्राव; दस्त कै; हूप-खांसीमें आँखोंसे खून निकलना या रक्त जमा रहना। चेहरेका स्नायु-शूल; सान्निपातिक ज्वर; बदबूदार स्राव; अनजानमें, तन्द्रावस्थामें पाखाना पेशाब होना; एकाएक रोगका हमला; मस्तिष्कमें जल-संचयके साथ हाथके सामनेके अंशकी मुर्दे जैसी शीतलता; खासकर बालक बालि-काओंकी। **संन्यास; बेहोशीके साथ अनजानमें पाखाना-पेशाब होना;** नयी बीमारीमें यह पाखाना पेशाब बन्द करता है और सुखानेकी क्रियामें सहायता पहुँ-चाता है। इस रोगमें यह दवा बार बार कई दिन या कई सप्ताहतक व्यवहार करना चाहिये। **वात, ग्रन्थिवात, बहत ज्यादा दर्द, छूने यहांतक कि किसीके पास आनेसे ही रोगी डर जाता है।** वस्ति-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेशमें कुचलनेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी सीधा खड़ा नहीं हो सकता। पक्षाघात, विशेषकर बाईं ओरका और उसके साथ ही नाड़ी पूर्ण, मजबूत और सांस लेने छोड़नेमें नाकसे आवाज़ होती है। कुछ कुछ भ्रम भी बकता है इत्यादि। डकार और उसमें **सड़े अण्डेकी बदबू ;** छोटे फोड़े। ये **लगातार एकके बाद एक उत्पन्न होते हैं** और उनमें बहुत ज्यादा दर्दके साथ जखमकी तरह अनुभव होता है। **प्रसवके बाद प्रसव द्वार** वगैरह यंत्रोंमें जखम और प्रसवके बाद बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, सूतिका ज्वर वगैरह बहुत तरहके रक्त-दोषमें इसका प्रयोग होता है। इस तरहकी बीमारीमें यह सबसे बड़ा प्रतिषेधक माना जाता है।

वृद्धि ।—विश्रामके समय, संध्याको, शराब पीनेपर।

ह्रास ।—छूने और संचालनसे।

चोटकी वजहसे जखममें इसका प्रयोग करना उचित नहीं है। ऐसा करनेपर कितनी ही बार विसर्प रोग पैदा हो जाता है। ऐसे स्थलपर कैलेण्डुलाका प्रयोग करना चाहिये।

सम्बन्ध ।—इसका अनुपूरक—ऐकोन। **सदृश** ।—ऐकोन, क्रोटन, आर्स, बैप्टीशिया, (सान्निपातिक ज्वर) बेलाडो, कैमोमिला, चायना, कैलेण्डुला, हिपर, हैमा-मेलिस, इपि, मार्क्यू, पल्स, रूटा, साइलि, सलफर, विरेट्रम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न ।—कैम्फर ; ऐकोन ; आर्स ; काफिया ; चायना ; इग्नेशिया ; इपिकाक (ज्यादा मात्रामें) ।—यह ऐमोन-कार्ब्ब, चायना, फेरम, इग्नेशिया, इपिकाक और विनिगरका दोषघ्न है ।

शक्ति ।—३x, ३०, या २०० । १x वा मूल अर्कका बाहरी प्रयोग ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—असह्य दर्द, बहुत ज्यादा भय, छूने यहाँतक कि किसीके पास जानेसे भी डर मालूम होता है, बेहोशी, पूछनेपर रोगी उत्तर देता है, पर तुरन्त बेहोश हो जाता है । विषन्नता ; रोगी कहता है, अच्छा है । अकेला रहना पसन्द ।

मस्तक ।—सर गर्म, शरीर ठण्डा, सरमें जड़ता मालूम होना, मस्तिष्कमें ज्यादा चेतना, माथेकी हड्डीमें सिकुड़न या खींचन मालूम होना, मस्तिष्कावरक झिल्ली प्रदाह, मूर्द्धा-स्थानमें जाड़ा मालूम होना, पुराना सरमें चक्कर आनेका रोग ।

आंखें ।—चोट वगैरहकी वजहसे दो देखना, पेशियोंका पक्षाघात, रेटिना, या आँखकी पुतलीसे खून निकलना, साफ दिखाई न देना ; आँखें बन्द करनेपर सरमें चक्कर आना ; आँखें गड़हेमें धसी ।

कान ।—कानमें चोट लगना ; खून आना, सुननेकी ताकतका घटना, कानमें कितने ही तरहके शब्द, मस्तिष्कमें चोटकी वजहसे, चोटके बादसे सुननेकी शक्तिका घटना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाक।—नाक ठण्डी और जख्मकी तरह मालूम होना, बार बार खून बहना, खांसनेसे हो खून निकलने लगना।

मुंहमें।—मुँहमें बदबू, तीता स्वाद, दाँत निकलनेके बाद मसूढ़ेमें अकड़न।

चेहरा।—लाल, निमग्न, दोनों ओंठोंमें गर्मी, मुँहमें दादकी तरह उद्भेद।

पाकस्थली।—बार बार डकार आना, सड़े अण्डे जैसो उसमें बदबू; प्यास, वायु-सरना। मांस और दूध न रुचना, खट्टी चीजें या सिरका पसन्द, खूनकी कै होना; पेट भरा मालूम होना; भोजनसे अरुचि।

तलपेट।—बस्ति-गह्वरमें दर्द, सीधा नहीं हो सकता। बहुत देर बाद मलत्याग, मल लसदार, श्लेष्मा—आँव-भरा, बदबूदार और पीव जैसा, नींदमें अनजानमें पाखाना पेशाब होना, यक्ष्मा रोगीका अतिसार; मूत्राशय और मूत्रशायी ग्रन्थिकी सूजन, बदबूदार वायु निकलना और पेटमें वायु-भरा, मटमैला और फेन भरा मल।

पेशाब।—बहुत अधिक कसरत करने या परिश्रमकी वजहसे ईंटका चूर या सुरखीका चूर जैसा पेशाबमें जमना बहुत गाढ़ा पेशाब।

पुं०-जननेन्द्रिय।—लिङ्ग और अण्डकोषकी नीली आभा लिये लाल सूजन, चोटकी वजहसे प्रदाह। जल-कुरण्ड; संगमकी इच्छाका बढ़ जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रसवके बाद, खासकर बहुत देरतक तकलीफ होने बाद जो प्रसव हो उसके बाद, अपत्यपथ आदिमें बहुत दर्द और घाव। नकली प्रसवका दर्द। चोटको वजहसे जरायुसे रक्त-स्राव, चोटकी वजहसे स्तनका प्रदाह, गर्भावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो भ्रूण लम्बे-लम्ब पड़ा है।

श्वास-यन्त्र ।—रातमें खांसी, कलेजेकी बीमारीकी वजहसे खांसी; बच्चोंको रोनेकी वजहसे खांसी। खांसनेके समय पंजरेमें दर्द; नींद टूटनेपर खांसी; खून-मिला कफ और हूप-खांसी; खांसते खांसते आंखके चमड़ेके पीछे खूनका स्राव होनेकी वजहसे आंखोंका लाल होना। तालु-मूल प्रदाह, अलिजिह्वा और कोमल-तालुकी सूजन, फेफड़ेका प्रदाह, स्वर-भंग, श्वासकष्टके साथ फेफड़ेसे खूनका स्राव, फेफड़ेके आवरण का स्नायुशूल।

हृद्‌पिण्ड ।—हृद्-शूल, हृत्पिण्डमें सुई बेधने जैसा दर्द, हृद्‌रोगकी वजहसे शोथ और उसके साथ ही श्वासकष्ट, हृत्पिण्डका कड़ापन और मेद बढ़ना, छातीका स्नायुशूल, गर्दन और पेशियोंकी कमजोरी, और चोटकी वजहसे अकड़न।

अंग-प्रत्यंग ।—वात और छोटी सन्धियोंका वात, रोगवाली जगहपर इतना दर्द कि किसीका छूना तो दूरकी बात, पास आनेसे ही भयसे रोगी रोने लगता है। मेरुदण्डमें दर्द, पिछली कमरमें और शरीरके ऊपरी अंश, अंग-प्रत्यंगमें चोट लगने और हड्डी खिसकनेका दर्द। वात निचले अंगमें आरम्भ होकर ऊपरी अंगमें फैलता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा।—नीली या काले रंगकी ; काला दाग, खुजलानेवाली जलन-भरी छोटी फुन्सियां, छोटे छोटे दर्द भरे फोड़े, एकके बाद दूसरेका पैदा होना, शय्याका जखम, चेहरेपर मुँहासे।

निद्रा।—नींद न आना, बहुत थकावट मालूम होना और बेचैनी या तन्द्रा-भरी नींद ; मृत्युके सपने देखना ; रातके समय भय; नींदके समय अनजानमें पाखाना-पेशाब हो जाना। सर गर्म होकर नींद खुलती है।

ज्वर।—सान्निपातिक ज्वरके लक्षणकी भांति ज्वर ; सारे शरीरमें शीत या कपकपी; माथा और चेहरेमें गर्मी और लाल-भाव, परन्तु हाथ पैर ठण्डे ; अम्ल-मिला रातका पसीना। सविराम या मलेरिया ज्वर। रोज या एक दिन बाद सवेरे या संध्याके समय ज्वर। ज्वरके पहले जाड़ा या कम्पके समय प्यास, सारे शरीरका कम्प ; सर गर्म और लाल, बहुत प्यास, तन्द्रा-भाव, हाथ-पैर या निचले अङ्ग ठण्डे। ऊपरी अङ्ग या शरीर गर्म, बहुत ज्यादा खट्टा पसीना ; सरमें दर्द, नाड़ी पूर्ण, कठिन, दुर्बल और मृदु। जीभपर सफेद या पीला लेप।

आर्सेनिकम्-ऐल्बम।

(Arsenicum Album)

दूसरा नाम।—आर्सेनियस-ऐसिड ; आर्सेनिक ट्राई-आक्साइड ; संखिया विष, ह्वाइट आर्सेनिक इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण, अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग ।—फोड़ा ; कुछ लाल आभा लिये मुंहासे ; मदात्यय रोग ; रजोरोध ; मुँहका जखम ; दमा ; दुबलापन ; श्वासनाली प्रदाह ; बड़ी आंतके सबसे ऊँचे अंशकी या छोटी आंतकी बीमारी ; कर्कटका जखम ; विषैला फोड़ा ; हैजा ; ठण्ड लगनेकी वजहसे बीमारी ; सर्दी रोग ; खांसी ; घुंडी खांसी ; माथेमें रूसी और जखम ; कपकपीके साथ प्रलाप ; अतिसार ; झिल्लीकी बीमारी (डिप्थीरिया) ; शोथ ; बड़ी या छोटी आंतके सबसे ऊँचे अंशकी बीमारी ; अजीर्ण ; कानकी बहुतसी बीमारियां ; खसड़ा ; जरायुके भीतरी पर्दे या कोषोंका प्रदाह ; सान्निपातिक ज्वर ; विसर्प ; आंख और कानकी बीमारियां ; चेहरेका कितने ही प्रकारका उद्भेद ; मूर्च्छा ; ज्वर ; सविराम ज्वर ; स्वल्प-विराम ज्वर ; काला-ज्वर ; सड़नेवाला जखम ; पाकाशयका जखम ; प्रदाह ; स्नायुशूल और बहुतसी बीमारियां ; बहुत तरहकी ग्रन्थियोंकी बीमारी ; छोटी सन्धियोंका वात ; दमा ; त्वचापर दादकी तरह चकत्ते ; छातीमें पानी पैदा होना ; व्याधिशंका ; कंवल रोग ; मसानेकी बीमारी ; श्वेत प्रदर ; फेफड़ेकी बीमारी ; सांघातिक व्रण ; छोटी माता ; विषाक्त वायु ; मर्फियाकी वजहसे बीमारी ; मेरु-मज्जाका प्रदाह ; आमवात ; स्नायु-प्रदाह ; स्नायुशूल ; सुन्न होना ; आंतोंका प्रदाह उपांग-प्रदाह ; बहुत ज्यादा मेदकी वजहसे बीमारी ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; और स्नायु-शूल, फेफड़ेका प्रदाह ; बहुत तरहकी विचर्चिका ; खूनका बिगड़ना ; हड्डीकी बीमारी ; गृध्रसी वात (साइटिका) ; गण्डमाला दोषकी वजहसे बहुत सी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारियां; नदीके पानीमें नहाने और तम्बाकू सेवनका बुरा परिणाम; सामुद्रिक वमन; पीवभरी फुन्सियां; प्यास; गलेका जखम; जीभकी बीमारी; स्वरनाली और गलनलीका कर्कटीया जखम; चोटकी वजहसे बोखार; जखम, कै; हूप-खांसी; क्रिमि; सद्यव्रण आदि रोगोंमें इसका व्यवहार होता है।

उपयोगिता।—यह दवा शरीरके सब भागोंमें, सब यंत्रोंमें और सभी कोषोंमें अपना काम करती है, इसलिये प्रायः सब रोगोंमें ही लक्षणके अनुसार इसका व्यवहार होता है। दिवसका बिचला भाग या बिचली रात अर्थात् १ से दो बजनेके बीचमें सब रोग लक्षणोंका बढ़ना और साधारणतः गर्म और ढके रहनेपर घटना इसका एक प्रधान लक्षण है। रोगके आरम्भमें घबड़ाहट, ठण्डक, जल्दी जल्दी ताकतका घटना और सोने की इच्छा पैदा होती है। शरीरके बाहर और भीतर किसी भी यंत्रमें बहुत अधिक जलन, आग छू जानेकी तरह जलनकी तकलीफ रहती है, परन्तु वह गर्म प्रयोगसे ही आराम होती है। रोगके आरम्भके साथ ही साथ जल्दी जल्दी जीवनी शक्तिका घटना, और सुस्ती, और बहुत कमजोरी। सुस्ती, विषाद, हताश; उदासीनता, घबड़हट, डर, बेचैनी बहुत ज्यादा उद्वेग, उत्तेजना, छूनेसे तकलीफ, चिड़चिड़ा स्वभाव और कुछ विरक्त चित्त ये बारह इसके लक्षण हैं। बीमारी जितनी ही तेज होती है, बेचैनी, उद्विग्नता और मृत्यु-भय उतना ही बढ़ता है। मानसिक बेचैनी, परन्तु बहुत ज्यादा शारीरिक दुर्बलता; यहां तक कि हिलने-डोलनेमें भी कष्ट होता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। बहुत अधिक बेचैनी, क्षणभरभी एक जगहपर नहीं रह सकता : क्षण क्षण भरपर अपनी जगह बदलता रहता है। हमेशा एक जगहसे दूसरी जगह जाना चाहता है और एक बार एक जगहपर तो दूसरी बार दूसरी जगह सोना चाहता है। बहुत ज्यादा मृत्यु-भय, मनमें समझता है, कि अवश्य मृत्यु होगी और बीमारी आराम न होगी ; इसीलिये, दवा नहीं खाना चाहता। मानो अवश्य ही मरने जा रहा है। जब अकेला रहता है, या बिछावनपर सोता है, तभी मृत्युभय उसपर सवार हो जाता है। रातमें खासकर बिचली रातमें इतनी उद्विग्नता आ जाती है, कि वह बिछावन छोड़ देनेके लिये बाध्य हो जाता है। ठण्डा पानी पीनेकी प्रबल इच्छा रहती है ; असह्य जलन भरी प्यास, पर पानी पीनेकी उतनी इच्छा नहीं रहती-क्योंकि पाकस्थली ठण्डा पानी धारण नहीं कर सकती, पीनेसे पाकस्थलीमें वह पत्थरके दबाव जैसा मालूम होता है। बार बार प्यास लगती है ; परन्तु बहुत थोड़ा थोड़ा पानी पीता है और यह पानी पीनेके साथ ही मिचली और कै आरम्भ हो जाती है,इसी लिये, पानी पीनेसे डरता है। रोगकी सामयिकता, बँधे समयपर प्रतिवर्ष रोगका बारम्बार पैदा होना ; सड़ा भोजन या सड़ा जान्तव पदार्थ आदि शरीरमें विधकर या श्वास-प्रश्वास द्वारा प्रवेशकर अथवा पाकस्थलीमें जानेपर बहुतसी बीमारियां। तम्बाकू खाने, मदात्यय, नदी या समुद्रमें नहाना, विषैला भोजन आदि करना ; धान काटनेके समयका जखम, दूषित फोड़ा और कितने ही विषैले कीट-पतंगोंके काटने वगै-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहके कारणोंसे बीमारी । मलेरियासे पैदा हुआ दोष ; बहुत ज्यादा क्विनाइन या पाराका सेवन ; गर्मीसे पैदा हुई बीमारियाँ । किसी बँधी जगहका प्रदाह ; सड़ना और गलकर गिरना ; फल मूल खाना और बहुत ज्यादा शीतल पदार्थ-जैसे, कुलफी बरफ वगैरह खानेसे पाकस्थली की बीमारी । मल थोड़ा, बहुत अधिक काला, थोड़ या ज्यादा होने बाद ही बहुत कमजोरी ; खूनकी खराबी आदि रोगमें यह ज्यादा लाभदायक है ।

सम्बन्ध—दोषघ्न—ज्यादा मात्रामें या विषमात्रामें-दूध, अण्डलाल । ओपियम, चायना, फेरम, हिपर, इपिकाक, नक्स, विरेट्रम । **अनुपूरक** ।—ऐलियम—सैट, कार्बोविज, फास्फोरस

सदृश ।—ऐको, बेलाडो, चायना, इपिक, लैकेसि, नक्स, फास्फोरस, पल्स, रास्टक्स ।

शक्ति ।—नये सर्दी-ज्वरमें ; मलेरिया ज्वरमें, निम्न ; हैजाकी हिमांगावस्थामें (शीत आजानेपर) ३० ; सुस्ती और पुरानी बीमारीमें २०० ; दमामें ३० ; डा० सरकार १२ शक्तिके विशेष पक्षपाती थे ।

क्रियाका स्थायित्व ।—६० से ९० दिन ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—अतिशय घबड़ाहट और बेचैनी, क्षण-क्षण भर पर स्थान बदलना चाहता है, मृत्यु-भय, रातमें सोने या अकेले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहनेपर बहुत भय, हताश-भाव, ऐसी धारणा कि दवासे कोई लाभ न होगा, निश्चय मृत्युकी-धारणा, भोजनके पदार्थकी गन्ध और उस ओर देखनेसे बहुत ज्यादा मिचली और कै; ईर्षा, द्वेष, कापुरुषता, स्वार्थपरता वगैरह मानसिक हीनता पैदा हो जाती है।

मस्तक।—सरमें चक्कर, मानो गिर पड़ेगा। मलेरिया दोषकी वजहसे सरमें दर्द, सरके चमड़ेमें बहुत दर्द, छुआ नहीं जाता, अधकपारी, रूसी, खुश्की, सर हिलानेसे मालूम होता है, कि सरके भीतर मस्तिष्क हिल-डोल रहा है।

आंखें।—आँखोंमें बहुत ज्यादा जलन, इसके साथ ही जलन करनेवाला आंसू बहना, पलकोंमें जख्म, लाल रंग और दानेदार पदार्थ पैदा हो जाता है। रौशनी से भय मालूम होता है, सफ़ेद कोयेमें जखम और ऊपरी पलककी सूजन।

कान।—जलन, पतला, जखम करनेवाला, बहुत बदबूदार पीवका बहना।

नाक।—पानीकी तरह पतला, जलन करनेवाला स्राव; बीच बीचमें स्राव बन्द हो जाता है। छींकसे आराम नहीं मिलता। नाकसे खून जाना।

चेहरा।—सूजा, उतरा हुआ, पीली आभा लिये, बैठा हुआ और ठण्डे पसीनेसे भरा। ओंठ काले।

मुँहमें।—मसूढ़ेसे रक्तस्राव, जलन करनेवाला जखम, कर्कटोया जखम, और दूसरे दूसरे प्रकारका जखम,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलन करनेवाला नाकका स्राव, जीभ-सूखी और लाल, खून-मिली लार। मुँहमें किसी धातुका स्वाद और मुँहमें पानी भर आना।

गलेमें।—सूजन और जलन, डिप्थीरिया या नकली झिल्ली; वह सूखी और सिकुड़ी दर्द।

पाकस्थली।—खाने-पीनेकी गन्ध और उसे देखनेसे ही कै और मिचली; बहुत ज्यादा प्यास, थोड़ा पानी पीना। पानी पीतेही मिचली और ओकाई। इसलिये, पानी नहीं पी सकता; पर क्षणभर बाद ही फिर पानी मांगता है। पेटमें जलन, डकार, खूनकी कै। शाक-सब्जी; रसदार फल, तरबूज और दूसरे दूसरे निरामिष भोजन करनेकी वजहसे बीमारी; पाकाशयका-शूल और इसके साथही श्वासमें कष्ट, मूर्च्छा, अजीर्ण; सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, बहुत सुस्ती।

श्वासयंत्रादि।—दमा, रोगी सो नहीं सकता; उससे दम अटकने जैसा भाव, बिछौनेपर बैठने और सामने झुक जानेके लिये बाध्य होता है। श्वास-नालीका सिकुड़ना थोड़ा फेन-भरा श्लेष्मा निकलता है। छातीमें साँय साँय शब्द, खून मिली खांसी। गन्धकका धूंआ सूँघनेकी वजहसे खांसीकी तरह सूखी खांसी। बिचली रातमें दमा।

तलपेट।—आंतोंमें तेज दर्द, पेटके भीतर चिबानेकी तरह दर्द और जलन, मानो आग जल रही है। प्लीहा और यकृतका फलना; उनमें दर्द तथा उनका बढ़ना, आंतकी बिचली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांठमें कड़ापन, उदरी और मुँह तथा हाथ-पैर फूले । खांसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो आंतोंमें जखम हो गया है ।

आंतें ।—मलद्वारमें दर्द, अकड़नके साथ कांचका बाहर निकलना, बहुत कांखना, मलनाली और मलद्वारमें जलन जैसा दर्द और दबाव मालूम होना । बवासीर, थोड़ा मल वह बहुत बदबूदार और काला । थोड़ा या अधिक पाखाना होनेके बाद ही बहुत कमजोरी । खाने-पीनेपर, रातमें, खासकर बिचली रातमें बढ़ना, शराब पीना, सड़े-मांस इत्यादिसे बढ़ना । रक्तामाशय, खूनी आंव, मल गाढ़ा और खून मिला, और बहुत बदबूदार, हैज़ा या दूसरे दस्त-कै-के साथ बहुत उत्कण्ठा और सुस्ती ; प्याससे छटपटाना । सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, मल-द्वारके चारों ओरका चमड़ा पानी लगा जैसा हो जाना ।

मूत्र ।—थोड़ा पेशाब, पेशाब करते समय बहुत जलन, अनजानमें पेशाब हो जाना । मूत्राधारमें मानो पक्षाघात हो गया हो, ऐसा मालूम होना, पेशाब रुकना । अण्डलालमिला मूत्र, बहुमूत्र, पेशाबमें रक्तके-कण ; पीब जमा या थक्का जैसा पदार्थ ; ब्राइट्स रोग या पेशाबमें अण्डलाल मिला हुआ ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत जल्दी जल्दी और बहुत ज्यादा रजःस्राव । डिम्बकोषमें जलन पैदा करनेवाला दर्द. श्वेत-प्रदर, स्रावमें जलन, और बहुत ही जलन पैदा करनेवाला पतला और बदबूदार स्राव, दर्द और जलन मानो आग छुलाकर जलाया जा रहा है । गर्म पदार्थके प्रयोगसे घटना । रजःस्रावके साथ दर्द जांघतक फैल जाता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुं०-जननेन्द्रिय।—लिङ्गकी त्वचा और सुपारीमें खुजली-भरा, जलन-भरा दर्द, दर्द-भरी सूजन, मलत्यागके समय प्रास्ट्रेट या मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिसे रसकी तरहका स्राव होना।

हृत्पिण्ड।—कलेजा काँपना, सांसमें तकलीफ, मूर्च्छाका भाव। तम्बाकू खानेवालोंका उत्तेजित हृत्पिण्ड; सवेरेके वक्त नाड़ीकी गति तेज। हृद्‌पिण्डका मेद रोग और पीठमें जलनकी तरह मालूम होना।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—कपकपी, संकोचन, अकड़न, दाने निकलना। बहुमूलसे पैदा हुआ जखम और सड़नेवाला जखम। शरीरके दूसरे-दूसरे स्थानोंमें सड़नेवाला जखम; पैरके तलवेमें अकड़न, सूजन और निचले अंगका पक्षाघात।

त्वचा।—फूली और शोथ-भरी, खुजलानेवाले दाने, विषैला फोड़ा, अँगुल हाड़ा, नाना प्रकारके जखम, आमवात।

निद्रा।—उत्कण्ठा-भरी नींद, नींदके समय दम अटक जानेका भाव, बेचैनी, सर ऊँचा रखता है या रखनेको कहता है। भय; सरपर हाथ रखकर सोता है। औंघाई आना।

ज्वर।—सविराम, स्वल्प-विराम, आन्हिक, विषाक्त, काला-ज्वर, प्रादाहिक ज्वर, एक दिनका अन्तर देकर आनेवाला, ज्यादा क्विनाइन सेवनकी वजहसे आनेवाला, थोड़ा या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक उत्ताप इत्यादि चाहे जिस प्रकारका ज्वर क्यों न हो लक्षणके अनुसार इसका प्रयोग होता है और उनकी यह एक प्रधानतम दवा है। ज्वर तीसरे पहर या मध्यरात्रिमें बढ़ता है और नित्य एक ही समय आता है। या कल जिस समय बोखार आया था आज उस समयसे कुछ पहले आयगा (अर्थात् ज्वरका समय पीछे हटता है) बोखारके साथ बहुत बेचैनी; प्यास, कमजोरी, श्वास-कष्ट, दमाका भाव। सारा शरीर ठण्डा या लसदार पसीना, बहुत ठण्डा पसीना भी मौजूद रहता है। कम्प, शोथ भाव, प्लीहा और यकृत प्रदेशमें दर्द, टपक, सरमें भार, अंग-प्रत्यंगमें खींच रखनेकी तरह दर्द, शरीरकी भीतरी और बाहरी जलन, नाड़ी अनियमित, तेज़, क्षीण, क्षुद्र, काँपती हुई इत्यादि नाना प्रकारके उपसर्ग मौजूद रहते हैं।

आर्सेनिक हाइड्रोजेनिसिटम।

(Arsenicum Hydrogenisetum).

दूसरा नाम।—द्वि-हाइड्राइड आव आर्सेनिक;

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—हैजाकी हिमाङ्ग अवस्था; हिचकी। इसका लक्षण एकाएक आरम्भ होकर धीरे-धीरे बढ़ा करता है। एकाएक बढ़ना—यही लक्षण देखकर इसे **आर्सेनिक** से अलग किया जा सकता है। खूनके पेशाबके साथ मलेरिया ज्वर,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तहीनता, ऋतु-बन्द, **उद्वेग,** निराशा ; खूनका पेशाब, लिङ्गमुण्ड और उसकी ढकनेवाली झिल्ली पर पीब-भरे दाने और गोलाकार जखम पैदा हो जाता है, कमरमें दर्दकी वजहसे रोगी सीधा नहीं रह सकती, कुबड़ा होकर जाना-आना किया करता है इत्यादि लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—सदृश—आर्सेनिक।

दोषघ्न।—ऐमोन-ऐसिटेट (श्वास-प्रश्वासकी क्रियामें) सिनापिस (श्वासक्रियामें) नक्स-वमिका (ज्वर) इत्यादि।

शक्ति।—३, १२, ३०।

आर्सेनिकम ब्रोमेटम।

(Arsenicum Bromatum).

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आव आर्सेनिक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—मुँहासे, बहुमूत्र और इसी वजहसे बहुतसे उपसर्गमें इसकी क्रिया अधिक है। कच्छू विष और उपदंश विष नाश करनेकी यह एक उत्कृष्ट दवा है; दादकी तरह उद्भेद और उपदंशसे मांस बढ़ना ; ग्रन्थिका अर्बुद बढ़ना और कड़ापन ; कर्कटका जखम ; कशेरुका मज्जाका क्षय आदि रोग, गति-शक्ति गायब हो जानेका भय या होनेकी सम्भावना ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुरारोग्य सविराम ज्वर और नीले रङ्गकी फुन्सियाँ वगैरह अवस्था विशेषमें इसके द्वारा बढ़ियाँ फल पाया जाता है।

शक्ति।—मूल अरिष्ट; और निम्नशक्ति भोजनके बाद सेवनसे लाभ होता है।

आर्सेनिकम् आयोडेटम

(Arsenicum Iodatum).

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव आर्सेनिक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—चेहरे पर मुंहासे; लाल दाने कलेजेका दर्द स्तनका अर्बुद; श्वासनलीका प्रदाह; कर्कटोया जखम, यक्ष्मा-कास; शोथ; सुस्ती; पाकाशयकी बीमारी; अजीर्ण; दमा; हृद्पिण्डकी बहुतसी बीमारियाँ; वक्षोदक; स्वरनलीका प्रदाह; चर्म्मरोग; चेचक; यकृतकी बीमारी; फेफड़ेकी बीमारी; छोटीमाता; कानसे पीवका स्राव; आमवात और सन्धिवात; गण्डमाला दोषकी वजहसे पैदा हुआ आंखोंका प्रदाह; उपदंशजसे पैदा हुए उपसर्ग आदिमें इसका व्यवहार होता है।

उपयोगिता।—श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह, बार बार प्रदाह मिला जलन करनेवाला स्राव बहना, स्राव जिन स्थानोंसे निकला करता है, उन सब स्थानोंमें प्रदाह, बहुत बदबूदार और पतला स्राव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लगनेसे ही बहुत खुजली होती है, वगैरह इसके विशेष लक्षण हैं। यक्ष्मा रोगमें भी लक्षणके अनुसार यह आरोग्य करनेवाला विख्यात है। बहु-व्यापक सर्दी, कानका पुराना स्राव, बहरापन, प्रदर रोग। तीसरे प्रहरका ज्वर, बहुत सुस्ती; तेज़ और उत्तेजित नाड़ी; बार बार ज्वर; पसीना, दुबलापन और उसके साथ-साथ पतले दस्त आना वगैरह में यह बहुत फायदेमन्द है। अम्ल-रोग, धातु-क्षीणता, मधुके रङ्गका कफ इसकी एक विशेषता है। प्रदर, जरायुका कैंसरका जखम, कानके पीछे नलीमें सर्दी इकट्ठा होकर बहरापन, फेफड़ेका फोड़ा, रातका बोखार; विलेपी ज्वर, रातमें पसीना, मिचली और कै, पाकस्थलीकी बहुतसी बीमारियाँ, इधर उधर हटनेवाला वात और सन्धि-वात, पक्षा-घात, जीवनी-शक्तिकी कमजोरी वगैरहमें यह विशेष उप-योगी है।

सम्बन्ध-तुलनीय।—(वैसिलिनम), एसिड नाइ-ट्रिक, (कटु स्रावमें) अरम, आर्स-मेट, इसके बाद सलफर (यक्ष्मा-रोगमें) और कोनायमके बाद स्तनमें दर्द-भरा गोला-कार पदार्थका अनुभव होना—इस लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

दोषघ्न।—ब्रायोनिया।

अनुपूरक।—फास्फोरस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्सेनिकम् मेटालिकम ।

(Arsenicum Metallicum),

दूसरा नाम ।—मेटालिक आर्सेनिक ; सँखिया; धातव शङ्ख-विष इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—कब्जियत ; इंफ्लुएञ्जा ; अतिसार, आँखोंकी बहुतसी बीमारियाँ ; अर्श ; सरका दर्द ; खुजली-भरी गृध्रसी और उपदंशज धातुकी बीमारियां आदिमें इसका व्यवहार होता है ।

उपयोगिता ।—दो सप्ताह या तीन सप्ताहके अन्तर से रोगका पैदा होना और बंधे समयपर रोगकी उत्पत्ति । बहुत कमजोरी, एक अङ्ग छोड़कर दूसरे अङ्गपर रोगका आक्रमण । एकाएक आक्रमणकर धीरे धीरे कम हो जाता है ; या इसके विपरीत होता है । मस्तक, आँखें, हाथ, अंगुली वगैरह बड़ी हो गयी हुई-सी मालूम होती है । शरीर के कितनेही स्थानोंमें खुजलाहट भरी जलन पैदा करनेवाली, कतरने और डंक मारने जैसी तकलीफ ; गर्म पानीसे नहाने, बाईं ओर सोने और रोगकी चिन्ता करनेसे बीमारीका बढ़ना । मलद्वार धोनेपर और ठण्डे पानीसे नहानेपर शान्ति मालूम होती है और मुँहकी खुजली घट जाती है । इसके व्यवहारसे उपदंश रोग फिर उभड़ पड़ता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—तुलनीय—आयोड, माक्यु, नेट्रम-कार्ब (उपदंशमें), नक्स-वोम, (तन्द्रालुता और गहरी नींद:), रस्टाक्स (कमरमें दर्द), अनुपच्च या आँखोंकी एक तरहकी बीमारी, (नक्स व्यर्थ होनेपर)।

दोषघ्न।—बेलेडोना (गलेका जखम) नेट्रम-कार्ब्ब (उपदंश)।

शक्ति।—३री या ६ठी साधारणत: व्यवहारमें आती है।

आर्सेनिकम् सल्फ्युरेटम फ्लेवम और रूब्रम।

(Arsenicum Sulphuratum Flavum and Rubrum)

नीचे इन दो तरहके आर्सेनिकोंकी क्रिया संचित भावसे लिखी जाती है।

१म—प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—संन्यास, स्वरनलीका क्षयरोग, प्रमेह, अतिसार, अजीर्ण, अम्ल, व्रण; स्नायुशूल।

उपयोगिता।—पहले श्वास-कष्ट, जननेन्द्रिय और बालक बालिकाओंके कानके पीछे खुजली, जखम, धवल और उपदंशको वजहसे मरी छाल निकलना इत्यादिमें फायदा होता है।

तुलनीय।—सल्फर और कैल्केरिया। शक्ति ६, ३० और कभी कभी २००।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२रा अर्थात् आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम रुब्रम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—कमरका स्नायुशूल (ग्टध्रसी), बहु-व्यापक सर्दी, इन्फ्लुएँजा, विचर्चिका, व्रण, प्रदर, वस्ति-प्रदेशमें दर्द, मासिक ऋतुके समय तकलीफ ; आगसे जलनेकी तरह पाकस्थलीमें जलन, रातमें ठण्डी पतली चीज़ पीने और भ्रमणसे वृद्धि।

सम्बन्ध।—पहलो और कैप्सिकम।

शक्ति।—६ ठी, ३० वीं और २००।

आर्टिमिशिया वल्गेरिस (Artemesia Vulgaris)

दूसरा नाम।—वार्म उड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—निस्पन्दवायु ; ताण्डव, अकड़न, बाधक, मृगी ; मूर्च्छावायु, सपनेमें घूमना ; बहुतसे कृमिरोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता।—मृगी वगैरह अकड़नवाले रोगके आक्रमणके पहले प्रकृतिमें उत्तेजना पैदा हो जाना, बच्चोंका दाँत निकलना, मस्तकमें चोट आदि, शोक और भयकी वजहसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारीके साथ या उसके बाद प्रायः पसीना या धातु जाना, सपनेमें घूमना, स्वप्नदोष, तलपेटमें अकड़न, क्रमि वगैरह।

सम्बन्ध-तुलनीय।—ऐब्रोटेनम, सिना, कैमो, आर्निका इत्यादि।

सदृश।—अरम, साइक्यूटा (टकटकी लगाकर देखना) सिना, एपिस, हेलिबो, ब्य फो (उत्तेजित), कैलेडि, कास्टिका, रूटा, ज़िङ्कम, ब्रायो (इस तरह जबड़ा हिलना मानो चबा रहा है।)

शक्ति।—३० या २००।

संक्षिप्त लक्षण।

बहुत ज्यादा मानसिक उद्वेग। रोगके आक्रमणके समय या बादमें ज्यादा नींद आती है। रातमें आपही आप धातु जाना, गर्भावस्थामें खून जाना या गर्भ-स्रावकी आशंका इत्यादि।

———

अरम ड्रेकाण्टियम।

(Arum Dracontium).

दूसरा नाम।—ग्रीन ड्रैगोन इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—घुंड़ी खांसी ; दमा ; कानकी बहुतसी बीमारियाँ ; स्वरभंग ; ध्वजभंग ; बहुव्यापक सर्दी ; स्वरनालीकी अकड़न ; योनिद्वार और मलद्वारकी खुजली ; गलेका जखम ; आमवात या जुलपित्ती।

उपयोगिता।—गलेमें अकड़न और छाल उधड़ना, खाक खाककर खाँसी, हाक हाककर कफ निकलना, सवेरे स्वरभंग ; गलेमें घड़घड़ाहट, कास या अकड़न पैदा करनेवाली खांसी (घुंड़ीकी तरह) रात्रिके अन्तिम भागमें वेशी (१२ से २ बजेतक)। १०।१२ दिनका अन्तर देकर इसी तरह बीमारी का आक्रमण। दमा और बहुत ज्यादा पेशाब होना ; इन्द्रिय वासनासे चिढ़ या न होना, लिङ्गकी शिथिलता, अण्डकोषकी पुरानी खुजली। नाक वगैरह स्थानोंमें बहुत तरहकी खुजली, दाहिनी ओरसे बायीं ओर बढ़ती है।

सम्बन्ध—सदृश।—कैलेडियम (चर्म्मरोगमें) ; अरम ड्राई।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

ऐरम मैकुलेटम। Arum Maculatum)

दूसरा नाम।—बार्बो-ऐरोविस ; लार्डस और लेडिस कक पाइण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—छोटी आलपीनकी तरह पतले आकारकी छोटी क्रिमि, दमा, सर्दी-खाँसी; मस्तक और नाक का बहुव्यापक सर्दी-रोग; नाकके छेदमें बहुपाद या मांसका लोथ पैदा हो जाना; मलद्वार और मलनालीका निकलना; मसूढ़ेसे खून बहना; हमेशा निगलनेमें कष्ट इत्यादिमें लाभ-दायक है।

उपयोगिता।—श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह और जखम; आँखें और बाईं ओरके नाकके भीतर माँसका लोथ पैदा हो जाना और उससे खून बहना। जीभ फूलना और अक-ड़न, जीभमें डंक मारनेकी तरह तकलीफ; ओंठ और मुँहमें सुई बेधनेकी तरह दर्द; स्वरभंग; तलपेटसे छाती तक फैलने-वाला एक तरहका दर्द और वहाँसे फिर गलेतक दर्द उठना; मूत्रनालीसे खूनका स्राव; खून मिला कफ; रक्तकी कै इत्यादि रोग-लक्षणमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—खोट आयल; दूध मक्खन।

सदृश।—अरम ट्राइफिलम।

शक्ति।—३से १२ या ३० वीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एरम ट्राइफिलम ।

(Arum Tryphyllum).

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—मस्तिष्क-प्रदाह, बच्चोंके गलेका जखम ; सान्निपातिक विकार ; प्रलाप ; झिल्लीक (डिप्थीरिया) रोग ; गांठोंका फूलना ; सरका दर्द ; जबड़ेमें दर्द ; मुँहका जखम ; जीभ फटी-फटी ; स्वरभंग प्रभृति ।

उपयोगिता ।—यह मन, त्वचा और स्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर विशेष उत्तेजना पैदा करता है ; परिणाम यह होता है, कि नाना प्रकारकी गड़बड़ी और नाक, गलेके भीतर, मुँहके भीतर और ओठ आदिमें जखम पैदा करता है। इन सब स्थानोंका चमड़ा उधड़ जाता है और उसके साथ बहुत खुजली और दर्द होता है। **नाकमें लगातार उँगली डालना, नाक खोंट खोंटकर खून निकाल डालना,** जबतक खून नहीं निकलता, तबतक नाक खोंटा ही करता है। **इसी तरह ओंठ खोंटना और खून निकालना,** इन सब स्थानोंको लगातार इसी तरह खोंटना ; विशेषकर ज्ञानावस्थामें—यही इस दवाकी विशेषता है। **खोंटते खोंटते जोरसे चिल्ला उठता है, इतनेपर भी खोंटना और रक्त निकालना नहीं छोड़ता है।** सान्निपातिक विकार ; आरक्त ज्वर ; डिप्थीरिया या झिल्लीक प्रदाह वगैरह रोगमें चाहे किसी कारणसे भी ऊपर लिखे लक्षण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौजूद हों-यह विशेष लाभ दिखायेगा। जखमवाली जगहमें बहुत दर्द ; सर्दी, नाक रुक जाना, जखम करनेवाला पतला स्राव हमेशा निकला करता है और वह लगकर नाकमें, ओंठके ऊपर और ओंठमें जखम पैदा हो जाता है। बालक-बालिकाएँ मुँह और गलेमें जखमकी वजहसे भोजन नहीं करना चाहतीं। बहुत ज्यादा लार बहना ; उससे समूची जीभ और मुँहमें जखम हो जाता है और खूनका स्राव होता है। सान्निपातिक ज्वरमें, अज्ञानावस्थामें तकियेसे सर ढुलक पड़ता है। स्राव कड़वा होनेके कारण मानव शरीरके नवों द्वारोंकी श्लैष्मिक झिल्ली सड़-सी जाती है। वक्तृता देतेदेते एकाएक सर्दी लग जाती है और स्वरभंग हो जाता है। (रस्टाक्स ठीक इसके विपरीत है) गर्म वस्त्रमें, गर्म काफी पीनेपर सर दर्दका बढ़ना।

सम्बन्ध ।—मेटा, लैकटिक एसिड वगैरह।

दोषघ्न ।—पल्स। **समतुल्य** ।—कैलडि ; ऐलियेन्यस ; सिना (नाकमें अँगुली डालना) ; एमोन कार्ब (कटु स्राव) आर्जेण्टम नाइट्रिकम, आर्स, कैन्थरिस, कैप्सि, कास्टि, हिपर, हाइड्रोसियेनिक एसिड, आयो, कैलि-आयो, लैकेसिस, लाइको, मार्कु, मेजेरियम, सलफर इत्यादि।

संक्षिप्त लक्षण।

मन ।—अस्थिरता ; प्रलाप ; नाकके भीतर अँगुली डालना; **ओंठ नोंचना और इन स्थानोंको नोच नोचकर रक्त निकालना** ; औंघाई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक ।—सरमें दर्द ; भोजनके बाद सरका दर्द घट जाता है और गर्म कपड़ा ओढ़ लेनेपर बढ़ जाता है । तकियेमें सर घुसाया करता है (एपिस, हेलि-बोर)

आंखें ।—रोशनी सहन न होना; मानो मेघ या भाफके भीतरसे सब चीजें देख रहा है ।

नाक ।—नाक बन्द ; लगातार पानीकी तरह स्राव निकलना ।

मुँह और गलेमें ।—लार बहना ; मुँहमें बहुतसे जखम ; मुँहके किनारेपर जखम ; गलेमें जखम ; स्वर-भंग ; वक्ताओंका स्वर-भंग ; गलेमें दर्द ; स्वरनालीमें कड़ा श्लेष्मा जमना ; झिल्लीक प्रदाह (डिफ्थीरिया) इत्यादि ।

त्वचा ।—त्वचापर लाल लाल उद्भेद ; उनमें बहुत ज्यादा खुजली ; शरीरके कितनेहो स्थानोंमें जखम और उनसे खून बहना ; खुजली इत्यादि ।

पेशाब ।—थोड़ा पेशाब ; **मूत्रद्वार विकार** ।

ज्वर ।—सान्निपातिक ; बेहोशी ; मूत्र-विकार इत्यादि ।

शक्ति ।—२०० ; निम्न-क्रम या बार बार प्रयोग मना है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐरण्डो मौरिटैनिका।

(Arundo Mauritanica).

दूसरा नाम।—एरण्डो; कर्टेलियन ग्रास। इटली देशका एक विशेष घास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—साधारण सर्दी; मस्तककी सर्दी; दाँत निकलना; अतिसार; कानसे पीव बहना; दमा; मुँहमें जखम। पेशाबमें तली-जमना इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता।—सर्दी रोग; स्तन पीनेवाले बच्चोंको दाँत निकलनेके समय लगातार पतले दस्त आना; पेशाबमें लाल बालूके कणोंकी तरह पदार्थ दिखाई देते हैं, मुँहमें पानी लग जाने जैसा (मानो आमत्वक हट गया) भाव। प्यास; सर्दी और बीच बीचमें नाक बन्द हो जाना; गण्डमाला दोषसे पैदा हुआ आँखोंका प्रदाह और कानमें पीव इत्यादि इसका निर्दिष्ट लक्षण है। ऐसा मालूम होता है कि पेटमें कुछ घूम रहा है।

सम्बन्ध।—सदृश।—सीपा, सल्फ, कैल्कि, लाइको, सैबेडि, सोराइनम्, लिलियम।

शक्ति।—३री, ६ठी, १२वीं या ३० वीं शक्ति व्यवहृत हुआ करती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—अश्लील भावका उदय होना ; सहजमें ही हँसी आ जाना।

मस्तक।—माथेके भीतर तकलीफ और दर्द ; सरमें चक्कर आना ; माथेमें रूसी।

आंखें।—बच्चोंको गण्डमाला दोषकी वजहसे आँखें उठना ; पलकोंका प्रदाह।

कान।—कानसे पीव बहना।

नाक।—छींकनेपर नाकसे जमा हुआ हरा या पीला श्लेष्मा निकलना।

मुँह।—जखम जैसी अवस्था और लार बहना।

पाकस्थली वगैरह।—रोगी डकार लेना चाहता है, पर डकार नहीं आती ; यकृत और प्लीहामें दर्द। यकृतमें लगातार दर्द ; प्लीहामें छेदने जैसा दर्द, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा।

मल और मलद्वार।—मूत्रनलीमें खुजली। जलन और पेशाबमें बालूके कणकी तरह जमना।

पुं०-जननेन्द्रिय।—अश्लील भाव पैदा होना ; बार बारलिङ्गमें कड़ापन ; संगमके बाद श्वासकष्ट और रेतःरज्जुमें दर्द इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुसे सर्दीका स्राव; बार बार रति या संगमकी इच्छा; काला काला थक्का थक्का रजःस्राव इत्यादि।

श्वास-यंत्र।—सर्दी या खाँसी; कफ पहले नीली आभा लिये, इसके बाद सफेद। खाँसनेके बाद स्वरनली या कण्ठमें दर्द। सर्दी जमकर श्वासनलीमें बैठ जाती है।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—अंग-प्रत्यंगमें शोथकी तरह सूजन; कटिवात।

त्वचा।—तिल जैसे चिन्ह; बच्चेके शरीरमें फुन्सियाँ।

ऐसाफिटिडा। (Asafoetida).

दूसरा नाम।—हींग; फेरुला नार्थेस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—दमा; हड्डीकी बहुतसी बीमारियाँ; ताण्डव; अतिसार; अजीर्ण; पेट फूलना; सरमें दर्द; हृद्-पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; चेतनाकी अधिकता; मूर्च्छा वायु; स्तनमें विकारकी वजहसे बीमारी या उपसर्ग; पारेका विकार; स्नायुशूल; चरबी बढ़ जाना; आँखके गड़हेका स्नायु-शूल; नकसीर; उपदंश; बहुत तरहके जखम; अंगुलहाड़ा इत्यादि रोगमें लाभदायक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता ।—मूर्च्छा-वायु, खासकर आध्मान वायु-की वजहसे पैदा हुआ, अन्ननली और पाकस्थलीमें संकोचन और अकड़न । तलपेटका बहुत फैल जाना ; रोगिनी मनमें समझती है, कि पेटके सब पदार्थ मुँहसे बाहर निकल पड़ेंगे। जिन सब रोगियोंके रस-रक्त बहनेवाले जखम बाहरी लगाने-वाली दवासे आराम किये गये हैं या एकाएक पतले दस्त आना बन्द कर दिया गया है, और जो उपदंश या पाराके विषसे जर्ज-रित हो रहे हैं, उनको यह विशेष लाभ करता है । अवसाद वायु और गुल्मवायुग्रस्त मनुष्योंके जखम आदिमें छूनेसे बहुत ज्यादा दर्द, उसमें असह्य टपकका दर्द और रातके समय तक-लीफका बढ़ जाना। दूध कम होना, गुल्म-वायुका गोला पेटसे ऊपर चढ़कर कण्ठ रोध कर लेता है ; बहुत दर्द और छुआ न जाना ; मुँहमें चर्बी जैसा स्वाद, बड़ी तकलीफसे डकार आती है और डकार आनेपर आराम मिलता है ; छाती और हृद्-पिण्डमें बहुत दबाव मालूम होना ; दबावके जैसे दर्दकी भीतर-से बाहरकी ओर गति । घरमें वृद्धि और बाहरी हवामें आराम ; खाने-पीने बाद सब लक्षणोंका बढ़ना ; माथेमें दर्द ; छूनेसे रोगीको आराम मिलता है । पाकाशयमें कृमिकी तरह चलने-की प्रतिच्छिप्त क्रिया ही इसका निर्देशक लक्षण है ; इसी वजहसे डकार नहीं आती ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—पलस, कास्टिकम । **चायना मार्क**, वैलेरियाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदृश—आर्जण्ट-नाइट्रि (बाहरी हवामें उपशम); अरम (हड्डीकी बीमारी, आँखोंकी पुतलीका प्रदाह); चायना, कास्टिकम। क्रोटन (कुकुर खांसी); हिपर (स्पर्शानुभूति ; जखम वगैरहमें चैतन्याधिक्य ; दर्द की वजहसे मूर्च्छाभाव); केलि-आयोड (अर्बुदकी तरह गोटियां पैदा होना) इग्नेशिया, मस्कस, थूजा।

शक्ति।—६ठी, ३०वीं या २००।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—असन्तुष्ट, चञ्चल और अस्थिर चित्त। चैतन्याधिक्य,उत्कण्ठा ; इधर उधर मन घूमता फिरता है।

मस्तक।—ललाटमें भीतरकी ओरसे बाहरकी ओर दबाव मालूम होना ; अस्थिकोटरका स्नायुशूल। घरमें बन्द लड़केके सरका दर्द, खुली हवामें अच्छा रहता है।

आंखें। —आँखोंके सफेद आवरणमें फैलनेवाला जखम, जलन, आंखोंकी पुतलीका प्रदाह ; गर्मी रोगके कारण आँखकी बीमारी खासकर आइराइटिस या उपतारा प्रदाह।

नाक।—उपदंशकी वजहसे नकसीर, बदबूदार पीव बहना, नाकको हड्डीका क्षय होना।

कान। —बदबूदार पीवका स्राव, कानके पोछेकी हड्डीकी बीमारी।

गला —मूर्च्छा-वायुसे उत्पन्न गुल्म, ऐसा मालूम होता है, कि पेटसे एक गोला गलेतक उठता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकस्थली।—आध्मान वायुका रुकना; पाकाशयकी कृमि-जैसी गति रुक जानेकी वजहसे डकार नहीं आती; रोगिनी बार बार घूंट निगलना चाहती है। बहुत ज्यादा भूख या भूख न लगना; सड़ी डकार। न तो आध्मान वायु निकलता है और न हवा छूटती है।

तलपेट।—तलपेटका फूलना, पेट फूलनेकी वजहसे दर्द, टपक, आँतोंका शूल, सुई बेधने जैसा दर्द।

मल और मलद्वार।—बहुत ज्यादा पानीकी तरह मल, बदबूदार मल निकलना, कड़ा और थोड़ा मल, बहुत ज्यादा कब्जियत।

पेशाब।—पेशाबमें ऐमोनियाकी तरह तेज़ गन्ध।

पुं-जननेन्द्रिय।—वीर्यपातके बाद बेहोश हो जानेका उपक्रम; लिङ्गमें सुई बेधने जैसा दर्द; अण्डकोषमें दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु-प्रदेशमें प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द; बहुत ज्यादा प्रदर; स्तन सूख जाते हैं या बहुत बढ़ जाते हैं।

वक्षःस्थल।—जकड़ रखने जैसी खींचन; फैलाया नहीं जाता।

हृद्पिण्ड और नाड़ी।—स्नायविक हृद-कम्पन; नाड़ी पतली और तेज़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर।—कभी कभी कम्प या शीत; ताप; तन्द्रा; प्यास न लगना।

अस्थि।—इन्द्रियोंका जखम; अस्थि-वेष्टनमें दर्द; गहरा जखम; धीरे धीरे हड्डी पर आक्रमण करता है, पीव, पानीकी तरह और बदबूदार।

निद्रा।—प्रबल।

त्वचा।—खुजली, जोरसे खुजलानेपर घटना; जखमके किनारे दर्द-भरे।

ह्रास-वृद्धि।—छूनेसे; बाईं ओर लेटनेसे और गर्म-प्रयोगसे वृद्धि। बाहरी हवामें; हिलानेसे और घटना।

ऐसेरम-युरोपियम्।

(Asarum Europium).

दूसरा नाम।–युरोपियन स्नेक रूट; ऐसेरम वैलगेरी। हैजेल वाट; वाइल्ड नार्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—मदात्यय या शराब पीनेका बुरा फल; मलद्वारका हटना; सर्दी; हैजा; वमन; अतिसार कष्टरजः; बाधक; मूर्च्छावायु; सान्निपातिक ज्वर वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता।—बहुत ज्यादा स्नायविक उत्तेजना ; किसी तरहका शब्द सहन नहीं कर सकता, यहांतक कि कागजके टुकड़ोंकी रगड़ या रेशमी वस्त्रकी रगड़की आवाज़ भी सह नहीं सकता, उत्तेजित हो उठता है। ठण्डी हवा और ठण्डे पानीसे आँख और मुंह धोना बहुत पसन्द करता हैं और उससे शान्ति मिलती है। शराब पीनेकी दुर्दमनीय आकांक्षा। **जरा हिलने-डोलनेसे ही शीत** और हमेशा कम्प अनुभव करता है। समझता है, कि वायुमें या शून्यमें उड़ा करता है। आँखोंमें जलन ; बहरापन ; सवेरे भूख लगना ; मुँहमें पानी भरना, दस्त-कै ; सरमें दर्द ; बाधक इत्यादि।

वृद्धि।—जाड़ेके दिनोंमें और सर्दीसे।

ह्रास।—ठण्डे पानीसे आँख-मुँह धोने या रोगवाली जगह पर ठण्डा पानी प्रयोग करने और तरीसे वृद्धि।

सम्बन्ध-दोषघ्न।—कैम्फर, विनिगर और उद्भिजाम्ल। बस्मायके बाद यह बढ़िया काम करता है।

सदृश।—ऐकोन, ऐलोज, (बटी हुई रस्सीकी तरह मल) कैम्फर, कूप्रम, हिपर, इपि, काफि, मार्क्यु, नक्स, पोडो, पल्स, सल्फ्यूरिक एसिड, सिपिया ; स्ट्रैमो, टेबेकम, विरेट्रम (हैज़ामें)।

शक्ति।—३री, ६ठी और ३०वीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण।

मानसिक वृत्तियोंका क्रमशः घट जाना, परिश्रम करनेकी शक्तिका नष्ट हो जाना ; ललाटपर दबाव मालूम होना ; सरमें दर्द और कस जाने जैसा मालूम होना। माथेकी त्वचामें खोंचन मालूम होना ; पढ़नेके समय आँखमें दबाव पड़नेकी तरह दर्द ; सर्दी ; छींक ; आँखोंमें अकड़नका भाव ; कान बन्द मालूम होना और एक तरहकी आवाज़ आना ; भूख न लगना, अजीर्ण ; खाई हुई चीज़के कण मिला हुआ अजीर्ण मल, अतिसार, मलद्वारका अपने स्थानसे हट जाना, पीली आभा लिये श्वेत-प्रदर ; तेज श्वास-प्रश्वास ; स्नायविक खांसी ; ज्वर ; ज्वरके समय मानो एक एक अंग बरफकी तरह ठण्डे हो कर ज्वर आता है, ऐसा मालूम होना ; कभी सहजमें ही पसीना होना या बहुत ज्यादा पसीना होना।

ऐसक्लिपियम-सिरियाका।

(Asclepias Syriaca)

दूसरा नाम।—मिल्क वीड ; सिल्क वीड प्रभृति।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—गर्भ-स्राव ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ज्वर ; शोथ ; बाधक ; सर दर्द ; अजीर्ण ; बहुव्यापक सर्दी ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; आमवात ; मूत्रक्षारसे पैदा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ विकार ; जरायुमें दर्द वगैरह बीमारीमें विशेष लाभ दायक है।

उपयोगिता।—स्नायविक तन्तुओंपर इसकी विशेष क्रिया है। सरका स्नायविक दर्द ; मानो किसी धारदार शस्त्रसे कोई एक कनपटीसे लेकर दूसरी कनपटीतक बेध रहा है। इसके साथ ही वमन, पसीना और बहुत ज्यादा पेशाब होना ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा) ; हृद्‌पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ, मूत्रचार विषाक्तता, नया सन्धिवात, सविराम ज्वर ; गर्भस्रावकी आशंका वगैरहमें व्यवहार हुआ करता है।

संक्षिप्त लक्षण।

मस्तक।—सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना, माथेकी जड़ता, भोजनके बाद भूखका गायब होजाना, बहुत ज्यादा मिचली ; कष्टरजः ; (मासिक ऋतुस्रावमें दर्द) उदरी ; हृद्‌-पिण्डकी गड़बड़ी ; मूत्रकोषकी बीमारियाँ, उदरी या रजोरोध की वजहसे पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ जाना।

सम्बन्ध।—"एस्क्लिपियस डिन्सिटैक्सिकम" के साथ तुलनीय। (पाकाशयमें गड़बड़ी पैदा कर दस्त और कै लाया है) साइलि, ब्रायो, कोलचि।

शक्ति।—३री, ६ठी, ३०वीं इत्यादि।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐस्क्लिपियस ट्यूबरोसा।

(Asclepias Tuberosa).

दूसरा नाम।—प्लुरिसि रूट ; वाटर फ्लाई वीड इत्यादि

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—केश न रहना (चंदला हो जाना) ; दमा ; पैत्तिक ज्वर ; श्वासनाली प्रदाह ; सर्दी ; उपदंश ; शूल ; खांसी ; अतिसार ; रक्तामाशय ; (खूनी आँव) ; सरका दर्द ; हृद्‌पिण्डकी बीमारी ; बहुव्यापक सर्दी ; आँखोंका प्रदाह ; हृद-वेष्टका प्रदाह ; प्लुरिसि या फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; पस-लियोंमें दर्द ; आमवात ; गण्डमाला ; हैमन्तिक रक्तातिसार ; घुंड़ी खांसी ; वमनके साथ सरका दर्द ; स्वरभंग ; आध्मान वायु वगैरहमें यह उपयोगी है।

उपयोगिता।—रसवात, आमवात और सन्धिवात धातुवाले मनुष्योंको श्लेष्मासे पैदा हुई बीमारी ; शीत और तरीमें वृद्धि। पैशिक वात जो कोना-कोनी भावसे अर्थात् उर्द्धाङ्गका बाएँ हाथ और निम्नाङ्गका दाहिने पैर या निम्नाङ्ग-का बाएँ पैर और उर्द्धाङ्गका दाहिने हाथ इस तरह वातका आक्रमण होनेपर यह विशेष उपयोगी है। इसके साथही पसीना औरगहरा लाल और गर्म पेशाब; धूम्रपानकी इच्छा न होना, हेमन्त ऋतुका रक्तामाशय, छातीमें गर्मी मालूम होना, बहु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापक सर्दी ; (इन्फ्लुएंजा) ; पसलियोंका दर्द और अकड़न भरी घुंड़ी खांसी इसका निर्देशक लक्षण है। **प्रत्येक बार जाड़ेके समय उदरामय,** सुस्ती ; प्रवल ज्वरके साथ गर्म पसीना, **सवेरे** बढ़ना यही इसकी विशेषता है ।

सम्बन्ध—तुलनीय ।—ऐगरिकस (कोनाकोनी भावसे वातका आक्रमण); ब्रायोनिया ; विरे (रातमें दस्त आनेपर दर्द घटता है), डालकेमारा (शीत और तरीमें वृद्धि)।

सदृश ।—नेट्रम-सल्फ, पल्स इत्यादि ।

शक्ति ।—६ठी, १२वीं, ३०वीं, २०० इत्यादि ।

ऐसीमिना ट्राइलोबा ।

(Asemina Triloba).

दूसरा नाम ।—अमेरिकन पापा ; साधारण पपीता ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—मुँहमें जखम, दुष्टव्रण, विस्फोटक, अकड़न, अतिसार, ज्वर, गलेका जखम वगैरह ।

उपयोगिता ।—इसका कच्चा फल खानेके कारण किसी परिवारमें पाँच मनुष्योंको प्रवल ज्वर, गलेमें जखम, अतिसार और एक तरहके लाल, लाल उद्भेद शरीरपर निकल आये थे, एक मनुष्यको विषैला फोड़ा भी हो गया था। मुँहके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतरी भाग, गलेका भीतरी अंश और पाकाशय वगैरहमें बीमारी होकर उत्तेजना पैदा हो जाती है। रोगियोंको अधिक पानी पीनेकी इच्छा; ठण्डा शरबत या बरफ वगैरह पीनेकी विशेष स्पृहा, भोजनके बाद वृद्धि।

सम्बन्ध।—कैप्सि, बेलेडो, एपिस—ये सदृश गुणवाली दवाएँ हैं।

शक्ति।—निम्न शक्ति ही व्यवहार में आती है।

ऐस्पारेगस आफिसिनेलिस।

(Asparagus Officinalis).

दूसरा नाम।—कामन गार्डेन ऐस्पैरेगस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—माथेकी सर्दी; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा); बहुमूत्र; शोथ; हृद्‌पिण्डकी बहुतसी बीमारियाँ और मूत्रयंत्रके विकारमें यह विशेष लाभदायक है।

उपयोगिता।—हृत्पिण्ड और मूत्रग्रन्थिकी बीमारीसे पैदा हुए शोथके लक्षणमें यह उपयोगी है। नाककी सर्दी, माथेकी सर्दी, पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव; पहले बाईं फिर दाहिनी नाकमें रोगका आक्रमण होता है; बार बार छींक, गलेसे कड़ा कफ निकला करता है। पेशाबमें तकलीफ अथवा जलन-भरा पेशाब, पथरी; कितनी ही तरहकी गन्धवाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशाब ; पेशाबमें कितनी ही तरहकी तली जमना और योनि-देशमें खुजली। वक्षोदक रोग ; कलेजा धड़कना (बाहरसे दिखाई देता है) ; नाड़ी कमजोर ; धीर और अनियमित।

संक्षिप्त लक्षण

सरमें चक्कर।—सामने माथेमें अधिक। बहुत अधिक सर्दी रोग ; गलेमें हजामतका जखम ; मुँह बेस्वाद, मीठा स्वाद ; ताँबेका स्वाद ; ठण्डो लार प्यास ; पित्त-भरा दस्त ; तलपेटका फैलना ; बार बार आध्मान वायु या वायु सरना ; सफेद श्लेष्मा जैसी तली जमनेवाला पेशाब ; बार बार इन्द्रिय-परितृप्तिकी वासना ; मासिक ऋतु देरसे होना परन्तु बहुत दिनोंतक स्राव जारी रहना ; तेज़ खांसी ; बहुत कफ़ निकलता है। **बैठनेपर कलेजा कांपना** ; पीठमें वातका दर्द। दाहिने उरुके शिखरपर हड्डी खिसक जाने जैसा दर्द ; पैरका टेढ़ा-पन ; उदरी ; शोथ ; चेहरा लाल और मोमके रंगकी पथरी पैदा होनेकी सम्भावना।

सम्बन्ध--दोषघ्न।—ऐकोन, एपिस। **सदृश**—डिजिटे ; स्पाइजी ; सार्सा, ऐपोसाइनम।

शक्ति।—६ठी और ३० वीं हमेशा व्यवहारमें आती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐस्पिडासपार्मा । (Aspidosperma).

दूसरा नाम ।—कूईब्राको ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—यह फेफड़ेके डिजिटेलिसकी तरह है अर्थात् हृद्पिण्डके लिये जिस तरह डिजिटेलिस उपकारी है, यह भी फेफड़ेके लिये उतना ही लाभदायक है। हृद्पिण्ड-का दमा, श्वास-प्रश्वासकी चेष्टा करनेपर मानो दम अटक जाता है। यह श्वास-क्रिया उत्पन्न करनेवाले केन्द्रसमूहकी क्रियाको बढ़ा देता है और फेफड़ेके बीचके वायुको अधिक अम्लजान मिश्रित बना देता है। हृद्पिण्डका थोड़ा फैलना, रक्तमें युरियाकी अधिकताकी वजहसे श्वासकष्ट वगैरह रोग-लक्षणोंमें लाभ करता है।

सम्बन्ध—सदृश ।—एमोन कार्ब, कैल्केरिया, स्टैनम ;

शक्ति ।—१म, २री, और ३री शक्ति अधिक व्यवहारमें आती है।

ऐस्टेकस फ्लूवियाटिलिस
(Astacus Fluviatilis).

दूसरा नाम ।—कैन्सर ऐष्टेकस ; कैन्स फ्लूवियाटि-लिस ; समुद्रमें पैदा होनेवाला एक तरहका केकड़ा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग ।—पित्तसे पैदा हुए लक्षण ; शूल ; खांसी ; अतिसार ; ज्वर ; ग्रन्थियोंका बढ़ना और प्रदाह ; पालाज्वर या सविराम ज्वर ; कँवल रोग ; यकृतकी बीमारी ; आमवात ; स्नायुशूल ; कपकपी या शीत ; पाकाशयकी गड़-बड़ी ; दाँतोंका शूल और कितने ही तरहके अर्बुदमें लाभ-दायक है ।

उपयोगिता ।—शीत-कातरता, यकृतकी गड़बड़ी और आमवात वगैरह रोगमें विशेष लाभदायक है । लसिका ग्रन्थियोंका फूलना और दूधिया पपड़ी जम जाना, कँवल रोग, सफेद रंगका अथवा कीचकी तरह मल ; सरमें दर्दके साथ बोखार और शरीरके भीतर शीत शीत भाव मालूम होना, मानो कोई कीड़ा चल रहा है ; नया अर्बुद और शराबियोंका छोटी सन्धियोंका वात ; पेशाब, लार, आँसू और नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा और रक्ताम्बु, सभी पित्तमय इत्यादि रोगमें लाभदायक है

सम्बन्ध ।—दोषघ्न ।—ऐकोनाइट । **तुलनीय ।**—एपिस, रास्टक्स, नेट्रम-म्यूर ।

शक्ति ।—३री, ६ठी या ३०वीं इत्यादि ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—छातीमें बेचैनीके साथ मानसिक उत्तेजना ।

मस्तक ।—माथेमें जड़ता ।

आंख ।—आँखकी योजक त्वचा लाल या कभी कभी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीली। पुतलियाँ फैलीं ; धुँधली दृष्टि ; पुस्तक पढ़नेके समय अक्षर कितनेही रंगके दिखाई देते हैं।

कान।—कानमें मानो कुछ डालकर बहरापन पैदा किया जा रहा है।

नाक।—तेज छींक और रक्तस्राव।

पाकस्थली।—मिचली नहीं पर खाई हुई चीज़ कै हो जाती है। भूख खूब रहती है ; ऊपरी पेटमें जलन होती है और मलद्वारमें वेग अनुभव होता है।

तलपेट।—वायुसे भरा ; द्वादश अंगुलि नामक आँतमें या छोटी आँतके सबसे ऊँचे अंशके पास दर्द। आँतमें शूल-वेदना (चलनेसे वृद्धि और बैठनेसे उपशम)।

श्वास-यंत्र।—वायुनलीमें खुजलीके साथ खांसी। वायुनली भुजमें बहुत परिणाममें लसदार कफ संचित रहता है, सहजमें नहीं निकलता। सवेरे खांसीमें कफ निकलता है। कुछ मीठा स्वाद लिये और खून मिला कफ निकलता है। यक्ष्मा-कास ; चलते चलते एकाएक स्थिर खड़े हो जानेपर तुरन्त खांसी बढ़ती है।

त्वचा।—पीले रंगकी और कँवल रोग जैसी त्वचा।

ज्वर।—हवा सहन नहीं होती ; शरीरमें शीत भाव मालूम होना ; कम्प ; शरीरका आवरण खोलनेपर वृद्धि ; सरमें दर्दके साथ तेज़ बोखार (नक्स-वमिका और बेलेडोना)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐस्टिरियस रियुबेन्स ।

(Asterias Rubens).

दूसरा नाम ।—स्टार फिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—चेहरेपर मुँहासे ; संन्यास ; कैन्सर या कर्कटका जखम ; कब्जियत ; अकड़न या तड़का ; मृगी ; सरमें दर्द ; हृद्‌रोग ; मूर्च्छावायु ; लार-बहना ; प्रमेह-दोष मिलो धातु ; जोभका पक्षाघात ; जोभका फूलना ; कितने ही प्रकारके जखम ; जरायुकी बहुत तरहकी बीमारियाँ वगैरह रोगमें लाभदायक है ।

उपयोगिता ।—जरायुकी बहुत तरहकी बीमारियोंमें व्यवहारमें आता है । इस रोगमें इसका सीपिया और म्यूरेक्स-के साथ विशेष सदृश-सम्बन्ध है । मृगी और संन्यास रोग इससे अच्छे हुए हैं । सरमें भारके साथ बहुत ज्यादा कब्जियत; स्तनमें शस्त्र-बेधनेकी तरह दर्द ; स्तनका कैन्सर या कर्कटोया जखम ; कितने ही तरहके चर्मरोग और जखम ; **इन्द्रिय-तृप्तिकी प्रबल इच्छा** ; प्रमेहसे पैदा हुआ धातुविकार ; शिथिल मांसपेशी ; श्लेष्मा-प्रधान धातु ; गुल्म-वायु ; स्नायुशूल इत्यादिमें विशेष उपकारी है ।

वृद्धि ।—रातमें, संचालनसे ; शीतमें, बाईं करवट सोनेपर और तर ऋतुमें ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपशम।—रोने और अश्रुस्रावसे मानसिक लक्षणोंका उपशम।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—प्लम्बम्, जिङ्कम। **सदृश।**—म्यूरेक्स और सिपिया, थूजा ; वेलाडो, लिलियम, नक्स-वम और काफियाके साथ **विसदृश।**

शक्ति।—३री, ६ठी, ३०वीं, २०० इत्यादि।

ऐट्रोपिनम।—(Atropinum)

दूसरा नाम।—ऐट्रोपिन ; बेलेडोनाका सार।

प्रस्तुत-प्रणाली।—विचूर्ण और अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—अकड़न ; पलकोंकी अकड़न ; शय्यापर पेशाब करना ; मृगी ; आँखोंकी बहुतसी बीमारियां ; पाकाशयका जखम ; निम्नाङ्गका पक्षाघात ; पागलपन ; स्नायु-शूल ; क्लोम-ग्रन्थिका प्रदाह ; कशेरुका या मेरुमज्जाकी उत्ते-जना ; तोतलाना ; धनुष्टंकार ; दृष्टिका दोष ; गरदन अकड़ना वगैरह रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता।—यद्यपि यह बेलेडोनाका सारांश है तथापि इसकी क्रिया समान नहीं है। यह अनुभूति-विधायक स्नायुमें चैतन्याधिक्य उत्पन्न करता है। **आंखोंपर ही इसकी क्रिया और लक्षण बहुत अधिक है।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब तरहकी मिथ्या चीजें देखना या दृष्टि-विभ्रम उत्पन्न होना और हरएक चीजें बड़ी दिखाई देना, यह इसका एक खास लक्षण है। इससे गर्दनकी पुरानी अकड़न आराम हो जाती है। दाहिने अङ्गपर इसकी क्रिया स्पष्ट रूपसे दिखाई देती है।

सम्बन्ध ।—यह मस्कोरिन और ओपियमका दोषघ्न है। ओपियम और फाइसस्टिग्माके द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—निम्न शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—उत्तेजनाके साथ उन्माद रोग, नाना प्रकारके कीट पतङ्ग आदि हिल रहे हैं या उड़ रहे हैं, समझकर उसे पकड़ने जाता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, मृगी रोगके साथ सरमें दर्द, सरका दर्द।

आंखें ।—सभी पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। सब तरहकी भ्रमपूर्ण चीजें देखना।

जीभ ।—जीभ मोटी ; बातोंमें जड़ता ; जीभका पक्षाघात, तोतलाना।

पाकस्थली ।—खाई हुई चीज़की कै, गर्म पानी पीनेसे कै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूत्र-यंत्रादि ।—बार बार पेशाब ; अनजानमें थोड़ा पेशाब ; डिम्बाधार को उत्तेजनाकी वजहसे मृगी रोग।

हृद्पिण्ड ।—क्लोरोफार्म या हृद्पिण्डको सुन्न करने की अन्यान्य दवाओंके व्यवहारसे पैदा हुई हृत्पिण्डको निष्क्रियता।

अंग-प्रत्यंग ।—सुन्न हो जाना, पक्षाघात, चैतन्याधिक्य।

निद्रा ।—पाकाशयके दर्दकी वजहसे नींद न आना ; डरकी वजहसे नींद न लगना।

औरम-आर्सेनिकम्।

(Aurum Arsenicum).

दूसरा नाम ।—आर्सेनियेट आव गोल्ड ; सोना और संखिया मिला पदार्थ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

रोगमें-प्रयोग ।—खूनकी कमी, कर्कटका जखम ; मृत्पाण्ड ; सरमें दर्द ; उपदंशसे पैदा हुआ सरका दर्द ; धवल रोग ; उपदंशसे पैदा हुआ यक्ष्मा, खांसी वगैरह बीमारीमें लाभदायक है।

उपयोगिता ।—यह यक्ष्मा रोग, उपदंश और उससे पैदा हुई कितनी ही तरहकी बीमारीमें काममें आता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका प्रयोग करनेपर रोगीको पहले भूख लगती है या खानेपर रुचि पैदा हो जाती है। भूख बढ़ जानेपर समझना चाहिये कि इसकी क्रिया आरम्भ हो गयी है। यह पाकाशय और आँतोंकी क्रमि जैसी गति की संचालन क्रिया उत्तेजित कर सोखनेकी क्रिया बढ़ा देती है।

शक्ति।—इसका निम्न-क्रमका विचूर्ण ही अधिक लाभदायक है। ३० या २०० भी व्यवहारमें आता है।

अरम आयोडेटम्।

(Aurum Iodatum)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव गोल्ड ; स्वर्ण और आयोडिन मिले पदार्थ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।— वचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—स्वरनालीकी अकड़न ; वार्द्धक्यकी वजहसे पक्षाघात ; उपदंशसे पैदा हुई बीमारीकी वजहसे पक्षाघात और नाना प्रकारकी बीमारियाँ।

उपयोगिता।—दोनों ही दवाएँ निर्दिशक लक्षण मिली बहुतसी बीमारियोंमें व्यवहारमें आती है।

शक्ति।—१से ६ विचूर्ण और ३० तथा २०० इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरम मेटालिकम्।
(Aurum Metallicum)

दूसरा नाम।—अरम फोलियेटम (मेटालिक गोल्ड); स्वर्णपात चूर्ण।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—सुराके अपव्यवहारको वजहसे पैदा हुई बीमारी, ऋतुरोध (महीना न होना); हृद्‌शूल; दमा; हड्डीकी बहुत-सी बीमारियाँ; बदबूदार श्वास; मेदकी अधिकता; सुस्ती; कानकी बीमारियाँ; विसर्प; आँखकी बहुत सी बीमारियाँ; ज्वर; प्रमेह; खून जाना; बवासीर; अर्द्ध दृष्टि; कोरण्ड, कँवल; श्वेत-प्रदर; गति-शक्तिका पक्षाघात; विषाद; पारदका विकार; बाघी; रातमें भय; (रातके समय छाती दबानेका रोग या बोंबियाना); नकसीर; पक्षाघात; यक्ष्मा-कास; बच्चोंका अजीर्ण; गण्डमाला; गन्धकी गड़बड़ी, गन्धका ठीक ठीक न मिलना; उपदंश; जीभपर गोटी गोटी अर्बुद; कितनेही तरहके जखम और उसी वजहसे कड़ापन; सरमें चक्कर आना; दृष्टिमें विकार।

उपयोगिता।—रक्तप्रधान धातुवाले मनुष्य, जिनके केश काले, उद्यमशील, अस्थिर, और भविष्यकी चिन्तामें व्याकुलसे; वृद्ध स्थूलकाय, क्षीण दृष्टि, जीवनकी इच्छा न रहना और पारेका अपव्यवहार या उपदंशके कारण नष्ट-स्वास्थ्यवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगी है। लगातार आत्महत्या करनेकी दुर्निवार प्रवृत्ति, गहरी विषन्नता और विषाद इसका खास लक्षण है। जीवन एकदम दुर्वह भार जैसा मालूम होना; हमेशा घबड़ाया हुआ; मानसिक और शारीरिक कार्य जल्दी जल्दी नहीं कर सकता। जीर्ण-शीर्ण बालकोंकी निस्तेजता, निर्जीवता, स्मरण-शक्तिकी कमजोरी और अण्डकोष की गठन पूरी करनेमें विशेष उपयोगी हैं। उपदंश, पारेका अपव्यवहार, भय, क्रोध, प्रतिवाद, विरक्ति और प्रणय या कोई दूसरा आनन्द वा दुख भीतर दबा रखनेकी वजहसे बहुतसी बीमारियाँ। थोड़ेमें ही कातर हो जाना; गन्ध, स्वाद शब्द, स्पर्श, दर्द सभी ज्यादा मालूम होता है; सामान्य प्रतिवादसे ही बहुत अधिक उत्तेजना पैदा हो जाना। केश झड़ जाना (खासकर उपदंश और पाराके व्यवहारका बुरा नतीजा)। उपदंश और पाराके व्यवहारसे पैदा हुई हड्डी की बीमारी; (हड्डीका क्षय) नासिकास्थि और शंखास्थि वगैरहका क्षय; नाकके छेदमें दूषित जखम; कानका स्राव, स्राव बहुत ही बदबूदार, समस्त दर्द, खासकर पारा और (उपदंशसे पैदा हुआ दर्द) रातके समय बढ़ता है; बहुत ज्यादा काँखना, अस्वाभाविक भावसे कोई स्थान लांघनेकी वजहसे जरायुका अपने स्थानसे हटना और कड़ा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन। बावी, गण्डमाला, हड्डीका टेढ़ापन, रक्तस्राव ; गुल्मवायु और उसके साथ ही पर्यायक्रमसे हँसना और रोना ; **रातके समय वृद्धि।** आँखोंके सामने नाना प्रकारकी चिनगारियाँ दिखाई देना ; किसी पदार्थका आधा भाग देखना ; **नकसीर** ; यकृत रोग ; कँवल, आँतोंका हटना, नकली मैथुन; श्वेत-प्रदर, हृद्कम्पन, इसके साथ ही तेज़ टपक जैसा दर्द। माथे और छातीमें थोड़ेही परिश्रमसे खूनका दबाव बढ़ जाना ; नाड़ी क्षुद्र, तेज ; क्षीण और अनियमित, और नसें इसनी उछलती हैं, कि स्पष्ट दिखाई देती हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो हृद्पिण्डका स्पन्दन (कलेजेकी धड़कन) बन्द हो गया है या घटता जा रहा है और एकाएक जोरसे धक्का देता है। हृद्पिण्डके दर्दका बांहतक फैल जाना। डरावने सपने; हड्डीमें दर्द ; जाड़ा सहन न होना ; मसे ; कामोन्माद ; दाँतकी जड़की बहुतसी बीमारियाँ ; गदला-पेशाब ; सवेरे पसीना ; जननेन्द्रिय और उसके आस-पासके स्थानमें बहुत पसीना इत्यादि लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

वृद्धि।—सूर्यास्तसे सूर्योदयतक, शीतमें सोने, मानसिक परिश्रमसे और जाड़ेके दिनोंमें।

ह्रास।—गर्म हवामें, गर्मीके दिनोंमें और सवेरे।

सम्बन्ध—तुलनीय।—लिउयेट (उपदंश); आर्जेण्टम, आर्स ; ऐसाफिटिडा (आँखके चारों ओर) ; बेलाडो ; कैप्सि (कानके पीछेकी हड्डीकी बीमारी ; मेदकी आधिकता) ; कैल्के (रातमें डर) ; काफिया, (चैतन्याधिक्य), कूप्रम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दमा) ; हिपर ; आयोड ; कैलि-बाई (गहरा जखम, नकसीर, आँखोंका प्रदाह ; उपदंश) कैलि-आयोड, (उपदंश दोष)। कैलिब्रोम, (कलेजेकी जगहपर गड़बड़ी मालूम होना ; स्थिर नहीं रह सकता इधर उधर करनेकी इच्छा) पल्स, सिपिया ; सलफर ; टैरेण्टुला ; थूजा ; विरेट्रम।

दोषघ्न।—बेलाडो, चायना ; कूप्रम ; मार्क्यू-कर ; पल्स, स्पाइजिलिया।

शक्ति।—६, ३०, २०० इत्यादि।

क्रियाका स्थायित्व।—५० से ६० दिन तक।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—अपनेको संसारके अयोग्य समझता है। बहुत निराशाके साथ रक्तका दबाव (Blood pressure) का बढ़ना, **जीवनसे वितृष्णा, और आत्महत्या करनेकी दुर्दमनीय प्रवृत्ति।** केवल आत्महत्याकी ही बात बोलता है। औरतोंके जरायु और पुरुषोंके यकृतकी बीमारीके साथ आत्म-हत्याकी चिन्ता। चैतन्याधिक्य, कोई काम जल्दी नहीं कर सकता, आवाजसे डरता है।

मस्तक।—तेज़ सर-दर्द और रातमें वृद्धि ; सरमें चक्कर आना ; माथेमें फोड़ा।

आंखें।—बहुत अधिक रौशनीका भय ; चीजोंका ऊपरी भाग देख नहीं सकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान ।—बदबूदार पीवका स्राव ; पुराना बहरापन ; उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारी ।

नाक ।—नकसीर ; नाकमें दर्द, सूजन, प्रदाह, लाल लाल उद्भेद ; नाककी हड्डीमें जखम ; स्रावमें अत्यन्त बदबू ।

मुँह ।—मुँहमें जखम ; गलेमें दर्द ।

पाकस्थली ।— प्यास, भूखका बढ़ना । तलपेटमें दर्द और गर्मी ; रुका हुआ आध्मान वायु, पुट्ठेकी ग्रन्थियोंमें पीव इकट्ठा होना ।

मल-मूत्र ।—गदला पेशाब, मठा जैसा पेशाब ; रातमें पतले दस्त आना ; गुदास्थानमें जलन ।

जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषका फूलना, या पुराना कड़ापन ; बालकोंके अण्डकोषकी शीर्णता, कोरण्ड । योनिमें चैतन्याधिक्य ; जरायुकी-विवृद्धि, अपने स्थानसे हटना और बांझपन ।

हृद्‌पिण्ड ।—ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ ही मिनिटमें हृद्‌पिण्डका स्पन्दन बन्द हो जायगा और इसके बाद ही तूफानकी तरह आन्दोलन आरम्भ होना । कलेजा काँपना ; नाड़ी तेज ; दुर्बल और असमान, "रक्तका दबाव" बहुत अधिक ।

श्वास-यंत्र ।—रातमें श्वास-कष्ट, बार बार गहरा श्वास-प्रश्वास (सांस लेना और छोड़ना) ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्थिमण्डल ।—हड्डियोंका क्षय होना, गौण उपदंशकी-बहुत-सी बीमारियाँ ; हड्डीका बढ़ना ।

अंग प्रत्यंग ।—मानो माथेसे पैर तक रक्तका प्रवाह हो रहा है ऐसा मालूम होना । निचले अंगका शोथ, सन्धियोंमें और जाँघमें कमजोरी और पक्षाघातकी तरह मालूम होना ।

निद्रा ।—नींद न आना ; डरावने सपने देखना ; नींदके समय आवाज़ के साथ सांस लेना और छोड़ना ।

अरम म्यूरियेटिकम ।

(Aurum Muriaticum).

दूसरा नाम ।—क्लोरारड आव गोल्ड । आरिक क्लोराइड इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट और विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—अण्डलालके साथ पेशाब ; अन्धापन ; हृद्‌शूल (कलेजेका दर्द) ; गुदास्थानमें नासूर ; भगन्दर ; दमा ; बावी ; कर्कटका जखम ; हड्डीका जखम ; उपदंशका घाव ; मसे, शोथ ; खसड़ा ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; खून जाना ; केश झड़ जाना ; हृद्‌पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ और कड़ापन ; यकृतकी बीमारी ; आँखकी बीमारी ; आँखोंका प्रदाह ; नकसीर ; आँतोंके आवरणका प्रदाह ; यक्ष्मा-कास ; प्लीहा ; बन्ध्यत्व, कशेरुका या मेरुमज्जाकी बीमारी ; जरायुका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्बुद ; जरायुसे रक्तस्राव ; योनिमें जलन ; खुजली ; स्वरभंग । इत्यादि ।

उपयोगिता ।—इसके बहुत-से लक्षण आरमकी तरह होनेपर भी हृद्‌पिण्डकी क्रियामें इसकी एक विशेषता है। **हृद्‌कम्पन, हृद्‌पिण्डमें रक्तकी अधिकता ; हृद्‌-पिण्डका कड़ापन इसमें बहुत प्रबल मालूम होता है ।** ग्रन्थियोंमें विकार, सर्दी, कितने ही स्थानोंमें मसे, **विशेषकर जीभ और पुरुषाङ्गके चारों ओर,** पाचन-क्रियाका घटना ; भोजनके बाद पतले दस्त आना ; स्नायुमें गड़बड़ी ; अँगुलियोंमें कड़ापन ; जरायुसे रक्त-स्राव ; वयःसन्धिके समयकी बीमारी विशेषकर प्रमेह दोषसे पैदा हुई ; प्रबल शीतके साथ बोखार, क्षय या विलेपी ज्वर ; लसिका-ग्रन्थियोंकी बीमारी ; गण्डमाला धातु इत्यादि रोग-लक्षणोंमें उपयोगी है ।

वृद्धि और ह्रास ।—ठण्डे पानीमें नहानेसे वृद्धि, गर्मीसे घटना ।

सम्बन्ध-दोषघ्न ।—वेलाडो, कैनाबिस, मार्कु, नाइ-ट्रिक-एसिड, फास, साइलि, सलफर ।

शक्ति ।—३री, ६ठी विचूर्ण और ३०, २०० इत्यादि ।

संक्षिप्त लक्षण ।

समूचे माथेमें खासकर बाईं ओर जलन, लड़कपनसे ही अन्धापन, आँखोंमें नासूरका घाव, कानकी बीमारीमें गाना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुननेपर आराम मालूम होना ; सर्दी ; नजला ; दांतोंका ढीलापन ; हृदपिण्डमें अस्त्र बेधने जैसा दर्द ; निम्नाङ्गमें स्नायु-शूल ; बेचैनी ; स्वरभंग ; दाँतोंमें नासूरका घाव ; दांतका दर्द ; जीभका कड़ापन ; मसे, जखम, कर्कटका जखम पाकस्थलीमें जलन, अकड़न और कतरने जैसा दर्द ; प्लीहा और यकृतका कड़ापन ; पुट्ठेकी गांठोंका फूलना ; अतिसार, भोजनके बाद और रातमें वृद्धि ; बवासीर ; नासूरका जखम पुरुषोंकी इन्द्रिय-वासनाकी वृद्धि, बन्ध्यत्व ; उपदंशका जखम, जरायुसे बहुत ज्यादा स्राव ; श्वेत-प्रदर, प्रमेहका स्राव इत्यादि लक्षणोंमें यह विशेष उपयोगी है ।

अरम म्यूरियेटिकम् नेट्रोनेटम् ।

(Aurum Muriaticum Natronatum).

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आव गोल्ड एण्ड सोडियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—उदरी (जलोदरी) ; कर्कटका जखम ; बवासीर ; केश झड़ना या चँदला पड़ जाना ; सरका दर्द ; क्षय-ज्वर ; कँवल रोग ; यक्ष्मा-कास ; प्रमेह ; उपदंश ; जीभकी बहुत सी बीमारियाँ ; अर्बुद ; जरायुका कड़ापन ; जरायुमें कर्कटका जखम, मसे ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता ।—बाईं आँखके ऊपर और माथेकी हड्डीमें छेदने जैसा दर्द, बरसात और जाड़ेके समय वृद्धि ; अण्डलाल मिला पेशाब ; **उपदंशसे पैदा हुआ जरायुका कड़ापन और कर्कटका जखम** ; गण्डमाला ; नींद न आना ; गर्भ-स्राव हो जाना ; कामोन्माद । **इसके सेवनसे तम्बाकू और अफीमका सेवन छोड़ा जा सकता है (प्रथम शक्ति) । दुरारोग्य कवल रोगमें काला या सफेद मल** ; कर्कटका अर्बुद ; छोटा सन्धिवात ; कामेच्छाका ह्रास ; प्रसवके बादका पागलपन ; कामेच्छाकी तेजी, जरायुकी हड्डी जैसी कड़ी अवस्था हो जाना वगैरह स्त्री-रोगमें विशेष लाभदायक है । **यह जरायुका अर्बुद, बहुत अधिक रक्तका दबाव (हाई ब्लड प्रेशर), सिरोटिक लिवरकी (घनत्व प्राप्त यकृतकी) एक खास दवा है ।**

सम्बन्ध ।—पारा और उपदंश दोषवाले धातुमें उपयोगी है ।

सदृश या तुलनीय ।—आर्जेण्ट, आर्स, कोना, ग्रैफाइट, हिपर कैलोबाई, कैली आयोड, लाइको, मर्क, नाइट्रिक एसिड, फास्फोरस, सलफर, थूजा ।

शक्ति ।—६ठी, ३०वीं, या २०० । ३x विचूर्ण ही अधिक व्यवहारमें आता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मस्तकमें छेदने जैसा दर्द मालूम होना ; केश झड़ना ; जीभका कड़ापन और जलन ; जरायु और डिम्बाधारका प्रदाह ; गर्भ-स्रावका बराबर हो जाना ; प्रसवके बादका उन्माद ; आत्म-हत्याकी प्रवृत्ति ; बाँझपन ; अन्धापन ; निम्नाङ्गमें खुजली इत्यादि ।

अरम सलफ्यूरेटम ।

(Aurum Sulphuratum),

दूसरा नाम ।—आरिक सल्फाइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—अनजानमें शय्यामें पेशाब हो जाना ; गलगण्ड ; सरका काँपना ; ध्वजभंग ; कँवल रोग ; स्तनकी बहुत-सी बीमारियाँ ; रातमें डरना या डर जाना ; नींदमें बोंबियाना ; नाकका फूलना ; कपकपीके साथ पक्षाघात ; भगोष्ठमें खुजली ; पैर डगमगाना ।

उपयोगिता ।—जहां सलफर और अरमका लक्षण सम्मिलित रहता है, वैसे स्थानपर इससे विशेष उपकार होता है । लगातार सर हिलाना ; माथेके पिछले भागमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द ; नाककी ठोर लाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फूली ; भोजनके बाद मिचली ; ध्वजभंग ; लिङ्गेन्द्रियमें सुई वेधने जैसा दर्द ; योनि-प्रान्तमें खुजली ; स्तनमें सूजन ; स्तनकी घुण्डीमें जखम और सुई वेधने जैसी तकलीफ ; श्वेत-प्रदर ; डरावने सपने ; डाकुओंके सपने ; छूनेसे तकलीफ इत्यादि लक्षणोंमें उपयोगी है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन ।—जीवनसे वितृष्णा। अकेलेमें रहनेकी इच्छा।

मस्तक ।—सर हिलाना ; मस्तकमें खुजली ; केश झड़ना ; छूनेसे माथे और केशमें दर्द।

आंखें ।—रोशनी सहन न होना और जलन।

नाक ।—नाक लाल रंगकी।

मुंह ।—ओंठ फटे ; नमकीन स्वाद।

उदर ।—तेज़ भूख, नाभि-प्रदेशमें दर्द और आँतोंमें जलन।

नींद ।—नींदमें अनजानमें पेशाब हो जाना और लड़ाई देखनेके सपने।

जननेन्द्रिय ।—बहुत ज्यादा कामोत्तेजना ; आलिङ्गन करनेकी इच्छा ; ध्वजभंग ; पीली आभा लिये गाढ़ा श्वेत-प्रदर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास-यंत्र ।—रातमें आवाजके साथ खांसी—स्नानके बाद बढ़ना ; सफेद रंगका कफ बड़े कष्टसे निकलता है । ऊँची सीढ़ी चढ़नेमें कलेजा धड़कना ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—पैर डगमगाना ।

सम्बन्ध—समगुण ।—कैलि आयोड ; हिपर ; मार्क ; एसिड नाइट्रिक । **दोषघ्न** ।—बेलाडो ; चायना ; मार्क ।

शक्ति ।—६ठा विचूर्ण इत्यादि ।

ऐवेना-सैटाइवा । (Avena Sativa).

दूसरा नाम ।—कामन ओट ; साधारण भुट्टा जातिका वृक्ष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—स्नायविक सुस्ती ; मदात्यय ; हैजा ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा) ; अफीमका बुरा अभ्यास, कलेजा धड़कना ; बहुत इन्द्रिय परिचालनका बुरा नतीजा ; नींद न आना ; यक्ष्माकास ।

उपयोगिता ।—अफीम सेवनका बुरा अभ्यास, नींद न आना और स्नायविक दुर्बलतामें इसका मूल अरिष्ट कुछ गर्म पानीके साथ पाँच बूँद पानीमें सेवनसे विशेष लाभदायक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जननेन्द्रियकी अनियमित क्रिया ; सारे अंगोंकी दुर्बलता-के साथ स्नायुकी दुर्बलता ; कलेजा धड़कना ; नींद न आना ; **किसी विषयमें मन स्थिर न रहना ; विशेषकर नकली मैथुनसे पैदा हुए कारणसे। अफीम सेवनके बदले इसका व्यवहार करनेसे कोई बुरा नतीजा नहीं होता, बल्कि अफीम छोड़ी जा सकती है।** चार ग्रेन मार्फिया सेवनके अभ्यासके स्थानपर १०।१५ बूंद कर ३।४ बार सेवन करनेके लिये देना पड़ता है। ऐविनिन उसका सारांश है। ताण्डव रोग ; कपकपीके साथ पक्षाघात ; मृगी ; झिल्लीक प्रदाह (डिप्थीरिया) ; हृद्पिण्डका आमवात ; सर्दीसे पैदा हुई बीमारी ; शराब पीनेका मन्द फल; मनकी एकाग्रताका न रहना ; स्नायविक सर दर्द ; पेशाबमें फास्फेटका मौजूद रहना ; ऋतु रुकना ; बाधक और **ध्वजभंग रोगमें** इससे विशेष फल प्राप्त होता है।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐलफालफा।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्तिका हमेशा व्यव-हार होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐजाडिरेक्टा इण्डिका ।

(Azadiracta Indica).

दूसरा नाम ।—निम्ब, नीम, मार्गोसा । मार्गोसिन इसका सारांश है ।

उपयोगिता ।—कब्जियत ; अतिसार ; क्विनाइनका अपव्यवहार ; प्लीहा और यकृतका बढ़ना ; प्लीहामें रक्तकी अधिकता ; पुराना धीमा तीसरे पहर आने वाला बोखार (३।४ बजे आरम्भ होता है और ७॥ बजे कम पड़ जाता है) ; आमवातकी तरह दर्द ; वक्षोस्थिमें , पीठमें, कन्धे और अंग-प्रत्यंगमें दर्द ; अधीरी ; हाथ-पैरके तलवेमें जलन ; अंगुली और पैरकी एँड़ीमें दाह ; बातें भूल जाना ; सरमें भार ; आँखोंमें जलन ; दाहिनी आँखका गड़हा और आँखके कोयेमें दर्द ।

सम्बन्ध—तुलनीय ।—सीड्रन ; चायना ; आर्स ; नेट्रम आर्स ; गुयारिया ।

शक्ति ।—३ठी या ३०वीं ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—सुस्त मन ; विस्मृति ; कुछ अच्छा न लगना ; सोनेकी इच्छा बनी रहना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; टपक जैसा सर दर्द, माथेकी त्वचा दर्द-भरी।

आंखें। — जलन और सर्दीकी वजहसे नाकसे श्लेष्माका स्राव।

नाक।—कानमें भों भों आवाज़ या परसे कान खुजलानेपर जैसी आवाज़ होती है, वैसी ही आवाज़ आना।

मुंह और गलेके भीतर।—लारमें नमकीन स्वाद। गलेमें तीता स्वाद।

पाकस्थली।—तेज़ भूख, प्यास न लगना या तेज़ प्यास ; बहुत देरका अन्तर देकर बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीना ; मीठी चीज खानेकी इच्छा।

तलपेट।—तलपेटमें कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द ; नाभीके पास ऐंठन ; पेटमें जलन।

मल और मलद्वार।—कड़ा, थोड़ा और पतला मल, पर पाखाना हो जानेपर भी तृप्ति नहीं होती ; बदबूदार वायु निकलना।

पुं०-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा इन्द्रियकी उत्तेजना।

श्वास-यंत्र।—कष्ट देनेवाली खांसी ; खासकर स्नानके बाद। बहुत देरका अन्तर देकर लम्बी खांस लेना। बहुत तकलीफ़से सफेद कफ़ निकाल सकता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्षःस्थल ।—छातीमें अकड़न और गहरी श्वास लेना। बहुत देरका अन्तर देकर तेज और गर्म श्वास, छातीमें जलन मालूम होना।

अंग-प्रत्यंग ।—हाथ-पैर सुन्न जैसे मालूम होना।

त्वचा ।—सारे शरीरमें खुजली ; जलन और सुई बेधने जैसा दर्द।

नींद ।—सपनेमें विवाद और झगड़ा देखना।

ज्वर ।—कम्प या शीत सामान्य अथवा नहीं ही होता। २ बजे या ४॥ बजे तीसरे पहरसे रातके ८॥ बजेतक बोखार। सारा शरीर गर्म मालूम होना ; दाह ; मुँह, आँख और हाथ पैरके तलवेमें जलन। बहुत ज्यादा पसीना कपालमें आरम्भ होता है, इसके बाद शरीरमें फैल जाता है। निम्नाङ्गमें पसीना नहीं होता।

बैसिलिनम-ट्युबरक्युलिनम ।

(Bacillinum Tuberculinum).

दूसरा नाम ।—यक्ष्मा रोगसे पैदा हुआ जीवाणु, पीव, थूक इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यक्ष्मा रोगीके फेफड़ेमें रहनेवाले जखमके कीटाणु, पीव या थूकसे तैयार होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—यक्ष्मा-कास, या यक्ष्मा रोग होनेकी तैयारी; क्षय ज्वर; फेफड़ेकी सूजन या शोथ; श्वासनालीका प्रदाह; फेफड़ेका प्रदाह; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह; खून-भरी खांसी; गुटिका दोषसे पैदा हुई बहुतसी बीमारियाँ; ऐडिसन रोग या तलपेटकी ग्रन्थियाँ बढ़नेकी वजहसे बीमारी; बुद्धिहीनता; मस्तिष्कोदक (माथेमें जल-संचय); उन्माद; हड्डियोंकी बीमारी; त्वचापर दादकी तरह उद्भेद; खसड़ा; फोड़ा; गण्डमाला; ग्रन्थियोंका प्रदाह और कड़ापन; दाँतका दर्द और दाँतकी बहुतसी बीमारियाँ मुँहासे; अण्डलाल मिला पेशाब; दमा; हड्डीका क्षय; सर्दी; खुजली; आँखोंका सफेद अंश गदला रहना; बहुत तरहके दुःसाध्य जखम; लाली; दाँत धोनेके समय नाना प्रकारके उपसर्ग; विसर्प; खून मिला पेशाब; सरका दर्द; हृद्रोग और कपकपी; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा); श्वेत-प्रदर; श्वेती; चित्तकी विकलता या उन्माद; मसानेका प्रदाह; रातमें डर; पक्षाघात; मलेरिया या काला ज्वरसे पैदा हुए प्लीहा यकृतके बढ़नेके साथ दुःसाध्य सविराम ज्वर।

उपयोगिता।—जिनका रंग गोरा है, जिनकी देह क्षीण है; भवें जुड़ी हैं; **बराबर समतल या चिपटी अथवा दबी हुई या कबूतर सी छाती है**; शारीरिक दुर्बलता और **जो गुटिका दोषग्रस्त हैं,** विषादग्रस्त, हताशा-पूर्ण; उत्तेजित, भीतिपूर्ण (डरपोक); चिड़चिड़े; और जो मानसिक बुद्धिमें प्रखर हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि किसी परिवारमें गुटिका दोषका इतिहास पाया जाता है, उस समय उस परिवारकी कितनी हो प्रकारकी बीमारीमें इसका प्रयोग उचित है। जब चुनी हुई दवासे पूरा पूरा लाभ न हो, रोगके लक्षण हमेशा बदलते रहें अर्थात् इस समय जो लक्षण हैं, दूसरे क्षण या कुछ समय बाद दूसरी तरहका लक्षण पैदा हो जाय, उस समय इसका व्यवहार करना उचित है। फेफड़ा, मस्तिष्क, मूत्रयंत्र, यकृत, पाकस्थली और स्नायुमण्डलपर एकके बाद दूसरेपर रोगका आक्रमण। रोगका आक्रमण एकाएक हो, एकाएक गायब हो जाये। सामान्य कारणसे भी सर्दी लग जाती है, सर्दी एकदम ही सहन नहीं कर सकता—मानो हर समय सर्दी लग जाती है और बीमार रहता है। कब कहांसे सर्दी लग जाती है, यह समझमें नहीं आता। उत्तम भोजन करता है, परन्तु बहुत ज्यादा रूपमें जल्दी जल्दी शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। स्कूलके बालक बालिकाओंका सरका दर्द ; ज्यादा पढ़ने या सामान्य मानसिक कारणसे अथवा परिश्रमसे वृद्धि ; खासकर जब चश्माके व्यवहारसे कोई लाभ न दिखाई दे या गुटिका दोषका इतिहास पाया जाता है। नया मस्तिष्कावरक झिल्लीका प्रदाह, इसकी साथ ही रस-संचय-प्रवणता, रातके समय कितनी ही तरहकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमपूर्ण चीजें देखना ; बहुत डरकर नींदसे जागता है और जोरसे रोता है या चिल्ला उठता है। विशेषकर जब एपिस, हेलिबोरस, सलफरके लक्षण मिलनेपर भी उनसे कोई लाई लाभ नहीं होता। सारे शरीरमें छोटे छोटे भयंकर दर्द-भरे फोड़ोंकी उत्पत्ति। माथेमें खसड़ा ; सारे शरीरमें खसड़ा ; विशेषत: गुटिका दोषसे पैदा हुआ ; बहुत खुजली ; रातमें खुले रह जाने और ठण्डे पानीसे नहानेसे बढ़ना। कानके पीछे खुजली और रस-स्राव ; केशके बीचमें और त्वचाके गासे गासेमें जखम ; यक्ष्मावीज फेफड़ेके शिखरदेशपर आक्रमण करता है। विशेषत: बाईं ओर। बहुत जल्दी जल्दी बहुत दिनोंतक रहनेवाला बहुत ज्यादा रज:स्राव। **सवेरेके समयका उदरामय** ; एकाएक मलवेग ; मल काला, बादामी ; पानी जैसा ; बहुत बदबूदार और जोरसे निकलता है और इसके साथ ही **बहुत कमजोरी और बहुत ज्यादा रातको पसीना**। उपयुक्त भोजन करनेपर भी दुर्बलता प्राप्त होना इत्यादि रोग-लक्षणमें यह विशेष उपयोगी है।

वृद्धि।—रातमें, सवेरे और ठण्डी हवामें वृद्धि।

सम्बन्ध।—कैल्के-फास, लैकेसिस, कैलि-कार्ब।

अनुपूरक।—सोरिनम और सलफर।

दोषघ्न।—नेट्रम-म्यूर (मानसिक लक्षण)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदृश ।—आयोड ; कैल्क ; कैल्क-फास ; नेट्रम ; फास्फोरस ; पल्स ; सिपिया ; साइलि ; थूजा ।

संक्षिप्त लक्षण ।

निस्तब्ध भाव ; जड़ बुद्धि ; निराशा ; लगभग उन्मादका भाव, किसीके साथ बात करना अच्छा नहीं लगता ; रूखा, चिड़चिड़ा मिजाज । सरमें चक्कर आना, माथेके भीतर गभीर प्रदेशमें तेज़ दर्द, हिलानेपर दर्दका बढ़ जाना , सरकी त्वचामें दर्द ; दाद या खसड़ा, आँखोंमें जलन, मुँहका नमकीन स्वाद ; लार बहना ; तलपेट और पुट्ठेकी ग्रन्थिमें दर्द, **आंतोंका क्षय रोग ;** अतिसार, बदबूदार आध्मान वायु, कब्जियत, श्वास-कष्ट ; दमा ; **यक्ष्मा ;** गलेमें घड़घड़ाहट ; जांघकी सन्धिमें गुटिका दोष मिला प्रदाह ; सारे शरीरमें कमजोरी ; दिनमें औंघाई आना । **क्षय ज्वर ;** दुःसाध्य सांघातिक सविराम ज्वर, या काला ज्वर ; यकृत और प्लीहा बहुत बढ़ जानेके साथ बोखार ; यह बोखार साधारणतः संध्याके ७ बजे और कभी कभी अपराह्नमें ५ बजे जाड़ा लगकर आरम्भ होता है ; इसके साथ हो गाने गाना । शीतके समय खांसी, बहुत प्यास ; गर्मीके समय वमन । शीत, कम्प, उष्णता और पसीना ; सभी अवस्थाओंमें रोगी शरीरको ढके रहता है ; जलन पैदा करनेवाला उत्ताप, इतनेपर भी जाड़ा मालूम होना, बार बार आराम होना और रोगका फिरसे आक्रमण, अंग-प्रत्यंगमें खींचने जैसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्द—इसी दर्दसे रोगी समझता है, कि उसे बोखार आ गया है इत्यादि लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

बैसिलिनम-टेष्टियम।
(Bacillinum Testium).

दूसरा नाम।—रोग बीजाणु; गुटिका दोष युक्त अण्डकोष।

उपयोगिता।—पुट्ठेकी ग्रन्थिकी बहुतसी बीमारियाँ; तलपेटके भीतरकी मध्यम आँतकी ग्रन्थिका प्रदाह; यक्ष्मा रोग; अण्डकोषमें गुटिका दोष और शरीरके निचले आधे अंशके रोगमें ही यह व्यवहारमें आता है और विशेष लाभ दिखाता है। फेफड़ेके यक्ष्मामें इसका व्यवहार नहीं होता। पर ऐसा नहीं समझना चाहिये, कि फेफड़ेके यक्षतपर इसकी क्रिया नहीं होती है।

शक्ति।—३० या उच्चतम शक्ति।

बैडियेगा (Badiaga).

दूसरा नाम।—स्पंजिया फ्लूवियाटिलिस; साफ पानीका स्पंज।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें-प्रयोग ।—स्तनमें कर्कटका जखम ; छिल जानेका जखम या कुचल जाना ; बाघी ; सर्दी ; नीहार कुण्ड या जाड़ेके दिनोंका फोड़ा ; सर्दी ; आँखोंमें दर्द ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; दमासे पैदा हुआ बोखार ; बवासीर ; हृद्‌पिण्डका कड़ापन और बहुत सी बीमारियाँ ; आँखोंका प्रदाह ; कलेजा धड़कना ; आमवात ; गण्डमाला ; उपदंश ; पैरकी हड्डीमें दर्द ; क्रूप खांसी ।

उपयोगिता ।--ग्रन्थियोंका प्रदाह, कड़ापन और बहुत सी बीमारियां ; बाघी और उसका बहुत अधिक कड़ापन, उपदंश खासकर बचपनका उपदंश । सरका दर्द इसके साथ ही आँखकी पुतलीके पीछेवाले भागमें ऐंठनकी तरह दर्दका फैलना, माथेके शीर्ष देशमें दर्द; **रातमें घट जाता है** और भोजनके समय और मध्यान्हके कुछ पहले बढ़ जाता है । आँखोंका प्रदाह इसके साथ ही सर-दर्दका बढ़ जाना ; दाहिनी आँखमें दर्द और वह दाहिनी कनपटीतक फैल जाता है। बहुत सर्दी और लगातार सर्दी निकलना । बाएँ गालमें दर्द ; पाकाशयमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द ; यकृतमें कन्धेकी हड्डीके नीचे और मूत्रनलीमें दर्द ; स्तनका कर्कटीया जखम ; खाँसनेके समय छींक; इसके साथ ही नाकसे बहुत अधिक सर्दीका स्राव ; खांसनेके समय मुँहसे लसदार श्लेष्मा गोलाकार निकलता है ; गर्म कमरेमें घटना ; कलेजा धड़कना और दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ना ; आनन्दजनक हृदयके उच्छ्वाससे कलेजेका धड़कना ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बढ़ जाना। पुराना आमवात ; वात ; ठण्डसे विशेषकर ठण्डी हवाके सेवनसे वृद्धि और गर्म हवामें उपशम। चोट लगनेकी तरह अकड़नका दर्द ; रातमें और नींदके बाद सर-दर्दका घट जाना इत्यादि लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध—अनुपूरक।—आयो, मार्क्यू-सोल ; सलफर।

ह्रास-वृद्धि।—शीतसे वृद्धि और गर्मीसे उपशम।

सदृश।—स्पंजिया ; सिनेगा (छींकके साथ खांसी) ; ग्रिण्डिलिया (नींदके समय श्वास-बन्द) ; कैलि-कार्ब (खांसनेके समय गोलाकार श्लेष्मा बाहर निकलना) ; कैल्के-सल्फ (कड़ापन) ; कार्बो-ऐनि (ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन) ; हिपर ; मर्क्यू ; लैके ; एसिड-नाइट्रिक ; आयोड, कैलि-आयोड ; मार्क-आयोड और लैकेसिसके बाद अच्छा फायदा करता है।

शक्ति।— ३री, ६ठी, ३०वीं, २०० इत्यादि।

संक्षिप्त लक्षण।

मस्तक।—सरमें दर्द, ललाटदेशमें अधिक मालूम होना और आँखोंके संचालनसे वृद्धि ; नींदके बाद उपशम ; माथा भारी और बड़ा मालूम होना।

आंखें।—आँखके गोलेमें दर्द, रह रहकर जखमकी तरह दर्द ; दिनके तीन बजनेके समय दर्द पैदा होना ; आँखोंका निचला भाग नीले रंगका।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान ।—कभी कभी कानमें तोप गरजनेकी तरह मालम होता है ।

मुखमण्डल ।—मुँहका रंग सीसा जैसा हो जाना ।

नाक ।—बार बार छींकके साथ श्लेष्मा और स्राव निकलना ; छींकका खांसीमें परिणत हो जाना ।

श्वास-यंत्र ।—खांसीके समय छींक ; तेज़ खांसी ; जमा हुआ गोलाकार श्लेष्मा निकलना ; लसिका ग्रन्थियोंका बढ़ना ।

गर्दन और पीठ ।—गर्दनमें दर्द और गर्दनका सुन्न हो जाना ; पीठमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और सुन्न होना । लसिका ग्रन्थियोंका दर्द, प्रदाह और पीव पैदा हो जाना ; बगलकी ग्रन्थियोंका प्रदाह और कड़ापन ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुसे रक्तस्राव ; समस्त लक्षणोंका रातमें बढ़ना ; जरायु दोषसे पैदा हुआ मस्तकमें दर्द ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।— **बाघी**—उपदंशसे पैदा हुआ जखम इत्यादि ।

अंग-प्रत्यंग ।—बीमारीवाली ग्रन्थिका लोहे जैसा कड़ापन ; ग्रन्थियोंमें और हड्डीमें भयानक सुई बेधने जैसा दर्द । ऐसा मालूम हो मानो एक गर्म सुई उसमें घुसाई जा रही है । जिस स्थानपर कास्टिक द्वारा जलाया जाता है, या पारे आदिके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलहमसे उपदंशका जखम एकाएक आराम किया जाता है, वहाँ इसके प्रयोगकी विशेष जरूरत रहती है। (कार्बो-ऐनिमिलिस)।

बैलसैमम्-पेरुवियेनम् ।

(Balsamum Peruvianum).

दूसरा नाम ।—बैलसम आफ पेरु ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी, खांसी, नाकसे रक्त-स्राव ; विलेपी-ज्वर ; यक्ष्माकास ; खुजली, खसड़ा, जखम इत्यादि ।

उपयोगिता ।—यह यक्ष्मा और पुराने वायुनली प्रदाहमें विशेष लाभदायक है। गाढ़ा पीवकी तरह श्लेष्मा मिला और मलाईकी तरह सफेद कफ, रातके समय पसीना और विलेपी ज्वर इसका निर्देशक लक्षण है। इसकी पुल्टीस कितनी ही तरहके जखममें व्यवहार होती है। बाहरी प्रयोगसे खसड़ेके कीटाणु विनष्ट होते हैं। रोगवाली जगहमें इसे लगाकर, रात भर लगा रखने और सवेरे थोड़ा गर्म पानीसे धो डालनेसे कीटाणु ध्वंस हो जाते हैं। इसके व्यवहारसे सैकड़ों रोगी आरोग्य हो गये हैं। इसके साथ ही लक्षणके अनुसार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्स, कार्बोवेज, क्रोटन, मर्क्य-सोल, मेजिरियम, सलफर वगैरहका व्यवहार निषिद्ध नहीं है।

संक्षिप्त लक्षण।

किसी कारणके बिना ही नाकसे रक्तस्राव, नकसीर, वायुनली प्रदाह, गाढ़ा पीले रङ्गका पीव भरा श्लेष्मा स्राव, मूत्रनलीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द इत्यादि।

सम्बन्ध।—एसिड-फास, ब्रायो, कैन्थरिस, मर्क्यू।

शक्ति।—बाहरी प्रयोगमें मूल अरिष्ट और १ली, ३री शक्ति इत्यादि।

बैप्टीशिया-टिङ्कटोरिया।

(Baptisia-Tinctoria).

दूसरा नाम।—बन नील, वाइल्ड इण्डिगो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—सान्निपातिक ज्वर, संन्यास, उपाङ्गप्रदाह (एपेण्डिसाइटिस); गर्भस्रावकी आशंका; पित्तकी अधिकता; कर्कट रोग; क्षय रोग; डिफ्थीरिया (झिल्लीक प्रदाह); रक्तामाशय (खूनी आँव); आंखोंकी बीमारी; पित्तस्थलीका प्रदाह; पाकाशयिक ज्वर; पित्तके कारण सरका दर्द; क्षय ज्वर; मूर्च्छा वायु; बहुव्यापक सर्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इन्फ्लुएंजा); कानकी जड़की बीमारियाँ; अन्ननलीका रुकना; प्लेग या महामारी बार बार आनेवाला बोखार; दूषित भाफके कारण बीमारी; शीत या कपकपी; मुँहमें जखम; औरतोंका क्षय आरम्भ; सरकी दाद; जीभका जखम; मोह-ज्वर; चेचक, क्रमि इत्यादि।

उपयोगिता।--श्लेष्मा या लसिका प्रधान प्रकृतिमें यह विशेष उपकारी है; बहुत सुस्ती, शारीरिक समस्त रस रक्त आदि पतले पदार्थोंका सड़ना आरम्भ हो जाना, श्लैश्मिक-झिल्लीका जखम, शारीरिक समस्त स्राव और भाफ श्वास आदि बहुत बदबू-मिली, खासकर सान्निपातिक ज्वर या दूसरी दूसरी नयी बीमारीमें जैसे-श्वास प्रश्वास, मल, मूत्र, पसीना, जखम वगैरह। सम्पूर्ण उदासीनता, कुछ भी करना नहीं चाहता; काममें मन लगानेमें असमर्थता; मानसिक परिश्रमकी इच्छा न होना या सोचनेकी शक्तिका न रहना। मूर्ख या हत-बुद्धि भावके साथ मुँहका लाल आभा लिये काला रंग, किसी भी तरह की अवस्थामें रोगी सोता है तो उसके शरीरके भार प्राप्त अंश अर्थात् करवटवाली जगहमें जखम, चोट लगने और कुचलनेकी तरह दर्द मालूम होता है। समूचे शरीरमें बहुत अधिक जखमकी तरह या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घिसनेकी तरह दर्द। **तन्द्रा, अज्ञानता, बात करते करते या प्रश्नका उत्तर पूरी तरह न देकर बीचमें हो तन्द्रा या अज्ञानता आ जाती है।** सो नहीं सकता, **अपना माथा और शरीर मानो टुकड़े टुकड़े भावसे शय्यापर इधर उधर फैला पड़ा है** और उसे एकत्र न कर सकेगा, ऐसी भूल धारणा। उसे एकत्र करनेके लिये रोगी छटपटाता है, **पर एकत्र कर ढक नहीं सकता।** अपना शरीर दूना समझता है, मस्तक बड़ा समझता है। जीभ, पहले लाल, जीभपर काँटेके साथ सफेदी, सूखी और बीचमें पीली आभा लिये बदामी रंग, उसके बाद सुर्खी, फटी और बहुतसे जखम भरी जीभ। **केवल पतली चीजें निगल सकता है,** सामान्य कड़े पदार्थ भी निगल नहीं सकता, उगल देता है; बिना दर्द वाला गलेका जखम, तालु-मूल, कानकी जड़, और कोमल तालु वगैरहका फूलना और कालिमा लिये लाल रंग हो जाना और **उससे बहुत सड़ी बदबूवाला स्राव निकलना। सान्निपातिक ज्वरमें शय्याक्षत, मुख-गह्वरका जखम;** दाँतमें बहुत अधिक मैल जमना, और दाग पड़ना, खून मिला, बदबूदार, अतिसार, रक्तामाशय, निगलनेमें असमर्थता, **बहुत अधिक तन्द्रालुता और बुदबुदाकर प्रलाप बकना** (अर्निका)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर दिनके ११ बजे पैदा हो जाता है, **गर्म चीजें खानेकी इच्छा,** क्रमि दोष ; मानसिक आवेगसे गर्भस्रावकी आशंका ; बायें पैरका सुन्न हो जाना ; मूर्च्छा वायु ; मृत्युकी आकांचा ; हाथ मलना ; बेचैनी ; सान्निपातिक ज्वर और मस्तिष्क विकार ज्वरमें जहां आर्सेनिकका न्याय या अन्याय भावसे बारम्बार व्यवहार हुआ है, वैसे स्थलमें व्यवहारमें आता है। भ्रमणमें, बाहरी हवामें, ठण्डी हवामें, गर्मीके दिनोंमें और जाग जानेपर वृद्धि ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आर्निका, आर्स, एसिड-नाइ-ट्रिक, ब्रायो, इचेनि, जेल्स, लैके ; म्यूरिये-एसिड ; नक्स-वम, ओपियम, रस्टाक्स इत्यादि । रक्तस्रावके लक्षणमें इसके बाद क्रोटे ; नाइट्रि-एसिड और टेरिबिन्थिना अच्छा काम करता है।

शक्ति ।—मूल अर्कसे २०० क्रमतक कितनी ही शक्ति-का व्यवहार होता है ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—बहुत अधिक तन्द्रालुता, जवाब देते न देते सो जाना ; **देह टुकड़े टुकड़े मालूम होना,** विच्छिन्न अंश जोड़ नहीं सकता, इधर उधर करवट बदलता है, अस्थिर चित्त पर निर्जीव ; हिलना डोलना नहीं चाहता ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; पलकोंका पक्षाघात; सामने मस्तकमें दर्द; माथेके सिरेपर ऐसा मालूम हो मानो माथा उड़ जायगा।

आंखें।—रोशनी सहन नहीं कर सकता, आँखके गोलेका अकड़ना; आँखोंमें दाह, परन्तु एक बूंद पानी भी नहीं गिरता।

कान।—श्रवण-शक्तिकी क्षीणता; बहरापन।

नाक।—काला रक्तस्राव; बहुत अधिक बदबू या पर जलने जैसी गन्ध आती है परन्तु ठीक ठीक नहीं; नाककी जड़में दर्द।

मुखमण्डल।—करुण दृष्टि; लाल या काली आभा लिये लाल रंग; जबड़े अटक जानेका भाव।

मुंहके भीतर।—मुंहमें जखम; जीभमें जखम, और सुन्न भाव; जखममें सड़ी गन्ध; दाँतमें बहुत अधिक मैल जमना और चीनी जैसे दाग।

पाकस्थली।—बहुत प्यास; भूख न लगना; पाकाशयमें भार मालूम होना। पेटमें खाली खाली मालूम होना, और समस्त लक्षणोंका रातमें बढ़ना।

तलपेट।—यकृतमें दर्द, पित्तस्थलीके ऊपर बहुत भार मालूम होना, घूमनेपर बढ़ना।

मल और मलद्वार।—मल पतला; खून मिला; कटु; काले रंगका; बहुत बदबूदार; बार बार पाखाना होना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसके साथ ही दुर्बलता ; रक्तामाशय ; बहुत अधिक अति-सारके साथ सान्निपातिक अवस्था ; बवासीर ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोषका प्रदाह और उसमें अकड़नकी तरह दर्द ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार रक्तस्राव ; प्रसवके बादका स्राव कटु और जलन करनेवाला, प्रसवके बादका ज्वर ।

श्वासयंत्र ।—स्वर भंग ; श्वास-क्लेशसे नींद खुल जाती है ।

हृत्पिण्ड और नाड़ी ।—ऐसा मालूम होता है कि हृत्पिण्ड वक्षगह्वरमें नहीं अटता ; नाड़ी पहले तेज, इसके बाद मृदु और शिथिल ।

ग्रीवा ।—गर्दनकी पेशियाँ कड़ी, अकड़ी और थकावट और घूमनेसे अकड़नका बढ़ना ।

निद्रा ।—तन्द्रा भरी नींद और नींदमें प्रलाप ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—समूचे शरीरमें बहुत दर्द, कुचलनेकी तरह ; जखमकी तरह तकलीफ ।

त्वचा ।—शरीरमें दिन रात जलन, सर्दी सहन न होना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैरोस्मा। (Barosma).

दूसरा नाम।—बूचू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—मूत्राधारकी बहुत-सी बीमारियाँ; पथरी; मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिकी बीमारी; सर्दी; श्वेतप्रदर प्रभृति।

उपयोगिता।—पाकाशयकी सर्दी; आंतोंकी पुरानी सर्दी; अतिसार; **मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियकी बहुत सी बीमारियां**; पीव भरा श्लेष्मा स्राव; मूत्रग्रन्थि और मूत्राधारका पुराना प्रदाह और उसके साथ ही **थोड़ा श्लेष्मा-पीव मिला स्राव; मूत्रनलीका संकोचन**; प्रमेह; मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना और पुराना प्रदाह; श्वेत प्रदर; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवासे पैदा हुई बीमारी या उपसर्ग अथवा मूत्रनली, मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थि और रेतः कोषसे बहुत ज्यादा स्राव इत्यादि इसका निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध।—सदृश—सेबाल सेरूलेटा; कोपिवा; थूजा; कैप्सिकम इत्यादि।

शक्ति।—मूल अरिष्ट अथवा निम्न-क्रम साधारणतः व्यवहारमें लाये जाते हैं।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैराइटा एसेटिका।

(Baryta Acetica)

दूसरा नाम।—एसिटेट आव बेरियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट और विचूर्ण।

उपयोगिता।—पक्षाघात निम्नाङ्गमें पैदा होकर क्रमशः उर्द्धाङ्गमें फैल जाता है। ज्यादा उम्रमें जननाङ्गमें खुजली, विस्मृति, आत्मशक्तिसे विश्वासका घट जाना; **ऐसा मालूम हो मानो चेहरेपर मकड़ेका जाल अटका है, पोंछनेपर भी वह नहीं हटता**; पक्षाघात; समूचे बाएँ पैरमें खींचनकी तरह दर्द; कटिवात और पेशी तथा सन्धियोंमें आमवातिक वेदना।

शक्ति।—२री, या ३री विचूर्णका बार बार प्रयोग होता है।

बैराइटा-कार्बोनिका।

(Baryta Carbonica).

दूसरा नाम।—कार्बोनेट-आव—बेरियम; बेरिक-कार्बोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद (ऐन्यूरिजम); संन्यास, खर्वता, केश झड़ना; स्तनकी बीमारियाँ; मस्तिष्ककी बहुत सी बीमारियाँ; लाल फोड़े; कोषमय-अर्बुद; ग्रन्थिका फूलना और उसकी बीमारियाँ; बवासीर; हृद्‌पिण्डकी बहुतसी बीमारियाँ स्मरण शक्तिमें गड़बड़ी; अन्ननलीकी अकड़न; पक्षाघात; कर्णमूलका प्रदाह; मूत्राधार मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारियाँ; गलेका जखम; तालुमूलका प्रदाह, अर्बुद, मसे वगैरह।

उपयोगिता ।—बालक-बालिका और वृद्ध-गण, गण्डमाला, कच्छु और गुटिका-विषसे दूषित प्रकृति, मोटी आकृति, बालक-बालिकाएँ जल्दी नहीं बढ़तीं—मानो दिनोंदिन मोटी और बद-शकल हुई जाती हैं। स्मरणशक्ति हीन; सब विषयोंको भूल जाता है; **अमनोयोगी—कोई भी विषय जल्दी सीख नहीं सकता, मूर्खोंके जैसा भाव पैदा होना, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता बहुत अधिक, जो बहुत दुबले पतले हैं उनके लिये बहुत उपयोगी है।** वृद्ध, बहुत दुबला-पतला, शारीरिक और मानसिक बहुत दुर्बलता, मेद-युक्त थुलथुला और जो हमेशा ग्रन्थिवात रोगसे कष्ट पाते हैं, अण्डकोष और मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारीसे पैदा हुए कारणसे कष्ट पाते हैं, उनके लिये यह बहुत उपयोगी है। **खर्वाकृति बड़ी उम्रकी**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारीको या मूर्च्छा-वायु-ग्रस्त औरतोंको थोड़ा ऋतु स्राव इसके साथ ही शरीरमें गर्मीकी झलकका भाव और हमेशा शीत शीत अनुभव होना। संन्यास रोग हो जानेकी शंकावाले वृद्ध मनुष्योंके और पुराने शराबियोंके कितनी ही तरहके उपसर्ग, बुढ़ापेके समयका माथेका भार, विशेषकर बालक-सुलभ हाव-भाव सम्पन्न मनुष्योंके लिये यह बहुत उपयोगी है। **तालुके बगलमें या तालुमूल ग्रन्थि-प्रदाहवाली प्रकृति ; सर्दी एकदम ही सहन नहीं होती ; सहजमें ही सर्दी लग जाती है,** यहाँतक कि **बहुत सामान्य सर्दीसे भी तालुमूल-प्रदाह पैदा हो जाता है और पीव पैदा होनेकी सम्भावना हो जाती है।** सिर्फ पतली चीज़ निगल सकता है, और कोई चीज निगल नहीं सकता ; हरबार पेशाब करते समय बवासीर का मसा बाहर निकल आता है। ग्रन्थिका:प्रदाह ; कड़ापन या पीव पैदा हो जाना ; **विशेषकर पुट्ठे और गलेकी।** पैरमें बदबूदार पसीना ; उसीसे अँगुली, तलवा और एँड़ोमें जखम हो जाता है। **पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे गलेमें बहुत तरहकी बीमारियां। जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है, हमेशा गांठें फूला करती हैं,** पेट फूलना ; अम्लशूल ; मलका कड़ापन ; लार बहना ; ध्वज-भंग ; हृद्‌पिण्डका कांपना और सामान्य कारणसे ही उसका बढ़ जाना ; अर्बुद ; मसा पैदा होना ; सर्दी सहन न होना ; ग्रीवाका मांसार्बुद (sarcoma)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि।—रोगके विषयकी चिन्ता ; रोगवाली करवटमें सोना ; नहाना या रोगवाली जगह धोना—इन कारणोंसे तथा सर्दी और भोजनके बाद वृद्धि।

ह्रास।—एकान्तमें और शीतल भोजनसे घटना।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—याद न रहना ; क्या करे यह मत स्थिर नहीं कर सकता, सब विषयोंको भूल जाता है ; आत्म-निर्भरताका अभाव ; बच्चे और बालक बालिकाएँ अपरिचित मनुष्यको देखकर बहुत डर जाते हैं, घरके एक कोनेमें बैठ जाते हैं। खेलते नहीं और हमेशा रोया करते हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ ही साथ मिचली ; सर उठा हुआ मालूम होना ; मस्तिष्कमें जड़ भाव ; मस्तकके सामनेवाले भागमें ऐंठन ; मस्तकमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई खोदता है ; मस्तककी त्वचामें स्पर्शाधिक्य और दर्द ; चँदला पड़ जाना।

आँखें।—गण्डमाला दोषकी वजहसे आँखोंमें प्रदाह, अकड़न और जलन। रोशनीसे भय, आँखें सट जाना ; अन्धकारमें आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना ; जाला पड़ना ; आँखोंकी पुतलीका एक बार फैलना और एक बार सिकुड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान।—बहरापन, रातमें टपक जैसा दर्द; खुजली और छींकने या घूंट लेनेके समय कानमें कट् कट् आवाज़।

नाक।—बार बार सर्दी और स्राव। बहुत ज्यादा रक्तस्राव; खासकर ऋतुके पहले।

चेहरा।—लाल; हमेशा ऐसा मालूम होना कि चेहरेपर मकड़ेका जाल लगा है, वह पोंछनेपर भी नहीं जाता। निचले जबड़ेकी गांठ और कानकी जड़की गांठ फूलना।

मुंहके भीतर।—मसूढ़ेसे खून जाना; दांतोंका दर्द; मुँहमें शोथ या लार बहना; मुँहमें बदबू; गलनाली और अन्ननालीमें अकड़न।

पाकस्थली।—भूख न लगना; मिचली; वमन, पेटके भीतर फट जाने जैसा मालूम होना।

तलपेट।—शूलवेदना और आध्मान शूल; पर्यायक्रमसे अतिसार या कब्जियत; मलद्वारमें खुजली; मानो छोटी क्रिमि हो गयी है।

श्वासयंत्र।—सर्दी, खांसी; श्वास-कष्ट, स्वरभंग।

हृत्पिण्ड।—प्रबल स्पन्दन।

मूत्र-यन्त्र।—बार बार बहुत ज्यादा पेशाब होना; मूत्रनलीमें जलन; कामेच्छाका घट जाना; असमयमें ही ध्वजभंग; प्रमेह; रमणके समय निद्रा और रेतःपात न होना; अण्डकोष और मूत्राशय सुखशायी ग्रन्थिका कड़ापन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कामिच्छाका घटना ; प्रदर ; रजस्रावके पहले कमर और पाकस्थलीमें दर्द ; स्वल्प रजः ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—दर्द , उर्द्धाङ्गमें दर्द ; गर्दनका कड़ापन, सूजन ; पैर और जाँघकी सन्धियोंमें दर्द, इतना दर्द मानो हड्डी टूट गयी है ।

त्वचा ।—सारे शरीरमें जलन, खुजली ; कांटा बिधनेकी तरह दर्द ।

निद्रा ।—तन्द्रालुता या सपने भरी नींद ।

ज्वर ।—एक दिनका नागा देकर शामको बोखार, इसके साथ ही बेचैनी, एकाङ्गीन पसीना ; रातमें ज्वर बढ़ना इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—ऐण्टिम-टार्ट, बेलाडोना ; मार्क्यू ; जिङ्कम । **अनुपूरक**—सोरिनम, सलफर, ट्यूबरक्यूलिनम । इस दवाके प्रयोगके बाद सोरिनमका प्रयोग करनेपर बार बार होनेवाला तालुमूल ग्रन्थि-प्रदाह अच्छा हो जाता है ।

शक्ति ।—३०, २०० इत्यादि ।

बैराइटा आयोडेटा ।

(Baryta Iodata).

दूसरा नाम ।—आयोडाइड-आफ बेरियम ; बेरियाई आयोडाइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—स्तनका कर्कट रोग; ग्रन्थियोंका बढ़ना; कितने ही तरहके अर्बुद।

उपयोगिता।—ग्रन्थियोंकी वृद्धिपर इसकी क्रिया असीम है। यह लसिका मण्डलकी बीमारी; रक्तमें श्वेत कणोंकी अधिकता; सामान्य गलेका जखम; गांठोंका (विशेषकर तालुमूल और स्तनकी) कड़ापन, गण्डमालासे पैदा हुआ आँखोंका प्रदाह; अर्बुद; अण्डकोषका फूलना और कड़ापन; उम्रकी वृद्धिके साथ दैहिक और मानसिक उन्नतिसे रहित हो जाना; गर्दनकी ग्रन्थिके अर्बुद इत्यादिमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—**सदृश**—लाइकोटोनम, एकोन (गर्दनके बगलकी और स्तनकी ग्रन्थिका फूलना और प्रदाह); लेपि (गर्दनकी गांठ); कोनायम (स्तन); मार्क्यु-आयोड (पुट्ठेकी); कार्बो-ऐनिमे (बाघी पत्थरकी तरह कड़ी); कैल्केरिया, आरम (छोटी हनुवटीके नीचेकी ग्रन्थिका फूलना); कैल्कोकार्ब (वायुनली ग्रन्थिका प्रदाह और सूजन); थाइराडिन (गलेकी ग्रन्थिका बढ़ना)।

शक्ति।—३री, ६ठी, ३०वीं इत्यादि।

बैराइटा-म्यूरियेटिका।

(Baryta Muriatica)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव बेरियम; बेरियम-क्लोराइड।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद ; गुह्य-द्वारका फोड़ा ; अकड़न ; बहरापन ; अजीर्ण ; नासूर ; ग्रन्थियोंका फूलना ; पुराना और नया प्रमेह ; बुद्धि-हीनता ; श्वेत-प्रदर ; उन्माद ; कर्णस्मूल ; कामोन्माद ; कानसे पीव जाना ; क्लोम-प्रदाह ; पक्षाघात ; गण्डमाला दोषसे पैदा हुई बीमारी ; बाँझपन ; अण्डकोषकी बहुत-सी बीमारियाँ ; प्रदाह ; सूजन और शोथ ; सरका दाद ; कर्णपटहका प्रदाह ; तालुमूल प्रदाह इत्यादि ।

उपयोगिता ।—इसके सभी लक्षण बैराइटाकी तरह हैं। परन्तु **इसमें अकड़नका लक्षण अधिक है। अकड़नके साथ या कामेच्छाकी वृद्धिके साथ उन्माद रोग ।** जड़ बुद्धि ; कानसे बदबूदार पीव बहना ; **दाहिनी ओरकी कर्ण-मूल-ग्रन्थिका प्रदाह ;** क्लोम-प्रदाह । अन्न-नालीके मुंहके संकोचनकी वजहसे भोजन आदि निगलनेके समय कष्ट । गलनालीमें कांटो ठुकी हुई जैसी मालूम होना ; धमनीका अर्बुद ; उत्कण्ठाके साथ पाकाशयका शूल ; मिचली ; कामेच्छा प्रबल होनेसे ही उन्मादका भाव प्रभृति ।

संक्षिप्त लक्षण ।

सरमें चक्कर आना ; गर्दनमें उद्भेद ; रोशनीसे भय ; आँखसे पीवका स्राव । **कान और नाकसे रस और पीवका**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्राव, बहरापन ; छींक ; सर्दीका स्राव ; अलिजिह्वाका बढ़ना; भूख न लगना ; अजीर्ण ; वमन ; पुट्ठेका प्रदाह ; बार बार पेशाबका होना ; स्वप्न-दोष ; आप ही आप रेतःपात ; **रुके हुए प्रमेहकी वजहसे बाघी ।** औरतोंका कामोन्माद ; श्वेत-प्रदर ; डिम्बाधारका कड़ापन । कलेजा मसोसना ; पैरोंमें सूजन ; ज्वर ; दिन रात शरीर गर्म रहना , नाड़ी पूर्ण और द्रुत ; **एक दिन नागा देकर बोखार होना ।**

सम्बन्ध ।—अरम, इग्नेशिया ; बैराइटा कार्ब ; प्लम्बम—आयोड ; नैजा , कोनायम (ग्रन्थियोंका कड़ापन) ; कैलि आयोड, आइरिस (क्लोम-रोग), सेलिनियम (पेटमें टपक) । यह ऐबिसिन्थियासे प्रतिषेधित होता है ।

शक्ति ।—१म, ३य, ३०, २०० इत्यादि ।

बेलाडोना । (Belladonna).

दूसरा नाम ।—सोलेनम मैनियेकम् ; डेड्ली-नाइट-शेड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—फोड़ा ; मुँहासे ; अन्धापन ; संन्यास ; मूत्राधारकी दुर्बलता ; कितने ही तरहके फोड़े ;

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्ककी बहुतसी बीमारियां और उपसर्ग; दूषित व्रण; शूल; कब्जियत; कानकी बीमारी; अकड़न; खांसी; घुंड़ी खांसी; कपकपीके साथ प्रलाप; अतिसार; सुस्ती; रक्तामाशय आन्त्रिक ज्वर; मृगी; विसर्प; अरुणिमा; आँखकी बहुतसी बीमारियाँ; ग्रन्थियोंका फूलना; गलगण्ड; सन्धिवात, अर्श; सरका दर्द; हृदपिण्डकी बीमारी; मस्तिष्कोदक रोग; जलातंक; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा); मूत्रग्रन्थियोंकी बीमारी; उन्माद रोग; छोटी माता; मस्तिष्कावरण प्रदाह; रजःविकार; कर्णमूल प्रदाह; स्नायुशूल; रतौंधी; कामोन्माद; पक्षाघात; जरायु-वेष्ट-प्रदाह; आँतोंके आवरणका प्रदाह; गर्भिणीके पैरका सूजन; फिफड़ेके आवरणका प्रदाह; फिफड़ेका प्रदाह; सूतिकोन्माद; वात; पक्षाघात; मूत्र-कृच्छ्रता; अण्डकोषकी बीमारियाँ; यक्ष्मा; क्षत; गो-बीजके टीकाका बुरा नतीजा; सरमें चक्कर आना; क्रुप-खांसी; कृमि-ज्वर।

उपयोगिता।—स्थूलकाय, पित्त और रस-प्रधान प्रकृति, अच्छे केश, नीली आँखें, गोरी रंगवाली स्त्रियाँ और बालक-बालिकाएं जिन्हें सर्दी बिल्कुल सहन नहीं होती, माथा खोलनेसे ही सर्दी लगती हैं, केश कटवाना सहन नहीं होता, सर्दी लग जाती है, जो अत्यन्त उत्तेजित और स्नायविक हैं, तालुमूल प्रदाह होता है, सामान्य कारणसे ही मुखमण्डल और मस्तकमें खूनकी अधिकता पैदा हो जाती है, उनके लिये यह विशेष उपकारी है। रक्त-संचयकी अधिकता और लाली इसका एक प्रधान लक्षण है। आँखें और चेहरा लाल, माथे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मुखमण्डलपर रक्तका दाग अधिक, गलेकी धमनीका जोरसे टपकना। पंचेन्द्रियकी अत्यन्त अनुभूति जैसे—आँखोंसे रोशनी, कानसे सुनना, जीभमें स्वाद, नाकमें गन्ध, त्वचामें स्पर्श वगैरह सहन नहीं कर सकता। माथेमें बहुत अधिक रक्त-संचय, मस्तिष्कका विकार ; प्रचण्ड प्रलाप और उन्मत्तता ; रोगी भूत, प्रेत, बहुत तरहकी डरावनी मूर्त्तियाँ, बहुत तरहके कीट-पतंग और काले काले जन्तु, कुत्ता और लकड़ बाघ आदि देख रहा है, यही समझता है और डरकर चिल्ला उठता है। कितने ही तरहके डरावने काल्पनिक जन्तु देखना और चिल्लाना और इन्हीं सब कारणोंसे सेवा और शुश्रूषा करनेवालोंके पाससे दौड़कर भागना चाहता है। विकार और उन्मत्तता ; सबको काटता है, नाना प्रकारकी चीजें तोड़ डालता है। बिछावन नोचता है और जो कोई उसके पास उपस्थित रहता है, उसपर थूकता है। जोरसे हँसता है, दाँत पीसता है और भाग जानेकी चेष्टा करता है, माथा अत्यन्त गर्म और दर्द भरा, चेहरा लाल, उन्मादरोगी, पागलकी तरह दृष्टि, टकटकी लगाकर देखना, आंखकी पुतली फैली। नाड़ी भरी, पुष्ट, उछलती हुई, गोल आकार और ऐसा मालूम होता है, मानो छोटा लोहेका टुकड़ा उंगलीमें आघात कर रहा है। एकाएक आँखें बन्द करना और जल्दी जल्दी चारों ओर घुमाना ; भयंकर दर्द बिजलीकी तरह पैदा होता है और गायब हो जाता है या एकाएक आता है, अनिश्चित समयतक ठहरकर एकाएक बन्द हो जाता है, दर्द साधारणतः थोड़ी देरतक रहता है, इसके साथ ही मुँह और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखें लाल और गलेकी धमनीमें टपक। दांतोंके निकलनेके समय तड़का या आक्षेप, इसके साथ ही प्रवल ज्वर ; वह एका-एक उपस्थित हो जाता है, माथा गर्म और दोनों पैर ठण्डे रहते हैं ; मुँहकी स्लैष्मिक झिल्लीका सूखापन ; मूत्र-रुका ; निद्राभाव पर सो नहीं सकता। तकियेपर सर हिलाता है या सर तकियेमें गड़ाता है। पेटमें बहुत अधिक स्पर्शानुभूति और पेट फूलना ; सामान्य स्पर्श या हिलने डोलनेसे, यहाँतक कि यदि किसीका धक्का लग जाता है, तो रोगीको बहुत तकलीफ मालूम होती है। इसीलिये, रोगी उठने बैठने, घूमने—करवट बदलनेमें बहुत सतर्क रहता है। दाहिनी ओर जिस स्थानपर छोटी आँत और बड़ी आंत मिली है, उस स्थानमें बहुत दर्द, पेटमें जरा छू देनेसे ही तकलीफ बढ़ जाती है। यहाँतक कि कपड़े चादर वगैरहका लग जाना भी सहन नहीं कर सकता ; बिछावनकी चादर छू जानेसे भी दर्द अनुभव करता है। दाहि-नेसे बाएँ कोखतक फैली हुई बड़ी आँत पिण्डके आकारमें धक्का देकर उठती है। त्वचाका चिकनापन, घोर लाली, सूखा-पन, गर्म होना और जलन ; त्वचा इतनी गर्म, कि उसपर हाथ रखनेसे गर्मीका दाह मालूम होना है। यह शुद्ध आरक्त ज्वरकी खास दवा है। सब उद्भेद एकदम चिकने और घोर लाल। रोगिनी समझती है, कि उसके पेटके समस्त यंत्र आदि प्रसव द्वारसे बाहर निकल पड़ेंगे ; सवेरे बढ़ना ; और खड़े होने, बैठे रहने या सीधी अवस्थामें रहनेसे उपशम। तीसरे पहर ३ बजनेके समय रोगकी वृद्धि इसका एक विशेषत्व है। दाहिने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंशमें रोगका अधिक आक्रमण; चौंक उठना, विशेषक नींदके समय; गों गों करना; अस्फुट भावसे कातर ध्वनि। उष्णता, लालो, और दाह ये तीन इसके त्रिपत्र कहे जाते हैं. अर्थात् बहुत आवश्यक लक्षण हैं। सरमें भार उसके साथ ही रक्त-संचय और टपक; सरमें चक्कर आना; आक्षेप; मुँह सूखना; अन्न-नलीका संकोचन। कब्जियत या खड़ियाके रंगका कड़ा मल। कुत्तेकी आवाजकी तरह ऊँचे शब्दवाली और अकड़नभरी कितनी ही तरहकी खांसी; स्तन-प्रदाह; कलेजा काँपना; फेफड़े और हृद्‌पिण्डकी क्रिया लुप्त हो जानेकी आशंका। शरीरके कितने ही स्थानोंका बहुत तरहका प्रदाह और सूजन और उसकी घोर लाली वगैरह लक्षणमें यह दवा बहुत लाभदायक है।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐको; आर्स; (कर्कटोया दर्द) आर्निका; ब्रायो (वात); कैल्के; कूप्रम; जेल्स; हिपर; ज़िलियम; मार्क-कार; नक्स-वम, पलसेटिला, रसटाक्स; स्ट्रैमो; (प्रलाप, क्रोध)।

अनुपूरक।—कैल्के-कार्ब्ब, आगे और पीछे आवश्यक होता है।

दोषघ्न।—बेशी मात्रामें उद्भिजाम्ल, चाय और काफ़ी।

शक्ति।—३री, ६ठी, ३०वीं, २०० इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—वाह्य जगतको भूलकर कल्पना-जगतकी बहुत तरहकी डरावनी विभीषिकामय मूर्त्ति, काले जानवर, कुत्ते इत्यादिका दिखाई देना ; प्रबल प्रलाप, सामनेके मनुष्योंको गाली देता है, मारता है, काटता है, चीजें तोड़ फेंक देता है, भागनेकी चेष्टा करता है। बेहोश, कुछ देरतक चुप रहता है, फिर रोने लगता है ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और इसी वजहसे बाईं ओर या पीछेकी ओर ढुलक पड़नेकी सम्भावना, या गिर पड़ना और सरमें दर्द, इसके साथ ही चेहरा लाल, गर्दनकी धमनीका टपकना और खूनकी अधिकता। हिलने डोलने, रोशनी, परिश्रम, केश छँटवाने और कसकर बाँधनेसे वृद्धि। गर्म वस्त्रके आवरणसे और ऋतुके समय उपशम ।

चेहरा ।—लाल या गुलाबी, कभी कभी नीली आभा लिये लाल चमकीला ; पेशियोंका आक्षेपिक संकोचन, ओंठकी सूजन और मुँहका स्नायुशूल ।

आंख ।—लाल, चमकीली, प्रदाहित, फूली, सूखी और जलन भरी ; रोशनीका सहन न होना, दो देखना ; तेजीसे पलक गिरना, पुतलियोंका फैलना, टकटकी लगाकर देखना, पलकोंकी अकड़न, रतांधी, सामने चिनगारी देखना, आँखसे आँसू बहना, आँखके गोलेका बाहर निकलना, (आँखका ढेला बाहर निकल पड़ना) ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान।—गरजकी आवाज, बीचके और बाहरी कानमें नोच डालने जैसा दर्द। भयंकर टपकक दर्द, कानका शूल, इतना दर्द कि प्रलाप पैदा हो जाता है, कानके भीतरका प्रदाह, शब्द सहन नहीं कर सकता। कानमें हृद्‌पिण्डकी आवाजका सुनना, सुननेकी शक्तिका घटना या तेजी, बहरापन; बहुत तरहका नया और कुछ दिनोंका प्रदाह।

नाक।—लाल और फूली, बहुत तरहकी काल्पनिक गन्ध मिलती है, तेज गन्ध सहन नहीं कर सकता, सर्दीका स्राव, बार बार छींक।

मुँहके भीतर।—जीभका फूलना, उसका किनारा लाल और कांटा कांटा दाग भरा, मसूढ़ेमें फोड़े और प्रदाह, दाँतकी जड़में टपक और दर्द, तोतलाना।

गलेमें।—गलेमें जखम और लाली, ताकुमूल प्रदाह, गलनालीका सङ्कोचन। निगलनेमें कष्ट, कुछ पीनेसे निकल पड़ता है। श्लैष्मिक झिल्लीका कड़ापन और बढ़ना।

पाकस्थली।—भूख न लगना, मिचली और वमन, ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा, पानीसे भय, मांस और दूधसे अरुचि, अकड़नवाली हिचकी, सङ्कोचन मालूम होना और दर्द।

हृद्‌पिण्ड।—हृदकम्पन (कलेजा काँपना), माथेमें और कानके भीतर यह अनुभवमें आता है और सुन पड़ता है। कष्टदायक श्वास क्रिया; सामान्य कारण से छाती धड़कना। तेज़ और कमजोर नाड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलपेट ।—फूला और गर्म, आंत अपनी जगहसे हटकर ढेलेकी तरह ऊँची हो जाती है। कतरने, ऐंठने और खोंचा मारने जैसा दर्द, पेटमें स्पर्शानुभूति, छूने नहीं देता, बिछावनकी चादर आदि लगना भी सहन नहीं होता।

श्वासयन्त्र ।—गल-कोष, स्वरनली, गल नली वगैरह की लाली और सूखापन। सूखी, सुरसुरी भरी, अकड़न भरी खांसी, रातमें वृद्धि ; श्वासक्रिया असमान, तेज और कष्ट भरी ; स्वरभंग, खांसनेसे छाती और पाकस्थलीमें दर्द, खून या खून भरा कफ, श्वास प्रश्वासके साथ गों गों करना, फेफड़ेमें दबाव मालूम होना।

मल ।—पतला हरी आभा लिये, ढीला और खड़िया मिट्टी जैसा। रक्तामाशय, मलद्वार बाहर निकलना ; डंक मारने जैसा दर्द। बवासीर, उसमें बहुत दर्द और स्पर्शानुभूति; इसके साथ ही कटिशूल।

मूत्र ।—मूत्रस्तम्भ, मूत्राधारमें कृमि हिलती है, ऐसा मालूम होना। थोड़ा पेशाब, गदला पेशाब, उसमें तली जमना, पेशाबमें फास्फेट।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोष बहुत फूला और प्रदाह भरा, ऊपरकी ओर खींचन मालूम होना। मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिसे एक तरहका स्राव निकलना, कामेच्छाका ह्रास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा रज, उज्वल और उष्ण रक्त स्राव, स्पर्श सहन नहीं होता, मालूम होता है, मानो पेटके समस्त यन्त्र आदि जननेन्द्रियसे बाहर निकल पड़ेंगे। अपत्यपथमें सूखापन और गर्मी; प्रसवके बादका स्राव—वह गर्म और बदबूदार; स्तन प्रदाह; सूजन या अर्बुद; प्रसवके बादका स्राव घटना।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—अंग प्रत्यंगमें चिलक मारने जैसा दर्द, सन्धियोंका फूलना और लाली, चलनेके समय मतवालेकी तरह ढुलक पड़ता है, अङ्ग प्रत्यंग विशेषकर अङ्गुलियां शीतल, अङ्ग प्रत्यंगका फड़कना।

पीठ।—गर्दनका कड़ापन, गलेकी गांठका फूलना, टूटनेकी तरह दर्द, कमरका दर्द, उरु और वंक्ष-देशमें दर्द।

त्वचा।—सूखी और उत्तप्त, लाल और चिकनी; स्पर्शानुभूति; सूजन; लाल उद्भेद और उसका एकाएक फैल जाना; विसर्प।

ज्वर।—प्रवल सन्तापयुक्त ज्वर; प्रदाह ज्वर; मस्तिष्क ज्वर; स्वल्प विराम ज्वर; अत्यन्त दाह; इसके साथ ही साथ हाथ पैर विशेषकर, दोनों पैर ठण्डे, माथेमें पसीना; प्यास न लगना; कमला नेबू खानेकी इच्छा; सब तरहके उद्भेदके साथ ज्वर।

निद्रा।—बेचैन नींद, दांत पीसना या कड़मड़ाना, रो उठना और आँखें बन्द करनेपर चौंक उठना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि।—छूनेसे, गन्धसे, शब्दसे, हिलने डोलनेसे, वायु प्रवाहसे, उज्वल चमकोला पदार्थ देखनेसे, दिनके ३ बजे, बिचली रातमें, दिनके समय सोने और माथा ढक रखनेसे वृद्धि।

ह्रास।—विश्रामसे, खड़े होने अथवा सीधे होकर बैठने और गर्म घरमें सोनेसे ह्रास।

बेलिस पेरेनिनस।

(Bellis Perennis)

दूसरा नाम।—डेइजि ; ओल्ड :वाथ, ब्रशवार्ट इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—चोट और कुचलना आदि ; वयोव्रण (मुँहासा) ; धमनो-मण्डलकी बीमारी ; अर्बुद, फोड़ा, मस्तिष्ककी थकावट, औरतोंके वय:सन्धिकालके बहुतसे उपसर्ग ; रस-बहना ; सारे शरीरकी सुस्ती या थकन ; माथेमें चक्कर आना ; छोटा सन्धिवात ; सन्धिवात या नया वात ; सरका दर्द ; अजीर्ण प्रवृत्ति : नकली मैथुनका कुफल ; अतिसार ; कामकाजमें जी न लगना, काम नकर सकना, विचर्चिका रोग (सोरायसिस) ; नींद न आना, जीभका प्रदाह और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कड़ापन ; जरायुमें चोट ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; शिराओंका फूलना और बढ़ना इत्यादि ।

उपयोगिता ।—यह नया फोड़ा या चोट आदिमें आर्निका और कलेण्डुलाकी तरह एक आवश्यक दवा है। वस्तिगह्वरके यंत्र आदिमें चोट लगना। जरायुके ऊपर किसी भी तरहका अत्याचार या आघात आदिमें जैसे-गर्भपात करना या गर्भ-धारणकी शक्तिको एकदम नष्ट कर देना ; या दूसरे दूसरे उत्तेजित कारण वगैरहसे जहाँ जरायु रोगी हो जाता है, वहां यह अमोघ औषधकी तरह कार्य करता है। वस्तिगह्वरमें बहुत जख्मकी तरह और घिसनेकी तरह दर्दका अनुभव करना और स्तनमें सूखापन पैदा हो जाना यहाँतक कि कुछ भी न रहना ; बहुत ज्यादा मैथुनकी वजहसे बीमारी ; सारे शरीरमें लगातार फोड़े निकलते रहना। मज्दूर और बाग-बगीचोंके मालीकी बीमारीमें इसका विशेष प्रयोग होता है। प्लीहामें दर्द ; बाईं ओर खोंचा मारने जैसा दर्द; दाहिनी बांहमें इतनी तकलीफ कि मालूम होती है, मानो एक फोड़ा हो गया है। एकाएक सर्दी लगना या ज्यादा स्नान करनेकी वजहसे बीमारी ; सरमें चक्कर आना ; कामेन्द्रियका अत्याचार ; जरायुका आगे या पीछेकी ओर हट जाना ; स्तन और जरायुमें रक्तकी अधिकता ; अन्तमें उसका खून सूख जाना, काला दाग पड़ना और शरीरमें थकन मालूम होना वगैरहमें यह विशेष उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध ।—**सदृश**—आर्निका, आर्स, बैसो, हाइ-पेरिकम इत्यादि ।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट, ६ठी, ३० इत्यादि ।

बार्बेरिस वलगेरिस । (Berberis Vulgaris).

दूसरा नाम ।—बार्बेरी, स्पाइन एसिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—पैत्तिक शूल ; पैत्तिक बीमारियाँ, मूत्राधारकी बीमारी ; और स्नायुशूल ; मूत्राश्मरी ; आँतोंकी सर्दी या उसकी वजहसे अतिसार ; बाधक ; कर्कटका जखम ; ज्वर ; नासूर ; पित्तस्थलीका प्रदाह ; दादकी तरह उद्भेद ; कँवल ; सन्धियोंकी बीमारी ; श्वेत प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; कटिशूल ; आँखोंका प्रदाह ; पेशाबमें आक्सेलेट ; मूत्रग्रन्थिका शूल ; पथरी ; मूत्राश्मरीका शूल (रेनल कालिक) ; रजः स्वल्पता ; नाक और जरायुका बहुपाद (पालिपस), कटिशूल, रेतः रज्जुका स्नायुशूल ; प्लीहाकी बहुतसी बीमारियाँ ; मसे ; पेशाबकी बहुत बीमारियां ; अपत्यपथका स्नायुशूल प्रभृति ।

उपयोगिता ।—मूत्रग्रन्थि और मूत्रस्थलीपर इसकी असीम क्रिया है । मसानेका दर्द, पथरीकी वजहसे शूल, मूत्रा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारका स्नायुशूल ; मूत्र-यंत्रादिके स्थानपर छूनेसे बहुत दर्द होना ; मसानेमें बहुत अधिक जलन और जखम मालूम होना ; उन स्थानोंमें और कमरमें दबावकी तरह बहुत दर्द ; सुन्न हो जाना और अकड़न ; बाईं ओरकी मूत्रग्रन्थिसे मूत्रवाही नाली होकर मूत्राशय और मूत्रनालीमें बहुत कतरने और बेधनेकी तरह दर्द ; मूत्रग्रन्थिमें बुदबुद उत्पन्न होनेकी तरह अनुभव होना वगैरह लक्षणको यह एक उत्कृष्ट दवा है। मसाने या पथरीका दर्द विशेषकर बाईं ओर हो जाता है। सोनेके समय, बैठे रहनेपर या सामान्य हिलने डोलने, छूने या शारीरिक क्लान्तिसे वे सब लक्षण बढ़ जाते हैं। यकृतके ऊपर भी इसकी विशेष क्रिया है। यह पैत्तिक शूल ; पित्तसे पैदा हुआ पथरीका शूल और उसके साथ ही कँवल रोगमें मिट्टीकी तरह मल त्यागना वगैरह लक्षणमें विशेष लाभदायक है। पैत्तिक उपसर्गोंके साथ भगन्दर और खुजली, इसके साथ ही वक्षःस्थलके कितने ही उपसर्ग और खाँसी, विशेषतः भगन्दरमें नश्तर लगवानेके बादवाले लक्षणमें विशेष लाभदायक है। हरे रंगका खून मिला, श्लेष्मा मिला, स्वच्छ, लाल रंगका, गाढ़ा, लसदार लेईकी तरह बहुत चिकनी तलीके साथ पेशाब। मूत्रयंत्रकी बीमारीसे पैदा हुआ वात और ग्रन्थिवात ; भोजनके पहले मिचली ; कटिशूल ; कटिवात ; त्वचामें खुजलानेवाले उद्भेद और पीव बटिका इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—विषन्नता, जीवनसे विराग, बात करनेकी इच्छा न होना, सब पदार्थ यहांतक कि अपना अंग प्रत्यंग भी दुगुना बड़ा मालूम होता है ।

मस्तक ।—मूर्च्छाके साथ सरमें चक्कर, माथेमें भार, माथेके पिछले भागमें जाड़ा मालूम होना, ऐसा मालूम होता है मानो समूचे माथेमें कोई कसी हुई टोपी दबा रहा है ।

चेहरा ।—उतरा हुआ चेहरा, रोग-ग्रस्त चेहरा, आँख मुंह बैठ जाना और वह नीली रेखासे घिरा हुआ ।

श्वास-यंत्र ।—ऐसा मालूम होना मानो छाती और हृद्‌पिण्ड कुछ सट गया है । स्वरभंग, स्वर नलीका बहुपाद । सूखी खांसी, सुई बेधनेकी तरह तकलीफ ।

अन्त्राशय ।—पित्तशूल, मसानेका दर्द, पित्त और मूत्र दोनों तरहकी पथरीका शूल, मसानेमें डङ्क मारने जैसा दर्द ; यकृत, प्लीहा, पाकस्थली, पुट्ठे वगैरह तक यह दर्द फैल जाता है ।

पेशाब ।—बार बार पेशाब होता है, पेशाब कर लेनेके बाद भी ऐसा मालूम होता है मानो पेशाब रह गया है । जलन और दर्द, पेशाबके समय उरु और कोखतक, दौड़ जाता है पेशाबमें कितनी ही तरहकी तली जमना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुं०-जननेन्द्रिय।—अण्डकोष और रेतः रज्जुकी शूल वेदना, अण्डकोष, उसकी त्वचा और लिङ्गके आगेवाले गात्रकी त्वचामें जलन और सुई बेधने जैसा दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अपत्यपथका स्नायुशूल, जलन और जखम मालूम होना, कामाद्रि प्रदेशमें सङ्कोचन मालूम होना।

वृद्धि।—हिलने डोलनेसे, खड़े होने, सोने और एका-एक चोट लगनेसे वृद्धि।

सम्बन्ध।—तुलनीय—एलोज, आर्स, कैल्के-फास, कैन्थरिस, कार्बोवेज, चायना, लाइको, नेट्रम, नक्स, पल्स। यह एकोनाइटका दोषघ्न है।

दोषघ्न।—बेलाडो, केम्फर।

शक्ति।—१म, ६ठो, ३० वीं इत्यादि।

१। बेनजिनम, २। बेन्जिनम् नाइट्रिकम ३। बेनजोयिन्।

ये तीनों दवाएं सुननेमें एक तरहकी होनेपर भी प्रत्येक वास्तवमें अलग अलग हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१। बेनज़िनम (Benzinum).

अन्य नाम।—बेनजान, अलकतरेसे चुआया हुआ पदार्थ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—रक्तामाशय (खूनी आँव), ज्वर,सरमें दर्द, सान्निपातिक ज्वर इत्यादि।

शक्ति।—३री, ६ठी।

२। बेनज़िनम-नाइट्रिकम।

(Benzinum Nitricum).

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—अन्धापन; अकड़न; मृगी; धनुष्टंकार; जबड़े अटकना।

सदृश।—ऐसिड-हाइड्रोसियानिक; साइक्यूटा; नैन्थि।

शक्ति।—३री, ६ठीं।

३। बेनजोयिन (Benzoin).

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता ।—ज्वर, तेल भरे केश, सरमें भार इत्यादि रोगमें लाभदायक है ।

सदृश ।—लैकेसिस ।

शक्ति ।—३री. ६ठीं ।

विस्मथम । (Bismuthum).

दूसरा नाम ।—सब नाइट्रेट आफ बिस्मथ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—तलपेटमें नश्तर लगवाने बाद वमन यदि आरम्भ हो जाय तो उसे दूर करनेके लिये यह बहुत उपयोगी है । छातीका स्नायुशूल, विसूचिका या हैजा ; खांसी ; मूत्राधारका प्रदाह ; कपकपीके साथ प्रलाप ; मदात्यय रोग ; उदर और वक्षव्यवधायक पेशीका प्रदाह; सर द [; गर्भावस्थामें या प्रसवके बाद पैरमें शोथ ; पाकाशयका कर्कट रोग ; मुँहका जखम ; दाँतका दर्द ; बहुतेरे कारणोंसे वमन ; बच्चोंकी विसूचिका ; यह वमन और हिमांगावस्थामें बहुत बार आर्सेनिकके पहले या बाद विशेष लाभदायक होता है ।

उपयोगिता ।—एकान्त सहन नहीं कर सकता ; हमेशा एक साथी चाहता है, बच्चे साथी पानेके लिये माताका हाथ पकड़ रखते हैं । बहुत ही जल्दबाज और बेचैन ; लगातार उठता बैठता या रोता है, एक जगहपर बहुत देरतक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह नहीं सकता। प्रत्येक जाड़ेके दिनोंमें सरका दर्द पैदा हो जाना; पाकाशयके शूलके साथ पर्यायक्रमसे सर-दर्द; मुर्दे जैसा पीले रंगका चेहरा और आँखोंके चारों ओर नीला दाग। दाँतमें दर्द; मुँहमें ठण्डा पानी लेनेसे आराम मिलना (ब्रायो, काफि, पल्स); पाकाशयमें पानी पहुंचते ही कै, परन्तु भोजनके पदार्थ बहुत दिनोंतक पाकस्थलीमें जमे पड़े रहते हैं, इसके बाद ही बहुत ज्यादा परिमाणमें वमन। अतिसार, बदबूदार मल। मुंहको रोकनेवाला अकड़न भरा बहुत तेज़ दर्द, खासकर तलपेटमें नश्तर लगवाने बाद वगैरह लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है। पाकाशयका दर्द, स्नायुशूल; तेज प्यासके साथ प्रबल वमन; कुछ पीते ही तुरन्त कै हो जाना, जलन, सुई बेधनेकी तरह, काटनेकी तरह, अकड़न या म्कू बेधनेकी तरह दर्द। हाथ पैर को हड्डोमें तोड़ने जैसा दर्द; मुँहकी पेशीकी अकड़न, सड़नेवाला, नीली आभा लिये जखम, सारे शरीरमें स्लेटके रंगके बहुतसे दाग; अण्डलाल मिला पेशाब; बहुत ज्यादा दस्त कै; बच्चोंका दस्त कै, खासकर गर्मीके दिनोंमें; दस्त कै बहुत ही बदबूदार; पीने बाद भाफकी तरह उद्गार; पाकस्थलीका खाली मालूम होना; आँतोंका आध्मान वायु इत्यादिमें विशेष उपयोगी है।

वृद्धि।—हिलानेसे सर दर्द और मुँहमें ठण्डा पानी, गर्म हो जाने पर दाँतमें दर्दका बढ़ना।

ह्रास।—पीछेकी ओर झुकनेपर पेटमें दर्द, ठण्डा पानी पीने और स्नानसे सरका दर्द घट जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—कैल्के, नक्स-वोम, कैलसि।

सदृश ।—तुलनीय—ऐण्टिम-क्रूड (वमन), आर्स (सड़नेवाला जखम, कर्कटका जखम, पाकाशयका प्रदाह)। वेलाडो (पाकाशयका शूल और कैन्सर); ब्रायो (दाँतका दर्द); लैके (गलेका जखम); नक्स-वोम (पाकाशयका प्रदाह); फास्फो (वमन); प्लम्बम (पाकाशयका शूल); रस्टाक्स (संचालनसे उपशम)।

शक्ति ।—१ली, ६ठीं, ३० वीं इत्यादि।

संक्षिप्त लक्षण।

मन ।—अकेला बिलकुल ही रह नहीं सकता, हमेशा उत्कण्ठित, बेचैन, एक जगहपर रह नहीं सकता, हमेशा जगह बदला करता है।

मस्तक ।—प्रत्येक शीत ऋतुमें सर दर्द पैदा हो जाना, पर्यायक्रमसे पाकाशयका शूल और सरका दर्द।

चेहरा ।—मुर्दे जैसा ; रक्त-शून्य ; दाँतका दर्द ; मसूढ़े फूलना।

श्वास-यंत्र ।—छाती और उदर व्यवच्छेदक पेशीके बीचमें अकड़न, कलेजेमें दर्द और उस स्थानपर दर्द और तकलीफ मालूम होना।

पाकस्थली और अन्त्राशय ।—तेज प्यास; कुछ पीनेके साथ ही कै, दूसरी दूसरी कड़ी भोजनकी चीजें कुछ देर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कुछ दिनोंतक पेटमें रह जाती हैं और वमन नहीं होता, इसके बाद यह जमा हुआ पदार्थ वमन हो जाता है। बहुत बदबूदार दस्त।

अंग-प्रत्यंग।—हाथ पैर और अङ्ग प्रत्यङ्गके कितने ही स्थानोंमें अकड़न।

निद्रा।—कितने ही तरहके कामोत्तेजक सपने देखना और बेचैन नींद। सवेरे या भोजनके कई घण्टे बाद औंघाई।

ब्लाटा अमेरिकना।

(Blatta Americana),

दूसरा नाम।—अमेरिका देशमें पैदा हुआ झींगुर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—दमा या श्वास-कष्ट आदि। शोथ, कँवल या पिलई।

उपयोगिता।—उदरी ; यकृतमें गड़बड़ी ; कँवल और उससे पैदा हुआ शोथ ; छाती और हृद्-पिण्डका शोथ और तकलीफ ; बहुत सुस्ती ; पेशाबके समय मूत्रनलीमें दर्द इत्यादि रोगमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध।—चेलिडो ; कैमो ; लैकेसिस। **सदृश।**—ब्लाटा ओरियण्टैलिस।

शक्ति।—१x और ३x विचूर्ण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्लाटा ओरियेण्टैलिस ।

(Blatta Orientalis).

दूसरा नाम ।—इण्डियन काक्रोच ; भारतवर्षीय तेलचटा या झींगुर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । —विचूर्ण और अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—**दमा** ; पुराना श्वासनाली प्रदाह ; यक्ष्माकास ; कँवल वगैरह रोगमें यह लाभदायक है । **दमा रोगकी यह एक महौषधि कही जाती है** ।

उपयोगिता ।—स्थूल देह ; सड़ी भाफ या मलेरिया दोषयुक्त धातुमें यह उपयोगी है । **वर्षा या तर ऋतुमें रोग लक्षणोंका बढ़ना** होता है, इसी वजहसे इस देशमें यह ज्यादा लाभ करता है । बहुत अधिक पीव की तरह श्लेष्मा निकलना ; वायुनलीभुज-प्रदाह ; यक्ष्मा खांसी और **दमा रोगमें** यह विशेष उपयोगी है ।

शक्ति ।—**मूल अरिष्ट २।३ बूंदकी मात्रामें दमाका जोर बढ़नेके समय** बार बार सेवन करना चाहिये । दूसरे समय आधी शक्ति सेवन करनी चाहिये ।

सम्बन्ध ।—श्वास रोग यदि आर्सेनिकसे एकदम आरोग्य न हो और शोथ रोगमें **एपिस** ; ऐपोसाइनम्, डिजिटिलिसके द्वारा लाभ न होनेपर इससे विशेष उपकार दिखाई देता है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलिटस लैरिसिस ।

(Bolettus Laricis)

दूसरा नाम ।—पोलिपोरस आफिसिनेलिस, ह्वाइट ऐगरिक ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—उदरामय ; रक्तामाशय ; ज्वर ; पित्त-स्थलीकी बीमारी ; सरका दर्द ; यकृतकी बहुतसी बीमारियाँ ; रोज आनेवाला सविराम ज्वर ; यक्ष्मा रोगमें रातमें पसीना इत्यादिमें विशेष लाभदायक है ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—हताश और सामान्य कारणसे उत्तेजना ; अन-मना भाव ।

मस्तक ।—माथेके गहरे प्रदेशमें दर्द ; मूर्च्छाका भाव; बहुत ज्यादा शूल या हलका मालूम होना , माथा हिलानेपर सर दर्दका बढ़ जाना ।

आंखें ।—रोज सवेरे आँखकी पलकोंका चिपक जाना ।

त्वचा ।—गर्म और सूखी, दोनों कन्धोंकी हड्डी और दोनों बाहुओंमें खुजली ।

मल-मूत्र ।—पीली आभा लिये, पानी जैसा, फेन भरा, थुलथुला ; फूला हुआ मल । कभी पित्तमय, कभी कभी फेनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह, मल बड़े वेगसे निकलता है। पेशाब गाढ़ा और नीले रंगका।

ज्वर।—रोज आनेवाला सविराम ज्वर ; कम्पावस्थामें बार बार जम्हाई आना और हाथ पैर खींचना या फैलाना, (बदन तोड़ना) (एसिल और साइमेक्स), पाण्डु और कँवल रोगके लक्षण, रातमें पसीना, यक्ष्मा।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐगरिमिन।

सदृश।—बोलिटस लुरिडस (प्रलाप, पिपासा) ; बेलिटस सैटेनस (अतिसार और रक्तामाशय) ; ऐनाकार्ड ; नेट्रम-म्यूर।

शक्ति।—१म से ३०। बोखारमें २००।

बोलिटस सैटेनस।

(Boletus Satanus).

दूसरा नाम।—सैटेनस बोलिटस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता।—अतिसार ; रक्तामाशय (खूनी आँव) ; सर दर्दका हिलानेसे बढ़ना।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—बहुत ज्यादा भय और बेचैनी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक ।—आँखोंके सामने मानो आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं, ऐसा मालूम होना। (सुस्ती लानेवाली बीमारीके लिये चायना ; यकृतके दोषके लिये ऐसिड नाइट्रिक ; इन्द्रिय सेवनके लिये फास्फोरस)।

कान ।—ऐसा अनुभव हो, मानो कानमें कितने ही प्रकारके शब्द हो रहे हैं (ऐसिड-फास ; कैलि-आयोड ; चिनि-सल्फ)।

मुँह और गलेके भीतर ।—तंग करनेवाली सूखी खांसी ; गलेमें जलन और खुरखुरापन।

वक्ष ।—छातीमें दबाव मालूम होना।

मल ।—आँवभरे पतले दस्त, अपर्याप्त परिमाणमें रक्त और औरतोंकी श्लैष्मिक झिल्लीके टुकड़े जैसा मल ; पानीकी तरह मल।

नाड़ी ।—बहुत क्षीण और लुप्त-प्राय।

प्रत्यङ्ग ।—अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐसा मालूम हो मानो शीघ्र ही संन्यास रोगका आक्रमण होगा। बहुत अकड़न और खींचन ; मूर्च्छाभाव ; सारे शरीरमें ठण्डा पसीना ; वमनके समय तेज़ प्यास ; वमनके बाद सुस्ती आ जाना।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न-शक्ति व्यवहारमें आती है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोरैक्स । (Borax).

दूसरा नाम ।—सोहागा ; बोरैक्स-वेनेटा ; सोडियम बाइबोरट इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—सरमें चक्कर आना ; आँखोंकी बहुतसी बीमारियाँ ; कानसे पीव बहना ; नाककी बहुतसी बीमारियाँ ; स्वादकी गड़बड़ी ; मुँहमें जखम ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ ; उपदंशसे पैदा हुआ गलेका जखम ; फुस-फुस-वेष्ट-प्रदाह या प्लुरिसि ; स्तनकी घुंड़ीमें जखम ; श्वेत-प्रदर ; रजःशूल या वाधक ; झिल्ली-मिली रजःकृच्छ्रता ; बाँझ-पन ; बवासीर बाहरी मसेवाला ; अतिसार ; पेशाबमें तेज़ गन्ध ; अंगुलीकी सन्धियोंमें जखम ; पैरमें गट्ठे ; चिल्ला उठना ; नाव या गाड़ीमें चढ़नेपर वमन या मिचली ; नीचे झुकनेमें भय ।

उपयोगिता ।—प्रायः सभी रोगोंके साथ **"नीचेकी ओरकी गतिमें बहुत ज्यादा भय"** (खासकर बालक बालिकाओंका) जैसे—गोद उठाने, सुलाने, नाचनेके समय, झूलेमें हिलाते समय, सीढ़ीसे उतरनेके वक्त, घुड़सवारीमें, पहाड़से उतरनेमें अत्यन्त भय इसका एक विशेष लक्षण है। बहुत अधिक स्नायविक ; बहुत अधिक डरपोक ; असाधारण या साधारण कोई आवाज़ सहन नहीं होती ; यहाँतक कि किसी-के खांसने, छींकने, चिल्लाने, दियासलाई जलाने और कागज वगैरहकी रगड़की आवाजसे भी एकाएक डरकर, जोरसे चिल्ला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर नींदसे जाग उठता है और खाटको कसकर पकड़ रखता है। मुँहके जखमकी यह एक बढ़िया दवा है। मुँहके भीतर; ओठमें, जीभमें, गालके भीतरी भागमें जखम; बहुत ज्यादा लार बहना; भोजन, पान और स्पर्शसे सहजमें ही रक्तपात; मुँहमें गर्मी, सूखापन, प्यास; मुंहके भीतर फटा हुआ और रक्त निकलना; इसी वजहसे बच्चे स्तन-पान नहीं कर सकते; (खासकर दाँत निकलनेके समय) वगैरह लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है। बच्चोंका लगातार पेशाब करते रहना और पेशाब करनेके पहले एकाएक चिल्ला उठना। केश एकत्र मिल-कर जटा रूपमें बँध जाते हैं। केशके अगले भाग आपसमें मिल जाते हैं और इन केशोंका थक्का या जटा काट डालनेपर भी, फिर इसी तरहकी जटा या लट बँध जाती है। इसी वजहसे ये केश कंघीसे कभी साफ़ नहीं किये जा सकते। आँखोंमें कीचड़ भर जाता है और सवेरे आँखें सट जाती हैं। आँखोंमें प्रदाह होता है और पलकोंपर अस्वाभाविक बड़े बड़े रोएँ झूलते रहते हैं। नाकका प्रदाह और उसमें सूखी कीट जमना; नाकका अगला भाग चमकीले लाल रंगका। युवतियोंके नाक-का अगला भाग इसी तरह चमकीला लाल रंगका, इस दवाके प्रयोगका एक विशेष चिन्ह है। प्रदर, बहुत ज्यादा परिमाणमें अण्डलालकी तरह, श्वेतसारकी तरह स्राव, उसके बाहर निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गर्म पानी निकल रहा है। एक ऋतुकालसे दूसरे ऋतुकालके आनेके समयके बीचमें प्रायः दो सप्ताहतक बराबर रक्तस्राव। अस्वास्थ्यकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्म ; साधारण चोटसे भी पीव पैदा हो जाता है वगैरह लक्षणों-की यह उत्कृष्ट दवा है।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—बहुत उत्कण्ठा और डर ; नीचेकी ओरकी गतिमें भय, खासकर बच्चे—बालक बालिकाएँ इस समय रोते चिल्लाते हैं। बहुत सामान्य शब्दसे भी बहुत अधिक भय और चौंक उठना। बहुत अधिक स्नायविकता।

मस्तक ।—सरमें दर्दके साथ जो मिचलाना और सारे शरीरमें कपकपी, सब केश आपसमें सटकर लट बँध जाती है, जटा बन जाती है। कंघीका व्यवहार नहीं किया जा सकता।

आंखें ।—साधारण रोशनी भी सहन नहीं होती, आंखें बन्द हो जाती हैं। पलकोंमें बहुत अधिक सूखी और लसदार पपड़ी जमती है।

कान ।—सामान्य शब्द भी नहीं सहन होता। सुनने-की शक्तिकी कमी, कानसे पीव बहना।

नाक ।—नाकमें सूखी पपड़ी जमना ; युवतियोंके नाकका अगला भाग लाल। दाहिनी नाकका रुका रहना, या पहले दाहिनी फिर बाईं नाकका बन्द हो जाना और लगातार छिड़कना।

मुँहके भीतर ।—मुँहमें कितने ही तरहके जखम, भोजनके समय सहजमें ही खून निकल आना। जीभके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जखमकी वजहसे बच्चा स्तन पान नहीं कर सकता। छोटे बच्चे स्तन नहीं पकड़ते।

श्वास-यंत्र।—प्रबल खुसखुसो खांसी। छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द; दाहिने वक्षमें अधिक दर्द।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके बाद पेट फूलना, जरायु रोग मिला पाकाशयका शूल, पेटमें दर्द, तलपेट फूलना, ऐसा मालूम होना, मानो पतले दस्त आयेंगे, अतिसार, हरे रंगका मल। बच्चोंका उदरामय।

पेशाब।—गर्म जलन पैदा करनेवाला और बदबूदार; शय्यापर पेशाब करनेपर लाल दाग या बालूकी तरह तली जमना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवके दर्दके समय बारम्बार खाली डकार, बहुत ज्यादा स्तनका स्राव, बाधक रोग, बन्ध्यत्व, बाहरी योनिमें उद्भेद रोग।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—सीढ़ी चढ़नेमें हांफ उठना। ऐसा मालूम होना मानो हाथमें मकड़ेका जाला उलझा है। पसली-में सुई बेधनेकी तरह दर्द

त्वचा।—विचर्चिका (सोरायेसिस)। चेहरेका विसर्प, सामान्य चोटमें भी पीव पैदा हो जाना, अङ्गुलोकी सन्धियोंमें दर्द या जखम।

नींद।—नींदके समय भय और चिल्लाकर जाग उठना, अश्लील सपने देखना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि ।—नीचेकी ओरकी गतिमें, शब्दसे, गर्मीसे, गर्मीके दिनोंमें और ऋतुस्राव होने बाद वृद्धि । शामको ठण्डमें और दबानेपर ह्रास ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आर्स, बैलाडो, ब्रायो ; कैल्के, ग्रेफाइटिस ; इग्नेशिया ; लाइको ; नक्स-व ; पल्स ; फास्फोरस ; रास्टक्स ; साइलि और सल्फर इत्यादि ।

दोषघ्न ।—कैमो ; काफि ।

शक्ति ।—१म, ३री, ३०, २०० इत्यादि । इसका बाहरी प्रयोग भी हुआ करता है ।

बोरैसिकम ऐसिडम् ।

(Boracicum Acidum).

दूसरा नाम ।—बोरैसिक ऐसिड या बोरिक ऐसिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—सरमें चक्कर ; सरका दर्द ; आँखकी बीमारी ; माथेमें दाने ; कै ; शोथ ; अंगुलीके आवरणका प्रदाह ; पेशाबमें बालू; पथरीका दर्द ; मूत्रनलीमें दर्द और शीत मालूम होना ; बहुत तरहके जखम और सड़नेका भाव ; वयःसन्धिके समय रक्तस्राव आदि ; सुस्ती ; ठण्डी लार बहना ; अधिक वमन ; हिचकी ; लसदार मल ; मूत्रनलीमें दर्दके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ बार बार पेशाब करनेकी इच्छा ; अण्डलाल मिला पेशाब ; हाथ पैर और मुंहपर कीड़े रेंगनेकी तरह मालूम होना ; जलन ; खुजली ; योनिमें बहुत ठण्डक मालूम होना—मानो बरफका एक टुकड़ा उसमें रखा हुआ है, वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है ।

शक्ति ।—३री, ६ ठीं इत्यादि ।

बोथ्राप्स लैंसियोलैटस ।

(Bothrops Lanciolatus)

दूसरा नाम ।—इयोला वाइपर ; लेकेसिस लैन्सियोलेटस ; एक तरहका साँप ।

प्रस्तुत प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—अन्धापन ; दिनौंधी ; जीभमें अकड़न ; फेफड़ेमें खूनकी अधिकता ; खून जाना ; हड्डी-क्षयका रोग ; जखम ; सड़नेवाला जखम , मुर्दा चीरनेकी वजहसे पैदा हुआ विषैला जखम ; किसी एक स्थानका पक्षाघात ; अङ्गुलीमें कटने बाद पक्षाघात ।

उपयोगिता ।—हृद्पिण्ड और फेफड़ेकी धमनी वगैरहमें अथवा इसी तरहके अन्य स्थानोंमें खून जमकर या रुककर जो बीमारियाँ या उपसर्ग पैदा होते हैं, उसकी यह एक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही उत्कृष्ट औषधि है। अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; रक्तस्रावसे पैदा हुई स्वास्थ्यकी हानि ; बहुत ज्यादा भ्रान्ति या क्लान्ति। शरीरके कितने ही स्थानोंमें काले काले दाग ; खूनकी कमी ; खूनकी कै ; काले रङ्गका वमन ; खून-भरा दस्त ; स्नायविक कम्पन ; सांघातिक विसर्प और शरीरके किसी भी द्वारसे रक्त-स्राव वगैरह रोग-लक्षणमें इसका व्यवहार हुआ करता है।

सम्बन्ध।—अन्यान्य सर्प-विष और बेलाडोना।

शक्ति।—३री, ६ठीं, ३० वीं इत्यादि।

ब्रैकिग्लाटीस।

(Brachyglottis).

दूसरा नाम।—प्यूका-प्यूका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—शरीर, छाती, पेट या अन्यान्य यंत्रोंमें पटपट फड़ फड़ या कुछ घूमता फिरता है, ऐसा मालम होना। मूत्रग्रन्थि और मूत्राशयकी बीमारी ; अण्ड लाल मिला पेशाब ; छातीमें दबाव मालूम होना ; कान और नाकमें खुजली ; कलमसे जीविका उपार्जन करनेवालोंकी अकड़न ; मिचली वगैरह रोगमें यह लाभदायक है।

२०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मस्तक ।—माथेके भीतर दर्द और जड़ता मालूम होना ; टपक बाईं ओर अधिक ; सरमें चक्कर आना ; कपालमें दर्द ; कानसे आंखतक दर्दका चलना ; गर्दनका कड़ापन ।

कान ।—प्रेक बेधनेकी तरह दर्द ; खुजली ; टपकका दर्द ।

मुँहके भीतर ।—गर्म मालूम होना, सुन्नभाव, दर्द, जीभमें अकड़न, बार बार गलेमें अकड़न, निगलनेमें कष्ट ।

श्वास-यंत्र ।—श्वास क्लेश और बाधा मालूम होना, लम्बी सांस लेनेपर आराम मालूम होना ।

तलपेट ।—ऐसा मालूम हो मानो कोई पदार्थ पेटमें घूमता फिरता है । डिम्बाशय प्रदेशमें पट पट फड़ फड़ या हिलने डोलने जैसा मालूम होना ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा पेशाब, अण्ड लाल मिला पेशाब, मूत्राधारमें कल कल शब्द मालूम होना, मूत्रनलीमें जखम मालूम होना, ऐसा मालूम हो मानो पेशाब रोका नहीं जा सकता ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—दुर्बलता, थकन और पक्षाघात जैसा मालूम होना ।

सम्बन्ध ।—एपिस, आर्निका, बोविष्टा, हेलोनियस, मार्कु-कोर, नक्स-वोम, ओपियम, प्लम्बम ।

शक्ति ।—३री या ६ठीं दशमिक (६x) इत्यादि ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोविष्टा ।

(Bovista)

दूसरा नाम ।—वाटेड पाफ-बाल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—सरमें दर्द ; कानमें एक तरहका विषैला जखम ; तोतलाना ; जीभका जखम ; पीठकी रीढ़में दर्द । हृद्‌पिण्डकी बीमारी ; अतिसार ; चर्मरोग ; उकौत ; काकचंचु प्रदेशमें बिना खुजलाहटका चर्मरोग ; कोषमय अर्बुद ; आमवात ; सन्धिवात ; छोटी सन्धियोंका वात ; शीत-पित्त (जुलपित्ती) ; मसे ; अङ्गुल हाड़ा, कितने ही प्रकारके जखम ; रक्तस्राव ; ग्रन्थिमण्डलकी सड़नेवाली बीमारी ; रक्तस्रावीधातु (थोड़ेमें ही खून निकलने लगना) ; जखमसे खून जाना ; कमल या नैबा और प्रमेह ।

उपयोगिता ।—जो हमेशा सूखी या तर खुजलीसे तकलीफ पाते हैं, हाथसे चीजें फेंक कर तोड़ डालते हैं, उनकी और बड़ी उमरवाली कुमारी स्त्रियाँ या इसी तरहकी स्त्रियोंकी कलेजेकी धड़कनमें और जो लड़के लड़कियां तोतलाते हैं उनके लिये विशेष उपकारी है । नाक और दूसरी दूसरी सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंसे बहुत कड़ा, गठीला, लसदार डोरीकी तरह स्राव निकलना इसका एक विशेषत्व है । बहुत कमजोरी, हाथ पैरमें बहुत थकन मालूम होना और शरीरकी सन्धियोंमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कमजोरी। बगलमें बहुत अधिक पसीना और उसमें पेयाज जैसी गन्ध। दांत उखड़वाने बाद बहुत अधिक रक्त-स्राव। नाकका रक्तस्राव या जखमसे रक्तस्राव। पिकचंचु-अस्थिमें (Coccyx) बहुत खुजली, जबतक वहां जखम नहीं हो जाता या खून नहीं निकलता तबतक खुजलाया करता है। बहुत काला और जमा हुआ रक्तस्राव। रजःस्राव होनेके पहले और होनेके समय उदरामय या दस्त कै। **सिर्फ रातके समय ही रजःस्राव, दिनके समय स्राव नहीं रहता;** इसके साथ ही बहुत दर्द, तकलीफ, ऐसा मालूम हो मानो जरायु वगैरह बाहर निकल पड़ेगा। प्रत्येक दो सप्ताहमें और नियमित समयके अन्तरपर बीच बीचमें रजःस्राव पैदा हो जाता है, श्वेत-प्रदर। अलकतरेके बाहरी प्रयोगका मन्द फल। भाफ या गैससे श्वास रुकना वगैरह रोग-लक्षणमें यह विशेष उपयोगी है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—बहुत अभिमानी और अनमना, सारी चीजें बड़ी मालूम होती हैं। हाथसे सब चीजें फेंक देता है।

मस्तक।—माथा (खासकर पिछला माथा) बहुत बड़ा मालूम होता है, माथेमें दर्द, सवेरे सोनेपर और खुली हवामें वृद्धि।

मुखमण्डल।—नाककी छेदमें और मुँहके कोनेमें सूखी फुन्सियां, व्रण और गर्मीके दिनोंमें उसकी वृद्धि, मसूढ़ेसे खून बहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाक ।—गाढ़ा कड़ा लसदार श्लेष्मास्राव, खींचनेपर लम्बा हो जाता है।

श्वासयन्त्र ।—दमाके साथ अकड़नका भाव और साथ ही एक बार हँसना फिर रोना ; स्वरभंग ; कलेजा धड़कना।

तलपेट ।—ऐसा मालूम होना कि पाकाशयमें बरफका एक टुकड़ा रखा है ; खाली डकार ; पेट फूलना ; आँतोंका शूल ; पट सोनेपर कुछ आराम मिलना ; ऋतुस्रावके समयका उदरामय ; काँखना ; मलद्वारमें जलन ; बार बार पेशाब होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—**केवल रातमें ऋतुस्राव** ; स्रावके पहले और स्रावके समय उदरामय ; स्राव जल्दी जल्दी और बहुत ज्यादा ; **दिनमें स्राव बिल्कुल ही नहीं होता** ; एक रजःस्रावसे दूसरे रजःस्रावके समयके बीचमें स्राव पैदा हो जाता है ; काला, जमा हुआ रक्तस्राव इत्यादि।

अंग-प्रत्यंग ।—हाथ-पैरकी कमजोरी ; सन्धियोंमें दर्द ; हाथमें अकड़न ; बगलमें पसीना इत्यादि।

त्वचा ।—सारे शरीरमें सूखी या तर खुजली ; खसड़ा ; दादकी तरह उद्भेद ; मलद्वारमें खुजली ; उत्तेजनासे पैदा हुआ आमवात और इसके साथ ही वात ; हृद्पिण्डमें टपक और उदरामय ; सवेरे घूमने और स्नानसे आमवातकी वृद्धि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—तुलनीय—एमोन-कार्ब ; बेलाडोना ; विरेट्रम ; सिपिया (ऋतुकालमें) ; स्ट्रैमोनियम (रोना और हँसना) ; सलफर (भोजनके बाद कमजोरी)।

दोषघ्न।—काफिया ; कैम्फर।

शक्ति।—६, ३०, २०० शक्ति इत्यादि।

ब्रोमियम (Bromium).

अन्य नाम।—ब्रोमिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।— अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—संन्यास ; अधकपारी ; सरमें चक्कर ; आँखोंके किनारे नासूर ; कानकी जड़में प्रदाह और कड़ापन ; गलेका जखम ; गलगण्ड ; हृद्‌पिण्डका बढ़ना ; श्वास-प्रश्वासकी बीमारी ; खांसी ; घुंड़ी ; उपझिल्ली प्रदाह (डिफथीरिया) ; स्वरनालीकी अकड़न ; दमा ; यक्ष्मा ; गुटिका दोष (ट्यूबर्क्यूलोसिस) ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; बहुत तरहके जखम ; स्तनमें कर्कटका जखम ; अण्डकोषका कड़ापन और बढ़ना ; जरायु और अपत्य-पथका बाहर निकलना और उसमें वायु भरना इत्यादि।

उपयोगिता।—गोरा रूप ; नीली आँखें ; कोमल शरीर और गण्डमाला धातुवाले बालक बालिकाओंके लिये विशेष उपयोगी है। श्वास-प्रश्वास यंत्रमें (खासकर स्वरनाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कण्ठनालीपर) इसकी क्रिया विशेष दिखाई देती है। ऐसा मालूम होता है मानो चेहरेपर मकड़ेका जाल सटा हुआ है। दोनों नाकोंकी दीवारकी उठने झुकने जैसी गति। मल्ला-होंका दमा। गांठों और लसिका ग्रन्थियोंका प्रदाह और बढ़ना, इसका एक विशेष लक्षण है। गण्डमाला या गुटिका दोषसे पैदा हुआ ग्रन्थि-प्रदाह, गाठोंका प्रदाह, सूजन, लोहे जैसा कड़ापन, (खासकर बायें जबड़े और गलेकी बगलमें)। झिल्ली-प्रदाह या डिप्थोरिया रोगमें—गलकक्षमें पर्दा पैदा हो जाना और धीरे धीरे ऊपरकी ओर फैलना और गलनली, स्वरयंत्र तथा दूसरे दूसरे ऊपरी स्थानोंमें फैलता है। पर्दा मिली हुई घुंड़ी, खांसी, इसके साथ ही खांसनेके समय बहुत ज्यादा श्लेष्मा और घड़घड़ाहटकी आवाज ; परन्तु उससे सांस नहीं अटकती। (सांस रुकनेमें—हिपर)—खांसनेकी आवाज नर्म, पर खांसनेमें कफ बिल्कुल ही नहीं निकलता। श्वास-प्रश्वासकी वजहसे मुँह फाड़े रहना ; श्वास-कृच्छ्रता ; गहरी सांस लेनेमें असमर्थ ; ऐसा मालूम हो मानो श्वास-प्रश्वास एक स्पंज या शोषण करनेवाले किसी पदार्थके भीतरसे आ-जा रहा है। या सम्पूर्ण श्वास-प्रश्वास-यंत्र धूएँ अथवा गन्धक आदिके धुएँसे भर रहा है। इसके साथ ही गलेमें घड़घड़ आवाज ; आरेसे चीरने जैसी आवाज। स्वर-नालीमें बहुत श्लेष्मा इकट्ठा हो जाना और इसी वजहसे सांस रुकना। सांस लेनेके समय स्वरनालीमें ठण्डक मालूम होना और हजामत बनवाने बाद इसका बढ़ जाना। स्त्रीजननेन्द्रियमें वायु-संचय होना और अपत्य मार्गसे जोरसे निकलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजःकष्ट पर्दा मिला हुआ। बड़ी उमरकी बालिकाओंमें व्यायामकी वजहसे हृत्पिण्डका बढ़ना इत्यादि रोग-लक्षणोंमें यह विशेष उपयोगी है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—ऐसा मालूम हो मानो कोई पीछे खड़ा है; झगड़ालू स्वभाव, सरमें चक्कर; सर-दर्द, सर झुकानेपर दर्दका बढ़ना (खासकर दूध खानेके बाद); सूर्यकी गर्मी या तेज चलनेसे बढ़ना और इसके साथ ही आँखोंमें तेज दर्द, बहता हुआ पानी पार करते समय सरमें चक्कर आना।

नाक।—बहुत दिनोंतक सर्दी, नाककी जड़में दबाव मालूम होना। दाहिनी नाक रुकी हुई, नाकपर मकड़ेका जाल लगासा मालूम होना। नाककी दीवारका उठना और झुकना। नाकसे रक्त बहनेपर वक्षस्थलके उपसर्ग घट जाते हैं।

श्वास-यंत्र।—डिप्थीरिया या झिल्ली-प्रदाह; हूप-खांसी, वक्षोस्थिके नीचे जलन और दर्द; श्वास-कृच्छ्रता; फेफड़ेका प्रदाह।

अन्नाशय और आँतोंके भीतर।—जीभसे पाकस्थलीतक तेज जलन; पत्थरकी तरह दबाव मालूम होना; पाकाशयका शूल; भोजनके बाद उपशम। पेट फूलना; काले रंगके मलके साथ बहुत ही दर्द-भरी बवासीर।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाशयका फूलना; ज्यादा परिमाणमें जल्दी जल्दी रज; इसके साथ ही झिल्ली जैसा पदार्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलना ; स्तनमें अर्बुद, डंक मारने जैसा दर्द (खासकर बाईं ओर), तेज दर्द और यह स्तन-स्थानसे लेकर बगलतक फैल जाता है।

वृद्धि ।—संध्यासे दो-पहर राततक ; गर्म घरमें बैठना या बाईं करवट सोना।

ह्रास ।—हिलने डोलने ; परिश्रम और नदी या समुद्र किनारे जानेपर आराम।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय**—आर्जेण्टम्-नाइट्रिकम,क्यूप्रम, हिपर, आयोड ; फास्फोरस ; सिपि ; स्पञ्जिया।

दोषघ्न ।—ऐमोन कार्ब ; ऐण्टिमोनियम ; कैम्फर।

शक्ति ।—३, ६, ३०, २०० इत्यादि।

ब्रायोनिया ऐलबम्।

(Bryonia Album)

दूसरा नाम ।—ब्रायोनिया बेरा ; वाइल्ड हाप ; ह्वाइट ब्रायोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग ।—संन्यास ; मस्तिष्ककी बहुतसी बीमारियाँ ; मस्तिष्कमें जल सञ्चयकी बीमारी ; मस्तिष्कका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदाह ; सरमें चक्कर आना ; सर-दर्द ; मुँहमें जखम ; नाकसे खून गिरना ; दाँतका दर्द ; मुँहमें पानी भर आना ; दाँत निकलना ; गर्दन अकड़ना ; दमा ; श्वास नलीका प्रदाह ; क्षय कास; सर्दी-खांसी ; फेफड़ेको ढँकनेवाली झिल्लीका प्रदाह ; हूप खांसी ; स्तनसे दूध निकलनेकी गड़बड़ी ; स्तनका प्रदाह ; हृद्-पिण्डका प्रदाह ; उदर और फेफड़ेको अलग करनेवाले पर्देमें आमवात ; आँतोंके आवरणका प्रदाह; पैत्तिक विकार ; यकृतमें विकार ; कब्जियत ; अतिसार ; अजीर्ण ; आन्त्रिक और सान्निपातिक ज्वर ; कितनी ही तरहके उद्भेद ; पाकाशय और आंतोंका प्रदाह ; आंत उतरना या हार्निया ; हिचकी ; कँवल ; ऋतु-स्रावमें गड़बड़ी ; ऋतुकी कमी ; रक्तस्राव ; सूतिकागारकी बीमारी ; सूतिका ज्वर ; कर्कट रोग ; स्फुटाखण्ड रोग ; सविराम ज्वर ; स्वल्पविराम ज्वर ; कमरमें दर्द ; छोटी माता ; वात ; ठुनका ; स्नायु-शूल ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; जल कोरण्ड; पसलियोंका दर्द ; शोथ ; खसड़ा ; उद्भेद बैठ जानेकी वजहसे बीमारियाँ ; प्यास ; पेशियोंका स्नायुशूल ।

उपयोगिता ।—बहुत तेज नई बीमारियाँ जब दब जाती हैं अर्थात् घटने लगती हैं, वही इस दवाका प्रयोग करनेका समय है। वात, सन्धिवात और पैत्तिक धातुवाली प्रकृति। जो बहुत क्रोधी, चिड़चिड़े, सामान्य कारणसे ही बहुत रञ्ज हो जानेवाले ; काली स्त्रियाँ, और दुबली जो सुदृढ़ पेशीवाली हैं, शुष्क और स्नायविक हैं, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। सब श्लैष्मिक झिल्लियाँ और समस्त शरीरका बहुत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक सूखापन इसका एक विशेषत्व है। चलने फिरने या हिलने डोलनेपर जिस किसी बीमारीका रोग लक्षण बढ़ जाये और एकदम आराम करनेपर घट जाये—यह इसका प्रधानतम लक्षण है। गर्म खाद्यका छूना सहन नहीं कर सकता; बैठ नहीं सकता; इससे रोगी बीमार और मूर्च्छित हो जाता है। शारीरिक स्राव आदिका निकलना रुकनेपर रोग बढ़ना। सोने, खासकर दर्द या बीमारीवाली करवट सोनेपर; दबानेपर; सर्दी या सर्द भोजन आदिसे शान्ति प्राप्त करता है। बालक बालिकाएं गोदमें नहीं रहना चाहतीं; कितने ही ऐसे पदार्थ मांगते हैं जो पासमें नहीं हैं, बेजा जिद और देनेपर लेना नहीं चाहते, रोने लगते हैं, झगड़ा क्रोध और दुःख निरानन्द आदि की वजहसे बीमारी; उससे सिहरावन मालूम होना और क्रोधके बाद कपकपी; इसके साथ ही माथा गर्म और चेहरा लाल। ऋतु परिवर्त्तनके समय, शीतके बाद, ग्रीष्म ऋतु लगनेके समय और उत्तप्त कालमें, ठण्डा पीनेका पदार्थ और बर्फ आदिका व्यवहार, ज्यादा सर्दी लगा लेना, बहुत गर्म हो जाने या शरीरके बहुत गर्म रहनेके समय सर्दी लगकर बीमारी होना। ठण्डा अन्धड़ पानी; वायु प्रवाह; रुद्धस्राव; खासकर रज या दूध निकलना अथवा किसी तरहका उद्भेद, छोटी माता, चेचक इत्यादि रुक जानेकी वजहसे बीमारी होनेपर लाभदायक है। सुई बेधने या नोच फेंकनेकी तरह दर्द; साधारण हिलने डोलने, खांसने और साँस लेनेसे बीमारी बढ़ना और एकदम विश्राम और दर्दवाली करवट सोनेपर आराम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलना ; इसके दर्दके लक्षणकी विशेषता है। अत्यन्त प्यास, बहुत देर देरपर ज्यादा परिमाणमें ठण्डा पानी पीना, कब्जियत **पाखाना बिल्कुल ही नहीं लगता,** मानो मलभाण्ड अकर्मण्य हो गया है। मल बहुत बड़ा, सूखा, कड़ा, काला और जले पदार्थ जैसा। प्रलाप, तन्द्रा ; हमेशा अपने दिन भरके काम अथवा व्यवसाय आदिकी बातें करता है। घर लौट जाने की प्रवृत्ति ; बिछावनसे उठकर घर जाना चाहता है। बायें हाथ और पैरको हमेशा हिलाते रहना। मूर्च्छा और मिचली-के भयसे बैठ नहीं सकता। उदरामय—पैत्तिक ; बिदाही ; उससे मलद्वारमें जखम हो जाता है ; ठीक मैले पानीकी तरह पाखाना ; मलमें अजीर्ण पदार्थ निकलना। एकाएक गर्मी पड़ जानेपर ठण्डा शर्बत आदि पीना ; बहुत ज्यादा उत्ताप या फल और खट्टे पदार्थ आदि खानेके कारण पतले दस्त आना और सवेरे जरा चलने फिरनेसे ही बढ़ जाना। स्तन प्रदाह ; स्तनमें पत्थरकी तरह भार और कड़ापन मालूम होना ; स्तन बहुत कड़े और पोले ; उत्ताप और दर्द, किसी तरहसे भी स्तनको किसी चीजके सहारे रखना पड़ता है। जीभ, ओंठ और मुंहमें बहुत सूखापन। **कास रोगकी यह अन्यतम प्रधान दवा है।** बहुत सूखी अकड़नवाली खांसी, उसके साथ ही कै ; बोली रुक जाना और वक्षके बगलमें सुई बेधने जैसा दर्द, सरमें दर्द मानो सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। गहरी श्वास और खाने पीने बाद और गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर बढ़ना इसका विशेषत्व है। इस दवाकी पुरानी अवस्था एलमिना है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रज:रोग बहुत ज्यादा अथवा बहुत थोड़ा स्राव ; रज: रोध ; उसके बदले नाकसे अनुकल्प रज: या रक्तस्राव (विशेषकर रज: उपस्थित होनेपर)

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—ऐकोन ; ऐलूमिना ; चेलिडोनियम ; इग्नेसि ; नक्सवम ; पल्स ; रसटाक्स ; थूजा ।

अनुपूरक ।—रस्टाक्स ; ऐलूमिना ।

तुलनीय ।—ऐकोन ; ऐण्टिमक्रूड ; आर्स ; बेल ; कैल्केरिया ; कैलिकार्ब ; नेट्रम सल्फ ; पल्स ; रस्टाक्स ; रैनानक्यूलस ।

शक्ति ।—६, ३०, २०० ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—बहुत क्रोधी ; चिड़चिड़ा ; क्रोध और निराशाकी वजहसे बीमारी ; घर लौटनेकी इच्छा ; प्रलाप ; दिन भरके काम या व्यवसायकी बातें कहना । बच्चा गोदमें आना नहीं चाहता । ऐसा मालूम हो, मानो नीचे जा रहा है और सब चीजोंके साथ ही घूम रहा है ।

मस्तक ।—उठ बैठनेपर सरमें चक्कर आना ; मिचली ; मूर्च्छा ; सरमें दर्द ; ऐसा मालूम हो, मानो सर झुकानेपर ललाट फट जायगा : कब्जियतकी वजहसे सरमें दर्द, हिलने डोलनेसे बढ़ना ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाक ।—सूजन ; अनुकल्प रजः (रजः स्रावके बदले नाकसे खून जाना) ; सूखी सर्दी ।

कान ।—सुननेमें गड़बड़ी ; बहरापन ; कानमें आवाजके साथ सरमें चक्कर । कानके आगे और पीछे सूजन ; कर्णमूल प्रदाह ; खून जाना ।

मुखमण्डल और मुंह ।—चेहरा उतरा ; मुँहमें नासूर ; तीता स्राव ; जीभ और मुंहके भीतरका स्थान तथा ओठ सूखे ; जीभ सफेद या गाढ़ा पीला लेप चढ़ी ; जखम या त्वचा फटना ; दांतका दर्द ।

गलेमें ।—गलक्षत (गलेमें जखम) ; स्वरभंग ; निगलनेमें तकलीफ, गलेमें कांटा गड़ने जैसा मालूम होना ; गलेमें सङ्कोचन, कफ नहीं निकलता ; ऐसा मालूम होता है, मानो अटक गया है ।

श्वास-यंत्रादि ।—छातीमें मानो किसीने कसकर पकड़ रखा है ; श्वास कष्ट ; तेज और छोटी श्वास क्रिया, अकड़नवाली और बहुत सूखी खांसी ; इसके साथ ही कै और आवाज रुक जाना ; सरमें दर्द ; गर्म घरमें वृद्धि, खांसनेके साथ ताजा रक्त बहना, फेफड़ेका प्रदाह ; श्वासनली प्रदाह, श्वास प्रश्वास यन्त्र आदिकी बीमारी ।

पाकस्थली ।—भोजनके बाद ऊपरी पेटमें भार मालूम होना, ऐसा मलूम हो मानो किसीने पत्थरसे दबा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा है, डकार आनेपर आराम मिलना, जलन करनेवाली प्यास, देर देर पर बहुत सा ठण्डा पानी पीता है, मुंहमें सड़ा स्वाद, पीने या खानेकी चीज बेस्वाद, हिचकी, भोजनके बाद वमन, खाली डकार।

तलपेट।—तलपेट और यकृत प्रदेशमें सुई बेधने जैसा दर्द, सूजन, दर्द और जखम, छूनेसे तकलीफ, यकृत प्रदाह, आँतोंका शूल, उदरी, प्लीहामें ठनक जैसा दर्द, दबाने और खांसनेपर बढ़ना।

मल।—कब्जियत, मल बहुत बड़ा, गुठला, सूखा, काला अथवा झामें जैसा, पर्यायक्रमसे कब्जियत और उदरामय; पेटमें दर्द; मल जलन पैदा करनेवाला, उससे मलद्वारमें जखम हो जाता है; **पाखाना बिलकुल न लगना।**

मूत्र।—गरम; लाल; गदला; थोड़ा; सफेद तली जमती है, जलन पैदा करनेवाला; अनिच्छापर भी पेशाब निकल जाना।

पु०-जननेन्द्रिय।—सुपारी पर लाली, खाज भरे दाने; अण्डकोषमें खींचन और सुई बेधने जैसा दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जल्दी जल्दी रज, वह गाढ़ा लाल रंगका, थोड़ा या अधिक, हिलने डोलने पर बढ़ना, प्रसवके बादका स्राव; स्तनका प्रदाह; रजके बदले नाकसे खून गिरना; जरायुमें भरा हुआ सा मालूम होना। बस्ति-गह्वरमें दर्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृत्पिण्ड ।—बार बार स्पन्दन और सुई बेधने जैसा दर्द ; भरी नाड़ी ।

गर्दन और पीठ ।—पीठकी दोनों अस्थि या अंश-फलकके बीचमें सुई बेधने जैसा दर्द और ठण्डक मालूम होना ।

अंग-प्रत्यंग ।—सन्धिस्थानोंमें सूजन ; लाली ; उत्ताप और प्रदाह ; पैर फूले, कटि या नितम्ब प्रदेशमें दर्द ; जानुकी सन्धियोंका फूलना ; अकड़न ; शोथ ; बायाँ हाथ और बायां पैर हमेशा हिलाते रहना । सीढ़ी चढ़नेपर जाँघोंमें थकन मालूम होना, हमेशा सारा शरीर स्थिर रखना पड़ता है ।

निद्रा ।—दिनमें औंघाई ; जम्हाई आना ; नींद आते न आते चौंक उठना ; नींद खुलनेके साथ ही प्रलाप बकना ; अपने काम काजमें विषयमें कहता है या सपनेमें देखता है ; सपनेमें चलना ।

त्वचा ।—पीली ; कितने ही तरहके उद्भेद या उद्भेद आदिके रुक जानेकी वजहसे कितनी ही तरहकी बीमारियाँ, विकार या प्रलाप इत्यादि ।

ज्वर ।—नित्य आनेवाला ; एक दिनका नागा देकर या दो दिनका नागा देकर आनेवाला अविराम ज्वर ; विराम ज्वर ; सभी समय ज्वर आ सकता है परन्तु सवेरे ज्वर बढ़ना इसका विशेषत्व है ; नियमित समयके आगे या पीछे, दोनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकारके ज्वरका पैदा होना। ज्वरके पहले, कम्पके समय या उत्तापके समय तेज प्यास, माथेमें दर्द, टपक, सरमें चक्कर; सूखी खांसी; यकृत; प्लीहा; वक्षके बगलमें और वक्षमें सुई बेधने जैसा दर्द, **हिलने डोलनेपर सब तकलीफोंका बढ़ना**; इसी वजहसे चुपचाप पड़े रहना, बहुत पसीना; तेल जैसा पसीना; पसीना निकलनेपर उपसर्ग घट जाते हैं। जीभ-पर सफेद या पीला गाढ़ा लेप, मुख शोष, तीता स्वाद; सान्निपातिक ज्वर; नाड़ी पूर्ण; तेज; खींचनका भाव; सविराम।

वृद्धि।—हिलाने, छूने, बैठने, उत्तापसे और उद्भेद या स्राव रुकनेपर वृद्धि।

ह्रास।—विश्रामसे, सोने पर, ठण्डा भोजन और पतली चीजें पीने और दर्दवाली करवट सोनेपर आराम मिलना।

ब्यूफो।

(Bufo).

दूसरा नाम।—टाड या एक तरहका बेंग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—ताण्डव; मृगी; बाघी; कर्कटका जखम; मस्तिष्ककी कोमलता; कृत्रिम या बहुत ज्यादा मैथुनकी वजहसे कितनी ही तरहकी बीमारियां ध्वजभंग; शोथ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्थिक्षय (हड्डियोंका क्षय हो जाना); दुष्ट-व्रण ; हृत्पिण्डकी बीमारियां ; मस्तिष्कका प्रदाह ; अंगुलहाड़ा ; सविराम ज्वर ; गर्भके समय और सूतिकावस्थामें पैरमें सफेद रंगकी सूजन ; महामारी, तोतलाना ।

उपयोगिता ।—स्नायु, त्वचा और जरायुपर इसकी क्रिया अधिक है । असह्य कामोन्मत्तता, इसकी वजहसे बुद्धि विवेकका गायब हो जाना और जहां कहीं रहे अस्वाभाविक उपायसे कामतृप्तिके लिये व्यस्त रहना, या पूरा करना । बहुत शराब पीनेकी इच्छा और पीना और अन्तमें इन्हीं दोनों हीन कामोंकी वजहसे ध्वजभङ्ग । कामेन्द्रियकी विकृतिके कारण अपस्मार या मृगी रोग । रोग होनेके पहले जननेन्द्रियसे एक तरहकी सुरसुरी आरम्भ होकर (aura) धीरे धीरे सारे अङ्गमें फैल जाती है और रोगी चिल्लाकर जमीनमें गिर पड़ता है और इस रोगके आक्रमणके साथ ही सो जाता है । रातमें और निद्रितावस्थामें इसकी वृद्धि होती है । आक्रमणके पहले कितनी ही तरहकी असम्बद्ध बातें बकता है । यदि कोई उस बातको नहीं समझता तो रोगी क्रोधित हो जाता है और दाँत काटनेकी चेष्टा करता है, इत्यादि लक्षणोंमें यह उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।--तुलनीय—बैराइटा कार्ब ; आस्टीरियस ; सैलामिण्ड्रा ।

दोषघ्न ।—लैकेसिस, सेनेगा ।

अनुपूरक ।—सैलामिण्ड्रा ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास-वृद्धि ।—स्नानसे, ठण्डी हवा या गर्म पानीमें दोनों पैर डुबा रखनेपर ह्रास। गर्म घरमें और जागरणसे वृद्धि।

संक्षिप्त लक्षण।

मन ।—स्नायवीय; अधैर्य; बेचैन और दुःखित-चित्त; दाँत काटनेकी प्रबल इच्छा; बहुत चिल्लाना; हमेशा एकान्तमें रहनेकी इच्छा; दुर्बल चित्त।

मस्तक ।—माथेके ऊपरी स्थानमें गर्म भाफ जैसा मालूम होना; मस्तिष्कका सुन्न भाव; सरमें दर्द; लाल मुंहके साथ नाकसे रक्तस्राव; सवेरे भोजनके पहले सरमें दर्द और नाकसे खून गिरनेपर आराम।

आंखें ।—चमकीली रोशनी या चीजकी ओर देख नहीं सकता। आँखोंमें छोटे छोटे छाले उत्पन्न होते हैं। आँखें ऊपरकी ओर घूमती हैं।

कान ।—गाना बजाना सह नहीं सकता; थोड़ी आवाजसे भी कष्ट मालूम होना।

पाकाशय ।—दूध पीनेपर शूल वेदना; सड़ी गन्ध जैसा डकार।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—आप ही आप धातु पात; ध्वजभङ्ग, हस्तमैथुन आदिकी तीव्र इच्छा; रमण कालमें बहुत जल्दी रेतःपात, अकड़न और खींचन; बाघी; इन्द्रियको बार बार हाथसे हिलाना; मैथुनका बुरा फल या मृगी इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत जल्दी जल्दी रजःप्रकाश और बहुत ज्यादा स्राव। रजःस्रावके समय मृगी रोगका आक्रमण ; कामोत्तेजनाके साथ मृगी ; पानी जैसा प्रदर स्राव ; स्तन ग्रन्थिका कड़ापन ; जरायु ग्रीवामें जखम और बदबूदार स्राव ; जरायुमें अर्बुद और बहुपाद ।

अंग-प्रत्यंग ।—हाथ पैर सुन्न हो जाना ; दद : अकड़न ; चलनेके समय पैर डगमगाना ; हड्डियोंकी सूजन ; ऐसा मालूम हो मानो सन्धियोंमें कोई कांटा ठोंक रहा है ।

त्वचा ।— अँगुलहाड़ा ; बहुत दर्द, बांहमें ऊपरकी ओर दर्दका फैलना ; हाथमें छाले ; थोड़ी चोटमें हो पीव पैदा हो जाना ; हाथ और पैरके छाले फटकर क्लेदकी तरह रस बहना ; जलन ; त्वचा पोली और विस्फोटक भरी ।

शक्ति ।—३, ३०, २०० इत्यादि ।

कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस ।

(Cactus Grandiflorus).

दूसरा नाम ।—सिरियस ग्रैण्डिफ्लोरस ; नाइट ब्लूमिङ्ग सिरियस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—संन्यास, मस्तिष्कमें खूनकी ज्यादती ; सरका दर्द ; कानका प्रदाह ; शोथ ; गलगण्ड ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृद्शूल , हृद्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ ; धमनीका अर्बुद ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; फेफड़ेसे रक्तस्राव ; फेफड़ेका प्रदाह ; उदर और छातीको अलग करनेवाली पेशीका आमवात ; अजीर्ण ; मूत्राधारका पक्षाघात ; बहुमूत्र ; रक्तस्राव ; कष्टरजः ; डिम्बाधारका प्रदाह ; स्नायुशूल ; योनिपथका स्नायुशूल ; वात ; सूर्यका ताप लगना ; नासूर ; सविराम ज्वर ; विषाद ; चोट वगैरहकी वजहसे बोखार ।

उपयोगिता ।—हृत्पिण्ड और रक्त-संचालनपर इसकी क्रिया अधिक है। रक्तप्रधान धातुवालोंको नाना प्रकारसे रक्तकी अधिकता ; अन्तमें रक्तस्राव होना । नाक ; फेफड़ा ; पाकस्थली ; मलद्वार ; मूत्राधार वगैरह स्थानोंसे खून जाना ; बहुत ज्यादा मृत्युभय, ऐसी धारणा कि रोग आराम न होगा ; समस्त शरीर ऐसा मालूम हो मानो पींजड़ेमें बन्द हो और बहुत कठिनतासे दबाया या मरोड़ा जाता है। हृद्पिण्ड, वक्ष, गला, मूत्रस्थली, मलद्वार, जरायु, योनि वगैरह यंत्रोंमें बहुत कड़ा बन्धन या चिपक जानेके जैसा मालूम होना, जरा छूनेसे ही उसकी वृद्धि ; हृद्पिण्डकी बहुत सी बीमारियाँ—ऐसा मालूम हो मानो लोहेकी तरह कड़े हाथसे वह निचोड़ा जा रहा है और स्पन्दनकी जगह नहीं पाता । छातीमें बहुत दबाव मालूम होना, मानो एक पत्थरसे दबाया हुआ है और लोहे जैसा हाथ स्पन्दनमें बाधा डाल रहा है । वक्षके निचले अंशके चारों ओर ; ठीक वक्ष और उदरको अलग करनेवाली पेशीके प्रदेशमें कोई डोरीसे कसकर बाँध रहा है, ऐसा मालूम होना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन रात कलेजेमें धड़कन और भ्रमणसे, बाएँ करवट सोनेपर और मासिक रजस्राव होनेके समय उसका बढ़ना ; सरमें दर्द, उसके साथ ही रक्तकी अधिकता, बहुत तकलीफ देनेवाला टपकका दर्द और फड़कने जैसा दर्द, यह दर्द ठीक बँधे समयपर पैदा होता है, खासकर दाहिनी ओर। खोपड़ीमें ऐसा मालूम होना मानो कोई भारी चीज़ दबाई हुई है। शरीरमें कितने ही स्थानोंपर बहुत तेज़ और तुरन्त फैल जानेवाला चिलक मारने जैसा दर्द, सड़सीसे कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द—यह दर्द खूब तेज़ हो जाने बाद घटता है। रजःस्राव, सो जानेपर यह घट जाता है या बन्द हो जाता है। ज्वर—रोज़ दिनके ११ बजे और रातके ११ बजे आता है। तेज शीत, सरमें दर्द और प्यास, पर पसीना नहीं रहता, वगैरह रोगलक्षणोंमें यह हमेशा उपयोगी है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—ऐकोन ; चायना, इकुसट ; डिजिटि, (शोथ) ; इस्कुला ; लैकेसि ; नक्सवोम ; सलफर।

तुलनीय।—मानसिक लक्षणोंमें डिजिटे ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकतामें बेलाडो। ग्लोनोइन ; मस्तिष्कमें दबाव और दर्द—आर्निका, कार्बोविज, नक्स-वम, स्पाइजि ; हृदपिण्डकी क्रियामें ऐकोन, आर्निका, डिजिटि, लैकेसि, नैजा, पल्स, स्पाइजि ; हृदपिण्डकी उत्तेजनामें हिपर, फास्फोरस ; संध्याके समय ऋतुस्राव बन्द होनेके लक्षणमें कैप्सिकम ; शोथमें डिजिटे ; अनिद्रामें सलफर ; टपक जैसे दर्दमें ऐकोन इत्यादि।

शक्ति।—६, ३०, २०० इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—उदास ; मौन-भाव ; व्याधिकी शंका ; रोनेका कारण समझमें नहीं आता ; सान्त्वना देनेपर रोना बढ़ता है ; मृत्युभय ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; दबाव जैसा दर्द ; खोपड़ीमें मानो एक भारी चीज दबा रखी है ; स्नायुशूल ।

नाक ।—बहुत ज्यादा रक्तस्राव ।

गलेमें ।—संकोचन और जीभका सूखापन ।

श्वास-यंत्र और हृद्पिण्ड ।—छातीमें भार और दबाव मालूम होना ; मानो कोई लोहेके बन्धनसे उसका फैलना और सिकुड़ना रोक रहा है। टहलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्ड फैल और सिकुड़ रहा है। कलेजा धड़कना ।

पाकाशय और आंत । – रुका हुआ भाव ; टपक ; बहुत खून कै करना ; तलपेटमें दर्द ; पाकाशय और आँतोंमें दर्द । मलद्वारमें भार और खुजली , मलद्वारसे बहुत ज्यादा रक्तस्राव, बवासीरके मसेमें दर्द और सूजन ।

मूत्र-यंत्र ।—मूत्राशयकी ग्रीवाका संकोचन, स्रावका रुक जाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जननेन्द्रिय ।—जरायु और डिम्बाधारके स्थानमें संकोचन मालूम होना ; बाधक और रजःकृच्छ्रता ; आठ दिन बाद ही ऋतु हो जाय, ऋतुके समय कलेजा धड़कना ।

निद्रा ।—कितने ही स्थानोंमें टपक जैसा दर्द ; डरावने सपने देखना ।

ज्वर ।—पीठ और दोनों हाथ बरफ जैसे ठण्डे ; सविराम ज्वर ; दिनके ११ बजे या रातके ११ बजे ज्वर ; श्वास-कष्ट ; बहुत पसीना और प्यास ।

कैडमियम सल्फ्यूरिकम ।

(Cadmium Sulphuricum).

अन्य नाम ।—सल्फाइड् आव कैडमियम ; कैड्मिक सलफेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—संन्यास ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; आँखोंकी बहुत-सी बीमारियाँ ; आँखके कोयेकी अस्वच्छता ; नाकका बहुपाद ; नकसीर ; मुँहकी पेशीका पक्षाघात ; चेहरेका स्नायुशूल ; खसड़ा ; गर्भावस्थामें वमन ; बच्चोंका हैजा ।

उपयोगिता ।—पाकस्थलीकी बीमारीसे इसका विशेष व्यवहार होता है । मिचली ; वमन, उसके साथ ही आवाज रुक जानेका भाव ; कड़े श्लेष्माकी 'तरह पदार्थका उगलना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी विशेषता है काले काले पदार्थ कै करना। रोगके समय आराम करना और स्थिर भावसे (ब्रायो) रहना चाहता है। पाकस्थलीमें बहुत उत्तेजना और सुस्ती (आर्स) अतएव, ब्रायोनिया और आर्सेनिकका लक्षण जहाँ मिला रहता है, वहाँ इसका प्रयोग होता है। जाड़ेसे कातरता, आगका उत्ताप रहनेपर भी शीत मालूम होता है। कुछ पीने बाद शरीरमें रोमांच हो आना; सर्दीसे खुजलीका बढ़ना वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

ह्रास-वृद्धि।—धूपमें; सवेरे; नींद आनेके बाद; टहलनेपर; सीढ़ी चढ़नेमें; दिनमें; शराब पीने या भोजनके बाद बढ़ना; खुजलानेपर बहुत कुछ घट जाता है।

सदृश।—कैडमियम ब्रोम।

सम्बन्ध।—जिङ्कम (मस्तिष्कमें); इपिकाक, टैबाकम (मिचली और कै); ग्रिण्डिलिया, लैकेसिस (नींदके समय सांस रुक जाना बढ़ना); बेलेडोना (टकटकी लगाकर देखना और सर हिलाना)।

शक्ति।—३, ६ और ३० इत्यादि।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—किसीके पास आनेपर डर लगता है; (आर्स, लैकेसिस) होश न रहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक आदि ।—मानो घर और शय्या आदि घूम रही है ; सरमें चक्कर आना ; सरमें उत्ताप मालूम होना ; मस्तकमें मानो कोई हथौड़ीसे चोट पहुँचा रहा है ।

नाक ।—नकसीर (ozoena) ; नासाव्रण ; बहुपाद (polypsus) ; नाककी हड्डीका जखम ।

आंख ।—एक आँखकी पुतलीका फैलना और दूसरी आँखकी पुतलीका सिकुड़ना ; रतौंधी ; आँखके कोयेका गदला-पन ; आँखोंके चारों ओर नीलापन ।

कान ।—भ्रम सुनना और भ्रम देखना पर्यायक्रमसे प्रकट होता है या सभी शब्द कानमें प्रतिध्वनित होते हैं ।

मुखमण्डल ।—मुँहकी बिगड़ी हुई भावभंगी ; जबड़े अटक जाना ; मुंहकी पेशीका पक्षाघात ।

मुंहके भीतर ।—मुंहमें संकोचन मालूम होना ; अन्ननलीके संकोचनकी वजहसे निगलनेमें कष्ट ; डकार और स्वाद नमकीन ।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्डके संकोचनकी वजहसे हृद्-कम्पन ।

पाकाशय ।—पेटके ऊपरी प्रदेशमें दबानेपर सफेद दाग पड़ने जैसा मालूम होना ।

आँतें ।—पेट फूलना ; रक्तमिला, काला या बदबूदार मल, इसके साथ ही पेशाब रुक जाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा ।—नीली, पीले रंगकी ; त्वचाका रंग बदरंग और सरस।

निद्रा ।—आँखें खोलकर सोता है, निद्रावस्थामें हँसता है या रोता है।

कैजुपुटम।

(Cajuputum).

अन्य नाम ।—तेजपत्ताका तेल। ओलियम-विट-निबियानम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट।

उपयोगिता ।—सरमें चक्कर ; मृगी ; स्नायविक सब दर्द ; मूर्च्छा वायु ; मूर्च्छा ; दन्तशूल ; शोथ ; छातीमें जखम ; हिचकी ; पक्षाघात ; बहरापन ; जीभकी बीमारी ; सन्धिवात ; छोटी सन्धियोंका वात इधर उधर स्थान बदला करता है। रातके समय उदरामय ; कितनी ही तरहसे ऋतुमें गड़बड़ी ; श्वास क्लेश ; बहुत पसीना निकलना ; स्नायुमें विकारकी वजहसे दमा ; पेट फूलना ; सब चीजें बड़ी मालूम होना ; मानो शरीर टुकड़े टुकड़े होकर अलग पड़ा है, उन्हें जोड़ नहीं सकता ; सारा शरीर सुन्न मालूम होना। रोग लक्षणका एकाएक बढ़ना और घटना ; रातमें बढ़ना, स्नायविक या मूर्च्छा वायुसे पैदा हुआ श्वास-कष्ट वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—सब चीजें बड़ी मालूम होना, शरीर खण्ड खण्ड भावसे अलग पड़ा है। एक साथ जोड़ नहीं सकता।

मस्तक ।—सर बहुत बड़ा समझता है, मानो शरीरसे अलग है और जोड़ नहीं सकता।

मुंहके भीतर ।—लगातार श्वासरोध जैसा मालूम होना; गल-कोषमें खींचन और अकड़न; ऐसा मालूम हो मानो जीभ फूलकर समूचा मुंह भर गया है।

पाकस्थली ।—थोड़ी-सी उत्तेजनासे भी भयंकर हिचकी।

उदर ।—पेट फूलना, पेट फूलनेकी वजहसे शूल-वेदना, स्नायवीय कारणसे पेट फूलना, बिल्लीके पेशाब जैसी गन्धवाला पेशाब, अकड़न मिला हैजा।

वृद्धि ।—रातमें और सवेरे ५ बजे।

सम्बन्ध ।—सदृश—वोविष्टा (वृद्धि-अनुभव), कोलचिकम (वात), प्लैण्टैगो (दाँतका दर्द) इत्यादि।

शक्ति ।—३री और ६ठीं शक्ति व्यवहृत होती है।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैलेडियम।

(Caladium)

अन्य नाम।—कैलेडियम सेगुइनम, एरम सेगुइनम, डम्बकेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—योनिमें खुजली ; ध्वजभंग ; कामोन्माद ; प्रमेह ; उत्तेजना ; दमा ; शोथ ; सान्निपातिक अवस्था ; कृमि ; मोहज्वर।

उपयोगिता।—श्लैष्मिक झिल्लीपर इसकी क्रिया अधिक है। शिथिल पेशी और श्लेष्मा प्रधान धातु, बहुत ही स्नायवीय, आवाज या गड़बड़ी जरा भी सहन नहीं होती, जरासी बातमें नींदसे चौंक उठता है। पुरुष और स्त्री—दोनों की ही जननेन्द्रियकी बीमारीकी एक बढ़िया दवा है। ध्वजभंग—इसके साथ ही बहुत मानसिक अवसाद। लिङ्गकी बहुत शिथिलता, पर बहुत अधिक उत्तेजना और रतिक्रियाकी तेज़ इच्छा, इतनी शिथिलता कि स्त्री आलिङ्गनके समय भी लिङ्गेन्द्रियमें कड़ापन नहीं आना, या सङ्गमके समय धातुपात बिलकुल ही नहीं होना। स्त्री-जननाङ्गमें उद्भेद और बहुत खुजली (खासकर गर्भके समय)। इसके साथ ही श्लेष्माकी तरह स्राव निकलना। छोटी कृमि घुस जानेकी वजहसे खुजली। दोनों ही कारणोंसे इतनी खुजली कि कामो-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्मत्तता पैदा हो जाती है और मैथुन करनेके लिये बाध्य होती है। शामके समय ज्वर और बोखारके साथ औंघाई, ज्वर घटनेपर नींद खुलती है। बहुत पसीना ; पसीनेमें मीठा स्वाद ; इतना मीठा कि चींटी और मक्खी लगती है। मच्छड़ या दूसरे कीड़े काटनेकी वजहसे बहुत खजली और जलन। हमेशा सोये रहनेकी इच्छा। हिलने डोलनेमें अत्यन्त भय और अनिच्छा वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। इन लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

ह्रास-वृद्धि।—गर्मी और हिलने डोलनेपर बढ़ना। पसीनेके बाद नींद आनेपर और ठण्डे पसीनेसे आराम।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कैप्सिकम ; कास्टिकाम ; इक्षुगन्धा ; लाइको ; फास्फोरस ; सेलिनियम, (जननेन्द्रियके उपसर्ग आदि)। यह मार्कसोलका दोषघ्न है। नाइट्रिक एसिड इसका अनुपूरक है।

शक्ति।—६, ३०, २०० इत्यादि।

कैल्केरिया-ऐसिटिका।

(Calcarea Acetica).

दूसरा नाम।—बिना साफ किया हुआ चूना। अविशुद्ध कैलसियम ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—नकली पर्दा मिला स्वासनलीका प्रदाह; कर्कट (कैन्सर) रोगका दर्द; मलद्वारमें खुजली; सरमें दर्द; सरमें चक्कर आना; झिल्ली मिला बाधकका दर्द।

उपयोगिता।—श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह और उसमें नकली झिल्ली या पर्दा पैदा हो जानेकी बहुत बढ़िया दवा है। इसके अलावा दूसरे दूसरे रोग लक्षण साधारण "कैल्केरिया कार्ब के" अनुसार हो हैं। मुंहमें खट्टा स्वाद; खट्टा पानी भर आना; खट्टी डकार; खट्टी गन्ध लिये दस्त इत्यादि इसको बतलानेवाले लक्षण हैं। मलद्वारमें खुजली; बाधक, खांसी कर्कटका जखम, एक अङ्ग या एक पार्श्वका दर्द, लाल आँखें और आंखोंसे आंसू बहना प्रभृति लक्षणोंपर उपयोगी है।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—बहुत चिन्ता; मानो कोई अपराध किया है। बात सुननेका भय।

मस्तक।—सरमें दर्द; सरमें चक्कर आना; वायु सेवन और भ्रमणके समय सरमें चक्कर आना; खोपड़ीमें खुजली।

आँख।—आँखें लाल और आंसू बहना।

नाक।—सर्दी न रहनेपर भी बार बार छींक। छींकके साथ पानीकी तरह सर्दी बहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकाशय।—खट्टी डकार; बार बार हिचकी।

श्वासयंत्र।—वायुनली-प्रदाह; वायुनलीमें नकली पर्दा; घड़घड़ाहट; श्लेष्माके बड़े बड़े जमे टुकड़े निकलना।

जननेन्द्रिय।—बार बार पेशाब; रेतस्खलन।

अङ्गप्रत्यङ्ग।—कलाईके कुछ ऊपर और बाईं जांघकी फलकास्थिमें मोच खाने जैसा दर्द। बाएँ कोखकी गांठ फूलना।

ज्वर।—नित्य सवेरे बोखार और पसीना।

सम्बन्ध—सदृश।—ब्रोमियम; बोरेक्स।

शक्ति।—६, ३०, २०० इत्यादि।

कैल्केरिया आर्स।

(Calcarea Arsenicum).

दूसरा नाम।—आर्सेनाइट आव लाइम; कैलसाई आर्सेनिका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—हृद्पिण्डकी बीमारी; कलेजा कांपना; सरमें दर्द; मृगी; धमनीमें खूनका दबाव एकत्र होना; यक्ष्माकास; दमा; यकृतकी शीर्णता; यकृतकी बहुत सी बीमारियाँ; क्लोमयन्त्रकी बीमारी, क्लोमका कैन्सर या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्कटका जखम ; अम्लरोग ; कब्जियत पाकस्थलीका जखम ; अजीर्ण ; पेट फूलना ; मूत्राधारकी बीमारी ; अण्ड लाल मूत्र ; हैजा ; बहुत तरहके अर्बुद ; चर्बीका बढ़ना ; शोथ ; सान्निपातिक ज्वर।

उपयोगिता।—बहुत मानसिक अवसाद ; कोई मानसिक उत्तेजना सहन नहीं होती ; बहुत थोड़ी उत्तेजनासे तेज हृत्स्पन्दन या टपक पैदा हो जाती है। मस्तक और छातीके बाईं ओर रक्तका दौरान ; हृद्रोगकी वजहसे मृगी ; शराब पीना छोड़नेकी वजहसे कितने ही उपसर्ग या सुरा पानकी तेज इच्छा ; वयःसन्धिके समय मोटी थुलथुल स्त्रियोंकी कितनी ही तरहकी बीमारियाँ वगैरह लक्षणोंकी यह बढ़िया दवा है। **बच्चोंकी प्लीहा और यकृतकी बीमारीमें** खासकर फायदा होता है। सरमें दर्द ; अधकपारीका दर्द ; स्वल्प विराम ज्वर ; क्षय ज्वर ; रातमें आनेवाला बोखार ; अण्ड लाल मिला पेशाब ; शिरा और धमनीमें रक्त जमना (विशेषकर हैजा रोगमें) ऐसे जमे रक्तकी वजहसे हृत्पिण्डमें कष्ट या सांस रुक जाना वगैरह लक्षणोंमें हमेशा उपयोगी है।

सम्बन्ध।—आर्स (शराब पीना और पाकाशयका जखम) ; ग्रैफाइटिस (स्थूलता) ; इपि (दमा) ; लिथि-कार्ब (मन और हृदयका कांपना) ; लिथि-ऐसिड (हृद्पिण्ड); पल्स ; सिपी ; सलफर (सरका दर्द)।

शक्ति।—६, १२, ३०, २०० इत्यादि।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैल्केरिया-कार्बोनिका।

(Calcarea Carbonica).

अन्य नाम।—कैलसियम-कार्बोनेट आव लाइम; कैल्केरिया आस्ट्रेरम इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—सरमें चक्कर आना; सरमें दर्द; मृगी; बेहोशी या गुल्म वायु; ताण्डव; मदात्यय रोग; व्याधि-शंका; विषाद; मस्तिष्कमें जल संचय; मस्तिष्कमें चर्मरोग; बच्चोंको दूधिया फोड़ा; नेत्र-रोग आदि; आँखोंमें जाला; कर्णमूलका प्रदाह; कानसे स्राव; नाकका अर्बुद; गन्ध ठीक न आना; तालुमूल बढ़ना; बच्चोंको दांत निकलनेके समयकी बीमारी; चेहरेका स्नायुशूल; हजामतका जखम; जीभकी जड़का अर्बुद; स्वादमें गड़बड़ी; दाँतोंका शूल; दाँतोंकी बहुतसी बीमारियाँ; गण्डमाला; सर्दी; स्वरनलीका प्रदाह; पत्थर काटनेकी वजहसे यक्ष्मा; खांसी; धुंड़ो खांसी; गुटिका दोष; शिराओंकी बीमारी; रक्तकी कमी; स्तनकी विकृति; अतिसार; अजीर्ण; अन्त्र आवरणका प्रदाह; आंत उतरना; मध्य आँतकी बीमारी; सान्निपातिक रोग; क्रमि; मेद वृद्धि; शोथ; ज्वर; स्नायविक ज्वर; स्नायुशूल; पक्षाघात; रातमें डर जाना; आमवात; अस्थिका टेढ़ापन; पित्त अश्मरी या पित्त पथरी; मूत्ररेणु या अश्मरी और इसी वजहसे दर्द; जरायुकी बीमारी; गर्भावस्थाकी बीमारी; श्वेत प्रदर; मासिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुस्रावमें गड़बड़ी, गर्भ-स्राव; नकली मैथुनकी वजहसे बढ़ना: बीमारी; ध्वजभङ्ग; प्रमेह: बहुमूत्र; ग्रन्थि-विकृति; गांठोंका बहुत ज्यादा बढ़ना; पसीना; अङ्गुलहाड़ा; दाद; मसे; गृध्रसी या कटिवात; नासूर; आँतोंका बढ़ना या हर्निया; नींद न आना; मेरुदण्डकी बहुतसी बीमारियां।

उपयोगिता ।—जिनमें सोरादोष है, गण्डमाला और श्लेष्मा प्रधान धातु, कोमल स्वभाव, स्थूल देह, थोड़े केश, गोरा रंग, माथा और पेट बड़ा; तली और हाथ पैर पतले, अच्छी तरह पोषण न होना; गर्दन और बिचली आंतके भीतरकी ग्रन्थि फूली; सहजमें ही बहुत पसीना होता है, सर्दी एकदम सहन नहीं होती और कब्जियत वाली अवस्थामें जो रोगी अच्छा रहता है, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। जिन बालक बालिकाओंका चेहरा लाल; मांसपेशियां शिथिल; माथा और पेट बड़ा; ब्रह्मतालु खुला; हड्डियां कोमल और धीरे धीरे बढ़ती हैं; साधारण या बहुत ही सामान्य कारणसे बहुत पसीना होने लगता है, नींदके समय बहुत पसीनेकी वजहसे तकिया भींग जाती है, दांत निकलनेके समय बहुत तकलीफ होती है, या देरसे दाँत निकलता है; चलना देरसे सीखता है, उम्रकी अपेक्षा बहुत जल्दी ज्यादा ज्यादा बढ़ता है, उनके लिये यह बहुत ही उत्तम दवा है। हड्डियां खासकर मेरुदण्ड और बड़ी हड्डियां टेढ़ी; अन्तिम भाग सीधा नहीं और टेढ़ा या विकल; हड्डियोंका निर्माण अनियमित भावसे हो। शरीरके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने ही स्थानोंमें जैसे मस्तक, पाकस्थली, उदर या पैरका तलवा इत्यादिमें ठण्डक ; ठण्डी या शीतल हवामें अच्छा न लगना ; सामान्य कारणसे ही सर्दी लग जाती है । शरीरका भिन्न भिन्न अंश अर्थात् माथा, गर्दन, छाती, बगल, जननेन्द्रिय, घुटने, हाथ और पैरमें बहुत पसीना । पसीनेकी वजहसे पैर और पैरके तलवेमें जखम और फुन्सियाँ, पैरके पसीनेमें बहुत बदबू । रोग-कालमें या आरोग्य होनेके समय अण्डा खानेकी बहुत इच्छा ; या जो पदार्थ सहजमें नहीं पचते उन्हें और खड़िया मिट्टी, कोयला इत्यादि खानेकी इच्छा । निर्मल वायु सेवनकी प्रबल इच्छा ; उससे शारीरिक बल और सजीवता प्राप्त करता है । अम्लरोग, समस्त परिपाक यन्त्रका खट्टा हो जाना ; खट्टी डकार ; खट्टी कै ; खट्टा मल, यहां तक कि समस्त शरीरसे खट्टी गन्ध आने लगती है । ठीक ठीक परिपोषण न होना ; हड्डियोंका ठीक ठीक निर्माण न होना या पसीना रुक जानेकी वजहसे कितनी ही तरहकी बीमारियाँ । बहुत ज्यादा रजःस्राव, स्राव बहुत जल्दी जल्दी हो और बहुत दिनों तक होता रहे । इसके बाद स्वल्परज (थोड़ा स्राव) या रजोरोधके (एकदम स्राव रुक जाना) साथ बहुत ही तेज रक्तहीनता या मृत्पाण्डु रोग पैदा हो जाना । दोनों पैर बहुत ठण्डे, मानो ठण्डा और तर मोजा पैरमें पहन रखा है, शय्याको भी इसी तरह लगातार ठण्डी समझना । बहुत थोड़ी मानसिक उत्तेजना-से भी बहुत अधिक रजःस्राव होता है । लम्बा शरीर, पतला और उम्रकी अपेक्षा ज्यादा बढ़नेवालोंकी फेफड़ेकी बीमारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(खासकर दाहिने फेफड़ेके ऊपरी तृतीयांशमें), पाकस्थली उल्टो, थाली जैसी फूली और दबावसे बहुत दर्द। ठण्डा, भीजा स्थान या ठण्डे पानीमें खड़े होकर काम आदि करने की वजहसे या ठंडी मिट्टीमें काम करनेकी वजहसे मूत्र-विकार या दूसरी दूसरी बीमारियां। दूध सहन नहीं होता, छोटे छोटे दहीके टुकड़े या दहीकी तरह कै हो जाती है। सीढ़ी नहीं चढ़ सकता या ऊपर नहीं जा सकता; इससे सब रोग लक्षण बढ़ जाते हैं। पित्त-पथरी; पथरीका शूल; स्वप्नदोष; यक्ष्मा रोगकी पहली अवस्था; खांसी; गलेमें मानो किसी पक्षीका पर अटका हुआ है, ऐसी सुरसुरी मालूम होना; गाढ़ा कफ; गले और छातीमें घड़घड़ाहट। जरायु प्रदाह; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना; प्रदर। नींदके समय चिबाता और कुछ निगलता है, इस ढङ्गका मुंह बनाना। पक्षाघात; अङ्गोंका सुन्न हो जाना और ऐसा मालूम होना मानो कोई कीड़ा रेंग रहा है। पेटमें दाहिनी ओर गड़गड़ाहटकी आवाज। मसे और बहुपाद वगैरह कितनी ही बीमारियोंके लक्षणमें यह ज्यादा उपयोगी है।

ह्रास वृद्धि।—पूर्णिमाको, ठण्डी हवामें, तर धातुमें, ठण्डे पानीमें, सबेरे और ठण्डा पानीसे धोनेपर बढ़ना। सूखी ऋतुमें, गरममें और दर्दवाली करवट सोने तथा निर्मल वायुके सेवनसे उपशम।

सम्बन्ध।—अनुपूरक; बेलेडोना (यह नयी अवस्थामें)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न।—कैम्फर; इपि; नाइट्रि-एसि, नक्स-वम, सलफर।

सदृश।—**तुलनीय**—लाइको, नकस-वम। फास्फो-रस, साइलि वगैरहके पहले यह बढ़िया काम करता है। नाइट्रि-ऐसि और सलफरके पहले इसे कभी व्यवहार न करना चाहिये। व्यवहार करनेपर कितने ही अस्वाभाविक उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। बच्चे और बालक बालिकाओंको बीमारीमें बार बारका प्रयोग चल सकता है, पर अवस्था प्राप्त मनुष्योंको बीमारीमें विशेषकर पहली बार प्रयोग करनेपर यदि कुछ लाभ दिखाई दे तो फिर प्रयोग न करना चाहिये।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—हमेशा आशंकापूर्ण; मनमें समझता है, कि बुद्धि खराब हो जायगी; ज्ञान चला जायगा या दुर्भाग्य, दुर्घटना और संक्रामक बीमारी होगी, संध्याके पहले यही चिन्ता अधिक रहती है। भूल जानेवाला; एकांगी भाव, मानसिक परिश्रमसे सर गर्म हो जाता है; कार्यमें जी न लगना; उत्कण्ठाके साथ कलेजा धड़कना।

मस्तक।—मस्तकके सिरेपर भार मालूम होना; सर दर्दके साथ साथ पैर ठण्डे, सर घुमाने या ऊंचे चढ़नेपर सर घूमना। मानसिक परिश्रमसे या जोर लगाकर कुछ उठानेपर सरमें दर्द और मिचली। चेहरा पीला—माथा गर्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारी मालूम होना। माथा और उसके भीतर खासकर दाहिनी तरफ बरफ जैसी ठण्डक मालूम होना। ब्रह्मरन्ध्र खुला और बहुत ज्यादा पसीना, खुजली।

आंखें।—रोशनी सहन न होना; सवेरे और खुली हवामें आंसू बहना, कनीनिकामें दाग और जखम, पलकोंमें खुजली और सूजन, दृष्टि धुंधली, पुतलीका फैलना, जाली पड़ना, अश्रुग्रन्थियोंमें नासूर।

कान।—टपक, खौलने जैसा दर्द, जखम, बहुपाद और उससे सहजमें ही खून निकलना, बहरापन, पानीमें काम करनेपर गण्डमालाके प्रदाहकी वजहसे कानसे श्लेष्मा और पीव बहना, उसके साथ ही ग्रन्थियोंका फूलना, कान और उसके पीछे फुन्सियाँ, कट कट शब्द सुन पड़ना।

नाक।—नाक सूखी; नाकमें जखम; बदबूदार पीला स्राव; बहुपाद; रक्तस्राव; सर्दीका स्राव।

श्वासयन्त्र।—गलेमें सुरसुरी जैसी खांसी; सूखी और रातमें वृद्धि; सवेरे सहजमें ही कफ़ निकलना; कफ थोड़ा; नमकीन और खूनसे भरा; श्वासमें बहुत तकलीफ; बिना दर्दका स्वरभंग; खांसनेके समय दम अटक जानेका भाव; सट जाने जैसा मालूम होना; छातीमें जलन और जखम जैसा मालूम होना। केवल दिनके समय कफ निकलता है; वह गाढ़ा, पीला और खट्टा। निर्मल वायु सेवनकी इच्छा। कलेजा कांपना; रातमें और भोजनके बाद कपकपी या उद्वेद आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दब जानेकी वजहसे खांसी और कपकपी। सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना।

मुखमण्डल और मुहमें।—ऊपरी ओंठमें सूजन। पीला रंग; आँखोंके चारो ओर काला दाग, गलगण्ड; लगातार खट्टा स्वाद; रातमें जीभ और मुखमें शोष, मसूढ़ेसे खून बहना; कष्टसे और देरसे दाँत निकलना; मुंहमें बदबू; जीभके अगले भागमें बहुत जलन पैदा करनेवाला दर्द, निगलनेमें तकलीफ।

पाकस्थली।—मांस या सिझाये हुए पदार्थसे घृणा; नहीं पचनेवाली चीजें जैसे, खड़िया मिट्टी, पेन्सिल, अण्डा, नमक और मिठाई खानेकी इच्छा। दूध सहन नहीं होता और दूधसे अनिच्छा; हमेशा खट्टी डकार; खट्टी कै; घी या चर्बीके खाद्यसे अनिच्छा।

तलपेट।—पेट फैला; पेट फूलना; पित्तशूल; झुकनेपर यकृत प्रदेशमें दर्द; पेट फूला; नाभि-प्रदेशमें आँतोंका बढ़ना; कम्पन और क्लान्ति।

मल।—मलनालीमें कीड़े चलने जैसा मालूम होना; दर्द, सफेद और कड़ा मल; अतिसार, मल—पतला, हरा, पीला और अजीर्णकी तरह, उसमें खड़िया मिट्टीकी तरह सफेद पदार्थ और खट्टी गन्ध। मल पहले कड़ा, इसके बाद नरम, अन्तमें पानी जैसा पतला।

मूत्र।—बहुत ज्यादा, काला—या गदला, खट्टी गन्ध मिला, बदबूदार, सफेद तली जमती हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुं०-जननेन्द्रिय।—बार बार वीर्यपात और स्वप्न-दोष, तेज़ कामेच्छा, जल्दी जल्दी वीर्यपात, रतिक्रियाके बाद बहुत कमजोरी और उत्तेजित भाव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजस्रावके पहले सरमें दर्द, शूल-वेदना, जाड़ा लगना, प्रदर, रजःस्रावके समय जरायुमें दर्द, सरमें चक्कर आना, आँतमें दर्द, जल्दी जल्दी बहुत ज्यादा स्राव हो जाना और बहुत दिनोंतक स्थायी। सहजमें ही जरायुका अपने स्थानसे हट जाना, दूधकी तरह प्रदर। रजःस्रावके पहले और बाद अपत्य-पथमें जलन और खुजली, कम उमरवाली बालिकाओंका प्रदर, प्रबल कामेच्छा, सहजमें ही गर्भाधान, स्तनोंका फूलना, दर्द और तकलीफ़, जरायुका बहुपाद।

अङ्ग-प्रत्यङ्गादि।—पानीमें भींजनेके कारण आमवात, सन्धिवात, पैर ठण्डे, मानो पैरमें ठण्डा तर मोजा पहिना हुआ है, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें कमजोरी, घुटने ठण्डे, पैरकी एंड़ीमें अकड़न, पैरका पसीना खट्टा, सन्धियोंका सूजना (विशेषतः घुटना), पैरके तलवेमें ज़खम, हाथमें पसीना, तलवेमें ज़खम, मांसपेशियोंको नोच फेंकने जैसा अनुभव, ऐसा दर्द मानो पीठमें चोट लगी है, दोनों स्कन्धफलकोंमें दर्द, कमरका वात, कमरकी कशेरुका हड्डीका टेढ़ापन, गर्दनका कड़ापन और अकड़न।

निद्रा।—कितनी ही चिन्ताओंके कारण नींद न आना; आँख खुलनेपर भयंकर दृश्य देखना, सामान्य आवाजसे ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौंक उठना । शामके वक्त औंघाई, रातभर नींद नहीं आती, रातमें डर, सपनेमें मरे हुए मनुष्य दिखाई देना ।

त्वचा ।—अस्वास्थ्यकर, सहजमें ही जखम पैदा हो जाता है, साधारण फोड़ा भी जल्दी अच्छा नहीं होता । ग्रन्थि-योंका फूलना, आमवात, मुँह और हाथमें मसे, बैंगनी रंगके दाने, खुजली, फोड़ा ।

ज्वर ।—दिनके दो बजनेके समय पाकस्थलीके भीतर शीत आरम्भ । ज्वरके समय बहुत पसीना, नाड़ी भरी और तेज़ । रातमें पसीना, विशेषकर माथे और गलेमें । क्षय ज्वर, रजःस्रावके समय रातमें अस्थिर निद्राके साथ उत्ताप ।

शक्ति ।—६, ३०, २०० ।

कैल्केरिया कास्टिका ।

(Calcarea Caustica).

दूसरा नाम ।—अकोया कैलसिस, स्लेक्ड लाइम, कैल्सिक हाइड्रेट इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—पक्षाघात ; स्नायुशूल ; जबड़ेमें दर्द ; मुँहकी हड्डीमें दर्द ; दाँतोंका दर्द ; ग्रीवास्तम्भ या गर्दनका अकड़ना ; स्वरभंग ; पीठमें दर्द ; वात या आमवात ; प्लीहाकी विकृति (प्लीहा बढ़ना) : पिकचंचु प्रदेशमें दर्द ; फीता जैसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिमि; पैरमें गट्ठे ; एँड़ीमें दर्द ; मस्तिष्कमें जड़ता ; चिन्तासे थकन मालूम होना ; सरमें चक्कर ; सारे शरीरमें शलाका बेधने जैसा दर्द ; दाहिनी आँखमें दर्द और ऐसा मालूम हो मानो आँखमें कुछ गिर गया है ; पाकस्थलीमें जलन ; उपाङ्ग-प्रदाहकी आशंका ; क्षय ज्वर ; बवासीर, उसमें तेज़ दर्द और उसका क्षय करनेवाले जखममें परिणत हो जाना वगैरह रोग लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—सदृश—बेलेडोना, कैल्क-कार्ब, कैमोमिला।

तुलनीय ।—कैल्केरिया ; रस्टाक्स ; वैलेरि, सिपिया।

शक्ति ।—१२, ३०।

कैल्केरिया फ्लुयोरेटा।

(Calcarea Fluorata).

दूसरा नाम ।—कैल-साई-फलोरिडम ; क्लोराइड आव लाइम, फ्लावर स्पर इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग ।—स्तन-ग्रन्थिका कड़ापन ; ग्रन्थियोंका विशेषकर तलपेटकी ग्रन्थिका बढ़ना ; गलगण्ड ; धमनीमें अर्बुद ; शिराओंका फैलना ; हड्डियोंका अर्बुद ; हड्डीका बढ़ना ; हड्डीका विकार ; जाली, आँखके कोयेमें दाग ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलेका जखम ; नकसीर ; सर्दी ; खांसी ; खून आनेवाली खासी ; आध्मान वायु (पेट फूलना) ; दादके जैसे उद्भेद ; कमर में दर्द ; चलनेके समय सन्धियोंमें खट खट आवाज़ ; भगन्दर ; चोट ; उपदंश ; शोथ ; लसिका-ग्रन्थियोंका बढ़ना।

उपयोगिता।—ग्रन्थि और हड्डियोंपर इसकी विशेष क्रिया है। गांठोंका बढ़ना, लोहे जैसा कड़ापन ; उनमें पीव पैदा हो जाना और हड्डियोंका घाव, उसके बढ़नेमें गड़बड़ी ; जखम और हड्डीके वेस्टका प्रदाह ; सूजन ; अर्बुद ; ग्रन्थिमय अर्बुद ; पीव पैदा होना वगैरह ग्रन्थियोंकी और हड्डियोंकी बहुतसी बीमारीमें यह हमेशा व्यवहारमें आता है। अस्थियोंका बढ़ना और क्षय वगैरह रोगमें यह समयपर प्रयोग करनेपर रोग फिर बढ़ नहीं सकता। यहआँखोंमें जाला पड़नेकी बीमारीकी बहुत बढ़िया दवा है। वंशगत उपदंश ; हड्डियोंकी बीमारी और मुंहका जखम ; गलेका ज़खम ; दांतमें आवरणकी बीमारियां ; शिराओंका फूलना ; गलगण्ड ; आँखकी पलकोंका अर्बुद ; नासूर ; नकसीर और कमरमें दर्द। सच्ची घटनाकी तरह और बड़ी विपत्तिमें गिरेगा, ऐसे सपने देखना ; वगैरह बीमारियोंमें यह ज्यादा उपयोगी है।

सम्बन्ध।—कैल्क-फास (नकसीर और हड्डीमें पीव पैदा होना) ; नेट्रम (पुराना न आराम होनेवाला जखम) ; फास्फ-एसि (अकड़न और दर्द) ; साइलि (पीव और हड्डियोंका फूलना)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रास-वृद्धि।—विश्रामसे ; ऋतु-परिवर्त्तनसे, शीतसे, तरी और जाड़ेमें बढ़ना। धीरे धीरे संचालन, गर्मी और गर्म चीजें पीनेसे उपशम।

शक्ति।—६, १२, २००।

कैल्केरिया हाइपो फास्फोरोसा।

(Calcarea Hypophosphorosa).

दूसरा नाम।—हाइपो फास्फेट आफ लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता।—जब साधारण उपायसे **फोड़ोंमें पीव होना नहीं रोका जा सकता या एकत्र हुआ पीव सोखा नहीं जाता**, उस समय इसके प्रयोगसे फोड़ा अकसर बैठ जाता है। इसका प्रयोग हृदशूल (कलेजेका दर्द); दमा ; धमनियोंकी बहुत सी बीमारियां ; रक्तकी अधिकता ; पक्षाघात (लकवा मारना) ; सरका दर्द ; बहुत ज्यादा पसीना ; माथेके सामने, पीछे और शीर्ष देशमें बहुत तेज दर्द और इसी वजहसे मानसिक सुस्ती ; सांसमें कष्ट ; पेशियोंकी सुस्ती ; जाँघकी सन्धिके चारों ओर फोड़ा ; पैरकी लम्बी हड्डियोंका जखम और गर्दन, बांह, हाथकी शिराओंकी रज्जुकी तरह सूजन वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सदृश।—कैल्क-फास, ग्लोनोयन।

शक्ति।—१२, ३०, इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैल्केरिया आयोडेटा।

(Calcarea Iodata)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आफ लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—गण्डमाला धातु; ग्रन्थियोंका फूलना; तालुमूलकी ग्रन्थियोंका फूलना; स्तनमें अर्बुद; सरका दर्द; कैन्सर या कर्कटका जखम, क्षयकास या यक्ष्मा; पेट फूलना।

उपयोगिता।—इसमें बैराइटा और आयोडियमकी तरह लक्षण मौजूद रहते हैं। गण्डमाला दोषकी वजहसे बीमारियाँ; खासकर ग्रन्थिसमूहोंका और तालुमूल ग्रन्थिका बढ़ना, इसमें यह उत्तम काम करता है। बालिकाओंको यौवनके आगमनके समयकी बीमारियाँ, युवतियोंका गलग्रन्थिका बढ़ना या गलगण्ड; श्लेष्मा प्रधान और स्थूल शरीरवाले बच्चोंकी सर्दी; रक्तहीन मनुष्योंकी नाना प्रकारकी बीमारियाँ; जरायुका तन्तुमय अर्बुद और घुँड़ी खांसीमें यह उपयोगी है। कर्कटका जखम; क्षयकास; पेट फूलना; सरका दर्द; स्तनका अर्बुद वगैरह रोग लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐग्राफिस (गांठोंका फूलना, तालुमूलकी गांठोंका फूलना); ऐकोन, लाइकाकटा (गांठ और लसिका ग्रन्थियोंका फूलना)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदृश।—कैल्क-म्यूर; साइलि; मार्क-आयोड प्रभृति।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—सब विषयोंमें उदासीनता।

मस्तक।—माथा हलका मालूम होना; ठण्डी हवामें हवाकी सीधमें चलनेसे सरमें दर्द।

नाक और कान।—पुरानी सर्दी; कान और नाकमें झिल्लीमय अर्बुद।

मुंहमें।—मुंह और मसूढ़ेमें आग जैसी जलन और छोटी छोटी पीव भरी फुन्सियां।

गर्दन और पीठ।—अकड़न।

श्वासयंत्र।—पुरानी खांसी; पीले रङ्गका पीव भरा कफ; और घुंड़ी खाँसी।

तलपेट।—लगातार वायु निकलना।

त्वचा।—देहमें जगह जगह खुजली।

शक्ति।—३, ६, ३०।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैल्केरिया फास्फोरिका।

(Calcarea Phosphorica).

दूसरा नाम।—फास्फेट आव लाइम। कैलसियम फास्फस ; फास्फेट आव कैलसियम इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

रोगमें प्रयोग।—मस्तिष्कमें थकावट ; सरमें दर्द ; अपस्मार या मृगी रोग ; तालुमूलकी गांठका बढ़ना ; टेढ़ी दृष्टि ; कानकी हड्डीमें गड़बड़ी ; सर्दी ; मुंहासे ; गर्दन अकड़ना ; गलेका जखम ; ग्रन्थियोंका फूलना ; गलगण्डके साथ जड़ बुद्धि ; खूनकी कमी ; यक्ष्माकास या क्षय कास ; कमजोरी ; ताण्डव ; अजीर्ण ; आंतोंका बढ़ना ; जम्हाई ; हड्डियोंकी बहुत सी बीमारियाँ ; हड्डी टूटना ; हड्डीका टेढ़ापन ; हड्डीका क्षय ; ब्राइट रोग या पेशाबमें अण्डलाल ; बहुमूत्र ; शय्यामें पेशाब हो जाना ; प्रमेह ; कोरण्ड ; श्वेत प्रदर ; पेशाबमें फास्फेट ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; जरायुका बहुपाद , स्वप्नदोष ; कामोन्माद ; हस्तमैथुन ; सन्धिवात ; पीठ और पेटके नीचेकी सन्धियोंमें कमजोरी ; कमरमें दर्द ; बच्चोंका हैजा ; नासूर।

उपयोगिता।—यह दवा दांत निकलता हो ऐसे लड़के, जवानी चढ़ रही हो, ऐसी बालिकाएं और वृद्ध इन तीनों अवस्थाओंमें ही उपयोगी है। **जो बहुत दुबले पतले रक्तहीन हैं** ; आखें काली, काले केश, काला शरीर, उनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारीमें इसका विशेष प्रयोग होता है। बच्चे और बालक बालिकाओंकी बीमारीसे इसका इतना मेल है, कि इसे बच्चे और बालक बालिकाओंका दोस्त कहा जाये तो भी अत्युक्ति नहीं। बच्चोंका दाँत निकलना; गण्डमाला दोष; बच्चोंका पहली और दूसरी बारका दाँत निकलना और उस समय पतले दस्त आना; उसके साथ ही बहुत अधिक वायु निकलना; मल हरा, लार भरा, पानी जैसा; अजीर्ण पदार्थकी तरह; बदबू-दार और उसमें छेनेकी तरह सफेद पदार्थ मिला रहता है। बालक बालिकाओंका बहुत ज्यादा दुबलापन; खड़े होनेमें असमर्थ और चलना सीखनेमें देर। बालास्थि-विकृति; (बच्चोंकी हड्डीमें गड़बड़ी या टेढ़ापन) माथेकी हड्डी बहुत पतली; ऐसी कि टूट जायगी; **ब्रह्मरन्ध्र** बहुत खुला और बहुत दिनोंतक खुला रहता है। रीढ़में कमजोरी; शय्यामें पेशाब कर देना। टेढ़ा भाव, इसी वजहसे शरीर सीधा नहीं रख सकता। गर्दनकी कमजोरीकी वजहसे सर उठा रखनेमें असमर्थ। यौवनागमनके समय अविवाहिताओंका बहुत जल्दी जल्दी पुष्ट होना, बढ़ना और लम्बी हो जाना; मेरुदण्डमें टेढ़ापन और हड्डीकी कोमलता; जवान होनेके समय अविवाहिताओंमें रक्त-हीनता; मुँहासे; इसके साथ ही सरकी खोपड़ीमें सर दर्द; वायु निकलना, भूख न लगना और कुछ खा लेने बाद आराम मिलना; विद्यालयकी छात्राओंके सरमें दर्द। हताश प्रणय; भग्न-प्रणय या शोककी वजहसे बीमारी। रोगकी बात सोचनेसे ही रोगका बढ़ जाना। इच्छा न रहनेपर भी ठण्डी सांस लेना;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर बार भोजनके समय पेटमें शूलका दर्द ; मानसिक दुर्बलता ; देशमें रहनेपर विदेश और विदेशमें रहनेपर देश या घरमें रहनेपर बाहर, और बाहर रहनेपर घर लौट आना चाहता है ऐसा ही अनस्थिर चित्त ; कामोन्माद ; अण्डलाल जैसा श्वेत प्रदर ; निद्राकी अवस्थामें रोना ; परिपोषणका अभाव ; बहु-मूत्र ; टूटी हड्डीका जल्दी न जुड़ना (यह नयी हड्डी पैदा होनेमें सहायता करता है) ; जाड़े या शीत कालमें या बसन्त ऋतुमें अच्छा रहकर शीत ऋतुमें वह फिर पैदा हो जाता है। भगन्दरकी यह एक अच्छी दवा है। पर्यायक्रमसे भगन्दर और छातीमें दर्द ; शारीरिक उत्तापकी कमी, ठण्डा पसीना और शरीरकी साधारण शीतलता वगैरह रोग लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

वृद्धि।—ठण्डे पानी जैसे वायुके स्पर्शसे, ऋतुपरि-वर्त्तनमें, पूर्वी हवामें, गले हुए बरफमें और मानसिक परि-श्रमसे वृद्धि।

ह्रास।—ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमें, गर्म और सूखी ऋतुमें उपशम।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—रूटा, कार्बो-ऐनि इसकी सदृश गुणसम्पन्न दवा है।

तुलनीय।—कैल्क, कैल्के-फ्लोर, रूटा, साइलि, सल्फ (हड्डीका घाव और नासूरका घाव), फरिलूक ऐसिड, मैग-फास, साइलि (दांतोंका क्षय) ; नेट्रम-फास (क्रिमिमें)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रैफाइटा का (कमज़ोरी), सिपिया (जरायु), बार्वेरिस (भगन्दर, नासूर), सिम्फाइटिस (भग्नास्थि)।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—उदास, विस्मृतिशील (भूल जानेवाला), शोक अथवा प्रेम भङ्ग होनेके कारण हताश भाव, हमेशा दूसरी जगह जाना चाहता है।

मस्तक।—विद्यालयके युवक युवती, छात्र-छात्राओं-का सरका दर्द ; हड्डीका न जुड़ना।

आंखें।—सफेद कोयेमें फैलनेवाला गदलापन।

मुंहमें।—तालुमूलकी गांठोंका बढ़ना, सूजन इत्यादि।

श्वास-यंत्र।—इच्छा न रहनेपर ठण्डी सांस छोड़ना, दम रुकना, खांसी, वक्षमें जखम मालूम होना, स्वरभङ्ग, बायें फेफड़ेके निचले भागमें दर्द, फेफड़ेसे रक्त निकलना।

पाकस्थली।—भूखके साथ प्यास, पेट फूलना, छाती-में जलन, लगातार स्तन पान करनेकी इच्छा और पीने बाद कै।

तलपेट।—खाने बाद ही पेटमें दर्द, पाखाना कड़ा और रक्तस्राव,बदबूदार हवा छूटना ; भगन्दर।

मूत्र।—बहुत पेशाब ; पेशाबके बाद कमजोरी ; नाक झाड़नेके समय मूत्रग्रन्थिके सामने दर्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत ज्यादा और बहुत अधिक और चमकीला लाल रंगका रजःस्राव । देर होनेपर वह काला हो जाता है, कभी या पहले चमकीला ; इसके बाद काला ; साथ ही कमरमें दर्द ।

गर्दन और पीठ ।—कड़ापन, सुन्न भाव, दर्द, दुबलापन ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—सुन्न होना, कड़ापन, कीड़ा रेंगने जैसा मालूम होना, सन्धि-स्थानोंमें दर्द, ऊपर चढ़नेमें थकन, बीचकी आँतकी गांठका बढ़ना और दर्द ।

शक्ति ।—३, ६, ३०, २०० ।

कैल्केरिया पिक्रिका ।

(Calcarea Picrica).

दूसरा नाम । — फास्फेट आव कैलसियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता ।—कानमें बार बार फोड़े निकलना ; कानमें फुन्सी ; बदनमें फोड़े ; कानमें प्रदाह ; इसके साथ ही कमजोरी या शारीरिक थकन इत्यादि रोग लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।—सदृश—पिक्रिक एसिड ; फेरम पिकरिकम ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति ।—३० शक्ति हमेशा व्यवहारमें आती है।

कैल्केरिया रेनालिस ।

(Calcarea Renalis)

दूसरा नाम ।—यूरेट आव लाइम; रेनल कैल-क्यूलाई इत्यादि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता ।—अश्मरी (पथरी); छोटी सन्धियोंका वात, सन्धियोंमें गोटी पैदा हो जाना; दांतमें शक्करकी तरह लेप या छेद इत्यादि रोगमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न शक्ति ।

कैल्केरिया सिलिका ।

(Calcarea Silica)

दूसरा नाम ।—सिलिकेट आव लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता ।—दुबलापन; हमेशा शीतका भाव, पर बहुत ज्यादा गर्म होनेपर अच्छा न मालूम होना; आखोंके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद अंशमें जखम ; गण्डमाला दोष ; जखम आदि ; रसवात धातु ; बच्चोंकी शीर्णता ; जहां साइलीसियासे लाभ नहीं होता, वहाँ इस दवाके द्वारा आँखमें लाभ पहुँचता है ।

तुलनीय ।—आर्स, बैराइटा कार्ब इत्यादि ।

शक्ति ।—६, ३०, २०० ।

कैल्केरिया सलफ्यूरिका ।

(Calcarea Sulphurica).

दूसरा नाम ।—सलफेट आव कैलसियम ; प्लास्टर आव पेरिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—फोड़ा ; व्रण ; दुष्टव्रण ; कालेका घाव ; मलद्वारके पास फोड़े ; खुजली ; उकौत ; ग्रन्थियोंका फूलना ; तालुमूल-प्रदाह ; दुधिया पपड़ी जमना ; उकौत ; आँखोंके सफेद अंशका :जखम ; खांसी ; फेफड़ेका प्रदाह ; अर्बुद ; शोथ ; रक्तामाशय (खूनी आंव) ; रक्तस्राव (खून जाना) ; बहुपाद ; अर्बुद ; शुक्रक्षरण ; उपदंश (गर्मी रोग) और जखम इत्यादि ।

उपयोगिता ।—किसी स्थानपर पीव पैदा हो जाना ; फोड़ा ; जखम वगैरहमें यह विशेष उपयोगी है । पीव पैदा होना आरम्भ होनेपर इसके द्वारा हिपरकी तरह सोखनेको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया तो नहीं होती पर पीव बहना आरम्भ हो जानेपर यह हिपरकी अपेक्षा ज्यादा लाभदायक होता है। साइलिसियाकी तरह पीव पैदा होनेपर और जखमपर इसकी असीम क्रिया है। इसीलिये, यह साइलीसिया और हिपरकी मध्यवर्त्ती दवा कहलाती है। हिपर और साइलीसियाका रोगी ठण्डी या खुली हवा एकदम बर्दाश्त नहीं कर पाता, पर कैल्केरिया सल्फका रोगी बाहरी खुली हवा और सर्दी आदिमें आराम प्राप्त करता है या खुली हवा पानेकी इच्छा करता है। बहुत गाढ़ा, लसदार और पीले रंगका पीव-भरा श्लेष्मा-स्राव इसका विशेष लक्षण है। बालक-बालिकाओंके मस्तकमें सूखी खुजली और बहुत ही गाढ़ा पीवकी तरह श्लेष्मा निकलना। आँखोंका प्रदाह :और इसी तरहका स्राव। कोई पदार्थ आधा दिखाई देता है। नये पैदा हुए बच्चोंका आँखोंका प्रदाह (आँखें उठना)। बहरापन, कान, नाक, गलेमें, फेफड़े-में, मल और मूत्रद्वारसे गहरा घना पीला पिलपिला पीव बहना, भगन्दर, मलद्वारमें बहुत दर्द और फोड़ा। चेहरेपर रस-भरे दाने या फुन्सियाँ, पैरके तलवेमें जलन-भरी खुजली। पीवसे पैदा हुआ, विलेपी ज्वर, उसके साथ ही खाँसी और पैरके तलवेमें जलन इत्यादि रोग लक्षणोंमें यह ज्यादा उपकारी है।

सम्बन्ध।—कैलेण्डुला ; हिपर ; कैलि-म्यूर ; नेट्रम-सल्फ (शोथ); साइलि (कड़ी पीव बहानेवाली गाँठ, कार्निया का जखम, सफेद स्थानमें जखम)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोषघ्न ।—आर्निका, कैम्फरके साथ विपरीत सम्बन्ध है, उसके पहले या बादमें व्यवहार न करना चाहिये ।

अनुपूरक ।—हिपर ।

शक्ति ।—३री से ३०० तक ।

कैलेण्डुला आफिसिनेलिस ।

(Calendula Officinalis).

दूसरा नाम ।—मेरी गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—चोट या कुचल जानेकी वजहसे तन्तुओंका ध्वंस हो जाना ; फोड़ा ; ठण्डी खासकर जल-भरी हवामें सर्दी ; कितने ही तरहके जखम ; आँतोंका प्रदाह ; बहरापन ; दाँतोंका शूल ; विष-फोड़ा ; उकौत ; नासूर ; पीव पैदा होना ; धनुष्टंकार ; दाह ; कमला ; ग्रन्थियोंका फूलना ; स्तनमें पीव जमा होना ; स्तनमें गोटियाँ पैदा हो जाना ; स्तनकी घुण्डीमें जखम ; नखका प्रदाह ; अँगुल-हाड़ा ; लिङ्ग-मुण्डकी श्लैष्मिक झिल्लीका और लिङ्ग-मुण्डको ढँकनेवाली त्वचा-के भीतरी आवरणका प्रदाह ; बूढ़ोंको पेशाबमें कष्ट ; बाघी ; जरायुका कर्कटका जखम ; शिराओंका प्रदाह ; शिराओंका फूलना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता।—साधारण या चोटकी वजहसे जखम ; नश्तर लगवाना या दूषित जखम ; तकलीफसे प्रसव होनेके कारण अपत्य-पथमें जखम आदि कितने ही तरहके जखम और उनमें पीव पैदा होनेपर इसकी असीम क्रिया होती है। इसको होमियोपैथगण सड़ना रोकनेवाली या ऐण्टि-सेप्टिक दवा कहते हैं। एकाएक कोई जगह कटने या आकस्मिक दुर्घटना-की वजहसे जखम होनेपर, उसी समय इसका लोशन या धावन द्वारा धोकर बाँध रखनेपर रज:स्राव बन्द हो जाता है और पीव नहीं पैदा होने देता है। ऐसे पीव भरे जखम आदिमें इसकी प्रक्रिया द्वारा पीव पैदा होना दब जाता है, और वीजाणु ध्वंस हो जाते हैं। इस समय इसका आभ्यन्तरिक प्रयोग उचित है। एक बातमें यह जखम आरोग्य करनेमें इतना शक्तिशाली है, कि १८४९ ईस्वीके युद्धमें बन्दूक और तोपके गोलेकी चोटके जखम आदि इससे आरोग्य हुए हैं। फेफड़ेके प्रदाहमें इसकी गर्म पट्टी प्रयोग करनेपर बहुत लाभ होता है। जमीनमें बैठने और तर हवामें सब लक्षण बढ़ जाते हैं। स्नायुशूल ; स्नायु-प्रदाह ; कर्कटीया जखम वगैरहमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्निका ; बेलिस ; हैमामे-लिस ; हाइपेरिकम् और सिम्फाइटम ; फेरम-फास ; कैलि-आयोड (वधिरतामें)।

दोषघ्न।—चेलिडो ; रियूम।

अनुपूरक।—हिपर सल्फ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति ।—३x, ६x, ३०, २०० । बाहरी प्रयोग—साधारणतः एकभाग दवा और सात आठ भाग जायतूनका तेल, इसके प्रयोगसे जखम आदिमें जलन मालूम होनेपर सक्कस कलेण्डुला व्यवहार किया जाता है ।

कैलोट्रोपिस जाइगेंशिया ।

(Calotropis Gigantea).

दूसरा नाम ।—मदार ; अकवन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—उपदंश, खासकर उपदंशकी वजहसे खूनकी कमी ; मेदका बढ़ना ; पाकाशयमें उत्ताप मालूम होना ; फेफड़ेका प्रदाह (न्यूमोनिया) में जखम ; नया रक्तामाशय (खूनी आँव) ; ज्वर ; हाथ-पैरमें दर्द ; उकौत ; गोद ; गुटिका-मिली कुष्ट-व्याधि ।

उपयोगिता ।—यह नये या पुराने, मुख्य या गौण सब तरहके उपदंश रोगमें व्यवहृत होता है । जब मार्क्यूरियस द्वारा कोई लाभ नहीं होता और ज्यादा व्यवहार भी खतरेसे खाली नहीं है, वह समय ही इसके व्यवहारका सबसे उत्तम समय है और इसके द्वारा आरोग्य प्राप्त किया जा सकता है । खासकर उपदंशकी वजहसे रक्तहीनता तथा गौण उपसर्ग आदि और नखका मोटापन । पाकस्थलीमें गर्मी मालूम होना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका एक खास लक्षण है। मेदाधिक्य (शरीरमें चर्बी बढ़ना); कुष्ठ; कमजोरी; क्लान्ति मालूम होना; ठण्डक; मस्तककी जड़ता; मिचली और कै; घुटनेकी सन्धिमें सूजन वगैरह रोगमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—कैम्फर; काफिया।

तुलनीय।—ऐस्किलपियस; इपि (वमन); बार्ब्वे; काफिया।

सदृश।—हिपर, इपि, कैलि-आयोड, नाइट्रि एसिड; मार्क; सार्साप्यारिला।

शक्ति।—मूल अर्क से लेकर ३०, २०० तक।

कैल्था पैलस्ट्रिस।

(Caltha Palustris)

दूसरा नाम।—काउस्लिप; एक प्रकारका गेंदा जातिका फूल; मार्स मेरिगोल्ड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—यह उकौत रोगकी एक उत्तम दवा है और कर्कटीया जखम; उदरमें दर्द; वमन; चक्कर आना कानमें संगीत ध्वनि; उदरामय (पतले दस्त आना); मूत्र-कृच्छ्रता; शोथ; सूजन; जरायुका कर्कटका जखम वगैरह रोगमें उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदृश ।—आर्सेनिक ; एसिड-नाइट्रिक ; मार्क ; रस्टाक्स ।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न क्रम ।

कैम्फोरा-आफिसिनेरम ।

(Camphora Offcinarum).

दूसरा नाम ।—कपूर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—एशियाटिक कालेरा या सांघातिक हैजा ; अपस्मार या मृगी रोग ; जाड़ा लगना और छींकके साथ तर सर्दी ; प्रवल अकड़न ; स्मृति-शक्तिकी दुर्बलता ; सूर्याघात या सर्द-गर्मी ; बहुव्यापक सर्दी हृद्शूल ; हृत्पिण्डका विकार ; उद्भेद गायब हो जाना या बैठ जाना ; छोटी माता ; बहुत अधिक ताप मिला बोखार ; आम वात ; कम्प ; अनिद्रा ; सांप काटना ; धनुष्टङ्कार ; तम्बाकू सेवनका बुरा अभ्यास ; शय्याक्षत ; प्रमेह; दर्द भरा लिङ्गका कड़ापन ; बहुत ज्यादा इन्द्रिय तृप्तिकी वासना ; पेशाब रुकना ; मूत्रकृच्छ्रता ; मूत्रद्वारका संकोचन ।

उपयोगिता ।—यह सांघातिक हैजा और एशियाटिक कालेराके प्रारम्भकी एक बढ़िया दवा है । एकाएक बहुत दस्त आने लगना और कै ; बहुत देरतक स्थायी कम्पन (कपकपी) ; सारे शरीरकी शीतलताके साथ एकाएक जीवनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिका एकदम सुस्त पड़ जाना ; पतनावस्था (अन्तिम अवस्थाके लक्षण) ; सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा ; पर शरीर पर किसी तरहका कपड़ा सहन नहीं होता ; सब कपड़े उतार फेंकता है ; जीभ ठण्डी ; मोटी और कपकपी भरी ; मुंह पीला या नीला ; ओठ काले ; बहुत ज्यादा सुस्ती ; नाड़ी बहुत दबी हुई, कमजोर, मुश्किलसे मालूम हो या एकदम गायब ; नाना प्रकारके उद्भेद दबकर या उद्भेद उत्पन्न न होकर बीमारी (जैसे छोटी माता और लाल ज्वर) ; इसके साथ ही पीली या चिन्तित और सिकुड़ी हुई चेहरेकी आकृति; शरीरपर कपड़ा न रहने देना वगैरह लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है। छोटी माताके बादका कोई भी उपसर्ग। रोगकी तकलीफके विषयमें सोचनेपर तकलीफ घट जाना इसका विशेषत्व है। मानसिक और शारीरिक दुर्बलता और उत्तेजना ; ठंडी हवा सहन नहीं होती। चोट आदिका बुरा फल और उसके साथ ही शरीरकी शीतलता, सुस्ती और मुंहका पीलापन। ठण्डा पानी पीनेपर आराम मालूम होना। जरा छूनेसे ही सारे शरीरमें दर्द मालूम होना। रक्तसञ्चयकी वजहसे पैदा हुआ, कपकपीके साथ दुरारोग्य सविराम ज्वर ; बहुत अधिक अकड़न ; अकड़नके साथ उत्कण्ठा ; बेचैनी ; फैलनेवाला विसर्प रोग ; सर हिलाना धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़नके साथ बार-बार ओठ हिलना और दांत निकालना। श्वासमें तकलीफ ; पेशाब न उतरना ; बार बार लिङ्गका कड़ापन प्रभृति रोगमें यह विशेष उपयोगी है। यह प्रायः समस्त (विशेषकर उद्भिज जातीय) औषधियोंका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण हरण करनेवाला है, असल या मूल अर्क रोगीके घरमें रखना उचित नहीं है।

सम्बन्ध।—विसट्टम—कैलि नाइट्रस।

अनुपूरक।—कैन्थराइडिस।

दोषघ्न।—डाल्कमारा; स्पिरिट नाइट्रस-डालसिस; ओपियम; फास्फोरस।

तुलनीय।—आर्सेनिक; कार्बोविज; क्यूप्रम; विरेट्रम।

ह्रास-वृद्धि।—स्पर्शसे; रातमें; सञ्चालन और ठण्डी हवामें वृद्धि। गर्मीसे उपशम।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—उत्कण्ठा, अकेला रहनेमें भय; भुलक्कड़; कलहप्रिय; असन्तोषी; जड़ता; बेहोशी; प्रलाप।

मस्तक।—सरमें चक्करके साथ अज्ञान भाव; सोचता है, कि वह मर जायगा। माथेके पिछले भागमें सरका दर्द; अकड़न; माथेके दाहिनी ओर अकड़न।

आंखें।—टकटकी लगाकर देखना; फैली पुतली; ऐसा मालूम हो मानो सब पदार्थ चमकीले हो रहे हैं।

नाक।—रुकी, छींक, एकाएक वायु परिवर्त्तन और बार बार पानीकी तरह सर्दी; रक्तस्राव; नाक अत्यन्त ठण्डी और पतली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखमण्डल।—पीला, नीला, ठण्डा, टेढ़ा-कुबड़ा, ठण्डे पसीनेसे भरा और जल्दबाज।

श्वास-यंत्र।—श्वासक्लेश, दमा, सूखी खुसखुसी खांसी, ठण्डा श्वास-प्रश्वास, कलेजा धड़कना।

पाकस्थली।—जलन, दर्द, शीतलता अनुभव होना।

मल।—काला, अनजानमें पाखाना निकलना, एशियाटिक हैजा और पैरकी एँड़ीमें अकड़न, शरीरकी शीतलता, कमजोरी, पतनावस्था।

मूत्र।—मूत्रकृच्छ्रता, मूत्रक्लेश, पेशाब न पैदा होना, मूत्राधारमें भार मालूम होना या मूत्राधार भरा पर पेशाब रुका हुआ।

जननेन्द्रिय।—प्रबल कामेच्छा, तकलीफ देनेवाला लिङ्ग-उत्थान; स्वप्नदोष और शुक्रक्षय होना।

निद्रा।—अनिद्रा; इसके साथ ही अंग प्रत्यंगका ठण्डा होना; पेशियोंका अकड़ना और फड़कना; बहुत बेचैनी।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग।—वात; सभी सन्धियोंका वातका दर्द; सुन्न हो जाना; कन्धेमें दर्द; हिलानेसे कष्ट; शीतलता; सन्धियोंमें कट कट शब्द; पैरके तलवेमें अकड़न; पैरका तलवा बरफकी तरह ठण्डा; दर्द; मानो मोच खा गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर ।—नाड़ी कमजोर; पतली और मृदु; सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा; ठण्डा पसीना; रक्त सञ्चयकी वजह से कपकपी; जीभ ठण्डी, मोटी और काँपनेवाली।

त्वचा ।—शीतल; पीली; नीली; काली आभा लिये, ओढ़ना सहन नहीं कर सकता।

शक्ति ।—स्पिरिट कैम्फर १ से ५ बूंद तक हैजा या विसूचिकाके आरम्भमें चीनी, बताशा और दूधकी चीनीके साथ प्रयोग करना चाहिये। इसके अलावा प्रथमसे ३० शक्ति व्यवहारमें आती है।

कैम्फोरा मोनोब्रोमेटा ।

(Camphora Monobromata).

दूसरा नाम ।—मानो ब्रोमाइक आव कैम्फर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

उपयोगिता ।—स्नायविक उत्तेजना इसका प्रधान लक्षण है। दिशा भ्रम—जैसे उत्तरको दक्खिन और दक्षिणको उत्तर समझता है। बच्चोंका हैजा और अकड़न; मूर्च्छा वायु; पर्यायक्रमसे रोना और हँसना; यन्त्रणादायक लिङ्गका कड़ापन; स्वप्नदोष; स्तनका दूध रुक जाना; नींद न आना ध्वजभङ्ग; पाकाशयकी सर्दी; मस्तिष्कमें विकार; सरका दर्द (विशेषकर पढ़नेकी वजहसे); अण्डकोषका स्नायुशूल; मदा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यय ; मूत्राशयको मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना ; जननेन्द्रियकी ठण्डक और शीतलता ; कामेच्छाका ह्रास ; खुजली ; कामोन्मादना वगैरह बीमारीके लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।—कैलिब्रोम ; व्यूफो ।

शक्ति ।—३री, ३०, २०० ।

कैञ्चेलेगुया ।

Canchalagua)

दूसरा नाम ।—सेण्टाउरी ; इरीथ्रिया विरिस्ट्रा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—सविराम शीत ज्वरकी यह एक उत्कृष्ट दवा है । यह मलेरिया ज्वरकी दोषनाशक और विषनाशक दवा है । उष्ण-प्रधान देशका या अत्यन्त गर्मीके दिनोंका सविराम ज्वर, सारा शरीर शीतल, कपकपी ; इतना कम्प जो दांतपर दांत बजने लगते हैं । शरीर जखम जैसा और घिस जानेकी तरह दर्दका अनुभव होना । मिचली और बहुत ज्यादा ओकाई ; ठण्डी हवा सहन नहीं होती ; मेरुदण्ड होकर बार बार कम्प और बहुत अधिक उत्तापके लक्षणमें यह विशेष उपयोगी है । इसके अलावा बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा) ; माथेमें खूनकी अधिकता ; मस्तककी त्वचामें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोंचन मालूम होना और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा रबरके फीतेसे बँधा हुआ है। त्वचा सिकुड़ी मानो चिपक गयी है। कब्जियत ; अनिद्रा ; कानमें गरजनेका शब्द इत्यादि रोग लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध।—चायना ; इपिकाक ; जेलिमियानम्।

संक्षिप्त लक्षण।

मस्तक।—मस्तक और कपालमें दर्द और खोंचन मालूम होना ; ऐसा मालूम हो मानो किसीने रबरसे बांध दिया है।

आँखें।—पहले बाईं, फिर दाहिनी आँखमें जलन।

कान।—गरजनेका शब्द ; सुई बेधने जैसी तकलीफ मालूम होना।

मुँहमें।—थूक भरनेके साथ कम्पन और स्नायविकता ; सफेद श्लेष्माका स्राव।

पाकस्थली।—डकार ; मुंहमें थूक भरना ; कब्जियत या बार बार पाखाना होना ; वायु निकलना।

शक्ति।—निम्न क्रम, ६, ३०।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैनाबिस इण्डिका ।
(Cannabis Indica).

दूसरा नाम ।—भांग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—मृगी ; सरदर्द ; उन्मत्तता ; सूतिकोन्माद ; निस्पन्द वायु ; पक्षाघात ; चित्त-विभ्रम ; भ्रम देखना ; स्मरण-शक्तिकी कमी ; चीजें दो दिखाई देना ; तोतलाना ; मदात्यय ; दर्द भरा लिङ्गका कड़ापन ; कामोन्मादना ; मूत्रद्वार विकार ; मूत्र विकार ; प्रमेह ; ज्यादा रजःस्राव ।

उपयोगिता ।—मस्तिष्क और जननेन्द्रियपर यह अपनी क्रिया अधिक दिखाता है। बहुत भ्रान्ति ; अपने सोचनेकी धारा या कही हुई बातका आखिरी हिस्सा भूल जाता है। एक ही समय दो तरहकी चिन्ता ; किसी एक विषयको सोचनेके समय, दूसरी कोई बात मनमें आकर मस्तिष्कमें गड़बड़ी पैदा कर देती है ; इसलिये, इच्छानुसार बात सोचनेमें असमर्थ हो जाता है। हमेशा मनमें नये-नये भाव पैदा होते रहते हैं। बहुत बोलना, बकना, रोना या हँसना आरम्भ हो जानेपर फिर नहीं रुकता। बहुत थोड़ी बातमें बहुत ज्यादा हँसना, दिल्लगी या अपकार करने बाद विलाप और रोना। मृत्युको पास सोचकर बहुत भय ; मदात्यय ; समय और दूरीका ज्ञान लोप हो जाना। समय बहुत लम्बा मालूम होता है, कुछ क्षण कई वर्ष, कई युग जैसे मालूम हों। बगलका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान एक मील दूर मालूम हो। खोपड़ी मानो एक बार खुलती और बन्द होती है, इसी तरह बराबर होता रहता है। कितनी ही तरहकी वैसी चीजें देखना जो हैं नहीं और डरना; बहुत औंघाई; भूलना, पेशाबमें गड़बड़ी; पेशाबमें श्लेष्माकी तरह पदार्थका नीचे जमना; लिङ्गमें कड़ापन होनेपर दर्द; वीर्यपात; रातमें डर लगना; दांत कड़मड़ाना; मलाधार या मलद्वारके पास सूजनका अनुभव होना; ऐसा समझता है मानो किसी गोलाकार पदार्थपर बैठा हुआ है वगैरह रोग लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध-सदृश।—कैनाबिस सैटाइवा; नाइट्रिक-एसिड (आवाज अच्छी न लगना); काफिया (सभी तरहकी आवाजसे); बोरैक्स; ऐसिरम (कागज, रेशम, चद्दर इत्यादि को साधारण रगड़के शब्दसे); लैके-कैनिनम; फास्फोरिक ऐसि; फास्फो (ऐसा मालूम हो कि शून्यमें या हवामें उड़ रहा है); ऐम्ब्रा; ऐनाकार्डियम; स्ट्रैमो; विरेट्रम (मानो स्वप्न राज्यमें घूम रहा है); बैराइटा; स्ट्रामो (अंधेरेमें डर)।

वृद्धि।—सीढ़ी चढ़ने और सोनेके अन्तमें बढ़ना।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—बहुत बकवादके साथ मानसिक आवेग या उच्छ्वास। थोड़ी दूरी भी बहुत और अस्वाभाविक दूर मालूम हो, दस हाथको सैकड़ों मील या दस सेकेण्डको दस बरस समझता हो। शरीर बहुत छोटा मालूम हो; बहुत भूलना, दिशाभ्रम; न रुकनेवाली हँसी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक।—ऐसा मालूम हो मानो खोपड़ीकी हड्डी एक बार खुलती है, फिर जुड़ती है, ऐसा ही हो रहा है। मानो माथेकी हड्डी ऊंची होकर उठती चली जा रही है। अनजानमें सर कांपना, ऐसा मालूम हो मानो माथेमें एकाएक धमककी आवाज हो उठती है। अधकपाली सरका दर्द, पेशाब रुकनेकी वजहसे सरका दर्द, पेट फूलनेकी वजहसे सरका दर्द।

आंखें।—स्थिर दृष्टि, पढ़नेके समय अक्षर आपसमें सट जाते हैं, भविष्य और अन्तर्दृष्टि शक्तिकी तेजी ; दृष्टिपथमें चकचौंधी लगनेवाले पदार्थका पैदा हो जाना ; आँखें लाल ; उनमें जाला पड़ना।

कान।—दोनों कानोंमें लगातार दर्द ; कानमें टपक और भरा हुआ सा मालूम होना ; कानमें गों गों आवाज, देखनेकी ताकत घटनेके साथ साथ सुननेकी ताकत भी घट जाना।

मुखमण्डल।—मुंह और दोनों ओठोंका सूखापन, लसदार भाव या जुट जाना, नींदमें दांत पीसना, दांत कटकटानेकी आवाज, गलेके भीतरतक सूख जाना।

श्वास-यंत्र।—पुराना श्वास-नली प्रदाह ; दमा रोग; पतला कफ निकलना ; वक्षस्थलमें दबावके साथ श्वासकष्ट और सीढ़ी चढ़नेपर यह तकलीफ बढ़ना ; ठण्डी श्वास लेनेकी इच्छा ; पंखाकी हवाकी इच्छा।

हृद्पिण्ड।—मानो हृद्पिण्डसे बून्द बून्द पानी टपक रहा है ऐसा मालूम होना ; हृद्स्पन्दनकी वजहसे नींद खुल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना ; हृद्‌पिण्डमें फाड़ने या दबाव पड़ने जैसा दर्द ; नाड़ीकी गति मृदु ।

पाकस्थली ।—भूख ज्यादा लगना ; भोजनके बाद पेट भारी हो जाता है और श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है । कमरका कपड़ा या बन्धन खोल देना पड़ता है ; अन्ननालीके निचले द्वारमें दर्द मालूम होना ।

मलनाली ।—मलद्वार और विटप या उसका ऊपरी भाग इतना फूला कि मालूम होता है, गोलेके ऊपर बैठा है ।

मूत्र-यंत्रादि ।—हँसनेपर मूत्र-ग्रन्थि (मसाना) में दर्द ; लिङ्ग-मुण्डको दबानेसे लार या श्लेष्मा जैसा पदार्थ निकलना । पेशाबके पहले, होते समय और उसके बाद मूत्रनालीमें जलन ; दाहके जैसा या सुई बेधने जैसा दर्द, बूँद बूँद पेशाब ; मूत्राशय और मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन ; पेशाबसे दो धार निकलना और अन्तमें हाथसे दबाकर कई बूंद पेशाब निकालना पड़ता है ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—कै होने बाद कमरमें दर्द ; कामोन्मत्तता ; रमणके बाद बहुत देरतक लिङ्गमें दर्द जैसा मालूम होना । दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन, बार बार कड़ापन होना और उसके साथ ही प्रवल रमणेच्छा ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें काला, गाढ़ा, दर्द भरा रजःस्राव ; जरायुमें स्नायविक शूलका दर्द, नींद न आना, बन्ध्यत्व ; आठवें महीनेमें गर्भ-स्राव होनेका लक्षण ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग-प्रत्यंग ।—कन्धेमें एक ओरसे दूसरी ओरतक दर्द ; मेरुदण्डमें दर्दकी वजहसे वाध्य होकर सर झुका रखना पड़ता है और सीधा चल नहीं सकता, निचले अंगका एकदम सुन्न हो जाना ; पैर और जाँघकी पोटलीमें दर्द ; चलनेपर थकन मालूम होना और सो जानेकी इच्छा ।

त्वचा ।—शीतसे कष्ट मालूम होना ; ललाटमें बूंद बूंद पसीना ।

निद्रा ।—बहुत निद्रालुता पर नींद नहीं आती ; नींदके समय बोलना, हाथ-पैरका ऐंठ जाना, इसी वजहसे नींद खुल जाना ; छातीमें दबाव मालूम होना ; कामोत्तेजक सपने देखना और सपनेमें मरे मनुष्य दिखाई देना ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न क्रमसे ३०, २०० तक ।

कैनाबिस सैटाइव्हा ।

(Cannabis Sativa).

अन्य नाम ।—गांजा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—मूत्रनाली की श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह ; प्रमेह (सूजाक) ; मूत्राधारका प्रदाह ; मूत्रनालीमें दूषित फोड़ा ; मूर्च्छा-वायु ; सरमें दर्द ; जाला ; आँखोंमें सफेद दाग ; जबड़े जकड़ जाना ; नाकसे रक्तस्राव ; तोतलाना ; स्वर-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नालीकी सर्दी ; फेफड़ेका प्रदाह ; दमा ; कलेजा कांपना ; धनुष्टंकार ; बगलमें दर्द ; उदरी ; बालिकाओंका श्वेत-प्रदर ; प्रसवके बादका स्राव और खूनका स्राव।

उपयोगिता।—जननेन्द्रिय, मूत्रयंत्र और श्वास-प्रश्वास यंत्रपर इसकी विशेष क्रिया प्रकट होती है। सारे शरीरके ऊपर, किसी खास स्थानपर, माथेके ऊपर या हृद्‌पिण्डके ऊपर बूंद बूंद पानी टपकने जैसा मालूम होना—इसका विशेष लक्षण है। बहुत ही नये प्रदाहवाले प्रमेह (सूजाक) रोगकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। पेशाबकी नलीको छूने या दबानेपर बहुत अनुभूति और तकलीफ ; दोनों पैरको बीचसे चौड़ाये बिना चल नहीं सकता ; क्योंकि स्वाभाविक भावसे चलनेपर मूत्रयंत्रपर दबाव पड़ता है, चोट लगती है और दर्द होता है। थोड़ा पेशाब;पेशाब करते समय बहुत दर्द और जलन। दर्द मूत्रनालीके बाहरी दरवाजेसे पीछेकी ओर फैलता है। पेशाब करनेके समय बहुत जलन, कतरने और सुई वेधने जैसा दर्द; यह दर्द मूत्रनालीके पिछले अंशमें अधिक अनुभव होता है या मूत्रनालीमें टेढ़े तिर्छे भावसे काटने जैसा दर्द होता है। दमा या श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे रोगी केवल खड़ा होकर सांस लेने और छोड़नेका काम कर सकता है, नहीं तो सांस नहीं ले सकता। निगलनेके समय दम रुक जानेका भाव ; खानेके पदार्थ दूसरी राहपर चले जाते हैं। ऊपर चढ़नेके समय या अन्यान्य कारणोंसे जाँघकी फलकास्थिका हटना या मोच खा जाना। चोट आदिके बाद अङ्गुलीका संकोचन ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरो कब्जियतको वजहसे पेशाब रुकना और मलद्वारमें संकोचन वगैरहमें उपयोगी है।

वृद्धि ।—सोनेपर और सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ना।

ह्रास ।—संध्याके पहले, और ठण्डी हवामें सब लक्षण घट जाते हैं।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—कैम्फर ; नींबूका रस ।

तुलनीय ।—कैलि-नाइटि (दमा) ; एपिस, कैन्थराइडिस, कोपिवा, थूजा (प्रमेह—सूजाक) ।

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—विषन्न ; उद्विग्न और आशंकासे पूर्ण ; दोपहरके पहले विषाद और तीसरे पहर फुर्त्ती (ओपी) ; लिखनेमें भूल करना ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर ; मस्तकमें मानो पानी गिर रहा है, ऐसा मालूम होना । नाककी जड़में दबाव मालूम होना ; ऐसा मालूम हो मानो शराब पीता है और ढुलक पड़ता है।

आँखें ।—आँखोंके सफेद अंशमें मैलापन या सफेद दाग ; जाला ; अँधेरा देखना ; आँखके गोलेके पीछेसे सामनेकी ओर दबाव मालूम होना । प्रमेह विषके कारण आँखोंका प्रदाह (मार्क-कर, हिपर सल्फ) ; आँखोंकी पुतलीमें दर्द ; गण्ड-माला दोषकी वजहसे आँखोंकी बीमारी ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वासयंत्र ।—श्वास-कष्ट, कलेजा धड़कना ; छातीमें भार मालूम होना ; आंखोंमें भार मालूम होना ; गलेमें घड़-घड़ाहट और खांसनेपर हरा और खून मिला कफ़ ।

हृत्पिण्ड ।—ऐसा मालूम हो, मानो हृत्पिण्डसे पानी गिर रहा है । हृत्कम्पन (कलेजा काँपना) और खींचन होना ; कलेजेके वेस्टका प्रदाह ।

मूत्र ।—मूत्रदोषके साथ कब्जियत ; दर्द-भरा मूत्र-रोग ; पेशाब दो धारमें आना ; मूत्रनालीमें सुई बेधने जैसा दर्द ; जलन (पेशाब करनेके समय) ; नया सूजाक ; पैर चीरकर चलता है ; इन्द्रियोंकी उत्तेजना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु बन्द होना या प्रकट न होना (शारीरिक क्लान्तिकी वजहसे) ।

निद्रा ।—डरावने सपने देखना ; दिनमें नींद आना ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—चोट वगैरहकी वजहसे अंगुलीका सिकुड़ना । सीढ़ी चढ़नेमें जानु-सन्धिके बीचकी हड्डीका खिसकना । लकवा (टूटने जैसा) का दर्द । पैरकी एंड़ीमें और अङ्गुलीके निचले अंगमें दर्द ।

शक्ति ।—मूल अर्क, १x, ३०, २०० ।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैन्थरिस-वेसिकेटोरिया।

(Cantharis Vesicatorea)

दूसरा नाम।—स्पैनिश फ्लाई या एक तरहकी मक्खी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—मूत्राधारकी बीमारी ; अग्निदाह या जला हुआ घाव ; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; मूत्रकृच्छ्रता ; मूत्रविकृति ; मूत्रवाही नलीका प्रदाह ; उन्माद रोग ; जलातङ्क रोग ; आंखोंकी बीमारी ; आँखोंका प्रदाह ; डिप्थीरिया (झिल्लीक प्रदाह) ; विसर्प ; दाद ; त्वचा-के ऊपर जलभरे छाले पैदा हो जाना ; खुजली या खसड़ा ; रक्तामाशय (खूनी आंव) ; पाकाशयका प्रदाह ; आंतोंके आवरण-का प्रदाह ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; डिम्बाधारका प्रदाह ; गर्भावस्थाकी बहुतसी बीमारियां ; प्रसवके बाद बहुत देरसे फूल गिरना ; स्नायुशूल ; दर्द भरा लिङ्गका कड़ापन ; स्वप्नदोष ; प्रमेह (सूजाक) ; प्रेमोन्माद ; कामोन्माद।

उपयोगिता।—यह प्रमेह रोगकी अन्यतम प्रधान दवा है। बहुत प्रदाह मिला नया प्रमेह ; बार बार पेशाब करनेकी इच्छा ; पर बून्द बून्द पेशाब होना ; थोड़ा पेशाब ; खून मिला या केवल खूनका पेशाब ; पेशाब रुकना ; मूत्र-स्तम्भ ; पेशाब करनेके समय असहनीय जलन और कतरने जैसा दर्द ; इतना अधिक दर्द कि रोगी सह नहीं सकता ; चिल्ला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठता है ; बहुत कांखना : पेशाब करनेके पहले, पेशाब करते समय और पेशाब करने बाद जोरका पेशाबका वेग ; लगातार पेशाब करनेकी प्रवृत्ति वगैरह लक्षणोंमें यह आश्चर्यजनक काम करता है। साधारण या सांघातिक रूपसे आगमें जलनेके कारण छाले उठनेके पहले, छाले निकलनेके समय, और उसके बाद जखम उत्पन्न होनेपर, जब बहुत जलन और तकलीफ रहती है, उस समय रोगकी तेजीके अनुसार बाहरी और भीतरी प्रयोगसे आशासे अधिक सुफल प्राप्त होता है। सारे शरीरमें बहुत अधिक स्पर्शानुभूति ; बाहरी और भीतरी, सारे शरीरमें बहुत जलन और तकलीफ ; जखम जैसा दर्द ; बहुत कमजोरी ; सब तरहके भोजन, पीनेकी चीजें और धूम्रपानपर घोर अरुचि ; थोड़ा पानी पीनेसे भी मूत्रस्थलीमें दर्द ; जिस किसी प्रकारके प्रादाहिक रोगमें जलन पैदा करनेवाला दर्द और असह्य मूत्र-वेग इसके व्यवहारका विशेष लक्षण है। कामोन्माद, बहुत ज्यादा रमण करनेकी प्रवृत्ति। स्त्री पुरुष दोनोंमें तेज कामस्पृहा ; उससे रातमें नींद नहीं आती ; बहुत ही तकलीफ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन, उसके साथ ही बहुत दर्द और तकलीफ ; स्वप्नमें खून मिला वीर्य-पात ; पाखाना ; वह देखनेमें ठीक आंतके अंश जैसा मालूम होता है। मलके साथ रक्तकी रेखा। श्वास प्रश्वास यन्त्रसे कड़ा दुश्छेद श्लेष्मा स्राव। छाले भरा विसर्प; सारे शरीरमें छालेकी उत्पत्ति, जखम और पीव सञ्चय होना ; उन्मत्तकी तरह प्रचण्ड प्रलाप ; कुत्तेकी पुकारनेकी तरह चिल्लाना वगैरह लक्षणोंमें यह विशेष उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रास-वृद्धि।—छूने, पेशाब करने और ठण्डा पानी पीनेपर वृद्धि, मलनेसे उपशम।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—ऐकोन, कैम्फर, पल्स।

तुलनीय।—एपिस, आर्स, मार्क-कर।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—प्रचण्ड प्रलाप, उत्कण्ठाके साथ बेचैनी; इसके बाद क्रोध, कुत्ता बुलानेकी तरह चिल्लाना; नयी उन्मत्तता, विशेषकर जननेन्द्रियकी, पागलकी तरह दुर्दमनीय कामेच्छा, एकाएक बेहोश हो जानेके साथ चेहरा लाल।

मस्तक।—माथेमें जलन, ऐसा मालूम हो मानो माथेमें गरम पानी खौल रहा है; सरमें चक्कर आना, बाहरी खुली हवामें घटना।

आंखें।—सारी चीजें पीले रङ्गकी देखता है, जलन, मानो आगकी चिनगारियाँ निकल रही हैं, आंखें ज्योतिपूर्ण, टकटकी लगाकर देखना, आंसू बहना।

कान।—ऐसा मालूम हो मानो गर्म हवा या तेज तूफानकी हवा बाहर निकल रही है, कानकी हड्डियोंमें दर्द।

नाक।—लाल या विसर्पकी तरह सूजन।

मुखमण्डल।—पीला, उतरा हुआ; मुर्दे जैसी आकृति; खुजली भरी फुन्सियाँ; छूनेसे जलन; विसर्प, गर्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लाल। जलन ; काटने जैसा दर्द और इसके साथ पेशाबके लक्षण मौजूद रहते हैं।

मुँह और गलेके भीतर।—जीभपर फुन्सियाँ ; मुँह, गला और गलकोषमें जलन ; मुँहमें फुन्सियाँ ; पतले पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ। श्लेष्मा बहुत कड़ा ; गलेमें प्रदाह और आग जैसा मालूम होना ; संकोचन, ज्यादा गर्म भोजन आदिसे जल जाना ; मुँहमें जखम।

श्वास-प्रश्वास।—फुस्फुस-वेस्टका प्रदाह और रस बहना, श्वासमें कष्ट ; लगातार सूखी खांसी। कुत्तेकी आवाज जैसी खांसी ; जलन मालूम होना ; सुई बेधनेकी तरह दर्द ; स्वरभंग।

हृत्पिण्ड।—कलेजा कांपना ; धड़कन ; हृद्वेस्टका प्रदाह और जलन तथा दर्द ; मिचली और कै ; खून भरा श्लेष्मा निकलना ; यकृत-प्रदाह ; आंतोंके आवरणका प्रदाह ; समूची अन्न-नालीमें जलन ; बहुत प्यास, परन्तु थोड़ा पानी पीनेसे ही मूत्राधारमें दर्द।

मल।—मल त्यागनेमें जलन और कपकपी ; रक्तामाशय ; लसदार-श्लेष्मा भरा, आंतकी छालकी तरह मल ; खून-भरा या खूनकी लकीर मिला मल।

पेशाब।—असह्य वेग और कांखनेपर पेशाब होना ; बार बार पेशाब करनेकी प्रवृत्ति, मूत्रनाली और मूत्रद्वारमें तेज जलन और अकड़न ; पेशाबके पहले, पेशाबके समय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पेशाब करने बाद जलन और वेग ; थोड़ा पेशाब और पेशाब रुकना ; खून भरा पेशाब ; खड़े होने और हिलानेपर बहुत बढ़ना ; बैठनेपर घटना ; पेशाबकी दो धार ; पानीकी धारकी तरह पेशाब ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—तेज़ कामेच्छा ; इसी वजहसे नींद न आना ; दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन ; लिङ्गकी सुपारीमें दर्द ; नया प्रदाह ; जलन ; तकलीफ और अकड़न ; अण्डकोष ऊपरको ओर खिंच जाना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रबल कामेच्छा ; जरायु वगैरह में प्रदाह (विशेषकर सूतिकावस्थामें) ; इसके साथ ही मूत्राधारका प्रदाह ; प्रसवके बाद फूल अटक जानेके साथ पेशाबमें तकलीफ ; इससे मरा हुआ भ्रूण, झिल्ली वगैरह निकलती है । पहला ऋतु दिखाई देनेमें देर ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; भगोष्ठका फूलना ; जरायुसे हमेशा स्राव होना ; डिम्बाधारमें जलन और प्रदाह ; काक-चंचु-अस्थिमें छुरी बेधने जैसा दर्द ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—कमरमें दर्दके साथ बार बार पेशाबका वेग ; नोचने जैसा दर्द ; एंड़ीमें जखमकी तरह दर्द ; चलनेमें तकलीफ ।

त्वचा ।—विसर्प ; फुन्सियाँ ; उसमें जखम और पीव इकट्ठा होना ; जलन ; त्वचाका प्रदाह ; बहुत पसीनेकी वजहसे अण्डकोषमें खसड़ा रोग ; सड़नेवाला जखम ; आगसे जलना और जलनेकी तरह जखम । धूपमें झुलस जाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर ।—सविराम ज्वर ; प्रादाहिक ज्वर ; इसके साथ ही पेशाबमें तकलीफ ; हाथ पैर ठण्डे ; ठण्डा पसीना ; पैरके तलवेमें जलन ; बहुत कपकपी ; ऐसा मालूम हो मानो सारे शरीरपर किसीने ठण्डा पानी ढाल दिया है ।

शक्ति ।—बाहरी प्रयोग—मूल अर्क १x, २x, ३x ; भीतरी प्रयोग—३, ६, ३०, २०० ।

कैप्सिकम ।

(Capsicum).

दूसरा नाम ।—लाल मिर्च ; पाइपर इण्डिकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

रोगमें प्रयोग ।—मस्तिष्कमें उत्तेजना ; विदेशमें रहनेपर कातरता ; सरमें दर्द ; पक्षाघात ; अन्धापन ; कान और गांठोंकी बोमारी ; मुंहके भीतरकी और नाककी बीमारी ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; गण्डमालाका मुंहका जखम ; जीभका पक्षाघात ; दमा ; डिप्थीरिया या उपझिल्लीमें प्रदाह ; फेफड़ेकी बीमारी ; प्लुरोन्यमोनिया (फेफड़े और उसके आवरणका प्रदाह) ; हूप-खांसी ; मदात्यय रोग ; अतिसार ; रक्तामाशय ; छातीमें जलन ; आंतोंका अपने स्थानसे हटना ; मलनालीकी बीमारी ; स्नायुशूल ; छोटी माता ; बवासीर ; सविराम ज्वर ; शरीरमें चर्बी बढ़ जाना ; गृध्रसी ; पेशाबकी बीमारी ; आम-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात ; प्रदाह ; छोटी सन्धि और बड़ी सन्धिका वात ; गर्भावस्थाकी बहुतसी बीमारियाँ ।

उपयोगिता ।—पतले केश ; नीली आंखें ; स्नायविक रोग ; मोटा ताजा ; थुलथुली शिथिल मांसपेशियां ; आलसी ; थोड़े कारणसे ही सुस्त पड़ जाना ; किसी भी कार्यको करनेसे डरे या उसमें प्रवृत्ति न हो । दिल्लगीबाज और सामान्य कारणसे क्रोध और प्रति-क्रिया शक्तिका अभाव मिली प्रकृति तथा वे बालक बालिकाएं जो खुली हवामें नहीं जाना चाहतीं ; हमेशा जाड़ा और कपकपी अनुभव करती हैं ; आलस्य प्रिय ; गन्दे ; मोटे ; कोई काममें मन न लगे या सोच न सके ; ऐसी प्रकृतिवालों को यह विशेष लाभ करता है । हमेशा घर जानेकी इच्छा ; विदेशमें रह नहीं सकता ; हमेशा अकेला रहने, एकान्त कमरेमें अकेला ही सोनेकी इच्छा ; गले, मलद्वार और शरीरके अन्यान्य किसी भी अंशमें असह्य जलन और कुटकुटी । गर्म प्रयोगसे आराम नहीं मिलता । तालुमूल ग्रन्थिका प्रदाह ; उसके साथ ही बहुत जलन, कुटकुटाना ; जखम ; प्रदाह ; काले रङ्गको सूजन ; गलेमें जलनके साथ बहुत सङ्कोचन मालूम होना ; जलन और अकड़न मिली सिकुड़न-सी मालूम हो ; यह सङ्कोचन निगलनेके समय बहुत बढ़ जाती है । गलेमें, गलकोषमें, नाकके छेदमें, छाती, मूत्राशय, मूत्रनली और मलद्वार वगैरह कितने ही स्थानोंमें बहुत ही सङ्कोचन या खिंचाव । हर बार पाखाना हो आने बाद प्यास और प्रत्येक बार पानी पीनेके समय कम्पन । शरीरको ठण्डक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनी ही बढ़ती है, उतना ही मिजाज खराब होता है। स्नायविक और अकड़न-भरी खांसी, एकाएक खांसी पैदा हो जाती है। इतना कष्ट होता है, मानो सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। प्रत्येक बार खांसीके साथ मुंहसे एक साथ बहुत सा कड़वा फेन फेन बदबूदार वायु निकलना ; पर दूसरे समय ऐसा नहीं होना। खांसनेके समय दूरके अङ्गमें अर्थात् मूत्राशय, घुटने, पैर, कान वगैरहमें दर्द। कानके पीछेकी हड्डीमें दर्द भरी सूजन, बहुत ज्यादा स्पर्शानुभूति और जखम मालूम होना। तीसरे पहर पांच बजनेके समय बोखार ; शीतावस्थाके पहले प्यास वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—कैलेडियम ; सिना ; चायना ; सल्फ-एसिड।

तुलनीय !—बेलेडो (सर दर्द) ; ब्रायो (खांसीके साथ सरमें दर्द) ; आर्स ; कैन्थर जलन पैदा करनेवाला दर्द ; लैके (कम्पके आगे प्यास) ; नेट्रम म्यूर (कैम्प-कमकी पुरानी अवस्था) ; फास्फो-ऐसिड (घर जानेकी इच्छा)।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—यात्रामें घबड़ाना या घर लौटनेकी प्रबल इच्छा ; क्षण भरमें क्रोध आ जाना और गायब हो जाना। दिल्लगीबाज ; अकेला रहना अच्छा लगता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक।--मस्तकमें दर्द ; ऐसा मालूम हो मानो माथा बड़ा और दो टुकड़े होता है। खांसनेके समय सर फट जाने जैसा मालूम होना ; आंखोंसे आंसू बहना ; लाली ; क्षीण दृष्टि ; सब चीजें काली देखना।

कान।—जलन ; कानके पीछेकी हड्डीका प्रदाह ; सर्दीकी वजहसे पैदा हुआ बहरापन।

नाक।—सर्दी और बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएंजा) ; छींक, पानी जैसा पतला श्लेष्मा बहना।

मुंह।—मुंहमें बहुत सड़ी बदबू।

गलेमें।—जिह्वा-मूलकी गांठमें प्रदाह, अलि-जिह्वामें ढीलापन मालूम होना ; शराब और धूम्रपान करनेवालोंके गलेका जखम ; गलेमें गर्मी मालूम होना।

श्वासयंत्र।—वक्षस्थलमें सिकुड़न मालूम होना, उससे श्वास रुकना ; सूखी अकड़न भरी खांसी, इसके साथ ही मुंहसे बदबूदार वायु निकलना ; श्वास-कृच्छ्रता ; ऐसा मालूम हो मानो छाती और सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। खाँसनेके समय, कान, मूत्राशय, और पैर इत्यादिमें दर्द ; बच्चे खांसनेके समय रोते हैं।

पाकस्थली।—पाकस्थलीमें श्लेष्मा और अम्ल सञ्चय, बरफ जैसी ठण्डक ; बहुत आध्मान वायु (पेट फूलना), प्यासकी अधिकता, परन्तु पानी पीनेसे कम्प ; उत्तेजक पदार्थों-की इच्छा, मिचली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलपेट ।—नाभीके चारों ओर शूलका दर्द, रक्त भरी या रक्त मिली आँव मिला मल, बहुत जलन और कांखना, पाखाना होने बाद प्यास, पर पानी पीनेपर कम्पन, कमरमें दर्द। खूनी बवासीर ।

पेशाब ।—मूत्रकृच्छ्रता ; लगातार पेशाब ; बार बार पेशाबका वेग ; मूत्राधारमें जलन ; मूत्रस्थलीका सङ्कोचन : जलन ; तकलीफ और रक्त बहना ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—ध्वजभङ्गके साथ मुष्कको शीतलता ; अण्डकोषका छोटापन ; स्पर्शज्ञानका गायब हो जाना और कोमलता ; जख्म ; प्रमेहके साथ दर्द भरा लिङ्गका कड़ापन ; बहुत जलन; पीवकी तरह रक्तसे भरा स्राव ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—कमरमें तकलीफ देनेवाला दर्द ; ऊरुसे जांघ तक और जांघसे तलवेतक दर्द ।

निद्रा ।—स्वप्न भरी नींद ।

शक्ति ।—३, ६, ३० ।

कार्बो-ऐनिमेलिस ।

(Carbo Animalis).

दूसरा नाम ।—जान्तव अंगार; ऐनिमल-चारकोल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगमें प्रयोग।—सरमें दर्द ; घर जानेके लिये कातरता ; देखनेके दोष ; आँखोंमें जाला ; कानसे पीव बहना, मुँहासे ; जीभकी बीमारियाँ ; कण्ठनालीमें गड़बड़ी ; स्तनका कर्कटका जखम ; खांसी ; बहुत स्तन पिलानेका दुष्परिणाम ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; डकार आना ; भूखकी गड़बड़ी ; क्लोमयंत्रका कड़ापन ; कब्जियत ; बाघी ; ग्रन्थियोंका कड़ापन ; पीठेका कटिशूल ; प्रदर ; जरायुका कर्कटका जखम ; अर्बुद ; खूनी अर्बुद ; सड़नेवाला जखम ; अर्श (बवासीर) ; बहुपाद उपदंश ; जखम।

उपयोगिता।—शिराओंमें खूनकी ज्यादतीके साथ जवानीकी बीमारियाँ ; गाल और ओंठ नीले और बहुत सुस्ती। चीण और स्थिति-शील रक्त-संचालन क्रिया ; स्वाभाविक शारीरिक उत्तापकी कमी और नील रोग। गण्डमालासे पैदा हुई बहुतसी बीमारियां ; ग्रन्थियोंका कड़ापन, सूजन और उसमें कतरनेकी तरह बहुत दर्द और जलन ; सहजमें ही जखम पैदा हो जाना ; सड़नेवाला जखम ; स्वाभाविक पीव, दूषित पीव या पीव पतला पड़ जाना और रस जैसा हो जाना और सांघातिक अवस्थाकी प्राप्ति वगैरह लक्षणोंमें यह जयादा लाभदायक है। सरमें दर्द ; ऐसा मालूम हो मानो सरमें जोरकी बवण्डरकी हवा प्रवेश कर रही है या सर टुकड़े टुकड़े होकर उड़ा चला जा रहा है। इसी वजहसे रोगी रातमें नींदसे उठ बैठता है और सर दबा रखता है। सन्धियोंमें बहुत कमज़ोरी, सामान्य कारणसे भी, कोई भारी चीज़ उठाने यहांतक कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत थोड़ा भार उठानेमें भी मोच खा जाता है। सूखी, ठण्डी और खुली हवा अच्छी न लगे ; सुननेकी ताकतकी गड़बड़ी ; यह निश्चय न कर सके:कि शब्द किस ओरसे आ रहा है। ऋतुके समय इतनी अधिक कमजोरी कि बहुत तकलीफसे बोल सके ; केवल सवेरेके वक्त रजःस्राव ; श्वेतप्रदर ; पतले दस्त वगैरहके साथ बहुत सुस्ती , फेफड़ेके आवरणके प्रदाहके साथ छातीमें सुई बेधने जैसा दर्द ; स्तन और जरायुमें कर्कट-का जखम ; अँधेरेमें डर मालूम होना ; दूरकी दृष्टि ; खांसने-के समय ऐसा मालूम हो मानो मस्तकमें कोई पतली चीज़ है।

ह्रास-वृद्धि ।—हजामत बनवाने बाद, सामान्य स्पर्शसे ; मध्य रातमें ; ठण्डी हवामें ; विश्राम करनेपर और सोनेसे वृद्धि । गर्म कमरेमें ; पाकाशयकी सर्दीमें और ठण्डेमें और हाथसे दबानेपर उपशम ।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—आर्स , कैम्फर , नक्स-वम ।

अनुपूरक ।—कैल्क-फास ।

तुलनीय ।—बैडियागा , बेलेडोना (कड़ापन और पीव संचय होना) , कैल्क-फास , चायना (रस रक्त क्षय होने पर) , ऐल्यूमिना , ग्रैफाइटिस , सिपिया (रजःस्रावमें), कार्बोवेज , पल्स , साइलि , स्ट्रैमोनियम (अन्धकारसे वितृष्णा) , सलफर ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—अकेला रहना चाहता है, विषन्न, बात करनेकी इच्छा न होना, रातमें उत्कण्ठा।

मस्तक।—मस्तकमें दर्द, मस्तक मानो टुकड़े टुकड़े होकर उड़ा जा रहा है, ऐसा मालूम हो। मानो आँखोंपर कोई भारी पदार्थ है; इस वजहसे आँखें मलनेपर भी देख नहीं सकता।

नाक।—सरमें चक्कर आनेके साथ ही नाकसे रक्तस्राव, सूजन, नाककी ठोरके ऊपर छोटी छोटी नीले रंगकी फुन्सियाँ।

कान।—सुननेकी शक्तिका घटना; किस ओरसे आवाज़ आ रही है, यह समझमें न आना।

श्वास-क्रिया।—फिफड़ेके आवरणका प्रदाह; इसके साथ ही सान्निपातिक भाव, हरी आभा लिये पीव मिला कफ; आरोग्यके बाद भी छातीमें सुई बेधने जैसा दर्द।

पाकाशय।—ज्यादा देरतक खाते रहनेपर थकावट; पेटमें जलन और दर्द; वायु-संचय; मुंहमें पानी भर आना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—गर्भावस्थामें मिचली; रातमें बढ़ना; प्रसवके बादके स्रावमें बहुत बदबू (क्रियो, रास्टाक्स, सिकेल, पोईरो:, सोरिन) ऋतुस्रावमें कमजोरी, अपत्य पथ या भगोष्ठमें जलन; स्तनमें कड़ापन; जरायुमें कर्कटका जखम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा ।—तांबे के रंगके उद्भेदसे सहजमें ही खून बहना ; गुलाबी रंगकी फुन्सियाँ ; उकौत ; कितनी ही जगहोंमें अङ्गका फटना ; रस और पीव बहना ; बाघी ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—काक-चंचु प्रदेशमें अर्थात रीढ़के अन्तवाली जगहपर दर्द ; पैर सहजमें ही टेढ़ा हो जाता है। जोरकर कुछ उठाने या भारी वजनकी चीज उठानेमें कमज़ोरी मालूम होना ; बदबूदार और बहुत ज्यादा पसीना ।

शक्ति ।—३ विचूर्ण, ६, ३०, २००, १००० ।

कार्बो-वेजिटेबिलिस ।

(Carbo Vegetabilis).

दूसरा नाम ।—उद्भिजका कोयला ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

रोगमें प्रयोग ।—केश झड़ना ; सरका दर्द ; क्षीण दृष्टि ; बहरापन ; कानकी जड़का प्रदाह ; कानसे पीव बहना ; नाकसे खून गिरना ; मुंहांसे ; स्वरभङ्ग ; दमा ; श्वासनलीका प्रदाह ; सर्दी ; बहुव्यापक सर्दी ; उकौत ; खांसी ; स्वरनलीका प्रदाह ; अन्ननलीका प्रदाह ; हृत्शूल (कलेजेका दर्द) ; धमनीका प्रदाह ; रक्तस्राव (खून जाना) ; स्तनमें विसर्प ; पाकाशयकी गड़बड़ी; पाकाशयका प्रदाह ; पेट फूलना; डकार आना;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण; रक्तामाशय; (खूनी आँव) अम्लरोग; हैजा अतिसार सुस्ती; सम्पूर्ण पतनावस्था; विषैला फोड़ा या विस्फोटक; विसर्प; सड़नेवाला जखम। छोटी माता; अण्डकोषका प्रदाह; गर्म ऋतुकी बीमारियां; सोरा विष या शीतादका जखम; नींद न आना; सविराम ज्वर; कब्जियत; बवासीर।

उपयोगिता।—इसे यदि मृत सञ्जीवनी कहा जाय तो भी अत्युक्ति नहीं। कोई नयी या पुरानी बीमारीमें जब पतनावस्था या अन्तिम काल आ पहुंचता है, उस समय अधिकांश रोगोंमें इससे फिर जीवन प्राप्त होता है, जो किसी भी क्षय करने वाली बीमारीका दुष्परिणाम स्वरूप कितने ही तरहके उपसर्ग भोगते रहते हैं, बहुत जीर्ण शीर्ण, जीवनी शक्तिसे हीन और बराबर सुस्त रहते हैं या पहलेकी कोई सुस्त करनेवाली बीमारीके बादसे **किसी भी तरह आराम नहीं हो सकते हैं,** और जिनकी प्रकृति रक्तस्राव करनेवाली है, उनके हकमें यह ज्यादा उपयोगी है। क्विनोइन, पारा, नमक, नमकीन या सड़ी मछली, मांस और चर्बी खाना, रसोई इत्यादि या दूसरी तरहसे बहुत गर्मी लगना वगैरह लक्षणोंसे बीमारी और शारीरिक तरल पदार्थका क्षय हो जानेपर यह विशेष लाभदायक है। किसी भी श्लैष्मिक झिल्लीमय पथसे बहुत ज्यादा रक्तस्राव, स्वास्थ्य भग्न और कमजोर मनुष्योंका रक्तस्राव या दुर्बल कोष और विधान तन्तुसे लगातार रक्त बहना, जीवनी शक्तिका अवसाद, नाकसे एक सप्ताह तक रक्तस्राव। सामान्य परिश्रमसे रक्तस्रावका बढ़ जाना; रक्तस्राव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पहले और पीछे चेहरा मलीन हो जाना ; बचपनकी हूप खांसी और छोटी माता निकलने बाद दमा । बहुत ज्यादा शराब पीनेवालोंका अजीर्ण रोग, बहुत पहले हो चोटकी वजहसे रोग और सान्निपातिक रोग ; भोजनके बाद एकदम आराम न हो सकना वगैरह लक्षणोंमें यह बहुत ही आश्चर्य-जनक काम करता है ।

नयी या पुरानी बीमारीकी अन्तिम या पतनावस्था ; इसके साथ ही बहुत ठण्डा पसीना । श्वास-प्रश्वास, चेहरा, हाथ पैर और समूचे शरीरमें बहुत ठण्डक ; समस्त त्वचाका नीला हो जाना ; चेहरा बहुत मलीन, उदास और सिकुड़ा हुआ ; नीले रङ्गका और बहुत ठण्डे पसीनेसे भरा ; जीवनी शक्तिका प्रायः लोप हो जाना ; हमेशा पङ्खाकी हवा करनेके लिये कहता है । हैजाकी पतनावस्थामें बहुत बदबूदार मल, अनजानमें मल त्याग करना, वमन ; या दस्त कै ; बहुत पेट फूलना ; सारा शरीर ठण्डे पसीनेसे तर ; स्वरभङ्ग, श्वास कष्ट ; मुर्दे जैसा पड़े रहना ; नाड़ी क्षीण ; बहुत तकलीफसे मिलती है या नाड़ीका लोप हो जाना ; सुन्न हो जाना, जलन, पतला या नरम मल भी मुश्कि-लसे निकलता है ; दांत ढीले ; मसूड़ेसे सहजमें ही रक्तस्राव ; डकार आनेपर आराम मालूम होना ; पाचन क्रियाकी कम-जोरी ; साधारण भोजन भी हजम नहीं होता ; पाकस्थली और आंतोंमें बहुत ज्यादा वायुका सञ्चय होना ; मानो वह फट जायगा । खाने पीनेसे बढ़ना । जो भोजन बीमारी पैदा करता है या पचता नहीं, वही खानेकी इच्छा करता है ; पेटके चारों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरका कपड़ा ढीला करवाना चाहता है। आक्सिजन या अम्लजानकी कमीकी वजहसे नाना प्रकारके उपसर्ग, प्रतिक्रियाके अभाव और चुनी हुई दवासे लाभ नहीं होना वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

ह्रास-वृद्धि।—डकार आनेपर, पङ्खेकी हवासे और खुली हवाके सेवनसे आराम। खाने पीने, चर्बी, मक्खन, सूअर-का मांस, क्विनाइन और पारेके अपव्यवहारसे, ऊंचे स्वरसे गाना, पढ़ना और तर जलीय वायुके सेवनसे वृद्धि।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—चायना; लैकेसिस; मार्क।

अनुपूरक।—चायना; ड्रोसेरा; कैलिकार्ब; फास्फोरस।

तुलनीय।—चायना; प्लम्बम (इलाज न होनेवाला न्यूमोनिया; खासकर पुराने शराबियोंका); ऐण्टिम टार्ट (श्लेष्मा निकालनेमें असमर्थताकी वजहसे फेफड़ेमें पक्षाघात हो जानेका भय); ओपियम (चुनी हुई दवासे फल न मिलने पर); फास्फो (सहजमें ही रक्तस्राव); पल्स (घी, चर्बी, मैदा वगैरह खानेका बुरा परिणाम); सल्फ (तेज गन्ध मिला रजःस्राव और स्तनमें विसर्प)।

समगुण।—आर्स; चायना; कोलचिकम; लाइकोफेनस; सिपिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—उदासीन ; दुःखित ; क्रोधी ; याददाश्तकी कमी ; अन्धकारमें या अकेले रहनेकी इच्छा न होना ; रातमें भूतका डर ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और इसके साथ ही प्रदाह ; उठ बैठ नहीं सकना ; मिचली ; सरमें भार ; अकड़न ; माथेमें टोपी वगैरह सहन नहीं होती ।

मुखमण्डल ।—नीली आभा लिये चेहरा ; मुर्दे जैसा ; उतरा हुआ और सिकुड़ा ; ठण्डा पसीना ।

आँखें ।—कमजोर और क्षीण दृष्टि ; दाह ; पेशि-योंका शूल ; आंखोंके सामने काले बिन्दु दिखाई देना ।

कान ।—कानमें झिम झिम आवाज ; कान रुका हुआ मालूम होना ; रोज शामको कानमें लाली और गर्मी ; गाढ़ा और बदबूदार पीव बहना ।

नाक ।—रोज रक्तस्राव और परिश्रमसे बढ़ना ; नाक के छेदमें जखम ; सर्दी ; हमेशा छींक ; इसके साथ ही सुरसुरी मालूम होना ।

मुंहमें ।—जीभमें सफेदी या पीले रंगका लेप चढ़ी ; या सीसेके रंगकी, नीली, लसदार और तर ; अथवा सूखी फटी फटी ; प्यास न रहना पर मुंह सूखा ; दांत ढीले ; मसूढ़ेसे रक्तस्राव ; पीवस्राव ; जखम और फोड़ा ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकस्थली ।—पाकस्थलीमें भार मालूम होना ; डकार ; पेटमें बहुत वायु पैदा हो जाना और अकड़नका भाव ; ऐसा मालूम हो कि पेट फट जायगा ; दर्द ; खाने पीने बाद दर्दका बढ़ जाना ; मिचली ; सड़ी डकार ; जलन ; छाती तक चिपक जाना ; पाकाशयके ऊपरी स्थानमें दर्द और उसको छूने न देना ; शूल ; पाचन क्रियाकी गड़बड़ी ; दूध पीनेकी इच्छाका न होना ; रोग पैदा करनेवाले भोजनकी इच्छा ।

तलपेट ।—बदबूदार वायु निकलना ; मलद्वारमें खुजली और जलन ; रक्तस्राव ; गुदा स्थानमें जलन ; बवासीर ; नीले रंगका मसा ; पेट फूलना : क्षतमें दर्द ; गर्म हवा निकलना ; गुदा स्थानसे कड़वा और जलन करनेवाला मल निकलना ; अनजानमें बदबूदार रसरक्तका स्राव और दस्त ।

श्वास-यन्त्र ।—स्वर भङ्ग ; खानेके समय स्वरयन्त्रमें खुजली ; बहुत देरतक खांसते खांसते गाढ़ा कफ निकलना ; क्रूप खांसी ; गहरी किसी धातुके पदार्थकी आवाज जैसी ; खांसी ; छातीमें घड़घड़ाहट और साथ साथ शब्द । अकड़नकी खांसी ; दमा ; फेफड़ेसे रक्त निकलना ।

अंग-प्रत्यंग ।—भारी ; मानो पक्षाघात हो गया हो ; दोनों पैरोंका सुन्न हो जाना । घुटनेसे एंड़ी तक बरफकी तरह ठण्डा ।

त्वचा ।—ठण्डी ; काला दाग ; रक्त जम जाना ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसीना; सड़नेवाला जखम; खुजली; सहजमें ही खून बहने-वाला जखम।

शक्ति।—६, ३०, २००।

कार्बोनियम हाइड्रोजेनिसेटम।

(Carboneum Hydrogenisatum).

दूसरा नाम।—कार्ब्यूरेटेड हाइड्रोजेन, ईथिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—यह संन्यास रोगमें लाभदायक है; मानसिक जड़ता; बेहोशी; दांती लगना; आंखकी पुतलीका घूमना; अधखुली आँखें; सरमें चक्कर आना; तन्द्रा (coma) अपनेको बहुत बड़ा समझना; जीवन बहुत सुखमय समझना; प्रश्नका उत्तर बहुत धीरे धीरे देना; सब विषयमें बहुत ज्यादा आनन्द; प्रगाढ़ मोह। मस्तकमें दर्द; आँखोंमें टकटकी; आँखें गड्ढेमें धसी; आँखके सामने काली चीजें उड़ना। कानमें नाना प्रकारके शब्द; बाहरी हवामें वृद्धि; चेहरा नीला; हनु-स्तम्भ और उसके साथ ही बीच बीचमें जम्हाई आना; पतला, पीला मल; आप ही आप पाखाना पेशाब निकल जाना। फेफड़ेके नीचेकी ओर श्लेष्माकी घड़घड़ाहट मालूम होना; यह शब्द अस्पष्ट और क्षीण; अकड़न मिली खांसी; श्वास-कष्ट और छातीमें नोच फेंकने जैसा दर्द; घड़घड़ाहटकी आवाज़; दबाव मालूम होना। बड़े कष्टसे कलेजेके धड़कनकी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज अनुभवमें आये। नाड़ी दृढ़, तेज और अनियमित अथवा क्षीण और बहुत कमजोर। हाथ पैरका सुन्न मालूम होना ; कपकपी ; रह रहकर सुई बेधने जैसा दर्द ; त्वचा सफेद और सूखी ; शिराएं काली इत्यादि रोग लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

सम्बन्ध।—क्लोरोफार्म ; एमिल नाइट्रेट।

समगुण-सम्पन्न।—साइक्यूटा ; स्ट्रैमोनियम।

शक्ति।—१म, ३य, ६ठी।

कार्बोनियम-आक्सिजेनिसेटम।

(Carboneum Oxygenisatum).

दूसरा नाम।—कार्बोनस-आक्साइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता।—मृगी ; अपस्मार धनुष्टंकार ; हनुस्तंभ वगैरह कितने ही आकस्मिक रोगमें इसका व्यवहार होता है। मतवालों जैसी अवस्था ; जड़बुद्धि ; बेहोशी ; बहुत देरतक रहनेवाली औंघाई ; किसी स्थानका सुन्न हो जाना, गर्म लोहा छुलानेपर मालूम होना। दादके जैसा गोलाकार विसर्प या पामा ; उकौत ; शीतलता ; सरमें चक्कर ; सरमें दर्द ; पक्षाघात ; गृध्रसी ; हाथ और सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा वगैरह रोग-लक्षणोंमें यह उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध।—सदृश—बेलेडोना ; साइक्यूटा ; हायोसायेमस ; सिकेल ; स्ट्र मोनियम

तुलनीय।—कार्बो-हाइड्रो।

संक्षिप्त लक्षण।

मन।—सुस्त ; मूर्ख जैसा ; ताच्छिल्य भाव ; वायु-सेवनके लिये घबड़ाहट ; परन्तु ग्रहण करनेकी शक्ति न रहना।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; चक्कर खानेकी प्रवृत्ति ; सरमें दर्द ; बहुत टपकका दर्द ; कपालमें सामनेकी ओर दर्द और उस दर्दका समूचे शरीरमें फैल जाना ; भार मालूम होना ; दबाव मालूम होना।

आंखें।—आँखें बाहर निकल पड़ना ; सरमें चक्करके साथ थोड़ी दृष्टि ; दिखाई देनेवाले पदार्थ मानो काँप रहे हैं।

कान।—कानमें गरजकी आवाज़।

मुंह और मुंहके भीतर।—जबड़े अटकना ; दोनों मसूड़ोंका कसकर चपक जाना ; जीभका पक्षाघात।

पाकस्थली।—इतनी उत्तेजित मानो खाये हुए सभी पदार्थ उसी समय कै हो जायँगे।

श्वास-प्रश्वास।—समूची वायुनलीमें श्लेष्माकी घड़घड़ाहट ; खून मिला श्लेष्मा ; नाकमें आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास ; दम रुकनेका भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल।—अनजानमें पाखाना हो जाना।

मूत्र।—मूत्राधारमें पक्षाघात ; पेशाबमें चीनी।

हृत्पिण्ड।—कलेजेमें असह्य दर्द और बहुत टपक।

निम्नाङ्ग।—गृध्रसी ; बेधने जैसा दर्द ; दबाव या संचालनसे नहीं बढ़ता।

त्वचा।—सारा शरीर छोटे या बड़े छालेकी तरह दानोंसे भरा ; दादकी तरह विसर्प या पामा।

शक्ति।—१म, ३य, ६ठी।

कार्बोनियम सल्फ्यूरेटम।

(Carbonium Sulphuratum).

दूसरा नाम।—कार्बन-बाई-सलफाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

रोगमें प्रयोग।—मुंहासा ; क्षीण दृष्टि ; खूनकी कमी ; संन्यास ; दाह ; वक्ताओंके गलेका जखम ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; गलगण्ड ; छोटा सन्धिवात ; छातीमें जलन ; अर्द्धाङ्ग-का पक्षाघात ; आँतका हटना ; दादकी तरह चर्म-रोग ; माथेमें जखम, उसमें पपड़ी जमना ; माथेमें कितनी ही तरहके शब्द ; खुजली ; यकृतकी बीमारी ; याददाश्त न रहना ; पेशियोंका दुबलापन ; वात ; गृध्रसी वात ; धनुष्टंकार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोगिता ।—बहुत शराब पीने
का एकदम बिगड़ जाना ; पेशियोंको कमज
श्लैष्मिक झिल्लियोंका सुन्न हो जना ; पुराना
मालूम होना ; शारीरिक स्वाभाविक तापकी
या छः सप्ताहके बाद पतले दस्त आने ल
ज्यादा रक्तको अधिकताको वजहसे पक्षाघात
भूति ; स्नायुको नाना प्रकारकी गड़बड़ी ; ध्वज
का प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें यह व्यवहारमें
कारखानेमें काम करनेकी वजहसे बहुत तर
सरमें दर्द ; गर्दन अकड़ जाना ; पाचन-
पाकाशयका प्रदाह पाखाना हो जाने क
अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; पेट फूलना ; सारे शरीर
चीज़ खानेसे दाँतमें दर्द होना और रातमें
या नींद न आना वगैरह रोग-लक्षणोंमें यह

सम्बन्ध ।—**सदृश**—एपिस ;
जेल्स ; नेट्रम-सल्फ ; साइलीसिया ।

तुलनीय ।—कास्टिकम ; नेट्रम ; च
में) ; कार्बोवेज (पेट फूलना) ; सलफर
जाना) ; ऐनाकार्डियम (आवाज़से घबड़ाना
(मानो गलेमें केश अड़ा है, ऐसा मालूम होन

संक्षिप्त लक्षण ।

मन ।—स्मृति-शक्तिकी कमी ; क्या
कर सकता ; बालकों जैसे हाव-भाव और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar